मैथिली तथा संस्कृत साहित्यमे

गौरीशंकर

नीरजा रेणु

मैथिली तथा संस्कृत साहित्यमे

गौरीशंकर

नीरजा रेणु

मैथिली तथा संस्कृत साहित्य मे गौरीशंकर

•

नीरजा रेणु

मैथिली तथा संस्कृत साहित्य मे
गौरीशंकर

लेखिका
नीरजा रेणु

(2010 ई०)

मैथिली तथा संस्कृत साहित्य मे गौरीशङ्कर

लेखिका – नीरजा रेणु

प्रकाशक : लेखिका

प्रथम संस्करण २०१० ई. (२५० प्रति)

© लेखिका

पुस्तक प्राप्ति स्थान

नीरजा रेणु

ग्रा. बिट्ठो, पो० सरिसब पाही

जिला मधुबनी – ८४७४२४

मूल्य : २०० टाका मात्र

मुद्रक

एकेडेमी प्रेस

दारागञ्ज, इलाहाबाद – २११००६

विषय सूची

	विषय	पृ०
	अपन कहब	अ–ॠ
अध्याय– १	भारतीय वाङ्मय में गौरीशंकरक विविध रूप	१–१६
अध्याय– २	साहित्यक शिव एवं गौरीशंकर	१७–२०
अध्याय– ३	भारतीय संस्कृतिमे प्रणयक आदर्श एवं गौरीशंकर	२१–३४
अध्याय– ४	संस्कृत साहित्यमे गौरीशंकर	३५–५९
अध्याय– ५	मैथिली साहित्यमे वर्णित गौरीशंकरक स्वरूप	६०–१२१
अध्याय– ६	संस्कृत एवं मैथिली साहित्यमे गौरीशंकरः तुलनात्मक दृष्टि	१२२–१७४
अध्याय– ७	गौरीशंकर काव्यः सामाजिक परिस्थिति	१७५–१८२
परिशिष्ट– १	विवाहक मन्त्र	१८३–१८५
परिशिष्ट– २	शिव द्वारा मदनदहनक रहस्य	१८६–१९६
परिशिष्ट– ३	शिव–गौरीकथामे मर्मस्पर्शी प्रसंग	१९७–२०७
परिशिष्ट– ४	अर्द्धनारीश्वरक विभिन्न सन्दर्भ	२०८–२१८
परिशिष्ट– ५	शिवक आराध्य स्वरूप	२१९–२३४
	सन्दर्भ–ग्रन्थ	२३५–२३७
	संक्षिप्त–सङ्केत	२३८

□□

अपन कहब

भारतीय वाङ्मयमे गौरीशंकरक चर्चा व्यापक रूपें भेल अछि। वेद, उपनिषद्, पुराण ओ विभिन्न आगममे गौरीशंकर विद्यमान छथि। वेदक रुद्र, उपनिषदक शर्व, पुराणक शिव एवं आगमक पशुपति नाम शंकरक विविध रूपक द्योतक भेल अछि। वेदक रुद्र यद्यपि विनाशकारी तत्त्वक अधिपति थिकाह, तथापि अपन पूजा ओ अनुष्ठान कएनिहारक प्रति मङ्गलकारी तथा अभीष्ट दाता भए जाइत छथि। पुराणक शिव तँ कल्याणमय छथिए। एहिना गौरी सर्वप्रथम देवीक नामसँ ऋग्वेदक ऋचामे उल्लिखित भेल छथि, जे आगममे शक्ति, विद्या (काली, तारा आदि दश महाविद्या), महामाया तथा पुराणमे उमा, गिरिजा, गौरी एवं पार्वती नामसँ अधिक प्रसिद्धि पौलनि। ओना, गौरी तथा शंकरक स्वतन्त्र अस्तित्त्व पुराण आदिमे ओतेक अधिक चर्चित नहि भेल अछि जतेक हिनका दुनू गोटएक समन्वित रूप।

गौरीशंकर जगतक स्रष्टाक रूपमे अधिक प्रख्यात छथि। पुराणक कथाक अनुसार ब्रह्मा जखन मानस-पुत्रक आविर्भाव कएलनि तँ ओ एकटा सुन्दर एवं समृद्ध सृष्टिक कल्पना कए प्रसन्न भेलाह। किन्तु हुनक कल्पना साकार नहि भए सकल। हुनकर पुत्र सभ समाधिमे लीन भए तत्त्वज्ञानक चिन्तनमे लागि भेलाह। फलतः ब्रह्माक मनोरथ विफल भए गेल। तखन ओ दुखी भए गेलाह। ओही समयमे आकाशवाणी भेलैक- "ब्रह्मन्! अहाँ मैथुनी सृष्टिक रचना करू।" एहि हेतु नारीक अस्तित्व आवश्यक छलैक, जकर रचना ब्रह्मा स्वयं नहि कए सकैत रहथि। अतः ओ भगवान् शिवक आराधना कएलनि। भगवान् शिव हुनक पूजा-तपस्यासँ प्रसन्न भए शिवा देवी सहित प्रकट भेलाह। ओ कहलथिन्ह जे "वर माङू"। ब्रह्मा अपन उद्देश्य शिवक समक्ष प्रकट कएलनि। शिव अपन शरीरक अर्द्धभागसँ उमादेवीकेँ पृथक् कए देलनि। ब्रह्मा हुनक (उमाक) अनेक

प्रकारें स्तुति करैत बजलाह जे "हम अपन प्रजाक रचना कएलहुँ किन्तु ओकर अभिवृद्धि नहि भए रहल अछि। तैं हे देवि! शिवक संग समागम कए अहाँ नारीकुलक विकास करू। अहाँ सम्पूर्ण शक्तिक स्रोत छी, अतः अहाँक बिना हमर सृष्टि निरर्थक लगैत अछि।" देवी उमा "तथास्तु" कहि शंकर सहित अन्तर्धान भए गेलीह। पछाति ओ क्रमशः दक्षक कन्याक रूपमे एवं हिमालयक पुत्रीक रूपमे आविर्भूत भए शंकरक अर्द्धाङ्गिनी बनि गेलीह। एहि प्रकारें गौरी शंकरक परस्पर प्रणयसँ मैथुनी सृष्टिक रचना होमए लागल।

अर्द्धनारीश्वरक ई रूप ब्रह्माक मनोरथकें पूर्ण करबामे सफल भेल। जहियासँ मैथुनी सृष्टिक आविर्भाव भेल तहिएसँ जगतक सुख-दुःख, आकर्षण-विकर्षण, संयोग-वियोग एवं नवीन-पुरातनक कटु-मधु आस्वादसँ प्राणी अवगत भेल।

काव्यकें रसात्मक कहल गेल छैक। तैं काव्यक संगहि आस्वाद परिकल्पित भेल अछि। आस्वादक आदिस्रोत गौरीशंकरकें यदि काव्यक उद्गम स्थल वा प्रेरक कहल जाए तँ अत्युक्ति नहि होएत।

ओहुना, गौरीकें यदि नारीक एवं शिवकें पुरुषक प्रतीक (नायक-नायिका) मानि काव्यक विभिन्न सन्दर्भक विश्लेषण कएल जाए तँ चिन्तनक एकटा विलक्षणे तत्त्व परिलक्षित होएत।

हमरा गौरीशंकर विषयक काव्यक अनुशीलन करब प्रायः एही कारणें नीक लगैत रहल। कालिदासक मेघदूत एवं कुमारसंभवमे शिवगौरीक मनोहर छवि अंकित भेल अछि। ताहूमे, कुमारसंभव तँ हिनके कथानकक वर्णन थिक।

"कुमारसंभवक गौरीशंकर तारुण्य ओ वैभवसँ पूर्ण छथि। गौरीक पिता हिमालयकें सुन्दर भवन, उद्यान ओ दास-दासीक सुख प्राप्त छनि। हुनक राजधानीक औषधिप्रस्थक शोभा मनोहर अछि। एकर अतिरिक्त गौरीक माता मनाइनि सेहो अधिक स्थलपर प्रसन्न रहैत छथि। गौरी अनिन्द्य सुन्दरी छथि। हुनक अङ्ग प्रत्यङ्गसँ यौवनक लालित्य प्रतिभासित होइत अछि। गौरीक संग शंकर सेहो सुन्दर भए जाइत छथि। जखन ओ विवाह करबा लए मण्डपमे अबैत छथि तँ हुनक भालक चन्द्रमा तिलक, साँप आभूषण, गङ्गाक धारा मुकुट आदिक रूपमे परिणत भए जाइत छनि। अतः ओ सुन्दर एवं स्वस्थ वरक रूपमे उपस्थित होइत छथि।

एहि सन्दर्भमे ई तथ्य उल्लेखनीय अछि जे कालिदासक वर्णनक उक्त तथ्य संस्कृत साहित्यक प्रत्येक परवर्ती कवि लोकनिकें प्रिय भेलनि। तेँ वर्णन शैलीक भिन्नता रहितहुँ एकटा वस्तु संस्कृतक प्रत्येक कविक रचनामे समान रूपमे परिलक्षित होइत अछि, ओ थिक गौरीशंकरक यौवन, विलास ओ विभवक चित्रण। हुनका सभक परस्पर अनुराग प्रणयी-प्रणयिनीक दिव्य स्वरूप थिक।

एही कारणें ई कहब संगत होएत जे संस्कृत साहित्यमे गौरीशंकरक छवि कालिदास प्रतिष्ठित कएने छथि।

शिव गौरीक वर्णनमे जहिना कालिदासक प्रभाव संस्कृतक परवर्ती कवि पर पड़ल तहिना मैथिलीमे विद्यापतिक नचारीक प्रभाव परवर्ती कवि लोकनिपर पड़ल।

विद्यापति एवं हुनक परवर्ती अन्य कविक रचनामे शिव बूढ़, भङेर, तपसी, बताह ओ मसानीक रूपमे वर्णित छथि। गौरी छोटि बालिका छथि।

एहि प्रकारें संस्कृत साहित्यक सुन्दर ओ समृद्ध गौरीशंकर जकाँ मैथिली साहित्यक शिव-पार्वतीक रूप नहि अछि। मैथिलीमे शिवक स्वरूप विकट छनि। ओ दरिद्र छथि एवं गौरी हुनका पाछू विकल रहैत छथि। दूनू साहित्यक गौरीशंकरक स्वरूपक ई भिन्नता हमर ध्यान आकृष्ट कएलक।

प्रस्तुत प्रबन्धक उद्देश्य एही वैषम्यकें प्रस्तुत करब अछि।

पहिल अध्यायमे भारतीय वाङ्मयमे गौरीशंकर कोन रूपमे वर्णित छथि, तकरा स्पष्ट कएल गेल अछि। वैदिक युगसँ पौराणिक युग धरिक हुनक स्वरूपक वैविध्यकें ताही क्रममे उल्लिखित कएल गेल अछि। किन्तु वेद कर्मकाण्डक एवं पुराण संस्कृतिक आदि स्रोत थिक। सहृदय वर्गक मनोरञ्जनक साधन संगीत, चित्र आदि विभिन्न कलाक अपन स्वतन्त्र अस्तित्व छैक। ताहूमे साहित्यक प्राधान्य मानल गेल छैक। वेद ओ पुराणक गौरीशंकर साहित्यसँ कोन रूपमे सम्बद्ध छथि, एकर विवरण दोसर अध्यायमे देल गेल अछि। गौरीशंकरक अतिरिक्त सीताराम एवं राधाकृष्ण सेहो साहित्यमे प्रचुर रूपें चर्चित-अर्चित छथि, किन्तु हमरा शिव-गौरी विषयक रचना किएक विशेष रूपें प्रभावित कएलक, तकर उल्लेख तेसर अध्यायमे भेल अछि। गौरीशंकरक प्रणय ओ परिणयक परिणति सीताराम आदि दिव्य दम्पतीसँ विशेष आह्लादक अछि जे सनातन धर्मक अनुरूप आदर्श भेल अछि। आदर्शक समन्वय यदि कोनो

आह्लादक स्थितिक संग बनि जाइत छैक तँ ओहिसँ लोकोत्तर सुखक अविर्भाव होएब स्वाभाविक। एही कारणें गौरीशंकरक दाम्पत्यमे हमरा अलौकिक सुखानुभूतिक उत्कर्ष बुझि पड़ल एवं एही तथ्यक प्रतिपादन विवेच्य अध्यायमे कएल गेल अछि। चारिम अध्यायमे संस्कृत साहित्यमे गौरीशंकरक स्वरूपक उल्लेख भेल अछि। एहिमे शंकर तरुण, सुन्दर एवं कामी बनल छथि। गौरी अतीव सुरूपा राजकुमारी थिकीह, किन्तु भगवान् शंकरक प्राप्तिक हेतु ओ कठिन तपस्यामे रत भए जाइत छथि। शंकरक प्राप्ति रूप अभीष्ट सिद्धिक पश्चात् ओ हुनक (शंकर) अर्द्धांगिनी भए विलासमे रत भए जाइत छथि। कालक्रमे कुमार कार्तिकेयक जन्मसँ हुनका मातृत्वक गौरव प्राप्त होइत छनि। पाँचम अध्यायमे मैथिली साहित्यक भिखारि, तपसी, बूढ़ एवं भङेर शिवक उल्लेख भेल अछि। हुनका अल्पवयस्का गौरीसँ विवाह कराए देल जाइत छनि। एहि हेतु मनाइनि अपन आक्रोश व्यक्त करैत छथि, जे मर्मस्पर्शी भेल अछि। एहिना अध्याय छओमे संस्कृत एवं मैथिली साहित्यक एहि दू भिन्न रूपक गौरीशंकरक तुलनात्मक उल्लेख अछि, जे एहि प्रबन्धक उद्देश्यकें स्पष्ट करैत अछि। सातम अध्यायमे दूनू साहित्यक शिव गौरीक एहि दू स्वरूपक कारणक चर्चा भेल अछि। एहि क्रममे कालिदास एवं विद्यापतिक समयक सामाजिक परिस्थितिक वर्णन भेल अछि। हमरा जनैत, एही दूनू कविक रचना संस्कृत ओ मैथिली साहित्यमे गौरीशंकरक छविकें प्रतिष्ठित कएलक। तँ हुनके लोकनिक सामाजिक परिवेशक वर्णन करब आवश्यक बुझि पड़ल। शिव-गौरीक कथा-क्रममे अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यक-जेना कामदहन, वसन्त वर्णन आदिक-उल्लेख एतबामे नहि भए सकल जे सभ परिशिष्टक पाँचम भागमे उल्लिखित अछि।

कहल गेल अछि जे साहित्य समाजक दर्पण थिक। तँ संस्कृत ओ मैथिली, दूनू साहित्यमे गौरीशंकरक चित्रण सामाजिक परिस्थितिसँ प्रभावित भेल अछि। जेना कि पहिनहुँ कहल गेल अछि, जे संस्कृतमे कालिदास एवं मैथिलीमे विद्यापति-यैह दूनू गोटए शिव-गौरीक छविकें प्रतिष्ठित कएने छथि, तँ तत्कालीन सामाजिक स्थितिक उल्लेख करब एतए आवश्यक अछि।

जाहि समयमे कालिदासक आविर्भाव भेल छल ओहि समयमे बौद्धक प्रभावें सनातन धर्मक अस्तित्व संकटपूर्ण भए गेल छलैक। बौद्ध लोकनि गार्हस्थ्य जीवनकें तिरस्कार पूर्ण दृष्टिसँ देखैत छलाह। ओ सभ नारीक प्रति

अत्यन्त हेय भाव रखैत छलाह। कालिदास एहि तथ्यकें सनातन धर्मक मर्यादाक विरुद्ध बुझलनि। ओ नर-नारीक समन्वयमे सृष्टिक समस्त सौन्दर्यक कल्पना कएलनि। अपन एहि कल्पनाकें ओ गौरीशंकरक वर्णनक माध्यमसँ साकार कएलनि। हिनक रचना जन-मानसकें ततेक प्रभावित कएलक जे बौद्ध साहित्यक प्रभाव ओकर आगाँ क्षीण भए गेलैक। किन्तु विद्यापतिक समयक सामाजिक परिस्थिति किछु भिन्न प्रकारक छलैक। हुनक समयमे मिथिलामे बाल विवाहक प्रथा प्रचलित छलैक। ताहूमे अबोध कन्याक विवाह "अष्टवर्षा भवेद्गौरी" क अनुसारें कराए, कन्याक पिता अपनाकें धन्य मानि लैत छलाह। कोनो उच्च कुलोद्भव पुरुष वर होएबाक अधिकारी मानल जाइत छलाह। कुलक अतिरिक्त हुनक वयस, रूप, गुण, धन, आदिक अस्तित्त्व कोनो आवश्यक वस्तु नहि मानल जाइत छल। एकर परिणामस्वरूप बूढ़सँ बूढ़ वरक संग अत्यन्त छोटि बालिकाक विवाह भए जाइत छलैक।

ई तथ्य कोनो सहृदयक हेतु हृदय विदारक भए सकैत अछि। तैँ वरक रूपमे शंकरकेँ बूढ़, भिखारि, भङेर आदि कहि एवं कन्याक रूपमे गौरीकें छोटि बालिका कहि विद्यापति एवं हुनक परवर्ती कवि लोकनि वस्तुतः सामाजिक दुर्व्यवस्थाकें चित्रित कएलनि। दोसर शब्दमे ई कहल जा सकैत अछि जे सहृदय वर्गक सुधारवादी दृष्टिक कारणें गौरीशंकरक एहेन वर्णन विशेषरूपें प्रचलित भेल। सहृदय लोकनिक अतिरिक्त महिलावर्गमे एहि प्रकारक रचना ततेक लोकप्रिय भए गेलैक जे प्रत्येक मङ्गलकार्य जेना विवाह, उपनयन आदिमे व्यवहारमे नचारी गाएब आवश्यक भए गेलैक। एहिसँ शुभदायक गौरीशंकरक स्मरणक संगहि लोकक हृदयगत भाव सेहो प्रकट होइत रहलैक।

उपर्युक्त तथ्यसँ ई स्पष्ट अछि जे कालिदास एवं विद्यापति, दूनू कविक सामाजिक परिस्थितिमे अन्तर छलैक। ओकर प्रभाव हुनका लोकनिक काव्यपर पड़ल। तैँ दूनूक रचनामे वैषम्य परिलक्षित होइत अछि। संस्कृत ओ मैथिली साहित्यमे गौरीशंकरक स्वरूपक आकलनक आधार मुख्य रूपें एहि दू प्रकारक परिस्थितिमे रचित दूनू कविक रचना भेल।

दू भिन्न प्रकारक सामाजिक परिस्थितिसँ उद्भूत शिव-गौरी विषयक काव्य दूनू भाषामे (संस्कृत ओ मैथिलीमे) समान रूपें लोकप्रिय भेल।

हमरा जनैत एकर कारण भेल स्वकीया नायिकाक प्रणय-वर्णनक माध्यमे शृंगार रसक रोचक उल्लेख। भारतीय जीवनदर्शनक अनुरूप स्वकीया नायिका गौरीक संग शंकरक प्रणय अखण्ड, सुन्दर ओ शाश्वत भेल अछि। काव्यमे सीताराम ओ राधाकृष्णक लीला सेहो प्रचुरतया वर्णित भेल अछि। किन्तु सीता ओ रामक जीवनक पीड़ाकें अङ्गीकार करबाक क्षमता सामान्य लोक मे नहि छैक। तेँ ओ आदर्श अवश्य भेलाह मुदा अनुकरणीय ओतेक नहि। एकर विपरीत, परकीया नायिका राधाक संग श्रीकृष्णक प्रणय ओ उत्कट विलास सामाजिक परिवेशक अनुकूल नहि भेल। तेँ समाजक हेतु अनुकरणीय नहि अछि। अतएव उच्च कोटिक काव्यमे दूनू युगल छविक उल्लेख रहितहुँ ओ लोकजीवनक यथार्थ तथा आदर्शक समन्वयसँ पूर्ण नहि भए सकल। गौरीशंकरक वर्णन एहिसँ भिन्न, भारतीय जीवनक परिवेशमे रोचक ओ अनुकरणीय भेल अछि।

गौरीशंकरक प्रणय ओ परिणय कार्तिक-गणेशक समान सन्तति समाजक सुख देनिहार भेल। सन्तानक रूपमे अपन अस्तित्वक विस्तार देखि प्रत्येक प्राणी आह्लादक अनुभव करैत अछि। देवी-देवताक वर्णनमे ई आह्लादक स्थिति गौरीशंकरक दाम्पत्यमात्रमे परिलक्षित होइत अछि, अन्यत्र नहि। तेँ हुनक वर्णन लोकानुरञ्जनक अभिन्न अंग भए गेल।

एहि कारणें संस्कृत ओ मैथिली मात्रमे नहि, बंगला, नेपाली, तमिल, आदि प्रमुख भारतीय भाषामे गौरीशंकरक वर्णनक विपुल भण्डार विद्यमान अछि।

गौरीशंकर विषयक काव्य तँ एहेन व्यापक वस्तु थिक, जकर अनुशीलन ओ परिशीलन अनेको पीढ़ी धरि अनवरत चलैत रहि सकैत अछि, तैयो ओकर अन्त नहि हेतैक। तैं यदि केओ एक व्यक्ति एकरा पूर्ण करबाक दंभ करए तँ ओ हास्यास्पदे होएत। एहि छोट सन प्रबन्धमे हम अपन विषयकें सभ तरहेँ प्रतिपादित कएलहुँ, से कहबाक धृष्टता हम नहि कए सकैत छी। किन्तु शिव-गौरीक चर्चाक रूपमे एकरा प्रस्तुत करबाक उद्देश्य हमर इएह अछि जे प्रबुद्ध अनुसन्धाता लोकनि एहि दिशि ध्यान देथि एवं भारतक विभिन्न क्षेत्रमे पसरल गौरीशंकर विषयक रचनाक गवेषणमे प्रवृत्त होथि। संगहि माङ्गलिक देवता गौरीशंकरक उपासना सेहो भेल जे अवश्य कल्याणकर

होएत-ई विश्वास अछि।

पूज्यचरण हमर पिता स्व. हरिश्चन्द्र मिश्र सदिखन हमरा प्रबन्ध लिखबाक उत्साह ओ प्रेरणा दैत रहलाह। हुनके तपःपूर्ण आशीर्वाद हमरा एहि कार्यकेँ पूर्ण करबाक क्षमता प्रदान कएलक। गुरुवर डॉ० श्री अमरनाथ झा (पूर्व अध्यक्ष, मैथिली विभाग, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा) मार्गनिर्देशन कएलनि। तेँ हम ई काज पूर्ण कए सकलहुँ। हुनक उचित परामर्श सर्वदा भेटैत रहल, जे हमर चिन्तनकें सार्थक कए सकल।

परमादरणीय डा० श्री जयकान्त मिश्र द्वारा संरक्षित अखिल भारतीय मैथिली साहित्य-समिति, प्रयागसँ पोथी देखबाक पर्याप्त सुविधा भेटल, जे शोधकार्यमे मुख्यरूपसँ सहायक भेल। एतबे नहि, डा० श्री मिश्र जी अत्यन्त व्यस्त रहितहुँ हमरा अपन अनेक वैदुष्यपूर्ण विचार दए उपकृत कएलनि। एकर अतिरिक्त मातृस्वरूपा श्रीमती अपराजिता देवी हमरा लेखन कार्यमे अनेक प्रकारक सहायता प्रदान कएलनि। कृतज्ञताक कोनो शब्दक द्वारा हुनका दूनू गोटेक स्नेहकेँ नहि आंकल जा सकैत अछि। गुरुवर श्री अनन्तलाल ठाकुरक (भूतपूर्व निदेशक, काशी प्रसाद जायसबाल शोध संस्थान, पटना) अशेष वात्सल्यक कारणें हमरा शोधकार्यक हेतु रुचि ओ प्रेरणा भेटैत रहल। ओ अनेक दुर्लभ वस्तुक संकलन कए हमरा देलनि। तेँ हुनका सभक चरणकमलमे प्रणाम अर्पित करैत छी। गङ्गानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ प्रयागक अनेक शोधकार्यरत विद्वानक अहैतुक अनुग्रहक सुफल सत्परामर्श ओ सामग्री-संग्रह हमरा सहायता कएलक, जाहि मे उल्लेखनीय छथि डॉ० किशोरनाथ झा एवं हुनक सहकर्मी डा० गोपराजू राम, डा० जगन्नाथ पाठक ओ स्व० डा० राघव प्रसाद चौधरी जी तथा डॉ० रामकिशोर झा। ई लोकनि अपन अमूल्य समय व्यय कए 'हरविजय महाकाव्यक' श्लोक संकलन कए देलैहि ओ शोध कार्यक अनुकूल परामर्श देलनि। हुनका सभक समक्ष हम नतमस्तक छी। कैवल्य धाम, लोनावालाक अनुसंधान अधिकारी डॉ० भक्तिकर झा समय-समय पर अपन अमूल्य परामर्श दैत रहलाह तेँ आभारी छी। अजस्र आशीर्वाद ओहि शोध छात्र केँ प० स्व. मोहन झा केँ जे शिवलीलार्णवक संग्रह कए देलनि ओ आन आन प्रकारक सहायता कएलनि।

विषयक प्रतिपादन स्पष्टतापूर्वक भए सकए ताहि हेतु हम साकांक्ष रहलहुँ। किन्तु जखन अपनो मुँह देखबा लेल दर्पणहिक प्रयोजन होइत छैक तखन अपन लेखनक औचित्यकं आंकब ककरा हेतु संभव छैक। तँ सुधीपाठक शिवशंकर जकाँ चन्द्रमा कें उद्भासित कए त्रुटिरूप विषकें पीबि जाथि, सैह हमर विनम्र प्रार्थना अछि। किमधिकं विज्ञेषु।

एकेडमी प्रेसक स्वामी श्री सुरेन्द्रमणि त्रिपाठी एवं कर्मठ कर्मचारी लोकनिक प्रति कृतज्ञ छी, जे नष्टप्राय अक्षर सभ पोथीक रूप लए सकल। आ अन्त मे, ओहि कर्मयोगीक स्मरण तँ हठात् आबिए जाइत अछि जकर नामक आगाँ आब 'चिरञ्जीवी' नहि लिखि सकैत छी, जे स्मृतिशेष भए गेल, जे हमर सभक पुस्तक प्रकाशनमे सभदिन संग देलनि, ओहि सुकान्तमणि त्रिपाठीक संस्मरणमे अश्रुपूर्ण समर्पण।

विनयावनत

शिवरात्रि, संवत् २०६७ **नीरजा रेणु**

□□

PREFACE

I have gone through the book of Neerja Renu, entitled Maithili O sanskrit Sahitya Men Gaurishankar. Here is a comparative study of an important phase of the Maithili Literature placed in the wider background of Sanskrit Literature. Gauri and Shankar have influenced Indian culture since very ancient times and their influence upon our life and literature in the modern epoch is also considerable. The writer has dealt with (a) different storms of Gauri and Shankar in Indian Literature in general (b) Gauri and Shankar in literature (c) Gauri-Shankar the ideal of Indean conjugal life (d) Gauri and shankar in Sanskrit Literature (e) Gauri Shankar in Maithili literature (f) comparision between the sanskrit and Maithili presentation of the divine pair and (g) Social aspect in the literature depicting Gauri-Shankar.

Besides, there are five appendices connected their life-the Mantras recited during the marriage ceremony, the secret of burning Madan by Lord Shiva Important topics in shiva-Gauri legend. The different aspect of Ardhanarishvara and the worship of Shiva.

The relation between Maithili and Sanskrit literature is very closed as the later is a direct off-

spring of the former without a separate factor life the persian and English as in the cases of other branches of non Indian Literature as such, the development of the theme of the work presents no break.

The writer has shown her equal mastery over Sanskrit and Maithili Literature and her study shows keen insight in literary, social and religious problems. This is the first study of its kind in Maithili and possibly in other Indian Languages also. The field of study selected is vast but with mature craftmanship she has given a complete picture in a comparatively small convas and yet no important detail is wanting in her work. She has utilised first hand sources and the conclusions drawn are based on adequate grounds.

I there fore, am glad to know that the book may publish soon.

Prof. Anant Lal Thakur

अध्याय - १

भारतीय वाङ्मयमे गौरीशंकरक विविध रूप

भारतीय वाङ्मयमे गौरीशंकरक उल्लेख विशद रूपेँ भेल अछि। वैदिक कालमे गौरीक चर्चा शक्तिक रूपमे[१] [क] ओ शिवक चर्चा रुद्र रूपमे[१] [ख] भेल। पुराणक युगमे शक्ति ओ शिवक समन्वित रूप अर्धनारीश्वरक रूपमे विख्यात भेल।[२] ई वर्णन मूर्ति-निर्माणक विधानक क्रममे भेटैत अछि। किछु समयक पश्चात् साहित्य ओ संस्कृतिक जे विकास भेल, ताहूमे पौराणिक अर्धनारीश्वर गौरीशंकर बड़ प्रसिद्धि पओलनि।

गौरीशंकरक अनेक रूपक परिचयक हेतु निम्नलिखित क्रमकें ध्यानमे राखब अवश्यक अछि-

क- वेद ओ उपनिषदक गौरीशंकर,

ख- पुराणक गौरीशंकर,

ग- आगमक गौरीशंकर,

घ- आदिकाव्य रामायणक गौरीशंकर,

ङ- महाभारतक गौरीशंकर एवं

च- १. संस्कृतकाव्यक गौरीशंकर ओ

२. मैथिली साहित्यक गौरीशंकर।

[क] वेद ओ उपनिषदक गौरीशंकर:

ऋग्वेदमे रुद्रक स्तुति अछि मुदा अन्य देवी-देवता जकाँ हिनक अधिक प्राधान्य नहि अछि। रुद्र पथ, प्रान्तर एवं पशुक पालक देवता रूपमे वर्णित

छथि। ओ शस्त्र धारण करैत छथि तथा मनुष्य एवं गाय आदिक नाश सेहो करैत छथि। यजुर्वेदक रुद्राध्याय विभिन्न दैवी शक्तिक वर्णन करैत अछि। कहल गेल अछि जे रुद्रक कृपासँ पशुक रक्षा होइत अछि। तथापि ई कुलुंच, कर्मार, निषाद तथा तस्कर आदिक अधिपति थिकाह।[३] ई संसारक रक्षक थिकाह। गिरिशायी, कृत्तिवास, पशुपति, कपर्दी, शिव तथा भव आदि नामसँ हिनक उल्लेख भेल अछि।

अथर्ववेदमे रुद्रक स्वरूप एहिसँ उन्नततर अछि। एहिमे विभिन्न रूपमे शिवक उल्लेख भेल अछि। शिव द्विपद तथा चतुष्पद प्राणीक अधिपति छथि। सहस्राक्ष, अतिवेधा, अभिन्नलक्ष्य, जातुधानक संहारक, भक्तक रक्षक, पिनाकधारी तथा राजा रूपमे एही रुद्रक प्रतिपादन एतय कयल गेल अछि। एतय रुद्रके अग्निसँ अभिन्न सेहो कहल गेल अछि। भव, शर्व, महादेव नाममेसँ भव व्रात्यक तथा पूर्व दिशाक अधिपति थिकाह तथा उग्र उत्तर दिशाक, रुद्र अधो दिशाक, महादेव ऊर्ध्व दिशाक तथा ईशान विदिशाक, नैर्ऋत्य तथा ईशान आदिक अधिपति थिकाह।[४]

उपनिषद साहित्यमे श्वेताश्वतर उपनिषद अत्यन्त प्राचीन नहिओ रहला पर एहि प्रसंगमे अपन पृथक् अस्तित्व रखैत अछि। श्वेताश्वतर विभिन्न दार्शनिक विचारधाराक संगम-स्थल थिक। ऋग्वेदक तथा यजुर्वेद संहिताक, मुण्डक एवं कठ आदि उपनिषदक मन्त्रक उद्धरण एतय उपस्थित कयल गेल अछि। विभिन्न विषयकें परस्पर मिलाए एकेश्वरवादमूलक दर्शनकेँ उपस्थित करबामे एकरे श्रेय छैक। संग-संग योग एवं सांख्यमतवादक संकेत सेहो एहिमे परिलक्षित होइत अछि। यद्यपि रुद्र, शिव, ईशान तथा महेश्वर शब्दक वाच्य शिवे छथि। शंकर तथा रामानुज आदि आचार्य सेहो अपन-अपन ग्रन्थमे एकर मतक उद्धरण प्रमाणरूपमे प्रस्तुत कयलनि अछि। सांख्य, योग, न्याय तथा वैशेषिक ग्रन्थमे श्वेताश्वतरक व्यवहार उपजीव्यरूपमे कयल गेल अछि। एहि उपनिषद्‌क अनुसार हर [शिव] एकमात्र देवता छथि तथा ओ अक्षर पुरुष छथि। ओ अक्षरपर आधिपत्य करैत छथि।[५]

रुद्र एक छथि, द्वितीय नहि। ओ अपन सामर्थ्यसँ त्रिभुवनक रक्षा करैत छथि। ओ प्रत्येक प्राणीक अन्तरमे वर्तमान छथि। ओ सम्पूर्ण भुवनक रचना, रक्षा तथा संहार सेहो करैत छथि। एहि परमात्माके सभ दिस नेत्र छनि। सभ

दिस मुख छनि। हिनक हाथ तथा पएर सेहो सभ दिस छनि। ओ आद्य परमात्मदेव भूलोक तथा द्युलोकक रचना करैत छथि।[६]

ईश्वर एक, अद्वय तथा मायाक अधिपति छथि। ओ अपन शक्तिसँ प्रत्येक लोककेँ वशीभूत करैत छथि। तथा ई एकाकी होइतहुँ सृष्टि तथा प्रलयमे सांसारिक व्यवस्थाकेँ अपन शक्तिसँ स्वाधीन रखैत छथि। हिनक ज्ञाता अमर होइत छथि।

रुद्रक मूर्त्ति पुण्य-प्रकाशिका अछि तथा ओ कल्याण-स्वरूप एवं प्रसन्न छथि[७].

ओ [परमात्मा] इन्द्र आदि देवताक उत्पत्तिक तथा विभूतिक कारण थिकाह। ओ संसारक अधिपति तथा सर्वज्ञ थिकाह।[८]

हुनकासँ प्रार्थना कयल जाइत अछि जे ओ अपन हाथमे जे संहारक बाण रखने छथि ओकरा कल्याणकर बनाबथि।[९]

ईश्वर एहि विराट् रूपमे संसारसँ भिन्न, महान् एवं व्यापक छथि। इएह विश्वक संहर्ता छथि। एहिसँ बढ़िकए आओर केओ नहि छथि। एहिसँ सूक्ष्मतर तथा महान् सेहो नहि केओ अछि। जे अपन महिमासँ प्रकाशमान होइत वृक्षक समान निश्चल भावेँ स्थित छथि। ओही पुरुषसँ ई सम्पूर्ण संसार व्याप्त अछि।[१०]

ईश्वर सर्वव्यापक तथा सभ प्राणीक अन्तःकरणमे विद्यमान छथि, अतएव सर्वगत तथा मंगल रूप छथि।[११]

पुराणक गौरीशंकर

पुराणमे गौरीशंकरक श्रेष्ठता ओ लीलाक वर्णन बड़ विस्तारसँ कयल गेल अछि। शिवकेँ जगतक नियन्ता[१२] एवं गौरीकेँ हुनक अर्द्धाङ्गिनी[१२अ] कहल गेल अछि।

अठारहो पुराणमे[१३] शिवपुराण, लिंगपुराण, स्कन्दपुराण, वायुपुराण, अग्निपुराण, मत्स्यपुराण एवं कूर्मपुराणमे शिवकेँ परमेश्वर कहल गेल अछि एवं ओ सर्वश्रेष्ठ देवताक रूपमे पूज्य मानल गेल छथि। शैव धर्मक एकटा भिन्ने परम्परा प्रचलित भए गेल। शैवधर्मक अनुसार शिवक पद सर्वोच्च अछि। ओ स्रष्टा थिकाह, विश्वक आदि कारण थिकाह एवं चारू वेदमे हुनके गुणगान

कयल गेल अछि।[१४] ओ दार्शनिक ब्रह्म थिकाह, आत्मा थिकाह जे असीम एवं शाश्वत अछि।[१५]

ओ अव्यक्त छथि एवं जीवात्माक रूपमे व्यक्त सेहो छथि। जे विश्वास पूर्वक शिवक नामक जप करैत छथि, तनिका तत्काल मनकामनाक पूर्ति होइत छनि। घोर पाप कयलो पर यदि शिवक नाम ली तँ पाप नष्ट भ' जाइत छैक।[१६] शिवक नाम अमृत थीक। जे पाप रूपी दावानलसँ पीड़ित अछि ओ शिवनाम रूपी अमृतक पान कय व्यथासँ त्राण पबैत अछि।[१७]

शिव सत्य, ज्ञानरूप, अनन्त, परमानन्दमय, परम ज्योतिःस्वरूप, अप्रमेय, अधाररहित, निर्विकार, निराकार, निर्गुण, योगिगम्य, सर्वव्यापी, सभक एकमात्र कारण, निर्विकल्प, मायाशून्य, उपद्रवरहित, अद्वितीय, अनादि, अनन्त, संकोच-विकास शून्य एवं चिन्मय छथि।[१८]

ओ सदा-शिव परम-पुरुष, ईश्वर, शंभु एवं महेश्वरक नामसँ विख्यात छथि।

ओ अपन मस्तक पर आकाशगंगाकेँ धारण करैत छथि। हुनकर भालदेशमे चन्द्रमा शोभायमान छथिन। हुनका पाँचटा मुँह छनि एवं पाँचोमे तीन-तीनटा नेत्र छनि।[१९]

शिवक सहचरीक रूपमे पार्वतीक रूप सेहो एहने उदात्त ओ सौम्य परिलक्षित होइत अछि। ओ एकटा ममतामयी देवीक रूपमे कल्पित छथि, जनिक सत्कार सम्पूर्ण विश्व करैत अछि। देवीक सदय रहबाक हेतु प्रत्येक प्राणी प्रार्थना करैत अछि।[२०] जहिना महादेव परमपिता थिकाह तहिना पार्वती जगन्माताक रूपमे पूजनीया भेलीह।[२१अ]

पुराणमे जहिना शिवक विराट् ओ सुन्दर स्वरूपक वर्णन अछि, तहिना शक्तिक अपार महिमाक उल्लेख अछि।

मार्कण्डेय पुराणमे शक्तिक स्तोत्र दुर्गासप्तशतीक नामसँ सात सए श्लोकमे निबद्ध अछि। एहिमे शक्ति-स्वरूपा दुर्गा अपन कथनसँ एहि तथ्यकेँ स्पष्ट करैत छथि जे हम गौरीक रूपमे विख्यात भए असुरक संहार करब।[२१आ]

मार्कण्डेय पुराणक उपर्युक्त सन्दर्भसँ ई स्पष्ट अछि जे एहिमे शक्तिक सर्वश्रेष्ठताक कल्पना कएल गेल अछि। कखनहुँ तँ ओ 'गुणत्रय विभाविनी'क[२२अ]

रूपमे जगतक माता एवं रक्षा कएनिहारि होइत छथि।

किन्तु गौरीशङ्करक संयुक्तरूपक वर्णन जगतक माता आ पिताक रूपमे वा प्रणयी प्रणयिनीक रूपमे मत्स्य पुराणमे जाहि रूपेँ अछि से रूप काव्य जगत मे विशेषरूपसँ[२२आ] चर्चित भेल अछि। शिवक आधा शरीर पुरुष ओ आधा स्त्रीक छनि आ ताही आधारपर ओ अर्धनारीश्वर कहल जाइत छथि। वायु पुराणमे सेहो शिवकेँ अर्धनारीश्वर कहल गेल अछि।

एहि प्रकारेँ शिव पार्वतीकेँ सर्वश्रेष्ठ मानि पुराणमे हिनक लीलाक वर्णक विस्तारपूर्वक कएल गेल अछि, जकर आधारपर कुमारसंभव (स्कन्दपुराणक अनुसार) शिव लीलार्णव आदि श्रेष्ठ काव्यक रचना भेल। मैथिली साहित्यमे सेहो स्कन्दपुराण आदि भिन्न भिन्न पुराणक कथा पर आधृत उत्तम काव्य उपलब्ध अछि।

पुराणक अध्ययनसँ शिव ओ पार्वतीक दार्शनिक तादात्म्य सेहो स्पष्ट होइत अछि। योगी शिव जखन कुमारि गौरीकेँ अपन सेवा करबाक अनुमति नहि दैत छथि तँ गौरी अनेक प्रकारक कथासँ हुनका एहन विचारसँ विरत कए दैत छथि। गौरी कहैत छथि जे अहाँ जे वाणी कहैत छी सेहो तँ प्रकृतिए थिकैक। तखन किएक ओकर सहायता लेलहुँ? मात्र तात्त्विक दृष्टि अपूर्ण अछि अर्थात् ओकर अभिव्यक्ति प्रकृतिए द्वारा होइत छैक। यदि प्रकृतिसँ भिन्न किछु छैक तखन तँ ने अहाँकेँ बजबाक अछि ने किछु करबाक अछि। कारण जे कहब आ करब सभटा व्यवहारे छिऐक जे प्राकृत थिक। अहाँ जतेक जे देखैत छी सुनैत छी सभटा प्रकृतिए छिऐक। अहाँ अपन बुद्धिसँ एकरा बूझू। हे प्रभो! प्रकृति अहाँकेँ अपनामे आत्मसात् कए लेने अछि, तेँ अपन रूपकेँ नहि चीन्हि रहल छी। हे प्रभो! हम इएह कहए चाहैत छी जे प्रत्यक्ष प्रमाणक अछैत अनुमान प्रमाणकेँ विद्वान् व्यक्ति नहि स्वीकार करैत अछि। तेँ ई बात सूनू, हम प्रकृति छी अहाँ पुरुष छी – ई सत्य थिकैक। एहिमे कोनो सन्देह नहि छैक। हमरे अनुग्रहसँ अहाँ सगुण एवं साकार मानल गेल छी। अहाँ जितेन्द्रिय भेलहु पर प्रकृतिक अधीन भए नाना प्रकारक कर्म करैत रहैत छी।

यदि प्रकृतिसँ भिन्ने छी तँ हमरा लगहुमे रहि कोनो प्रकारक भय अहाकेँ नहि होयबाक चाही।

सांख्यशास्त्रक अनुसार एहि प्रकारक वचन सुनि वेदान्त मतमे स्थित

शिव गौरीकेँ कहलथिन्ह-यदि सांख्यमतकेँ धारण कए अहाँ एहि प्रकारक वचन कहैत छी तँ हमर सेवा करू किन्तु ओ सेवा शास्त्रसम्मत होएबाक चाही।[२४]

एहि प्रकारेँ पुराणमे गौरीशंकरक छवि कखनहुँ प्रकृति-पुरुषक रूपमे अंकित भेल अछि जे विभिन्न भारतीय विचारधाराकेँ सर्वजन संवेद्य बनयबाक श्रेय रखैत अछि। एहि सन्दर्भमे गौरीशंकरक कथाक अनेक रूप सेहो रोचक भेल अछि। एही रोचक पौराणिक कथाकेँ आदर्श मानि गौरीशंकर विषयक साहित्यक रचना सेहो व्यापक रूपेँ भेल।

आगममे गौरीशंकरः

जहिना पुराणमे गौरीशंकरक श्रेष्ठता सिद्ध कयल गेल अछि तहिना आगममे हिनक आराध्य स्वरूपक वर्णन विस्तार पूर्वक कयल गेल अछि। ई मानल गप्प अछि जे आगमक प्रादुर्भाव पुराणसँ पूर्वकालमे भेल। आगममे भारतीय दर्शन, योग, तन्त्र आदिक समावेश रहने ओकर व्याख्या सर्वजन संवेद्य नहि भ' सकल होएत। पश्चात् एकटा एहेन शास्त्रक आवश्यकताक अनुभव चिन्तक लोकनिकेँ भेल हेतनि, जाहिसँ विभिन्न आगमक वैचारिक धारासँ जनसाधारणकेँ अवगत करा सकथि। तेँ पुराणक रचना भेल होएत। पुराण एकरा सरल कथा वा आख्यानक रूपमे देवी-देवताक वा पाप-पुण्यसँ लोककेँ अवगत करबैत छैक।

ओना डा० यदुवंशी कहैत छथि- शैव-दर्शनक लोक प्रचलित रूपक विकासक संग-संग ओकर दार्शनिक रूपक विकास सेहो भेल आ' अन्तमे ओ एकटा स्वतन्त्र दर्शनक रूप धारण क' लेलक, जे शैव सिद्धान्तक नामे विख्यात भेल। एहि सिद्धान्तक निरूपण पहिने जाहि शास्त्रमे भेल ओ आगम कहओलक।[२५]

एहिसँ पहिने ओ विभिन्न पुराणक चर्चा कयने छथि। किन्तु हुनक एहि मतक प्रति सन्देह व्यक्त कयल जा सकैत अछि। कारण जे विभिन्न पुराणमे विभिन्न दर्शनक उल्लेख कयल गेल अछि।[२६]

अतः ई मानब विशेष उपयुक्त अछि जे आगमक विचारक प्रचारक हेतु पुराणक रचना भेल आ' तेँ आगमकेँ पुराणसँ प्राचीन मानब उचित होएत।

आगममे वैष्णव, शैव ओ शाक्त परम्पराक विस्तृत उल्लेख अछि। वैष्णवमत शैव आ' शाक्त मतक सर्वथा विपरीत मार्ग प्रदर्शित करैत अछि। किन्तु शैवमत एवं शाक्तमतक किछु भिन्न मार्ग रहनहुँ एक-दोसराक प्रति

विरोध नहि प्रकट करैत अछि। अनेक स्थलपर तँ एतेक साम्य अछि जे एक-दोसरासँ अभिन्न बुझि पड़ैत अछि। किन्तु दुनूमे एकटा मौलिक अन्तर छैक जे शैव मतमे शिवक प्राधान्य एवं शाक्तमतमे शक्तिक प्राधान्य देल गेल अछि।

मुण्डमाला तन्त्रमे दुर्गारूपा शक्तिक स्तुति शतनामक द्वारा कएल गेल अछि, जाहिमे हुनका [शक्तिके] भवानी, रुद्राणी, माहेशी, हरवल्लभा, विश्वनाथप्रिया, शिवा, महादेवप्रिया, शर्वाणी, महेशशक्ति, गौरी, पर्वतनन्दिनी, गणेशजननी, भैरवी, दक्षयज्ञविनाशिनी कहि शंकरक आर्द्धांगिनी मानल गेल अछि।[२७]

महाकाल संहितामे शिव-शिवा संवाद रूपमे तान्त्रिक साधनाक विश्लेषण अछि।

योग एवं तन्त्रक विकासक संग गौरीशंकरक विभिन्न रूप परिलक्षित भेल। जाहिमे हिनक शिव-शिवा, भैरव-भैरवी, रुद्र-रुद्राणी आदिक संज्ञा देल गेल अछि।

आदिकाव्यक गौरीशंकर

आदिकाव्य वाल्मीकि रामायणमे गौरीशंकरक चर्चा एकटा प्रसंग-कथाक रूपमे कयल गेल अछि। रामक मिथिला अयबा काल मार्गमे सन्ध्या भए जाइत छन्हि। विश्वामित्र आदि ऋषि लोकनि तथा लक्ष्मण शोणभद्र नदीक पार गंगाक तटपर रात्रिवासक हेतु विलमि जाइत छथि। एही क्षणमे राम विश्वामित्रसँ गंगाक उत्पत्तिक कथा पुछैत छथि।

विश्वामित्र कहैत छथि जे पूर्वकालमे महातपस्वी भगवान् नीलकण्ठ नववधू उमादेवीक संग सए वर्ष धरि समागम करैत रहलाह। हुनका लोकनिक एतेक वर्ष धरि विहार कयलोपर जखन कोनहु पुत्रक प्राप्ति नहि भेलनि तँ ब्रह्मा आदि सभ देवगण चिन्तत भए गेलाह। ओ सभ सोचलनि जे एतेक दीर्घकालक पश्चात् यदि रुद्रक तेजसँ उमादेवीक गर्भसँ कोनो महान् प्राणी प्रकट भैयो जाइक तँ हुनक तेजकेँ के सहि सकैत अछि?

एतबा विचारि सभ देवता भगवान् शिवक समक्ष जाए स्तुति कएलनि, जे अहाँ लोकहितमे तत्पर रहनिहार देवता छी। अतः अपन तेजकेँ अपनहिमे स्थित राखू, कारण जे ई लोक अहाँक तेजकेँ सहन करबामे असमर्थ भए जायत। तेँ अहाँ वेदबोधित तपस्यासँ युक्त भए उमादेवीक संग तपस्या करू।

महादेव 'एवमस्तु' कहि देवगणकेँ सान्त्वना देलनि। एकर संगहि ओ एकटा समस्या सेहो देवगणक समक्ष उपस्थित कएलनि। ओ ई जे यदि हमर तेज क्षुब्ध भए स्खलित भए जाए तँ ओकरा के सहन करत? देवगण बजलाह जे ओकरा पृथ्वी सहन कए लेतीह। तखन महेश्वर उमादेवीक संग पश्चिम दिशामे तपस्याक हेतु चल गेलाह। हुनक वीर्य क्षुब्ध भए पृथ्वी पर खसि पड़ल।

अपन रति-क्रीड़ामे व्यवधान होइत देखि पार्वती अत्यन्त क्रुद्ध भए गेलीह। क्रोधवश ओ देवता लोकनिकेँ शाप देलनि जे हमरा अहाँ पुत्र प्राप्तिक मार्गमे बाधा उपस्थित कएलहुँ, तेँ अहूँ लोकनि अपन-अपन पत्नीसँ पुत्र उत्पन्न करबामे असमर्थ होयब। पुनः ओ पृथ्वीकेँ शाप देलनि जे अहाँ अपन पुत्रसँ कहियो सुखक अनुभव नहि कए सकब।

एमहर शिवजीक स्खलित वीर्य पृथ्वीपर आबि पर्वत तथा वनमे व्याप्त भए गेल। देवता लोकनि अग्निकेँ परामर्श देलनि जे अहाँ वायुक सहयोगसँ भगवान् शिवक एहि महान् तेजकेँ धारण क' लिअ'। अग्निसँ संयुक्त भेलापर ओ तेज समटिकए एकटा श्वेत पर्वतक रूपमे परिणत भ' गेल। ओतए दिव्य सरकण्डाक वन सेहो प्रकट भए गेल जे सूर्य-चन्द्र जकाँ देदीप्यमान छल।

ओहि तेजसँ पृथ्वी व्यथित भए गेलीह। तखन उमादेवीक जेठ बहिन गंगाक गर्भमे अग्नि द्वारा ओहि तेजक स्थापना भेल। परन्तु गंगा स्वयं ओकरा नहि धारण क' सकलीह। ओ अत्यन्त दाह देनिहार छल। ओ वायुसँ प्रार्थना कएलनि जे एकरा छोड़बाक कोनो स्थानक निर्देश करू।

अग्निदेव बजलाह जे एहि तेजकेँ हिमालयक पार्श्वभागमे स्थापित कए दियौक। गंगाजी सएह कएलनि। ओहिठामक सभटा वस्तु सुवर्णमय भए गेल। एहि प्रकारेँ रुद्रक तेजस्वी वीर्य अपन मूर्त्त रूपमे प्रकट भेल।

एहि कुमारकेँ दूध पिअएबाक हेतु इन्द्र तथा मरुद्गण सहित सम्पूर्ण देवता लोकनि छवो कृत्तिकाकेँ नियुक्त कएलनि। कृत्तिका लोकनि एहि शर्त्तपर कुमारकेँ दूध पिआएब गछि लेलखिन्ह जे ई हमरे पुत्र कहबथि। देवता लोकनि बजलाह जे ई अहाँ लोकनिक त्रिभुवन विख्यात पुत्र होयताह।

एहि प्रकारेँ वाल्मीकीय रामायणक अनुसारें कार्तिकेय शिव तथा गौरी द्वारा स्कन्दित [स्खलित] भेलाह, गंगाक गर्भसँ हुनक स्राव भेलनि तथा कृत्तिका द्वारा ओ पालित भेलाह।

गंगाक गर्भस्रावकालमे ओ स्कन्दित भेलाह तँ देवता लोकनि हुनका स्कन्द कहलखिन्ह। कृत्तिकालोकनि माता जँ पालन-पोषण कयलखिन्ह तँ ओ कार्तिकेय कहौलन्हि।

एहि कथासँ ई ध्वनित होइत अछि जे वाल्मीकि गौरी-शंकरके अलौकिक शक्ति-सम्पन्न देवता मानैत छलाह।

खाहे स्वर्गलोक हो वा मर्त्यलोक, धर्म मात्रक अस्तित्व कोनो स्थान पर नहि रहैत छैक। पाप तथा पुण्य, सुख तथा दुःख दुनूक संयोगसँ सृष्टिक स्थिति सम्भव छैक।

उमा-महेशक संयोगसँ जाहि तेजस्वी अर्थात् धर्म, शक्ति आदि दैवीगुणसँ युक्त बालकक जन्म होइतैक, ओकर पाप, दुःख आदिक अस्तित्त्व नहि रहितैक, जकर बिना कोनहुँ लोकक अस्तित्त्व संभवे ने छैक। देवतालोकनि ताही भयसँ दूनूक [गौरीशंकरक] सहवासमे व्यवधान उपस्थित कयलनि।

हुनका लोकनिक ई प्रयास सफल भ' गेलनि। शिवक वीर्य स्कन्दित तँ भेलनि किन्तु उमादेवी ओकरा अपन गर्भमे आधान नहि कयलनि तेँ ओ' तेज कुमार स्कन्दक रूपमे प्रकट भए देवसेनाक अधिपति भेल। यदि उमादेवी सेहो एहि तेजकेँ अपन गर्भमे रखितथि तँ ओ एतेक अधिक तेजस्वी भए जैतैक जकरा सहब लोकक हेतु असम्भव भए जैतैक।

एही प्रसंगमे दोसर उल्लेख ई भेटैत अछि जे भगीरथक तपस्यासँ प्रसन्न भए ब्रह्मा हुनका कहलखिन्ह गंगा यदि पृथ्वी पर अवतरित होइतीह तँ हुनक भार शूलधारी हरकेँ छोड़ि दोसर केओ नहि धारण क' सकत, तँ पहिने हुनका नियुक्त करू। ब्रह्माक वचन सुनि भगीरथ सए वर्ष धरि घोर तपस्या कएलनि। ताहिसँ प्रसन्न भए उमापति हुनकापर प्रसन्न भए मनोभिलषित वरदान देलखिन्ह एवं गंगाकेँ अपन मस्तकपर धारण कएलनि। पुनः गंगा सोचलनि जे हम अपन दुर्धर वेगसँ शंकरके सेहो भसिअबैत-भसिअबैत पाताल ल' जयबनि। हुनक एहि अभिमानसँ त्रिनयन हर क्रुद्ध भए गेलाह। गंगा जखनहिँ हुनक मस्तकपर अएलीह तखनहिँ हुनक जटमण्डलक गह्वरमे आबद्ध भए गेलीह एवं पृथ्वीपर पहुँचबामे असमर्थ भए गेलीह। पुनः भगीरथ तपस्या कएलनि। ओ [शंकर] गंगाके बिन्दुसरमे विसर्जित कएलनि।[२८]

ध्यातव्य जे एहि कथामे यद्यपि गौरीक चित्रण नहि अछि मुदा शंकरक हेतु उमापतिक पदसँ गौरीक चर्चा भेल अछि। संगहिँ शूलपाणि, हर, त्रिनयन, पशुपति ओ रुद्र नामक प्रयोगसँ सिद्ध होइत अछि शिवक उक्त नाम आदिकाव्यक रचनाकाल धरि खूब प्रचलित भए गेल छल।

आदिकाव्यमे समुद्रमन्थनक कथा कहैत विश्वामित्र रुद्र द्वारा हालाहलपानक उल्लेख करैत छथि।(२९) किन्तु ओहिमे गौरीक चर्चा नहि अछि। कारण जे समुद्रमन्थनक समय धरि गौरीक संग महादेवक विवाह नहि भेल छलनि। ओ तँ सतीदाहक पश्चात् भेलनि।

आदिकाव्यमे गौरीशंकरसँ सम्बन्धित एकटा आओर कथा बड़ रोचक अछि। रावण मदोन्मत्त भए एकबेर शरवण पहुँचलाह, मुदा ओहिठाम पहुँचतहिँ हुनक पुष्पक विमान स्तब्ध भए गेल। तखन ओ उतरि पएरे आगाँ बढ़ए लगलाह कि एतबहिमे नन्दी हुनक मार्ग रोकि बजलाह जे शंकर एहि पर्वत पर क्रीड़ा कए रहल छथि, तेँ अहाँ घुरि जाउ। मुदा रावण शंकरक प्रति तिरस्कारपूर्ण वचनसँ नन्दीक उपहास करए लगलाह। ताहिपर नन्दी शाप दए देलथिन्ह जे अहाँक वंश हमरे सन रूपधारी वानरक द्वारा नष्ट भए जाएत। तथापि रावण ओकर उपेक्षा कए क्रोध ओ अभिमानपूर्वक ओहि पर्वतक जड़ि हिलबए लगलाह।

पर्वत हिलि गेल। महादेवक गण सब आकुल भए गेल। पार्वती सेहो भयभीत भए गेलीह। तखन महादेव अपन पएरक औंठासँ पहाड़केँ दाबि देलनि। रावणक बाँहि ओहि पर्वतक तरमे दबि गेल। ओ जोर-जोरसँ आर्त्तनाद करए लगलाह। हुनक मन्त्रीसभ से देखि कहल जे जहाँ महादेवक स्तुति करू। ओ बड़ कृपालु छथि। अहाँ पर प्रसन्न भए कष्टसँ मुक्ति देबे करताह।

तखन दशमुख रावण वृषध्वजकेँ सामस्तोत्र आदिसँ स्तुति करए लगलाह। हजार वर्ष धरि स्तोत्र पाठ कएलापर महादेव हुनकापर प्रसन्न भए संकटमुक्त कएलथिन्ह आओर कहलथिन्ह जे आइसँ अहाँक नाम रावण होएत।

रावण तखन हुनका पुनः प्रसन्न कए अवध्यताक वरदान प्राप्त कएलनि। एकर अतिरिक्त शंकरसँ हुनका चन्द्रहास नामक खड्ग सेहो प्राप्त भेलनि।[३०]

गौरीशंकरक उल्लेख आदिकाव्यक एकटा आओर प्रसंगमे भेल अछि। विद्युत्केश ओ सालकटंकटा एकटा पुत्रकेँ जन्म दए ओकरा एकाकी छोड़ि पुनः रमण करबाक हेतु चल गेल। ताही समयमे शिव ओ पार्वती वृषभपर चढ़ि

ओम्हर बाटे आकाशमार्गें जाइत रहथि। ओहि एकाकी बालककेँ कनैत देखि ओ लोकनि दया-द्रवित भए गेलाह। पार्वतीक प्रेरणासँ शिव ओहि बालक केँ माताक अवस्थाक समान बनाए देलनि। एकर अतिरिक्त ओकरा हेतु नगराकार विमान सेहो देलनि। उमा सेहो ई वरदान देलखिन्ह जे आइसँ राक्षसी सभ सद्यःउपलब्ध गर्भ प्रसव करत आ' ओकर सन्तान माएक समान वय सद्यः प्राप्त क' लेत।[३१अ]

एहि प्रकारैँ कहि सकैत छी जे आदिकाव्यमे शिव श्रेष्ठ देवताक रूपमे प्रतिष्ठित छथि। गौरी हुनक सहचरी छथिन्ह, जनिकासँ प्रेरणा प्राप्त कए ओ अनेक शुभकार्यक सम्पादन करैत छथि। किन्तु जेना हलाहल पान आदिक कथामे रुद्रक स्वतन्त्र अस्तित्व सेहो परिलक्षित होइत अछि तेना शक्ति वा देवीक अस्तित्व शिवसँ भिन्न कतहु ने दृष्टिगोचर भेल अछि। गौरी शिवक अर्द्धांगिनी छथिन, जनिक सहयोगसँ देवलोकक कल्याण भेल अछि।

महाभारतमे सेहो एही आशयक, किन्तु किछु भिन्न रूपें गौरीशंकर विषयक उल्लेख भेल अछि। महाभारतक वनपर्वमे स्कन्दजन्मक कथा वर्णित अछि जाहिमे देवीक [पार्वतीक] तपश्चर्या, शिवक प्रति आकर्षण एवं गौरीशंकरक परस्पर अनुराग अभिव्यक्त भेल अछि।[३१आ]

गौरीशंकरक चर्चाक क्रममे भारतीय वाङ्मयक एकटा विस्तृत पक्ष उल्लेखनीय अछि। ओ थिक विभिन्न मतक सहज उद्गार जे स्तोत्रकाव्यक रूपमे प्रसिद्ध अछि।

अनेक स्तोत्रमे शंकराचार्य विरचित शिवमानसपूजास्तोत्र,[३२] शिवापराधक्षमापनतोत्र,[३३] वेदसार शिवस्तोत्र,[३४अ] रावणविरचित शिवताण्डवस्तोत्र,[३४आ] आदि प्रसिद्ध अछि। किन्तु एहिमे शिवक प्रति भक्तिभावनाक उल्लेख प्रचुरतया भेल अछि। गौरीशंकरक संयुक्त स्वरूपकेँ ध्यानमे राखि जे स्तोत्र अछि ताहिमे श्री शंकराचार्यक आर्द्धनारीनटेश्वरक स्तोत्र उल्लेखनीय अछि।[३५]

एहि स्तोत्र सभक पदलालित्य ओ गेयधर्मिता ततेक लोकप्रिय भेल जे एकर पाठ करब अनेक सनातन धर्मावलम्बीक दिनचर्याक अभिन्न अंग भए गेल अछि। किन्तु एहि स्तोत्र सभक गौरीशंकरक छवि लौकिकताक धरातल पर जाहि सन्दर्भमे भेल अछि, ताहिमे मानवीय संवेदना एवं दैवीगुणक अपूर्व समन्वय परिलक्षित होइत अछि। गौरीशंकरक ओ रूप उत्कृष्ट साहित्य बनि गेल

अछि एवं ओहि रचनाक [साहित्यक] गौरीशंकर भारतीय वाङ्मयक अन्य पक्षक गौरीशंकरसँ किछु भिन्न रूपमे उपस्थित होइत छथि।

प्रस्तुत प्रबन्धक प्रतिपाद्य विषयक थिक 'मैथिली ओ संस्कृत साहित्यक गौरीशंकर'। एतए साहित्य पद एकटा शास्त्रहिक रूपमे विवक्षित अछि जे, आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता एवं राजनीति[३६] सँ भिन्ने वस्तु थिक। जेना कि महाकवि राजशेखर एकरा [साहित्यके] मानैत छथि।[३७]

उक्त कथनसँ हमर ई आशय जे वर्त्तमान कालमे साहित्य पद अंग्रेजी शब्द 'लिटरेचर'क अनुवाद रूपमे व्यवहृत होमय लागल अछि एवं ओहि अनुसारेँ वैदिक लिटरेचर, तांत्रिक लिटरेचर आदिक अनुवाद वैदिक साहित्य, तान्त्रिक साहित्य आदि रूपमे खूब प्रचलित भए गेल अछि। एहि प्रयोगसँ साहित्यक शास्त्रीय पक्षक [जे कि रस, ध्वनि, गुण आदिसँ पूर्ण अछि] प्रति भ्रम उत्पन्न होएब स्वाभाविक। अर्थात् अंग्रेजीक प्रभावेँ साहित्यक शाब्दिक प्रयोग वाङ्मयार्थक [वेद, उपनिषद् आदिक सन्निवेश जाहिमे हुअए] होमए लागल अछि। किन्तु प्रस्तुत प्रबन्धक साहित्य पदसँ एकर शास्त्रीय पक्ष मात्र अभिप्रेत अछि। एहि तथ्यकेँ आओर स्पष्ट करबाक हेतु साहित्य पदक इतिहासक उल्लेख अपेक्षित अछि, जकर चर्चा एहि प्रबन्धक 'साहित्यक शिव एवं गौरीशंकर' नामक शीर्षक निबन्धमे कएल गेल अछि।

❖❖❖

१ [क] अहं रुद्रेभिरित्यस्य वागाम्भृणी ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वागाम्भृणी देवता देवीसूक्तजपे विनियोगः।

अहं रूद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणोभाविभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा।।१.। अहं सोममाहन सम्बिभर्म्यहन्त्वष्टारमुत पूषणंभगम्। अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते।।२.। अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। ताम्मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्राभूर्यावेशयन्तीम्।।३.। मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति यईं श्रृणोत्युक्तम्। अमन्तवोमान्त उपक्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवन्ते वदामि।।४.। अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टन्देवेभिरुत मानुषेभिः। यङ् कामये तन्तमुग्रं कृणोमि तम्ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्।।५.। अहं रुद्राय धनुरातनोमि

ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवाउ। अहञ्जनाय समदं कृणोम्यहन्द्यावापृथिवी आविवेश।।६.। अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे। ततो वितिष्ठे भुवनानि विश्वोतामून्द्यां वर्ष्मणोपस्पृशामि।।७.। अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा। परोदिवा पर एना पृथिव्यै तावती महिना सम्बभूव।८.। देवीसूक्त, ऋग्वेद।

१. [ख] ऋग्वेदः २, ३३, १०, ७, ४६, १.

२. मत्स्यपुराणः अध्याय २५९:

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि अर्धनारीश्वं परम्।

अर्धेन देवदेवस्य नारीरूपं सुशोभना।।

३. ऋग्वेद, २, ३३, १०, ७, ४६, १, १४३, ६, २, ३३ इत्यादि।

४. अर्थर्ववेद, १५, ५, १ से ७ मन्त्र।

५. श्वेताश्वतर उपनिषद, १/१०

६. श्वेताश्वतर उपनिषद, ३/२

७. श्वेताश्वतर उपनिषद, ३/५

८. श्वेताश्वतर उपनिषद, ३/४

९. श्वेताश्वतर उपनिषद, ३/६

१०. श्वेताश्वतर उपनिषद, ३/६

११. श्वेताश्वतर उपनिषद, ३/११

१२. सौर०– २/१६, अग्नि०–९६, १००-१०६ इत्यादि।

१२ अ. वायु०– ३०, २८३-८५ इत्यादि।

१३. १. ब्रह्मपुराण, २. पद्मपुराण, ३. विष्णुपुराण, ४. गरुड़ पुराण, ५. लिंग पुराण, ६. वायुपुराण, ७. नारद पुराण, ८. भागवत पुराण, ९. अग्नि पुराण, १०. स्कन्द पुराण, ११. भविष्य पुराण, १२. ब्रह्मवैवर्तपुराण, १३. मार्कण्डेय पुराण, १४. वामन पुराण, १५. वराह पुराण, १६. मत्स्य पुराण, १७. कूर्म पुराण, १८. ब्रह्माण्ड पुराण।

१४. सौर पुराण, ७, ३०, ३८, १, ३८, ९०

१५. लिंग पुराण, २१, १६

अग्नि पुराण, ८८, ० ब्रह्मपुराण, १, २९ मत्स्य पुराण, १३२, २०, १५४, २६०-७० वायु पुराण, ४५, १०० आदि।

१५. लिंगपुराण, भाग– २, २१, ४९. वायुपुराण– ५५, ३ गरुडपुराण– १६, ६० इत्यादि।

१६. शिवपुराण, वि० १२३/२६, २७. [डा० यदुवंशीक शैवधर्म्स, पु० ९०]

१७. शिवपुराण वि० २३/२९-३३.

१८. शिवपुराण– अध्याय ६.

१९. शिवपुराण– अध्याय ६.

२०. अग्निपुराण ९८, १००–०६, सौरपुराण २५, १३–३३ इत्यादि।

२१अ. सौरपुराण २५, १३–२३, मत्स्यपुराण १३, १८ इत्यादि।

२१आ. पुनश्च गौरी देहात्सा समुद्भूता यथाऽभवत्।

वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः।।

रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी।

...दुर्गा सप्तशती, अध्याय ४, श्लोक, ४१–४२.

तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाऽभूत्सापि पार्वती।

कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया।।

– दुर्गाशप्तशती, अ० ५, श्लो० ८८.

२२ अ. दुर्गा सप्तशती अध्याय–१, श्लेक ७२ एवं ७८.

२२ अ. मत्स्य पुराण ६०, २२.

२३. वायु पुराण २४, १४१.

२४. शिवपुराण अध्याय– १३,

२५. डा० यदुवंशी– सप्तम अध्याय [शैवमत, पृ० १६५]

२६. शिवपुराण।

२७. मुण्डमाला तन्त्र द्वितीय पटल।

२८. बालकाण्ड सर्ग– ४२–४३

२९. बालकाण्ड सर्ग- ४५.

३०. उत्तरकाण्ड सर्ग-१६.

३१ अ. उत्तरकाण्ड सर्ग- ४.

३१. आ. द्रष्टव्य वनपर्व- अध्याय- १८८.

३२. रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्न विभूषितम् मृगमदामोदांकितं चन्दनम्।
जाती-चम्पक-विल्वपत्र-रचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम्।।१.।

३३. नो शक्यं स्मार्तकर्म प्रतिपदसहनप्रत्यवायाकुलाख्यं
वार्ता कथं मे द्विजकुलविहिते ब्रह्ममार्गे सुसारे
व्रतो धर्मो विचारैः श्रवणमननयोः किं निदिध्यासितव्यं।
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव-शिव-शिव भोः श्री महादेव शम्भो।।५.।

३४ अ. पशूनां पतिं पापनाशं परेशं गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम्।
जटाजूटमध्ये स्फुरद्गङ्गवारिं महादेवमेकं स्मरामि स्मरामि।।१.।

३४ आ. जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी
विलोलवीचि-वल्लरी-विराजमानमूर्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वल्ललल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम।।

३५. चाम्पेय-गौरार्द्ध-शरीरकायै
कर्पूरगोरार्धशरीकाय।
धम्मिल्लकायै च जटाधराय
नमः शिवायै च नमः शिवाय।।१।।
कस्तूरिका-कुंकुम-चर्चितायै
चितारजःपुञ्ज-विचर्चिताय।

कृतस्मरायै विकृतस्मराय

नमः शिवायै च नमः शिवाय।।२।।

चलत क्वणत्–कंकणनूपुरायै

पादाब्जराजत्फणिनूपुराय।

हेमांगदायै भुजगांगदाय

नमः शिवायै च नमः शिवाय।।३।।

विशालनीलोत्पललोचनायै

विकासपंकेरुहलोचनाय।

समेक्षणायै विषमेक्षणाय

नमः शिवायै च नमः शिवाय।।५।।

३६. *आन्वीक्षिकी अर्थात् वर्तमानकालक तर्कशास्त्र। त्रयी– अर्थात् वर्तमानकालक तीनू वेद– ऋग्वेद, सामवेद एवं यजुर्वेद। वार्ता– अर्थात् वर्तमानकालक अर्थशास्त्र। दण्डनीति– अर्थात् वर्त्तमानकालक राजनीतिशास्त्र।*

३७. *पञ्चमी साहित्य विद्येति यायावरीयः। सा हि चतसृणामपि विद्यानां निष्यन्दः।– राजशेखर।*

❑❑

अध्याय - २

साहित्यक शिव एवं गौरीशंकर

साहित्य पदक व्युत्पत्ति एना होइत अछि- सहित+ष्यञ् = साहित्यम्। सहित शब्दक अर्थ थिक संबद्ध, अर्थात् सम्बन्धसँ युक्त। सम्बन्ध दू भिन्न पदार्थमे होइत छैक, तेँ जिज्ञासा होइछ जे ओ कोन दू तत्त्व थिक जे परस्पर सम्बद्ध भए साहित्य भेल। तेँ प्राचीन आलंकारिक आचार्य भामह परस्पर संबद्ध शब्द तथा अर्थकेँ काव्यक स्वरूप मानल अछि।[१]

शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्[२]

दू भिन्न तत्त्व- शब्द ओ अर्थ मीलि साहित्यक सृजन करैत अछि- आचार्य भामहक एहि कथनकेँ परवर्त्ती समीक्षक लोकनि आओर स्पष्ट कएलनि।

ओना शब्द ओ अर्थ तँ एक दोसरक हेतु सभठाम प्रयुक्त होइते अछि, तखन काव्य मात्रक हेतु एहि वचनक की प्रयोजन? एकर उत्तरमे विद्वान् लोकनि कहैत छथि जे सुन्दर अर्थक प्रतिप्रादनक क्षमता रखनिहार वाक्य काव्य कहबैत अछि।[३] केओ रमणीय अर्थकेँ तँ केओ वक्रोक्तिकेँ[४] काव्य कहलनि।

साहित्यमे शब्द ओ अर्थक अनन्य सम्बन्ध एवं ओकर रमणीयताक मूर्त्त स्वरूप गौरीशंकरमे निहित अछि। तँ अनेक विद्वान् साहित्यमे शिवक छविक कल्पना कएलनि, जे कालक्रमे साहित्यक एकटा सर्वमान्य एवं अभिन्न तत्त्व भए गेल।

सर्वप्रथम महाकवि कालिदास अपन काव्यक स्वरूपकेँ गौरीशंकरक

स्वरूपसँ तुलना करैत कहैत छथि –

'वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये,

जगतः पितरौ वन्दे, पार्वतीपरमेश्वरौ।'[४]

शब्द एवं अर्थ जकाँ गौरीशंकर एक दोसरासँ अभिन्न छथि।

कालिदासक उपर्युक्त पदमे काव्यक अर्थ ध्वनित भेल अछि। शिवकेँ परमेश्वर कहल गेल अछि। दर्शनक परब्रह्म त्रिधा मूर्तिक रूपमे पौराणिक युगमे पूज्य मानल गेलाह। शिवक पद सर्वश्रेष्ठ मानल गेल, जकर पुष्टि कालिदासक परमेश्वर शब्दसँ होइत अछि। काव्यमे शिवक एहेन स्थान हुनका पार्वतीक सान्निध्यक कारणेँ प्राप्त भेल छनि। गौरीक सौभाग्य अखण्ड छनि। शिवक अनन्यासक्ति हुनका प्राप्त छनि। एतबे नहि, शिवक साहचर्यसँ हुनका स्कन्द सन तेजस्वी बालक प्राप्त भेलथिन्ह, जे असुरक संहार कए देवगणक रक्षा कएलनि।

गौरीक रूपमे शक्तिक आविर्भाव प्रसिद्ध अछि।[६] ओना एहि शक्तिक अनेक रूप दुर्गा, लक्ष्मी आदि वर्णित भेल अछि, किन्तु परमेश्वर शिवक अर्द्धांगिनी, एवं स्कन्दक माता गौरिए भेलीह।

रत्नगर्भा होएबाक सौभाग्य गौरिएके भेटलनि, तेँ शिव–शक्तिक पूज्य स्वरूप गौरीशंकर प्रत्येक प्राणीक हेतु आराध्य छथि।

महाकवि तँ केवल शिवहिकेँ ईश्वर मानैत छथि –

एकैश्वर्ये स्थितोऽपि प्रणतबहुफले यः स्वयं कृत्तिवासाः

कान्तासंमिश्रदेहोऽप्यविषयमनसां यः परस्ताद्यतीनाम्।

अष्टाभिर्यस्य कृत्स्नं जगदपि तनुभिर्विभ्रतो नाभिमानः

सन्मार्गालोकनाय व्यपनयतु स नस्तामसीं वृत्तिमीशः।।१.।

प्रेयसी संश्लिष्ट रहितहुँ शिव अनासक्त छथि। जगतक कल्याणक हेतु ओ प्रतिक्षण तत्पर रहैत छथि। शिवक ई स्वरूप वस्तुतः काव्यक आत्मा बनि गेल अछि।

शब्द ओ अर्थ दुनूक संयोगसँ काव्य–स्कन्दक जन्म होइत अछि, जाहिसँ सहृदयकेँ अमृत सन आह्लाद प्राप्त होइत छनि। बुझि पड़ैत अछि जे एही

भावनासँ शिव–पार्वतीक विवाहक माध्यमे वाणी एवं अर्थक समन्वय कालिदासकेँ दृष्टिगोचर भेलनि। देवता लोकनि हिमवानसँ कहैत छथिन जे जहिना वाणीकेँ अर्थसँ सम्बन्ध छैक, तहिना विवाहक द्वारा अहूँ अपन पुत्रीक दृढ़ सम्बन्ध शिवसँ करा दिऔक–

तमर्थमिव भारत्या सुतया योक्तुमर्हसि।

अशोच्या हि पितुः कन्या सभर्तृप्रतिपादित।।[८]

महाकवि कालिदासक ई विचार वस्तुतः सनातन धर्मक अनुरूपे भेल अछि। हुनकासँ पूर्वहुँ 'अर्थः शिवः शिवा वाणी'[९] कहि शिवक महिमाक प्रति आचार्य लोकनि आस्था व्यक्त कएने छलाह।

कालिदासक उक्त आशयसँ एतबा अवश्य सिद्ध होइत अछि जो काव्यक स्वरूपकेँ ओ स्पष्ट कएलनि। शिवक शाश्वत सौन्दर्यकेँ दार्शनिक लोकनि तँ कल्याणकर मानितहि छथि।

'शैव उपनिषदोमे शब्दकेँ नारी एवं अर्थकेँ पुरुष रूप दए गौरीशंकरक स्मरण कयल गेल अछि –

रुद्रोऽर्थोक्षरः सोमा तस्मै तस्यै नमो नमः।

कालिदासक परवर्ती रचनाकार नीलकण्ठ दीक्षित एहि तथ्यक पुष्टि **'सव्यं वपुः शब्दमयं पुरारेरर्थात्मकं दक्षिणमामनन्ति'**[१०] [परमेश्वरक वाम भाग शब्द रूप एवं दहिन भाग अर्थमय छनि] कहि कएलनि। एहिसँ काव्य पदसँ शिवक पर्याय होएब ध्वनित होइत अछि।

आधुनिककालमे सेहो शिवक कल्याणकर स्वरूप गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुरक कथन 'सत्यं शिवं सुन्दरं' मे परिलक्षित होइत अछि। वस्तुतः गुरुदेव पाश्चात्त्य विद्वान् लोकनिक कथन ईश्वर प्रेम थिकाह, प्रेम ईश्वर थिकाह [गौड इज लव एण्ड लव इज गौड] तथा सत्य सौन्दर्य थिक एवं सौन्दर्य सत्य थिक [ट्रुथ इज ब्यूटी, ब्यूटी इज ट्रुथ]क उक्तिमे अपना लोकनिक प्राचीन आचार्य सभक भावक परिकल्पना कएलनि। शिवक कल्पना कीट्सक ईश्वर [गौड] पदमे निहित अछि।

एहि प्रकारेँ उपनिषदकालसँ अध्यावधि काव्यमे शिवक छविक अंकन व्यापक ओ सुन्दर भेल अछि।

❖❖❖

१. साहित्य शब्दक इतिहास: मिथिला मिहिर, १९ सितम्बर, १९८५ [ले० डा० किशोरनाथ झा]

२. काव्यालंकार: १.१६ [भामह]

३. रमणीयार्थ प्रतिपादक: शब्द: काव्यम्–रसगंगाधर:–पण्डितराज जगन्नाथ।

४. वक्रोक्ति: काव्य जीवितम् – कुन्तक।

५. रघुवंश [मंगलाचरण]: – कालिदास।

६. पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाऽभवत्–दुर्गासप्तशती।

७. मालविकाग्निमित्रम् [मंगलाचरण]: कालिदास।

८. कालिदास, कुमारसंभव– षष्ठ सर्ग:, श्लोक– ०९.

९. लिंगपुराण।

१०. नीलकण्ठ दीक्षित, शिवलीलार्णव।

❑❑

अध्याय–३

भारतीय संस्कृतिमे प्रणयक आदर्श एवं गौरीशंकर

संस्कृति संस्कारक पर्याय थिक। व्याकरणक दृष्टिएँ संस्कृति शब्द 'सम्' उपसर्ग कृ 'धातु'सँ भूषण अर्थमे 'सुट्'क आगम कए क्तिन् प्रत्यय कएलापर निष्पन्न होइत अछि।[१] अतः एकर व्युत्पत्तिपरक अर्थ भेल सम्यक् प्रकारसँ भूषित कृति। संस्कृति अर्थात् उचित रीतिसँ कार्य करबाक कारणेँ मानव अन्य प्राणीसँ पृथक् मानल जाइत अछि।

सुसंस्कृत समाजमे अथवा व्यक्तिमे रहन–सहन, आचार–विचार सभटाक व्यवस्था लोकहितकेँ ध्यानमे राखि करए पड़ैत छैक। एतेक धरि जे स्त्री ओ पुरुषक सम्बन्ध सेहो सामाजिक नियममे बद्ध रहैत अछि। युवक ओ युवतीकेँ परस्पर आकर्षण भावक अभिव्यक्ति वा स्वीकृतिक हेतु समाजक अनुमति लिअ' पड़ैत छैक।

भारतीय संस्कृतिक आधार सनातन धर्म[२] थिक, जकर आदि स्रोत वेदकेँ मानल जाइत अछि। एकर अनुसारेँ परिणयमे प्रणयक परिणति होइत छैक, तेँ पहिने प्रणयक मूल अर्थात् विवाहक सम्बन्धमे किछु चर्चा करब उपयुक्त होएत।

वेदमे मनुष्यक जन्मसँ मृत्यु धरिक अनेक संस्कारमे विवाहकेँ बड़ महत्त्वपूर्ण मानल गेल अछि। गृहस्थाश्रममे प्रवेश करबाक हेतु स्त्री–पुरुष पति–पत्नीक रूपमे समाजक समक्ष आजीवन संग रहबाक प्रतिज्ञा करैत अछि। एहि प्रतिज्ञाक अवसरकेँ विवाह कहल जाइत छैक।

विवाहक अनेक नाम प्रचलित अछि। जेना विवाह [जकर अर्थ होइत छैक विशेष प्रयोजनसँ लए जाएब], उद्वाह अर्थात् [कन्याकेँ ऊपर उठायब], परिणय [जकर अर्थ होइत छैक परिक्रमा करब] एवं पाणिग्रहण [जकर अर्थ होइत छैक हाथ पकड़ब]।

विवाहक प्रत्येक विधि पति-पत्नीक सम्बन्धक स्थायित्त्व एवं दृढ़ताक परिचायक होइत छैक। अनेक विधिमे वाग्दान, मण्डप-निर्माण एवं देवपूजा, आभ्युदयिक, वरपूजन, गोत्रोच्चारपूर्वक कन्यादान एवं पाणिग्रहण, अग्नि प्रदक्षिणा, लाजा-होम, सप्तपदी, अश्मारोहण एवं हृदय-स्पर्शक मन्त्र द्वारा वर-वधूसँ बेर-बेर सम्बन्धक दृढ़ताक हेतु प्रतिज्ञा करबैत छैक।[३] एकर अतिरिक्त सिन्दूरदान, त्रिरात्रिव्रत एवं चतुर्थीक विधि सेहो वर-वधू दुनूक सम्बन्धक सतत रक्षाक भावनासँ पूर्ण दुनूक कुलक अभिवृद्धिक कामनासँ होइत छैक।

विवाहक उद्देश्य एकटा सुसंस्कृत जीवनक निर्वाह करब होइत छैक। संस्कृत जीवन अर्थात् आजन्म सम्यक् आचरण राखब, एकटा तपस्या मानल जाइत अछि। पति-पत्नीक सम्बन्ध ओहि तपस्याक साधन एवं ओकर निर्वाह करब साधना थिक। तेँ विवाहमे स्थायित्व एवं त्यागक विशेष महत्त्व छैक।

वर जखन ई कहैत छथि जे अहाँक हेतु देवता लोकनि हमर एवं अहाँक (एहि कन्याक) पालन कएलनि[४] तँ वर-वधूक अहंभावक लेशो नहि रहैत छैक। अग्निक गुण ताप होइत छैक। ओकर शिखा उर्ध्वगामी होइत छैक। वर-वधू अपनाकेँ अग्निक समक्ष अग्निक हेतु समर्पित क' दैत छथि। सम्पूर्ण जीवनकेँ एकटा तपक रूपमे परिणत कए दुनूक जीवन-ज्योति ऊर्ध्वगामी भए' जाइत छैक, ओहि ज्योतिसँ समष्टि आलोकित भ' जाइत छैक।[५]

स्त्री पुरुषक परस्पर उचित सम्बन्धसँ समाजक अभिवृद्धि आ कल्याण होइत छैक एकर कारण व्यक्तिक शरीरमे निहित उर्जाकेँ उचित पद प्राप्त होइत छैक, उचित निर्देश भेटैत छैक। मनुष्यक शरीरमे निहित सृष्टिक शक्तिए ऊर्जा थिक। ओकर अभिव्यक्ति काम थिक। समाजक समक्ष विवाह करबाक कारण प्रायः यैह छैक जे व्यक्ति अपन ऊर्जाके समाजक हितमे समर्पित कए दैत अछि। कामक निर्बन्ध अभिव्यक्ति विनाशक कारण होइत छैक। ओ सृष्टिक हेतु घातक होइत अछि। एकर प्रमाण इतिहास एवं आधुनिक कालक अनेक हिंसात्मक घटना अछि। तेँ विवाहक अवसर पर पति-पत्नी बन्धनक दृढ़ताक हेतु बेर-बेर

प्रतिज्ञा करैत अछि।[६] एहिसँ दम्पतीक ऊर्जाक गति सृष्टिक कल्याणकर पथ दिस उन्मुख होइत छैक। एहि प्रकारेँ प्रणयक हेतु युवक-युवतीक क्षणिक आकर्षण हेय मानल गेल अछि। ओकरा परिणयकालमे अनेक प्रकारक प्रतिज्ञा कर' पड़ैत छैक। ओहि प्रतिज्ञाक स्वीकृति प्रणयमे परिवर्त्तित भए जाइत छैक।

प्रणय दू प्राणीक मिलन थिक। शरीर ओ आत्माक एकीकरण थिक, जकर कामना वधू परिणयकालमे करैत अछि।[७]

वेदक पश्चात् पौराणिक युगमे अनेक देवी-देवताक प्रणय-लीलाक वर्णनमे दृढ़ अनुरागक गाथा प्राप्त होइत अछि, जाहिमे अनेक ऋषि एवं ऋषिपत्नीक उल्लेख सेहो भेटैत अछि। एहिमे सीताराम, राधाकृष्ण, गौरीशंकर, अत्रि-अनुसूया, अगस्त्य-लोपामुद्रा आदि व्यक्तिक नाम आदरसँ लेल जाइत अछि। अनेक देवताक विवाहक तिथिपर उत्सव मनाओल जाइत अछि। जेना-विवाह-पंचमी, शिवरात्रि आदि।

एहिमे तीनटा युगल मूर्त्तिक छवि तँ लोक मानसपर एतेक अधिक अंकित अछि जे हिन्दूक घर-घरमे हुनक चित्र वा मूर्त्ति विद्यमान अछि। ओहिमे सीताराम, राधाकृष्ण एवं शिवपार्वतीक नाम लेल जाए सकैत अछि।

वस्तुतः एहि तीनू देवी-देवताक प्रणय-गाथामे दृढ़ता एवं तपस्याक भावना लोक मानसकेँ आकृष्ट कएलक।

सीता त्यागक प्रतिमूर्ति छथि। जखन ओ रामक संग वन जएबाक निश्चय करैत छथि तँ राम हुनका वनक अनेक कष्टसँ अवगत करबैत छथिन। राम कहैत छथिन जे अहाँक हितकेँ ध्यानमे राखि हम ई कहैत छी जे वनमे दुःख छैक।[८] ओतए सदा सुख प्राप्त नहि होइत छैक।[८] वनक अनेक कष्टमे हाथी-सिंहक गर्जन, नदीक ग्राहक निवास, लता ओ काँटसँ भरल मार्ग[९] आदिक वर्णन कए राम सीताके महलमे रहि जएबाक आग्रह करैत छथिन। एतबे नहि, भोजन एवं मानसिक दृढ़ता सेहो जंगलक जीवनमे असंभव भए जाइत छैक। भोजनक नाम पर स्वतः खसल पड़ल फल तथा पात भेटैत छैक।[१०] ओतए क्रोध एवं लोभक त्याग कर' पड़ैत छैक, तपस्यामे मन लगब' पड़ैत छैक एवं जत' भयक स्थान छैक; ओतहु निर्भय रहए पड़ैत छैक।[११]

किन्तु रामक एहि प्रकारक वचनसँ सीता विचलित नहि होइत छथि। ओ कहैत छथिन जे वनक जीवनमे व्याप्त जे-जे दोष अहाँ देखौलहुँ ओ सभटा अहाँक स्नेह पाबि हमरा हेतु गुणरूप भए जाएत।[१२]

रामक बिना सीता अपन जीवनक कल्पने ने कए सकैत छथि। ओ कहैत छथिन जे अहाँक नहि रहलापर हम एतए प्राण त्याग कए देब।[१३] सीता ई स्वीकार करैत छथि जे वनमे कष्ट छैक, किन्तु ओहि कष्टक कारण ओ अपन पूर्वजन्मार्जित पापकेँ मानैत छथि।[१४] रामक अनुगमन कए हुनका ओ पाप दूर भए जेतनि, कारण जे पतिक प्रति प्रेमक भावना देवत्त्वक प्राप्ति छिऐक।[१५] अपन देवताक सान्निध्यक हेतु सीता अपन इन्द्रियकेँ एवं मनकेँ वशमे कए सकैत छथि,[१६] राजमहलक त्याग कए जंगलक कष्ट उठा सकैत छथि, किन्तु रामक विरह ओ नहि सहि सकैत छथि। पतिक सुख-दुःखमे संग देब ओ अपन जीवनक सार्थकता मानैत छथि।[१७]

सीताक त्याग विलक्षण धैर्य एवं सहिष्णुताक द्योतक थिक। किन्तु हुनका अभीष्ट सिद्धिमे बाधा होइत गेलनि। वनमे ओ रावणक द्वारा हरण कएल गेलीह। पश्चात् हुनका अग्नि-परीक्षा दिअए पड़लनि। अपन सतीत्व सिद्धिक पश्चातो ओ घरसँ निष्कासित कएल गेलीह। सेहो निष्कासन ओही पतिक हाथें भेलनि जनिक हेतु ओ समस्त ऐश्वर्यक त्याग कएने छलीह। रामक हृदयमे सीताक प्रति जे भाव रहल होनि, व्यवहारतः तँ ओ (प्रजाक) लोकक राजा छलाह। सीता हुनक छविक एकटा उपकरण मात्र बनिकए रहि गेलीह। पत्नीक ग्रहण वा परित्यागक द्वैध रामकेँ पाणिग्रहणक पश्चातहु आजीवन रहि गेलनि। एही कारणेँ सीताक मनक अभिमत रामसँ सफल नहि भए सकलनि। राम प्रजाक हितमे तत्पर छलाह। प्रजाक सुखक हेतु ओ जानकी धरिक परित्याग कए सकैत छलाह।-

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि
आराधनाय लोकानां मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा[१८अ]

वस्तुतः राम लोकक नायक छलाह। ओ मर्यादा पुरुषोत्तम छलाह, अतः सीताकेँ हुनक मर्यादाक अनुकूल आचरण करए पड़लनि। राम एक व्यक्तिक रूपमे जे रहथु, हुनक प्रसिद्धि एकटा राजकुमार एवं राजाक रूपमे व्याप्त अछि। रामक चिन्तन, क्रिया आदि सम्पूर्ण राजपरिवार एवं प्रजाक हितमे भेलनि,

जाहिमे सीताक स्थान ओहि हितक साधनक रूपमे सीमित रहि गेलनि। जखन एको गोटेक मुहसँ सीताक हेतु दुर्वचन बहार भेल तँ राम हुनक [सीताक] परित्याग कए देलनि। सीता सन साध्वी अन्ततः रामक विरहमे विलीन भए गेलीह, किन्तु हुनक सान्निध्य प्राप्त करबामे असमर्थे रहि गेलीह। अपन शुद्धताक परिचय बेर-बेर दैत ओ सांसारिक रागसँ अपनाकेँ मुक्त कए लैत छथि एवं माँ धरतीक आश्रय लए लैत छथि।[१८आ]

प्रश्न ई अछि जे सीताक एतबा यातनापूर्ण जीवन आदर्श कोना भेल? एकर कारण हुनक त्याग ओ तपस्या थिक। सीताकेँ रावणक अनेक प्रलोभन विचलित नहि कए सकल। रामसँ अनेक बेर अनभिप्रेत व्यवहार प्राप्त करितहुँ ओ अन्य पुरुषक कल्पना नहि कएलनि, प्रत्युत धरतीमे विलीन भ' जाएब श्रेष्ठतर मानलनि। दोसर जे रामसँ व्यवहारतः हुनका जे उपेक्षा प्राप्त भेल होनि, राम मानसिक रूपेँ सर्वदा एकनिष्ठ प्रणयमे रत रहलाह। हुनका प्रतिक्षण सीताक प्रति अनुराग रहलनि। सीताक विरहमे ओ महलमे रहितहुँ अन्य नारीक कामना नहि कएलनि। एतेक धरि जे यज्ञक अवसर पर अर्द्धांगिनीक अनुपस्थितिमे ओ सोनाक सीताक प्रतिमा बनाए आहुति देलनि। सीताक विरहमे ओ कहियो प्रसन्न नहि रहलाह। कोनो नारीक हेतु पतिसँ एकनिष्ठ प्रणय प्राप्त करब सौभाग्य मानल जाइछ। तँ सीतारामक दाम्पत्य वैचारिक दृष्टिएँ उच्च आदर्शकेँ उपस्थित करैत अछि।

प्रियतमक सान्निध्यक हेतु राधा सेहो कातर छथि। कृष्णक विरहमे ओ मूर्च्छित भ' जाइत छथि। ओ हरि-हरि करैत भूमिपर खसि पड़ैत छथि एवं धरतीकेँ पकड़ियोकए उठबामे असमर्थ भ' जाइत छथि: –

माधव, कत परबोधब राधा।
हा हरि-हा हरि करितहि बेरि बेरि
अब जिउ करत समाधा।
धरनी धरिया धनि जतनहि बैठति
पुनिहि उठिअ नहि पारा।
सहजहिँ विरहिनि जग महातापिनि
वैरि मदन सर-धारा।।[१९]

कृष्णक विरहमे राधाकेँ शीतल जल, कमल दलक शय्या, चन्दन-पंक लेपन सभटा अनल तुल्य भए गेल छनि। चन्द्रमाक शैत्य ओकरा दशगुणा तापमे परिणत कए दैत छनि?

सीतल सलिल मिलल दल सेजहि
लेपहुँ चन्दन पंका।
से सब यतहि अनल सम होयत
दस गुन दही मृगंका।।[२०]

कृष्णक प्रति राधाक चिन्तन हुनका कृष्णमय बना दैत छनि।

अनुखन माधव-माधव रटितहिं
सुन्दरि भेलि मधाई।।[२१]

कृष्णक हृदयमे सेहो राधाक प्रति असीम स्नेह व्याप्त छनि। राधाक रूप देखि ओ विमूढ़ छथि -

जकर नयन जतहि लागल
ततहि सिथिल भेल।
तकर रूप सरूप निहारए
काहु देखि नहि भेल।।
कमल वदनि राही जगत तकर
पुन सराहिय सुन्दरि मीनति जाहीरे।।[२२अ]

अर्थात् जकर दृष्टि जतहि पड़ल ततहि निश्चेष्ट भए गेल। एहेन केओ ने छल जे सम्पूर्ण सौन्दर्यक पान कए सकए। हे मानिनि राधे, जगतमे जकरे प्रशंसा अछि तकरे स्तुति हम पुनः करैत छी।

किन्तु राधाकृष्णक परस्पर स्नेह परकीय प्रणय थिक। ओकर भावात्मक पक्ष अत्यन्त सुन्दर रहितहुँ समाजक हेतु अनुकरणीय नहि भए सकैत अछि। कारण जे सृष्टिक कल्याणक हेतु यथार्थकेँ स्वीकार करए पड़ैत छैक। जीवनक यथार्थमे काममात्र नहि, धर्म ओ अर्थ सेहो सन्निहित अछि।

राम ओ कृष्ण विष्णु भगवानक अवतार मानल जाइत छथि। राम जीवनक यथार्थकेँ प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कएलनि। ओ पिताक आज्ञापालनक हेतु राजगद्दीक परित्याग कएलनि, वनवास कएलनि। प्रजाक प्रसन्नताक हेतु सीताकेँ छोड़ि देलनि अर्थात् समाजकेँ व्यवस्थित रखबाक हेतु अपना हेतु निर्मम भए गेलाह। अपन सुखकेँ ओ समष्टिक सुखमे व्याप्त कए देलनि, समष्टिक कष्ट स्वयं उठाए लेलनि।

एकर विपरीत कृष्ण अपनहिमे समष्टिक कल्पना कएलनि। अपन सुखक भोगसँ विश्वक सुखक भोग बुझलनि। तेँ हुनका कतेक सहस्र ब्रजांगनाक सौन्दर्य-पानक सौभाग्य प्राप्त भेलनि। राधा हुनक प्रियतमा रहथिन, किन्तु ककरहु प्रति कृष्ण एकनिष्ठ नहि रहलाह। तेँ राधाकेँ अखण्ड प्रणय प्राप्त नहि भए सकलनि। ओना राधाक उपासना कृष्णक प्रति अगाध स्नेहक परिचायक थिक। राधाक रूप सौन्दर्यक चरम उत्कर्ष थिकः-

जनम अवधि हम रूप निहारल

नयन न तिरपित भेल।।

किन्तु राधा अतिशय सौन्दर्यक प्रतीक मात्र रहि जाइत छथि। ओ सौन्दर्य ओ आराधना साधारण नारीमे कल्पनातीत अछि। दोसर जे सभटा पाबियो कए अन्य नायकमे आसक्त कोनो नारी सामाजिक अव्यवस्थाक कारण भए सकैत अछि। तेँ राधा-कृष्णक प्रणयगाथासँ सहृदयक मनोरंजन भने होनु, ओ समाजक आदर्श नहि भए सकैत अछि।

एहि सन्दर्भमे रामकेँ एकटा योगी एवं कृष्णकेँ भोगी कहल जाए सकैत छनि। किन्तु शंकरमे योग एवं भोगक समन्वित रूपक दर्शन होइत अछि।

'कुमारसंभवमे' शिवजीक तपस्वी स्वरूपक वर्णन अछि। सती जखन शिवजीक अपमानकेँ नहि सहि अपन शरीरक त्याग कए लेलनि तखनसँ शिव भोग-विलास छोड़ि देलनि[२२आ] अपन दोसर मूर्त्ति अग्निकेँ समिधामे सुनगाए नहि जानि कोन फलक इच्छासँ तपस्या करए लगलाह।[२३]

एतए शिवजीक तपस्याक ब्याजेँ हुनका अपन शक्तिक प्रति आसक्तिक मनोरम ध्वनि अभिव्यंजित भेल अछि। 'केनापि कालेन तपश्चचार' [नहि जानि कोन समयसँ तप कएलनि] वस्तुतः सतीक वियोगमे शिवक वैधुर्यक विलक्षण

चित्र अंकित करैत अछि। शिवक कल्पना शक्तिरहित नहि भए सकैत अछि– किछु एही प्रकारक आशय कविक उक्त कथनमे परिलक्षित होइत अछि।

महादेव अपन अचल समाधिमे मग्न छथि। महादेव देवदारुक गाछक जड़िमे पाथरपर बघम्बर देने वीरासनमे बैसल छथि। हुनक शरीर शान्त एवं निश्चल अछि। दुनूटा कान्ह झुकल छनि। ओ साँपसँ अपन जटाकेँ बान्हि लेने छथि। शरीरक अन्दर चलनिहार सभ प्रकारक वायुकेँ ओ एहि प्रकारेँ रोकने छथि, जे हुनका देखलासँ बुझि पड़ैत छैक जे बरिसए बला स्तब्ध मेघ होअए वा पवनरहित स्थानमे स्थित दीपशिखा होअए। ओहि समयमे हुनक मस्तकसँ जे तेज देदीप्यमान भए रहल छनि, तकर आगाँ कमल तन्तुसँ अधिक कोमल बालचन्द्रक शोभा म्लान अछि।[२४]

एम्हर गौरी सेहो शिवकेँ वर रूपमे प्राप्त करबाक हेतु कठिन तपस्यामे रत छथि। ओ पूसक जाड़ एवं सूर्यक कठोर तापके अङेजि[२५] शिवक ध्यानमे मग्न रहैत छथि। वर्षाक समयमे ओ मेघसँ स्वयं खसैत जल पीबिकए रहि जाइत छथि।[२६ अ]

मैथिली साहित्यमे सेहो बालिका गौरी पूर्वजन्मक संस्कारवश तपोवनक यतिक स्वरूपक वर्णन अपन माताक समक्ष एहि शब्दमे करैत छथि:–

ए माँ कहह मोय पुछों तोही
ओहि तपोवन तापसि भेटल
कुसुम तोरए देल मोही।।
अंजलि भरि कुसुम तोड़ल
जे जत अछल जाहि।।
तीनि नयने खन मोहि निहारए
बिसलि रहलि जाहि।।[२६आ.]

गौरी बाल्यकालहिसँ शिवक हेतु तपस्यामे रत छथि, तँ हुनका फूल तोड़बाकाल शिव यतिक रूपमे आबि दर्शन दैत छथिन।

शिव एवं पार्वती एक दोसराक विरहमे एहने कठिन तपस्यामे मग्न भेल परिलक्षित होइत छथि। किन्तु दुनूक संयोग सुखानुभूतिक उत्कर्ष प्रकट करैत

अछि। जहिना गंगाजी समुद्रक निकट जाए ओतए सँ आपस अयबाक नाम नहि लेलनि, एवं समुद्र सेहो हुनके मुखक जल बेर-बेर लए प्रेममग्न रहैत छथि तहिना पार्वतीजी एवं शिवक तन्मयता एक-दोसराक प्रति भए जाइत छनि।[२७]

जहिना शरदऋतुक आगमनपर लोककें प्रसन्नता होइत छैक, तहिना अत्यन्त देदीप्यमान चन्द्रमाक समान मुखवाली पार्वतीकेँ देखि शंकरजीक नेत्रकमल फुलाए जाइत छनि।[२८]

पार्वतीजी एवं शिवजी एक दोसरा पर दृष्टिपात करितहिँ प्रसन्न भए जाइत छथि, किन्तु लोक-लाजवश नेत्रकेँ झुकाए लैत छथि।[२९]

दुनूकेँ एक दोसराक स्पर्शसँ रोमांच भए जाइत छनि। शरीरमे घाम उत्पन्न भए जाइत छनि।[३०]

मैथिली साहित्यमे शिवपार्वतीक संयोगक एहने सुन्दर वर्णन प्राप्त होइत अछि। जखन शंकर गौरीक हाथ धए विवाह मण्डपमे उपस्थित होइत छथि तँ ओ एहेन बुझि पड़ैत अछि जेना सन्ध्याकालमे पूर्णचन्द्रक उदय भए गेल होअए। शिव चौदहो भुवनक शोभाक प्रतिमूर्ति बुझि पड़ैत छथि।

जखने संकरे गौरि करे धरि

आनलि मण्डप माझ।

सरदसँपुन जानि ससधर

उगल समय सांझ।

चौदह भुअन शिव सोहाओन

गौरी राजकुमारि।[३१]

गौरी जखन शिवजीक पूजाक हेतु हुनका समक्ष उपस्थित होइत छथि तँ सात्विक भाववश गौरीक करतल काँपि जाइत छनि, एवं कुसुम छिड़ियाए जाइत छनि -

अंजलि भरि फुल तोरि लेल आनी,

शम्भु अराधए चलली भवानी।

करतल काँपु कुसुम छिड़ियाऊ

विपुल पुलक तनु वसन झपाऊ।।[३२]

गौरीशंकरक दाम्पत्यमे जहिना कामक अनेक दशाक चित्रण मनोरम भेल अछि, तहिना गार्हस्थ्यक सुख–दुःखक वर्णन अछि। महादेव जखन भाङ खाए उन्मत्त भए जाइत छथि वा रूसि जाइत छथि तँ गौरी विकल भए जाइत छथि। भोला रूसि गेल छथि। गौरी जे भाङ पिसने छथि से ओहिना पड़ले रहि जाइत अछि। ओ कतहु पड़ाए गेल छथि तँ गौरी चिन्तित छथि जे कतहु ठेस ने लागि जानि, आ' खसि ने पड़थि –

पीसल भाङ रहल एहि गती।

कथी लँइ मनाएब उमता जती।।

आन दिन निकहि छला मोर पती।

आइ बढ़ाए देल कोन मदमती।।

आनक नीक आपन हो छती।

ठामे एक ठेसता पड़त विपती।।[१३]

उपर्युक्त पदमे गौरीक झखब शिवक प्रति अनुरागक द्योतक थिक। गौरी सतत–पतिक सुख–दुःखकेँ ध्यानमे रखैत छथि– एकटा निश्छल नारीक हृदयक भाव गौरीक कथनमे बड़ नीक जकाँ अभिव्यंजित भेल अछि।

सुखद गार्हस्थ्य पति–पत्नीक परस्पर भावना एवं सहयोगक परिणाम होइत अछि। एहिमे सन्तानक उत्पत्ति एवं ओकर बाललीला सेहो बड़ महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। शिवपार्वती अपन सन्तानक बालक्रीड़ासँ अत्यन्त हर्षक अनुभव करैत छथि।[३४]

एहि प्रकारेँ सीताराम, राधाकृष्ण एवं गौरीशंकर– ई तीनू युगल छवि क्रमशः तीन प्रकारक दार्शनिक तथ्यकेँ प्रकाशित करैत छथि– योग, भोग एवं दुनूक समन्वित रूप।

भारतीय प्रणयक आदर्श योग एवं भोगक समन्वित रूप थिक। विवाहक अवसर पर वर–वधूक अग्निक समक्ष प्रतिज्ञा करब एकदिस जीवन भरिक

तपस्याक द्योतक थिक तँ दोसर दिस ओहि तपस्यामे सुख ओ समृद्धिक कामना सेहो निहित रहैत अछि।[३५]

शिवजी कामदेवकेँ दग्ध कएलनि आ' पुनः कामक वश भेलाह, गौरीकें अंगीकार करैत छथि किन्तु विषय-वासनासँ मुक्त रहैत छथि।[३८] गौरी शिवकेँ भिखारि एवं तपस्वीक रूपमे देखियोकए हुनका प्रति समान रूपेँ आसक्त छथिन। प्रणयक भावक गम्भीर्यकेँ बाह्य रूपक दैन्य प्रभावित नहि कए सकैत छैक।

एहि प्रकारेँ गौरीशंकरक दाम्पत्य योग एवं भोगक विलक्षण समन्वित रूप उपस्थित करैत अछि। तेँ हुनक वर्णन सहृदयवर्गक मनोरंजनक संगहिँ भारतीय विचारधाराक उच्च दार्शनिक स्वरूपकेँ सेहो अभिव्यंजित करैत अछि। सौन्दर्य एवं यथार्थक समन्वित रूप जेना गौरीशंकरमे निहित अछि तेना अन्य कोनो देवी-देवतामे नहि। तेँ ओहि स्वरूपक चिन्तन एवं वर्णन सभक हेतु आह्लादक होइत छैक।

* * *

१. *श्री सत्यप्रकाश शर्मा: प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता- अध्याय४*

२. *धारण करब धर्म थिक। तेँ शरीर धारण करबाक संगहि मनुष्य धर्मसँ सम्बद्ध भए जाइत अछि- ओ धर्म सनातन, इसाई वा मुस्लिम-कोनो होअए। मनुष्यक जीवनमे धर्म एकटा नियमक पालनक रूपमे व्यवहृत होइत अछि। एहिसँ ओकर शरीर एवं आत्माक रक्षा होइत छैक। धर्म मनुष्यकें समाजमे जीबाक एवं रहबाक उत्तम पथक निर्देश करैत अछि, ते महापुरुषक वाणी धर्मशास्त्रक वचन होइत अछि। ई प्रत्येक जाति, देश एवं समुदायमे विद्यमान अछि।*

३. *द्रष्टव्य - परिशिष्ट - विवाहक मन्त्र।*

४. *द्रष्टव्य - परिशिष्ट - विवाहक मन्त्र।*

५. *द्रष्टव्य - परिशिष्ट - विवाहक मन्त्र।*

६. *द्रष्टव्य - परिशिष्ट - विवाहक मन्त्र।*

७. *द्रष्टव्य - परिशिष्ट - विवाहक [लाजाहोमक] मन्त्र।*

८. हितबुद्धया खलु वचो मयेदमभिधीयते।

सदा सुखं न जानामि दुःखमेव सदावनम्।।

– वाल्मीकि रामायणः, अष्टाविंशः सर्गः [अयोध्याकाण्ड] श्लोक–६.

९. द्रष्टव्य अयोध्याकाण्ड– श्लोक ०, ८, ९, १०, ११. [वाल्मीकीय रामायण]

१०. द्रष्टव्य– अयोध्याकाण्ड– श्लोक–१२.

११. द्रष्टव्य– अयोध्याकाण्ड– श्लोक २४.

१२. ये त्वया कीर्तिता दोषा वने वस्तव्यतां प्रति।

गुणानित्येव तान् विद्धि तव स्नेहपुरस्कृता।।

– अयोध्याकाण्ड–एकोनित्रिंशः सर्गः, श्लोक– २.

१क. त्वद्वियोगेन मे राम त्यक्तव्यमिह जीवितम्।

– अयोध्याकाण्ड, २९.५.

१४. द्रष्टव्य– अयोध्याकाण्ड, २९.८.

१५. द्रष्टव्य– अयोध्याकाण्ड, २९.१६.

१६. द्रष्टव्य– अयोध्याकाण्ड, २९.१२

१७. द्रष्टव्य– अयोध्याकाण्ड, २९.२०

१८अ. भवभूति उत्तररामचरित

१८आ. यथाहं राघवादन्यं मनसा यदि न चिन्तये।

तथा मे माधवी देवी विवरं दातु मर्हति।।

मनसा कर्मणा वाचा यथा राम समर्चये।

तथा मे माधवी देवी विवरं दातु मर्हति।।

यथैतत् सत्यमुक्त मे पतिं रामात् परं न च।

तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति।।

आशय जे हे मातु पृथ्वी, यदि हम राम छोड़ि अन्य पुरुषक कामना नहि कयने होइ, यदि मन, वचन, क्रियासँ रामहिक आराधना करैत होइ, राम छोड़ि हम अन्य कैँ पति नहि मानैत होइ, ई वचन सत्य हो, तँ अहाँ

हमरा अपन कोड़ामे स्थान दिअ. उत्तरकाण्ड ९.१५–१६.

१९. *विद्यापति पदावली [विमान बिहारी मजुमदार] – पद सं० ७४८*

२०. *विद्यापति पदावली [विमानबिहारी मजुमदार] – पद संख्या ७४६,*

२१. *विद्यापति पदावली [विमानबिहारी मजुमदार] – पद संख्या ७५७,*

२२. *विद्यापति पदावली [विमानबिहारी मजुमदार] – पद संख्या ३०७,*

२२आ. *यदैव पूर्वे जनने शरीरं सा दक्षरोषात्सुदती ससर्ज।*
तदा प्रभृत्येव विमुक्तसंगः पतिः पशूनामपरिग्रहोऽभूत्।। कु०सं० १.५३.

२३. *तत्राग्निमाधाय समित्समिद्धं स्वमेव मूर्त्यन्तरमष्टमूर्तिः।*
स्वयं विधाता तपसः फलानां केनापि कामेन तपश्चचार।।

कुमार संभव, १.५७.

२४. *स देवदारुद्रुमवेदिकायां शार्दूलचर्मव्यवधानवत्याम्।*
आसीनमासन्नशरीरपातस्त्रियम्बकं संयमिनं ददर्श।
पर्यंकबन्धस्थिरपूर्वकायमृज्वायतं संयमितोभोयांसम्।
उत्तानपाणिद्वयसंनिवेशात्प्रफुल्लराजीवमिवांकमध्ये।।

२५. *निनाय सात्यन्तहिमोत्किरानिलाः सहस्यरात्रीरुदवासतत्परा।*
परस्पराक्रन्दिनि चक्रवाकयोः पुरा वियुक्ते मिथुने कृपावती।।

– कु०सं०, ५.२६.

२६.अ. *अयाचितोपस्थितमम्बु केवलं रसात्मकस्योडुपतेश्च रश्मयः।*

– कु०सं०, ५.२२.

२६ अ. *विद्यापति पदावली [विमान बिहारी मजुमदार] – पदसंख्या– ७८३,*

२७. *तं यथात्मसदृशं वरं वधूरन्वरज्यत वरस्तथैव ताम्।*
सागरादनपगा हि जाह्नवी सोऽपि तन्मुखरसैकवृत्तिभाक्।। कु०सं० ८.१६.

२८. *तया प्रवृद्धाननचन्द्रकान्त्या प्रफुल्लचक्षुः कुमुदः कुमार्या।*
प्रसन्नचेतः सलिलः शिवोऽभूत्संसज्यमानः शरदेवलोकः।। कु०सं० ७।७४

२९. *द्रष्टव्यः कुमारसंभव, ७।१७५.*

३०. *द्रष्टव्य कुमारसंभव ७।७७.*

३१. *विद्यापति पदावली डविमान बिहारी मजुमदारः– पदसंख्या– ७८८,*

३२. *विद्यापति पदावली डविमान बिहारी मजुमदारः– पदसंख्या– ७९०,*

३३. *विद्यापति पदावली डविमान बिहारी मजुमदारः– पदसंख्या– ७९३,*

३४. *कुमारसम्भवम ११.४३–४८.*

३५. *दृष्टव्य – परिशिष्ट– विवाहक मन्त्र लाजाहोम एवं पाणिग्रहणक मन्त्र।*

३६. *मालविकाग्निमित्रम्–कालिदास–मंगलाचरण।*

❑❑

अध्याय- ४

संस्कृत साहित्यमे गौरीशंकर

संस्कृत साहित्यमे शिवक आराध्य स्वरूपक उल्लेख तँ आदि कालहिसँ होइत रहल अछि[१] किन्तु गौरीशंकरकेँ [नायक ओ नायिका मानि] काव्यक प्रमुख पात्रक रूपमे वर्णित करबाक परम्परा कालिदाससँ आरम्भ होइत अछि।[२]

कालिदास गौरीशंकरक विविध स्वरूपक वर्णन अनेक प्रकारेँ कएलनि। विक्रमोर्वशीयमक ब्रह्मस्वरूप एवं शाकुन्तलम्क अष्टमूर्ति[३] यदि शिवक आराध्य स्वरूपक चित्र उपस्थित करैत अछि, तँ रघुवंशमे जगतक माता-पिताक रूपमे एवं मालविकाग्निमित्रम्मे अर्द्धनारीश्वरक रूपमे शिवगौरीक ऐक्य भावक परिचय प्राप्त होइत अछि।[४]

अभिज्ञान शाकुन्तलमक मंगल श्लोकमे शिवकेँ अष्टमूर्तिक रूपमे आराध्य कहल गेल अछि-

या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या, वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री,
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति, यया प्राणिनः प्राणवन्तः।
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु नस्ताभिरष्टाभिरीशः।।

अर्थात् भगवान् शिवजीक जे जलमयी मूर्त्ति ब्रह्माक प्रथम सृष्टि छनि, जे अग्निमयी मूर्ति वैदिक विधानसँ होममे अर्पित समग्रीकेँ अर्चित देवता धरि पहुचबैत छथि, ईश्वरक जे मूर्त्ति स्वयं होत्री अर्थात् यजमानस्वरूप छथि, जे चन्द्र सूर्यात्मक दूटा मूर्ति राति-दिन बनबैत छथि, श्रवणेन्द्रियक विषयीभूत शब्दक आश्रय जे आकाशमयी मूर्त्ति सम्पूर्ण विश्वमे व्याप्त भए विद्यमान रहैत

अछि, जे क्षितिमयी मूर्ति सभ प्रकारक अन्नक बीजस्वरूपा अछि तथा जाहिसँ संसारक सभ प्राणी जीवित रहैत अछि ओ वायुमयी मूर्त्ति, ई जे प्रत्यक्ष दृश्यमान भगवानक आठ टा मूर्ति छनि ओहि प्रत्यक्ष रूप आ' शरीरसँ उपलक्षित शिवजी हमरा लोकनिक रक्षा करथु। उक्त पदमे कवि शिवजीकेँ होता, हविष्य, अग्नि, चन्द्र, सूर्य, आकाश, जल एवं क्षितिक रूपमे उल्लिखित कए हुनक विराट् स्वरूपक अभिव्यंजना कयलनि अछि। तँ विक्रमोर्वशीयमक मंगलाचरणमे शिवकेँ परब्रह्मक सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूपकें प्रणम्य मानलनि अछि। यथा –

वेदान्तेषु यमाहुरेकपुरुषं व्याप्य स्थितं रोदसी
यस्मिन्नीश्वर इत्यनन्यविषयः शब्दो यथार्थाक्षरः।
अन्तर्यश्च मुमुक्षुभिर्नियमितप्राणादिभिर्मृग्यते
स स्थाणुः स्थिरभक्तियोगसुलभो निःश्रेयसायास्तु नः।[५]

अर्थात् वेदान्तमे जनिका एक पुरुष कहल गेल अछि, जनिकामे ब्रह्माण्ड व्याप्त अछि, जाहि ब्रह्मक हेतु ईश्वर पद [अव्याहत ज्ञानशक्ति, इच्छाशक्ति ओ क्रियाशक्ति जनिकामे रहैत अछि] यथार्थ अछि, जनिका मोक्षक इच्छा रखनिहार लोकनि यम, नियम, आसन आदि योगविधिसँ अपन अन्तःकरणमे तकैत छथि तथा जे निरन्तर ओ चंचलरहित भक्तियोगसँ सुलभ छथि से शिव [स्थाणु] हमरा लोकनिक कल्याण करथु।

कालिदासक नाटक 'मालविकाग्निमित्रम्'क आरम्भमे शिवकेँ अर्द्धनारीश्वरक रूपमे चित्रित कएल गेल अछि तथा हुनक उपर्युक्त अष्टमूर्त्तिक उल्लेख अछि –

एकैश्वर्ये स्थितोऽपि प्रणतबहुफले यः स्वयं कृत्तिवासाः
कान्तासम्मिश्रदेहोऽप्यविषयमनसां यः परस्ताद् यतीनाम्।
अष्टाभिर्यस्य कृत्स्नं जगदपि तनुभिर्विभ्रतो नाभिमानः
सन्मार्गालोकनाय व्यपनयतु स नस्तामसीं वृत्तिमीशः।।[६]

अर्थात् भक्तकेँ बहुत फल देनिहार, विभव रहितहुँ जे बाघछाल ओढ़ने रहैत छथि, पत्नीकेँ शरीरमे लगौनहु जे विषयरहति संयमी सन्यासीयोक मनक अधीन नहि होइत छथि। अपन आठटा रूपमे जगत्केँ धारण कयलो पर जनिका अभिमानक लेशमात्र नहि छनि, एहेन शिवजी हमरा लोकनिक पापोन्मुख प्रवृत्तिकेँ नाश कए सन्मार्गके प्रशस्त करथि।

एहिना रघुवंशक मंगलाचरणमे

वागर्थाविव संपृक्तौ, वागर्थप्रतिपत्तये।

जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।[७अ.]

कहि विश्वक स्रष्टा ओ पालयिताक रूपमे कवि हिनका श्रेष्ठ माानलनि।

एवं प्रकारेँ कहि सकैत छी जे विक्रमोर्वशीयममे 'ब्रह्मरूपमे,' शाकुन्तलम् मे 'अष्टमूर्त्ति' रूपमे, रघुवंशमे 'वागर्थाविव संपृक्तौ..............जगतः पितरौ' क रूपमे एवं मालविकाग्निमित्रममे अर्धनारीश्वर रूप परमाराध्यक रूपमे चित्रित कए कवि ई देखाए रहल छथि, जे सृष्टिक सूक्ष्मातिसूक्ष्मसँ लए विराट् सँ विराट् प्रत्येक तत्त्व गौरीशंकरसँ व्याप्त अछि। विक्रमोर्वशीयमक ब्रह्म सूक्ष्मताक प्रतीक थिकाह ओ शाकुन्तलमक अष्टमूर्त्ति विराट् स्वरूपक।

मालविकाग्निमित्रमक अर्द्धनारीश्वर भारतीय पद्धतिक ओहि परम आदर्शक अभिव्यंजना करैत छथि, जकरा राजर्षि जनक अपन कर्मयोग द्वारा, योगेश्वर कृष्ण श्रीमद्भागवतमे भक्तियोग नामक भावक विवेचन द्वारा पुष्ट कयने छथि।

एहि प्रकारेँ कालिदासक विभिन्न काव्यक केवल मंगलाचरणहुक श्लोककेँ एकत्र राखि अध्ययन कएलासँ स्पष्ट भए जाइत अछि जे कवि यदि भारतीय दार्शनिक तत्त्वक विवेचन करबाकाल गौरीशंकरकेँ वेदान्तक माया ओ ब्रह्म, सांख्यक प्रकृति-पुरुष, नैयायिकक पदार्थ आदि रूपमे देखैत छथि तँ कर्मकाण्डक दृष्टिसँ जनक एवं कृष्णक अनासक्त कर्मयोगकें साकार रूपमे देखैत छथि।

किन्तु गौरीशंकरक रूप एतबे धरि सीमित नहि अछि। कालिदासक काव्यक अध्ययनसँ बुझि पड़ैत अछि जे काव्यरसक आदि स्रोत गौरीशंकर छथि।

एहि प्रकारेँ शिव-गौरीकेँ अनेकतामे एकता ओ एकतामे अनेकताक प्रतिमूर्ति कहल जा सकैत अछि।

कालिदास उमा-महेशक मानवीकरण कए हिनका दुहू गोटेक एक दिसि साधारण पति-पत्नीक रूपमे कल्पना कएलनि अछि तँ दोसर दिस हिनक माध्यमे प्रेमक आध्यात्मिक स्वरूपकेँ चित्रित कएलनि अछि।

'कुमारसंभव' मे कुमारि गौरीक तपस्यासँ शिवक प्रति हुनक [पार्वतीक] अनन्यासक्तिक़ वर्णन स्पष्टतासँ कएल गेल अछि। वस्तुतः गौरीक दिव्य रूप जे भारतीय संस्कृतिक उच्च आदर्श अछि, हिनकहि उक्ति- '**प्रियेषु सौभाग्य**

फला हि चारुता'- मे परिलक्षित होइत अछि। नारीक रूप-लावण्य व्यर्थ थिक यदि ओ प्रियतमकेँ आकृष्ट नहि कए सकए।

तेँ कालिदासक 'चारुता' (सौन्दर्य) पद बड़ व्यापक अर्थमे अभिहित अछि। एकर अभिप्राय नारीक बाह्य सौन्दर्यसँ अधिक ओकर आन्तरिक गुण अछि। बाह्य सौन्दर्यसँ क्षणिक आकर्षण भए सकैत छैक, परन्तु स्थायी नहि। नारी-पुरुषक प्रणयक दृढ़तामे भौतिक ऐश्वर्यसँ अधिक हृदयक सामंजस्य ओ अध्यात्मिक भाव-प्रवणताक महत्त्व छैक।

शिवक कामदहनक पश्चात् भग्नमनोरथा उमा निराश नहि होइत छथि, प्रत्युत आओर अधिक कठिन तपस्यामे लागि जाइत छथि। ओ अपन हार बहार कए बल्कल वसन धारण कए लैत छथि, केश-विन्यासक परित्याग कए जटा राखि लैत छथि, गेन्द खेलाएब आदि बालोचित कार्य छोड़ि हाथमे रुद्राक्षक माला लए लैत छथि तथा तपस्याक हेतु उपयोगी कुश केँ स्वयं उखाड़ैत छथि जाहिसँ हुनक कोमल हाथमे घाओ भए जाइत छनि।[७आ]

पार्वती स्वयं एतेक कष्ट किऐक करैत छलीह? माता-पिताक दुलारू बेटी, सखी लोकनिक निरन्तर स्नेह प्राप्त कएनिहारि बालिका-अपन तपश्चर्याक हेतु आवश्यक सामग्री हुनके लोकनिक सहायतासँ किऐक ने उपलब्ध करैत छलीह? एकर उत्तरमे यैह कहल जाए सकैत अछि जे गौरीक तपस्या शिवमय छलनि, जे भारतीय परम्पराक- '**अदत्त्वा परसन्तापं**'- क प्रतीक थिक। अपन आराध्य देवक भावनामे ओ एतेक अधिक तन्मय भए गेलि छलीह जे अपन शरीरक कोमलता, पिताक ऐश्वर्य आदि सांसारिक विषयक कोनो ध्यान नहि रहलनि।

जे बालिका पिताक घरमे सजाओल पलंगपर करौट लैत काल केशसँ खसल फूलकेँ दबाए गेलापर कष्टक अनुभव करैत छलीह ओ अपन हाथकेँ तकिया जकाँ माथ तर लए भूमिपर सूति रहैत छलीह।

महार्हशय्यापरिवर्तनच्युतैः स्वकेशपुष्पैरपि या स्म दूयते।
अशेत सा बाहुलतोपधायिनी निषेदुषी स्थण्डिल एव केवले।५।१२।।

गौरी किछु दिन धरि अपन दैनिक क्रिया-कलापसँ एहि प्रकारेँ शंकरक उपासना करैत छथि। परन्तु हुनका अपन देवताक दर्शन नहि होइत छनि। तखन

ओ आओर अधिक कठोर तपस्यामे रत भए जाइत छथि। ओ अपन जीवनक मोह त्यागि दैत छथि। हुनक भावना ओ दृष्टिमे ओहि शिवक प्रति तन्मयता छनि जे कामदेवकेँ नष्ट कए देने छथि, तेँ शारीरिक सौन्दर्यसँ हुनका आकृष्ट नहि कएल जाए सकैत अछि –

इयं महेन्द्रप्रभृतीनधिश्रियश्चतुर्दिगीशानवमत्य मानिनी।

अरूपहार्यं मदनस्य निग्रहात्पिनाकपाणिं पतिमाप्तुमिच्छति।।[८]

पार्वती ने तँ ग्रीष्मकालीन सूर्यक कठोर आतपसँ, ने शीतकालीन पवनक झोंकसँ विचलित होइत छथि। पूस मासक जाहि रातिमे शीतल पवन हिमवृष्टि कए रहल छैक, ओहि समयमे ओ भरिकण्ठ जलमे ठाढ़ि भेलि रहैत छथि–

निनाय सात्यन्तहिमोत्किरानिलाः सहस्यरात्रीरुदवासतत्परा।

परस्पराक्रन्दिनि चक्रवाकयोः पुरो वियुक्ते मिथुने कृपावती।।

मुखेन सा पद्मसुगन्धिना निशि प्रवेपमानाधरपत्रशोभिना।

तुषारवृष्टिक्षतपद्मसंपदां सरोजसंधानमिवाकरोदपाम्।।[९]

जहिना शीतकालमे ओ सरोवरमे ठाढ़ि भेलि राति बिता दैत छलीह, तहिना ग्रीष्मकालमे पंचाग्निव्रत कए महादेवक उपासना करैत छथि –

शुचौ चतुर्णां ज्वलतां हविर्भुजां शुचिस्मिता मध्यगता सुमध्यमा।

विजित्य नेत्रप्रतिघातिनीं प्रभामनन्यदृष्टिः सवितारमैक्षत।।[१०]

ग्रीष्मकालमे पार्वती अपन चारूकात आगि पजारि, अपन मुँहकेँ सूर्य दिस उठाए निर्निमेष दृष्टिएँ हुनका दिस तकैत रहैत छथि। एतेक कठोर तपस्या करितहुँ हुनक मुखमण्डल निस्तेज नहि होइत अछि, प्रत्युत आओर अधिक दीप्तिमान भए जाइत छनि –

तथातितप्तं सवितुर्गभस्तिभिर्मुखं तदीयं कमलश्रियं दधौ।।[११]

कालिदासक पार्वती सर्वंसहा वसुन्धराक मूर्त्त रूप भए गेलि छथि। ओ अग्नि तथा सूर्यक तापसँ एतेक अधिक तप्त भए गेलि छथि जे नवीन मेघक जलसँ जहिना धरतीसँ वाष्प निःसृत होइ अछि तहिना हुनकहु शरीरसँ होमए लगैत छनि –

निकामतप्ता विविधेन वह्निना नभश्चरेणेन्धनसंभृतेन च।
तपात्यये वारिभिरुक्षिता नवैर्भुवा सहोष्माणममुञ्चदूर्ध्वगम्।।[१२]

ई कोमल बाला जे गेन्दहु खेलएबासँ थाकि जाइत छलीह, अनवसरमे फूलहुक स्पर्शसँ पीड़ित भए जाइत छलीह, अपन मनोबलक कारणें वृक्षक सदृश अटल भए जाइत छथि। वर्षाकालमे ओ स्वयं बरिसैत जलबिन्दुकेँ तथा अन्य समयमे स्वच्छ आकाशसँ झहरैत ज्योत्स्नाक अमृतपान कए प्राण रक्षा करैत गाछे वृक्ष जकाँ जीवन यापन करैत छथि।

अयाचितोपस्थितमम्बु केवलं रसात्मकस्योडुपतेश्च रश्मयः।
बभूव तस्याः किल पारणाविधिर्न वृक्षवृत्तिव्यतिरिक्तसाधनः।।[१३]

वस्तुतः कालिदासक गौरीक तप भारतीय परम्पराक ओहि महान वृक्षक प्रतीक थिक, जे स्वयं रौद-बसात सहि थाकल-ठेहियाएल यात्रीके शीतलता प्रदान करैत अछि।

पार्वती शिवक तपस्यामे एतेक लीन भए जाइत छथि जे अपन आहारहुकें बिसरि जाइत छथि। जे बड़ कठिन तपस्या करैत छथि ओ गाछसँ खसल पातकेँ खाए जीवनरक्षा करैत छथि परन्तु गौरीकेँ तकरहु सुधि नहि छनि। ओ पातहु खायब बिसरि गेलि छथि – अन्न वा फलक तँ कथे नहि। तेँ हुनक नाम अपर्णा भए गेल छनि –

स्वयं विशीर्णद्रुमपर्णवृत्तिता परा हि काष्ठा तपसस्तया पुनः।
तदप्यपाकीर्णमतः प्रियंवदां वदन्त्यपर्णेति च तां पुराविदः।।[१४]

एहिसँ ई बुझब भ्रामक होयत जे कालिदास गौरीक तपस्या आ' मातृस्वरूपक वर्णन कए सन्तुष्ट भए जाइत छथि।

हुनक रचनामे गौरी एकटा देवीसँ अधिक मानवीक रूपमे वर्णित छथि। गौरीक कौमार्यक लालित्य, यौवनक सौन्दर्य तथा महादेवक संग रमणक वर्णनमे किछु एहेन तथ्य नहि दृष्टिगोचर होइत अछि, जाहिसँ पार्वतीक प्रति एकटा साधारण रमणीसँ भिन्न माता अथवा देवीक भावना हो।

'कुमारसंभव' मे महादेवकेँ पूजा करबाक हेतु उद्यत पार्वतीजीक अङ्ग नवीन फुलाएल कदम जकाँ पुलकित भए जाइत छनि तथा ओ लाजसँ मुँह घुमाए लैत छथि –

विवृण्वती शैलसुतापि भावमङ्गैः स्फुरद्बालकदम्बकल्पैः।

साचीकृता चारुतरेण तस्थौ मुखेन पर्यस्तविलोचनेन।।[१५]

गौरीक लाल अधरकेँ देखि शंकरजीक मन चन्द्रोदयकालीन समुद्री लहरि जकाँ तरंगित भए जाइत छनि:-

हरस्तु किञ्चित्परिलुप्तधैर्यश्चन्द्रोदयारम्भ इवाम्बुराशिः।

उमामुखे बिम्बफलाधरोष्ठे व्यापारयामास विलोचनानि।[१६]

कोनो सिद्धहस्त चित्रकारक तूलिकासँ रङल सुन्दर चित्र जकाँ वा नव प्रभातक किरणक सुखद स्पर्शसँ प्रफुल्लित कमलिनी जकाँ पार्वतीक कान्ति मनोहर अछि -

उन्मीलितं तूलिकयेव चित्रं सूर्यांशुभिर्भिन्नमिवारविन्दम्।

बभूव तस्याश्चतुरस्त्रशोभि वपुर्विभक्तं नवयौवनेन।।[१७]

ओ जखन चलए लगैत छथि तखन हुनक स्वाभाविक लाल तथा कोमल पएरक पुष्ट आङुरक नहसँ उद्भासित लालिमा देखि एहेन सन बूझि पड़ैत छैक जेना पएर स्वयं लालिमा छिड़िआए रहल हो। ओहि पएरकेँ उठाए-उठाए जखन ओ चलैत छथि तखन एहेन सन बुझि पड़ैत छैक जेना प्रत्येक डेग पर कमल फुलाए गेल हो -

अभ्युन्नतांगुष्ठनखप्रभाभिर्निक्षेपणाद्रागमिवोद्गिरन्तौ।

आजहतुस्तच्चरणौ पृथिव्यां स्थलारविन्दश्रियमव्यवस्थाम्[१८]**।।**

नखशिख वर्णनमे पार्वतीक गोपनीय अंगक वर्णन कए कवि तत्कालीन वा परवर्त्ती मर्यादाक उल्लंघन करैत सन बुझि पड़ैत छथि, कारण जे नारीक एहि सभ अंगक चर्चा करब कोनो श्रेष्ठ भावनाक द्योतक नहि होइत अछि, ने सुननिहारे ओहेन नारीक प्रति सम्मानक भावक अनुभव कए सकैत अछि। कोनो नारीक एहि प्रकारक सौन्दर्यक चित्रणसँ पुरुष लोकनि आह्लादित भने होथु, परन्तु एहिसँ ओ नारीक ओहि स्वरूपक दर्शनसँ वंचित रहि जाइत छथि जाहिमे परिलक्षित होइत अछि सहन शक्तिक ओजस्वी रूप, मातृत्वक स्निग्ध भावना, पालन कला-कौशल तथा श्रद्धाक कल्याणी मूर्ति।

यद्यपि कालिदासक समक्ष जे परिस्थिति रहनि ताहिमे एहि प्रकारक वर्णन अनुचित नहि छल। सृष्टिक हेतु राग आ' आ रागक हेतु कामक सम्मोहन आवश्यक छैक। ओहि समयमे बौद्ध लोकनि जनमानसकेँ वैराग्य दिस उन्मुख कए रहल छलाह। हुनका लोकनिक एहि प्रयासकेँ विफल करब सृष्टिक रक्षाक हेतु आवश्यक छलैक। शिव गौरीक लीलामे प्रत्येक आह्लादक स्थितिक वर्णन कालिदास कएलनि। एहिसँ हिनक काव्यक रोचकतामे वृद्धि भेल। कालिदासक साहित्य विद्वान् लोकनिक मनोरंजनक अभिन्न अंग भए गेल। जखन हिनक रचनाक प्रसार भेल, तखनहि हिनक विचार धारासँ लोक प्रभावित होइत गेल तथा वैदिक गार्हस्थ्य जीवन ओ परम्पराक रक्षा भए सकल। तें एहि प्रकारक वर्णनसँ जन-साधारणक हृदयमे काम-वासनाक उदय भए सकैत छनि, जे सृष्टिक हेतु आवश्यक अछि परन्तु संगहि भक्तिभावक लोप सेहो भए सकैत छनि। इएह कारण महाकविकें शिव-पार्वतीक श्रृंगार वर्णनमे प्रवृत्त कएलक से मानल जाए सकैत अछि।

सोहागिन महिला लोकनि पार्वतीजीकेँ हाथ पकड़िकए कोबरमे लए गेलीह। ओतए मणिस्तंभपर चनवा तानल गेल छलैक तथा ओकर बीचमे मंगलवेदी बनल छलैक।

तस्मात्प्रदेशाच्च वितानवन्तं युक्तं मणिस्तम्भचतुष्टयेन।

पतिव्रताभिः परिगृह्य निन्ये, क्लृप्तासनं कौतुकवेदिमध्यम्[१९]।।

एतए ई ध्यान देबाक थिक जे कालिदास सौन्दर्य-वर्णनक-क्रममे नारीक सहज भावक चित्रण अति सूक्ष्मताक संग कएलनि अछि।

पार्वतीजी लाजसँ एतेक सकुचाएल छथि जे ओ कोबर घर स्वयं नहि जाए सकैत छथि, प्रत्युत अन्य सोहागिन नारी हुनका पकड़ि कए लए जाइत छथिन्ह।

वेदीपर पार्वतीजी केँ आओर नीक जकाँ सजाओल जाइत छनि। ओतय चाननक धूपसँ गौरीक केश सुवासित कएल जाइत छनि। पुनः ओकरा गूहि पीयर महुक फूलक माला खोपामे खोंसल जाइत छनि।

कुमारसंभवमे शिव-गौरीक विवाहकालिक सौन्दर्य वर्णन हृदयग्राही भेल अछि। पार्वतीजीकेँ दूबिक अंकुर तथा सरिसबक दानासँ सजाओल जाइत छनि। तखन रेशमी साड़ी पहिराए एकटा बाण खोसि देल जाइत छनि -

सा गौरसिद्धार्थनिवेशवद्भिर्दूर्वाप्रवालैः प्रतिभिन्नशोभम्।
निर्नाभि कौशेयमुपात्तवाणमभ्यंगनेपथ्यमलंचकार।।[२०]

तखन तेल, उवटन एवं अनेक सुगन्धित द्रव्यक लेपकए स्नानगृहक नीलमणिक चौकी पर हुनका बैसाए देल जाइत छनि। ओतए मधुर वाद्यक संग गीत गाबि स्नान कराओल जाइत छनि। एकर पश्चात् ओ विवाहोचित वस्त्र धारण करैत छथि। से एहेन सुन्दर लगैत अछि जेना सघन मेघक जलसँ सिक्त वसुधा कासक फूलसँ सुशोभित भए उठल होथिः-

सा मंगलस्नानविशुद्धगात्री गृहीतपत्युद्गमनीयवस्त्रा।
निर्वृत्तपर्जन्यजलाभिषेका प्रफुल्लकाशा वसुधेव रेजे।।[२१]

पुनः अंगराग, गोरोचन आदिसँ सुसज्जित भए ओ अतीव सौन्दर्यमयी भए जाइत छथि। हुनक सौन्दर्यक आगाँ उज्ज्वल धारासँ युक्त ओहि गंगाजीक शोभा सेहो मन्द पड़ि जाइत छनि, जकर तटपरक बालुपर चकवा बैसल हो-

विन्यस्तशुक्लागुरु चक्रुरङ्गं गोरोचनापत्रविभक्तमस्याः।
सा चक्रवाकांकितसैकतायास्त्रिस्त्रोतसः कान्तिमतीत्य तस्थौ[२२]**।।**

एहि प्रकारक अनेक सौन्दर्य प्रसाधनसँ युक्त पार्वतीजी जखन अपन रूपकेँ दर्पणमे देखैत छथि तँ शंकरजीसँ मिलनक हेतु ओ आओर अधिक उत्सुक भए जाहत छथि, कारण जे नारीक श्रृंगार तखनहि सफल होइत छेक जखन प्रियतम ओकरा देखए –

स्त्रीणां प्रियालोकफलो हि वेशः[२३]**।।**

कालिदास सनातन धर्मक पूर्ण पक्षपाती छलाह। हुनक एक-एकटा पंक्तिमे मानवक सहज प्रवृत्तिक प्रति संवेदना तथा सौन्दर्यक प्रति आकर्षणक भावक अभिव्यंजना अछि।

जहिना पार्वती अपन सौन्दर्यसँ स्वयं अभिभूत भए प्रिय मिलनक हेतु समुत्सुक भए जाइत छथि, तहिना महादेव सेहो अपन योगियाक रूप तेजि सुन्दर वरक रूप धारण करैत छथि। विवाहकालमे हुनक योगबलसँ चिताक भस्म उज्ज्वल अंगराग, कपाल सिरक अभूषण तथा व्याघ्रचर्म छपाओल सुन्दर रेशमी वस्तु बनि गेलनि।

हुनक सिरक तेसर नेत्र जकर पुतली पीतवर्णक छलैक, से हरतालक सुन्दर तिलक रूप मे परिणत भए गेलेक।

शंखान्तरद्योति - - - - -।।

हुनक जाहि-जाहि अंगपर साँप छलनि से ओहि अंगक आभूषण बनि गेलनि परन्तु ओकर मणि यथावत् चमकैत रहलैक।

महादेवक चूड़ामणि चन्द्रमा पहिनहिसँ विराजित छलाह, तेँ दोसर चूड़ामणि धारण करबाक हुनका प्रयोजन नहि पड़लनि।

महादेवक साज-सज्जा मे देवगण सेहो अपन-अपन उत्साह देखौलनि। जखन ओ विवाहक हेतु विदा भेलाह तँ सूर्य विश्वकर्मा द्वारा बनाओल छत्र लगाए देलथिन्ह। गंगा तथा यमुना स्वयं प्रकट भए महादेवजीकेँ चओरसँ होंकए लगलथिन्ह। ब्रह्मा तथा विष्णु हुनक जय-जयकार करए लगैत छथिन। सप्तमाता शिवगौरीक विवाहमे सम्मिलित होयबा लेल जाए रहलि छथि। हुनक पाछू भद्रकाली सेहो विदा भेलि छथि।

इन्द्र आदि देवता अपन गर्व छोड़ि ओहि विवाहमे सम्मिलित भेलाह। सप्तर्षि सेहो शिवगौरीकेँ आशीर्वाद देबाक हेतु आबि गेलाह।[२४]

एतबा होइतहुँ सभ प्रकारक विकारसँ रहित शिवजी जखन विवाहक हेतु विदा भेलाह तँ विश्वावसु आदि प्रसिद्ध गन्धर्व त्रिपुरासुरपर विजय प्राप्त करबाक गीत गएबाक हेतु विदा भए गेलाह।[२५]

एतय महादेव हेतु 'सभ विकारसँ मुक्त' पदक प्रयोग कए कवि एकटा परम्पराक निर्वाह मात्र कएलनि अछि। जतए शिव-पार्वतीक वर्णन मानवीय धरातल पर करैत ओ नवीन परम्पराक सृजन करैत छथि, ततहि महादेवक हेतु हुनक विवाह यात्राक क्रममे विकार लंघ्य पदक प्रयोग पुनः प्रचलित मान्यता [जे शिव विकार रहित छथि] दिस उन्मुख भेल बुझि पड़ैत अछि तथा कविक आशयक सद्यः विरोधाभास परिलक्षित होइत अछि।

एहि विवाहमे शिवजीक बरदक उत्साह अनिर्वचनीय अछि। ओ अपन छोट-छोट घंटीकेँ टनटनबैत मेघकेँ अपन सींगसँ एहि प्रकारेँ झटकारैत छल जेना ओहिमे थाल लागि गेल हो।[२६]

एहि प्रकारेँ महादेवकेँ हुनक बरद हिमालयक सुन्दर नगर औषधिप्रस्थ पहुँचाए देलक।[२७]

नगाधिराज हिमालयक धन-वैभव तथा सौजन्यक उल्लेख कालिदास बड़ विस्तारसँ कएलनि अछि। हिमालयक धनिक सम्बन्धी लोकनि हाथी पर चढ़ि महादेवकेँ अनबाक हेतु आगू बढ़ैत छथि। ओ सभ अपन सैनिकसँ ओहिना सुसज्जित छलाह जेना फलसँ डारि लदल होअए।[२८]

हिमवान् महादेवकेँ पुष्पसँ आच्छादित मार्गसँ अनैत छथि। हिमालयक नगरमे श्वेत भवन चमकि रहल छलैक तथा ओ ध्वजा-पताकासँ सुसज्जित छल।[२९]

शंकरजी अत्यन्त सुन्दर छथि। हुनका दिस स्त्रीलोकनि निर्निमेष दृष्टिएँ ताकि रहलि छथि तथा कहि रहलि छथि जे घोर तपस्या करब उमाक एहेन वरक हेतु उचिते छलनि। कारण एहेन सुपुरुषक स्त्री होएब भाग्यक बात थिक, आ' जे हिनक अंकशायिनी हो, तकर भाग्यक त कथे कोन?[३०]

यदि शिवकेँ गौरी अथवा गौरीके शिव प्राप्त नहि होइतथिन्ह तँ ब्रह्माक सौन्दर्य निर्माणक परिश्रम व्यर्थ भए जैतैन्हि।[३१]

एहि प्रकारेँ औषधिप्रस्थ नगरक स्त्रीलोकनिक मधुर वचन सुनैत शिव हिमालयक भवन धरि अबैत छथि। ओतए कुमारि कन्या लोकनि लाबा फेकि हुनक परिछनि करैत छथिन।[३२]

महादेवक दृष्टि पार्वतीपर जाइत छनि। एहि क्षणमे हुनक मुखचन्द्रकें देखि महादेवक नेत्ररूपी कुमुद फुलाए जाइत छनि तथा हुनक मन जलक समान स्वच्छ भए जाइत छनि।[३३]

एहि श्लोकमे महादेवक मनके जल हुनक नेत्रके कुमुद तथा पार्वतीक मुँहके चन्द्र कहि कवि सांग-रूपकक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करैत छथि।

एहि प्रकारेँ विवाहकालमे शिव-गौरीक परस्पर दर्शन तथा स्पर्शजन्य सात्त्विक भावक उल्लेख कए कवि परस्पर अनुरक्त युगलक भावनाकें स्वाभाविकताक संग चित्रित कएलनि अछि।

हिमालय पार्वतीक हाथ आगाँ बढ़ाए शंकरजीक हाथपर राखि दैत छथिन। उमाक लाल-लाल अंगुरी एहेन बुझि पड़ैत अछि जेना महादेवक डरेँ नुकाएल

कामदेवक अंकुर पुनः उगि गेल हो।[३४]

महादेवक हाथक स्पर्शसँ पार्वतीकेँ रोमांच भए जाइत छनि तथा शंकरक अंगुरी स्वेदसँ भीजि जाइत छनि। से एहेन सन लगैत अछि जेना दुनूक हाथ मिलाए कामदेव पुनः दुनूकेँ अपन अधीन कए लेने होथि।[३५]

एहि प्रकारेँ एक-दोसराक स्पर्शक आनन्द लैत दुनू गोटए अग्निक प्रदक्षिणा करैत छथि तथा तीन बेर प्रदक्षिणा कएलाक बाद आगिमे लाबासँ होम करैत छथि।[३६]

शिव-गौरी विवाहक क्रममे कालिदास वैदिक तथा लौकिक विधिक वर्णन बड़ सूक्ष्मतासँ करैत छथि। अग्निक प्रदक्षिणा, पार्वतीक द्वारा धर्मक शपथ लेब,[३७] महादेवक द्वारा ध्रुव दिस संकेत कए पार्वतीकेँ देखाएब, वृद्धकेँ प्रणाम कए वर-वधूक हुनकासँ आशीर्वाद लेब आदि वैदिक विधि तथा दूर्वाक्षतादि देब लौकिक विधिक उपचार कएल गेल।[३८]

ओहि समयमे लक्ष्मीजी वर-वधूक ऊपर कमलक छत्र लगबैत छथि तथा सरस्वतीजी संस्कृत तथा प्राकृतमे दुनूक स्तुति करैत छथि।[३९]

एहि प्रकारेँ अइहब लोकनि पार्वतीक हाथ पकड़ि हुनका कोबरमे लए जाइत छथिन। ओतए मणिस्तम्भपर चेनुआ तानल गेल छैक तथा ताहि बीचमे मंगलवेदी बनल छैक।[४०]

विवाहकालिक विधिक वर्णन-क्रममे नारीक सहजभावक चित्रण कालिदास जेना कएलनि अछि, से हुनक काव्य-सौन्दर्यक परिचायक अछि।

पार्वतीजी लाजेँ एतेक अधिक सकुचाएलि छथि जे ओ कोबर घर स्वयं नहि जाइत छथि प्रत्युत अन्य अइहब-सुहब हुनका हाथ पकड़ि लए जाइत छथिन्ह।

वेदीपर गौरीक श्रृंगार पूर्णरूपसँ सम्पन्न होइत छनि। ओतए चाननक धूपसँ हुनक केश सुवासित कएल जाइत छनि। पुनः ओकरा गूहि पीयर महुक फूलमाला हुनका पहिराओल जाइत छनि।[४१]

पुनश्च अंगराग, गोरोचन आदिसँ सुसज्जित भए ओहि अतीव सौन्दर्यक आगाँ उज्ज्वल धारासँ युक्त ओहि गंगाक तटक शोभा सेहो मन्द पड़ि जाइत छैक, जकर बालुपर चकवा बैसल हो।[४२]

एहि प्रकारक अनेक प्रसाधनसँ युक्त गौरी जखन अपन रूपकेँ दर्पणमे देखैत छथि तँ ओ शंकरसँ मिलनक हेतु अधिक उत्कण्ठित भए जाइत छथि। कारण जे नारीक श्रृंगार तखनहिँ सफल होइत छैक जखन प्रियतम ओकरा देखए।[४३]

कालिदास सनातन धर्मक पूर्ण पक्षपाती छलाह। हुनक एक-एकटा पंक्तिमे मानवक सहज प्रवृत्तिक प्रति संवेदना तथा सौन्दर्यक प्रति आकर्षणक अभिव्यंजना अछि।

जहिना पार्वती अपन सौन्दर्यसँ स्वयं अभिभूत भए प्रियमिलनक हेतु समुत्सुक भए जाइत छथि, तहिना विवाह सन शुभ अवसरपर महादेव सेहो अपन योगीक वेश-भूषाक परित्याग कए सुन्दर रूप धारण करैत छथि।

विवाहकालमे हुनक योगबलसँ चिताक भस्म उज्ज्वल अंगराग, कपाल सिरक आभूषण तथा गजचर्म छपुआ सुन्दर रेशमी वस्त्रमे परिणत भए जाइत छनि।[४४]

हुनक जाहि-जाहि अंगपर साँप चलनि, से ओहि अंगक आभूषण बनि जाइत छनि परन्तु ओकर मणि यथावत् द्युतिमान रहैत छैक।[४५]

महादेवजीक विवाहक श्रृंगारमे देवगण सेहो अपन उत्साह देखबैत छथि। जखन ओ विवाहक हेतु विदा होइत छथि तँ हुनक सिरपर सूर्य विश्वकर्मा द्वारा निर्मित छत्र लगाए दैत छथिन।[४६]

गंगा तथा यमुना स्वयं प्रकट भए महादेवजीके चओरसँ हौंकए लगैत छथिन। ब्रह्मा तथा विष्णु हुनक जय-जयकार करए लगैत छथिन।[४७]

सप्तमाता शिवगौराक विवाहमे सम्मिलित होयबा लेल जाए रहलि छथि। हुनक पाछू-पाछू भद्रकाली सेहो विदा भेलि छथि, जे बगुलासँ युक्त नीलमेघक समान शोभित भए रहलि छथि।[४८]

एहि प्रकारेँ सभ प्रकारक विकारसँ रहित महादेवजी जखन विवाह हेतु विदा होइत छथि तखन विश्वावसु आदि प्रसिद्ध गन्धर्व त्रिपुरासुर विजय प्राप्त करबाक गीत गबैत हुनक आगाँ-आगाँ जाए रहल छथि।[४९]

एहि विवाहसँ देवता लोकनि बड़ प्रसन्न होइत छथि। ओ सभ शंकरजीसँ वर मङैत छथि जे कामदेव पुनः जीवित भए जाथि। महादेव तकर अनुमति दए

पार्वतीक संग बिहार करबामे तल्लीन भए जाइत छथि।

कालिदास गौरीशंकरक विलासक वर्णन सेहो एकटा आराध्य-देवक क्रिया-कलापक रूपमें नहि करैत छथि प्रत्युत हुनक शिवगौरीक विहारमे परिलक्षित होइत अछि वैभवशाली पति-पत्नीक मानवीय संवेदनाक सहज अनुभूति।[५०]

कालिदासक ई काव्य ततेक लोकप्रिय भेल जे गौरी-शंकर-काव्य धारा अपन स्वतन्त्र अस्तित्त्व बना लेलक। अनेक कवि महाकाव्यक रचना एही धाराक अन्तर्गत कएलनि। प्रायः कालिदासक पश्चात् जे कवि संस्कृतमे रचना कयलनि ताहिमे मुक्तक काव्यक रूपमे गौरीशंकरक उल्लेख सभ कवि कएलनि।

गौरीशंकर विषयक महाकाव्यमे महाकवि रत्नाकरक हरविजयम्, महाकवि मंखकक श्रीकण्ठ चरितम् एवं श्री नीलकण्ठ दीक्षितक शिवलीलार्णव प्रसिद्ध अछि। महाकवि भारवि किरातार्जुनीयमे सेहो शिवक उल्लेख कएलनि किन्तु ओहिमे गौरीक चर्चा नगण्य अछि। तैँ एहि श्रेणीक काव्यक अन्तर्गत ओकर कोनो महत्त्वपूर्ण स्थान नहि कहल जाए सकैत अछि।

उपर्युक्त चर्चित ग्रन्थमे शिवलीलार्णव सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना अछि। शिवलीलार्णवमे गौरी ओ शंकरक परस्पर अनुरागक वर्णन मर्मस्पर्शी भेल अछि।

प्रियतमकेँ प्रसन्न करबाक हेतु गौरी बड़ मनसँ शृंगार करैत छथि। ओ बुझैत छथि जे शिवजीकेँ कमल प्रिय छनि। ओ हाथमे एवं कानमे ओकरा [कमल फूलके] धारण करैत छथि। अपन रूपकेँ दर्पणमे निहारए लगैत छथि किन्तु विश्वास नहि होइत छनि जे कान एवं हाथ मात्रमे कमलकेँ देखि शिवजी प्रसन्न होयताह। अतः ओ अपन नयनकेँ कमल सन बना लैत छथि आ' तैयो सन्तोष नहि होइत छनि। पुनः अपनाकें कमल सन कोमल बनाए कमलमयी बनि जाइत छथि एवं प्रतीक्षा करए लगैत छथि शिवजीक प्रसन्नताक -

उपासितुं सा पतिमुत्पलप्रियं करे च कर्णे च निवेशितोत्पला।
बभार भूयो नयनोत्पले ततः स्वयं बभूवोत्पलदाम कोमला।।[५१]

उपर्युक्त रचनामे जहिना पार्वतीक शारीरिक सौन्दर्यक उल्लेख कएल गेल अछि तहिना हुनक हृदयक उल्लास ओ अनुरागक अभिव्यञ्जना अछि। वस्तुतः ई पद कविक काव्य वैदग्ध्यक उत्कृष्ट उदाहरण थिक।

विवाहकालमे पार्वतीक सौन्दर्य अनुपम अछि। तत्काल भेनिहार विवाहक आनन्दसँ पार्वतीक स्वच्छ हास एहेन लगैत छल जेना छकमे लागल मणिक प्रकाश अधरकेँ बाहरसँ अलंकृत करैत होअए –

अलक्ष्यतासन्नकरग्रहोत्सवप्रमादजोऽस्या विशदः स्मितांकुरः।
विसृज्य नासामणिचन्द्रिका बहिर्विभूषयन्ती रदच्छदान्तरम्।।[५२]

पार्वतीक सौन्दर्यक अगाँ स्वर्गक अप्सरा लोकनि अपन मुँह नुकाए लेलनि –

विसृज्य भद्रासनमात्तपादुकां समायतीं प्रश्रयगन्धिभिः पदैः।
वधूं विवाहोचितवेषकोमलं निरीक्ष्य तस्थुर्निभृताः सुरस्त्रियः।।[५३]

अर्थात् भद्रासनकेँ छोड़ि जूता पहिरि मदमत्त हाथी जकाँ चलैत विवाहोचित वेषभूषामे सजलि–धजलि वधू रूपमे पार्वतीकेँ देखि स्वर्ग सुन्दरी लोकनि अपन अपन मुँह नुकाए लेलनि।

विवाहकालमे पार्वतीक प्रत्येक भाव–भंगिमा शिवक प्रति हुनक आसक्तिक अभिव्यञ्जना करैत अछि। अपन तरहत्थी पसारि शिवजी जखन संकेत कएलनि तँ पार्वती अपन हाथकेँ तदनुरूप लगले बढ़ाए देलनि। हुनक एहि क्रियासँ उपस्थितजनकेँ बुझना गेलैक जे शिवजीक प्रत्येक बातक उत्तर देबा लेल ओ प्रस्तुत छथि –

तत्पूर्वमुत्तानदशागृहीतसंकेतके पाणितले पुरारेः।
न्यस्तः करः पाण्ड्यकुमारिकायाः सर्वोत्तरत्त्वं प्रकटी चकार।।[५४]

उपर्युक्त पदमे 'सर्वोत्तरत्त्वं प्रकटीचकार'– एहि पदसँ कविक आशय ई अछि जे शिवजीक अनुरागक प्रत्युत्तर देबा लेल गौरी समुत्सुक छलीह। प्रियमिलनक आतुरताक एतेक सुन्दर अभिव्यञ्जना कविक उत्कृष्ट कौशलक परिचायक थिक।

महाकवि नीलकण्ठ दीक्षितजी कालिदासहि जकाँ पार्वतीक रूप–वर्णन ओ विवाहकालिक विधि–व्यवहारक उल्लेख कए अपन काव्यकेँ रोचकता प्रदान कएलनि। स्थान ओ कालक अन्तर रहने ओहि वर्णनमे जे वैभिन्य दृष्टिगोचर होए, किन्तु भाव–प्रवणता, वस्तुक प्रतिपादनक शैली आदि काव्य–वैदध्यक रूप शिवलीलार्णवमे कुमारसंभवे जकाँ मर्मस्पर्शी भेल अछि।

जेना अश्मारोहण, गोत्राध्याय आदि वैदिक विधानक उल्लेख एहू काव्यमे [शिवलीलार्णवमे] कएल गेल अछि। तीनू लोककेँ शरण देनिहार सुन्दर शिवजी पार्वतीक चरण कमलकेँ पाबि अश्मारोहणक समय सभटा ऐश्वर्यकेँ हस्तगते बुझलनि–

कान्तः शरण्यो जगतां त्रयाणां तस्याः करस्थे चरणारविन्दे।
ऐश्वर्यमुर्व्यादि सदा शिवान्तमव्याहतं तद्बुबुधे करस्थम्।।[५५]

शिवजी जखन हुनक [पार्वतीक] पएरकेँ पकड़ि पाथरपर राखए लगैत छथि तँ भगवान् मुकुन्द कहैत छथिन जे ई पएर पकड़बाक एखन पहिल अवसर अछि। आइसँ जिनगी भरि ई पएर पकड़बैत रहतीह से बुझि लिअ –

अश्मानमारोपयितुं पदाब्जमालम्बमाने दयिते मृगाक्ष्याः।
पादग्रहः प्राथमिकोऽयमस्याः प्रतीयतामित्यवदन्मुकुन्दः।।[५६]

एहि ग्रन्थमे देवी–देवताक एहेन विनोद वाक्य अनेक स्थलपर परिलक्षित होइत अछि। सरस्वती एवं लक्ष्मी धैर्यक उपदेश दैत अम्बिका [पार्वती] केँ शिवजीक समक्ष अनैत छथिन एवं ओ [शिवजी] गौरीक हाथ पकड़ि सर्वश्रेष्ठ मंचपर बैसि रहैत छथि –

धैर्योपदेशादसकृत् सखीभ्यां वाणीरमाभ्यां प्रतिबोधितायाः।
आलम्बमानः करमम्बिकाया मञ्चे परार्घ्ये निषसाद देवः।।[५७]

उपर्युक्त सन्दर्भमे 'धैर्योपदेशात्'– एहि पदसँ पार्वतीक तारुण्यक चञ्चलताक अभिव्यञ्जना बड़ नीक जकाँ भेल अछि।

कवि गौरीशंकरक विवाह कालिक क्रममे गौरीक सौन्दर्यक वर्णन बड़ चतुरतासँ कएलनि अछि–मृगनयनी पार्वतीक धानक लाबासँ भरल आँजुरकेँ जखन शिवजी अपन हाथमे लैत छथि तँ एहेन लगैत अछि जेना वरमालाक धारणकालमे लागल फूलक खोंचसँ रूसलि गौरीकेँ शिवजी मना रहल होथि –

गृह्णन् वरः स्वाञ्जलिना मृगाक्ष्या
लाजाञ्जलिं होमविधौ चकाशे।
माल्यापवेधग्लपनापराध
निर्मार्जनायानुनयन्निवेमाम्।।[५८]

एतय ई ध्यातव्य जे शिवजीकेँ एकर आशंका भए गेलनि जे फूलक मालासँ गौरीकेँ खोंच लागि जएतनि– ई वर्णन एक दिस पार्वतीक कोमलताक तँ दोसर दिस शिवक आसक्तिक अभिव्यञ्जना करैत अछि। कविक लेखनीक चमत्कार मर्मस्पर्शी भेल अछि।

माल्यार्पण कालमे सेहो शिव–गौरी एक–दोसराकेँ माला पहिरबैत एहन सन बुझना जाइत छथि जेना परस्पर ई संकेत कए रहल होथि जे [एक–दोसराक प्रति] कामवाणसँ हम विद्ध भए गेल छी –

परस्परस्योपरि मन्मथेन प्रयुक्तमस्त्रं समयं प्रतीक्ष्य।
सन्दर्शयन्ताविव चक्रतुस्तो माल्यार्पणव्यत्ययमंगलानि।।[५९]

पार्वतीक पएरक सौन्दर्यक उल्लेख सेहो कवि बड़ सुन्दर ढंगसँ कएलनि अछि। जखन पार्वती अलताकेँ हटाए मणिसँ युक्त जूता पहिरि लैत छथि। तँ हुनक पएरक स्वभाविक लालिमा मणिक पादुका पर आओर अधिक सुशोभित भए उठैत अछि। सरस्वतीजी ओहि पएरक सौन्दर्यकेँ कखनहुँ आँखि पसारि [आश्चर्यचकित भए] एवं कखनहुँ आँखि मूनि अधिक कालधरि ध्यान करैत छथि, संगहि लक्ष्मीकेँ संकेतसँ – व्यंग्य करैत छथिन जे एतेक सुन्दर पएर कतहु ने देखल अछि।

अलक्ष्यतास्या मणिपादुकाञ्चले समन्ततो मौक्तिकपंक्तिरुज्ज्वला।
अदूरलग्ना चरणारविन्दयोरनुश्रवाणामिव वर्णपद्धतिः।।[६०]
अतीत्य लाक्षारसमाहितं नवं मणिप्रभां पादुकयोश्च तावतीम्।
अकृत्रिमः पाटलिमा पदाब्जयोरलक्ष्यतास्या विसरन् बहिः स्फुटम्।।[६१]

विवाहक पश्चात् सेहो गौरीशंकरक प्रणयक वर्णन क्रममे गौरीक सौन्दर्य विशेष रूपेँ वर्णित भेल अछि। हुनक [पार्वतीक] अधर लाल छनि एवं आँखि लाजेँ झुकल छनि। शिवजी ओकरा देखबाक लोभकेँ सँवरण नहि कए पबैत छथि एवं घाम पोछबाक लाथेँ ओ मुखाकृतिकेँ उठाए पार्वतीक सौन्दर्यपान करैत छथि –

ताम्राधरोष्ठं तरलायताक्षमास्विन्नमिषत्त्रपयावनम्रम्।
वक्त्रं शनैरुन्नमयाम्बभूव मार्जन्निव स्वेदलवान् स तस्याः।।[६२]

कालिदासक पश्चात् गौरीशंकरक चर्चा कविगणक हेतु एकटा अमूल्य निधिक रूपमे सुरक्षित ओ पूज्य भए गेल। केओ शिवगौरीक आराध्यस्वरूप, केओ दुनूक प्रणय-प्रसंग, तँ केओ हुनका सभक वात्सल्य सुखक वर्णनमे तल्लीन बुझि पड़ैत छथि।

महाकवि हाल सातवाहनक गाथासप्तशती, बाणभट्टक कादम्बरी, भारविक किरातार्जुनीयम्, अमरुकक शतक काव्य, गोवर्द्धनाचार्यक आर्यासप्तशती, भवभूतिक मालतीमाधव आदिमे शिव-गौरीक चर्चाक कथा प्रसंगवश वा मंगल-श्लोकक रूपमे कएल गेल अछि।

अधिकतर कवि शिव-पार्वतीकेँ मंगलक प्रतीक रूपमे देखैत छथि, तेँ मंगल श्लोकहिमे हुनक चर्चा करब श्रेयस्कर बुझैत छथि। वा ई कही जे कालिदासक पश्चात् मंगलक प्रतीक शिव-गौरिए छथि, तँ अत्युक्ति नहि होएत।

एकरा संगहि ईहो ध्यातव्य जे एहि प्रसंगे गौरीक वात्सल्यभावक उल्लेख करब कविलोकनिमे सर्वाधिक लोकप्रयि भेल। मंगलश्लोकमे अधिकतर गौरीक प्रणयकोपक चर्चा कएल गेल अछि।

गाथासप्तशतीक आरम्भमे कवि [हाल सातवाहन] एहेन वर्णन करैत कहैत छथि जे प्रातःकाल सन्ध्यावन्दन करैत पशुपति भगवान् शंकर अपन अंजलिमे जल लेलनि तखन पार्वतीक मोनमे एकर क्रोध भए गेलनि जे भगवान् हमरा छोड़ि कए सन्ध्याक ध्यान किऐक कए रहल छथि। तेँ हुनक विवर्ण मुखचन्द्र सन्ध्याक जलांजलिमे प्रतिबिम्बित होमए लगलनि। से एहेन सन लगैत छल जेना भगवान् पशुपति कमलक संग अंजलिमे अर्घ्य धारण कएने होथि। [एहेन जलांजलिके प्रणाम करू।]

पशुपते रोषारुणप्रतिमासंक्रान्तगौरीमुखचन्द्रम्।
गृहीतार्घपंकजमिव सन्ध्यासलिलाञ्जलिं नमस्ते।।[६३]

पार्वती शिवक अभिन्न अंग थिकीह। ओ हुनक [भगवानक] कोनो प्रकारक कार्य-कलापमे अन्य नारीक अस्तित्वकेँ सहन नहि कए सकैत छथि। हालसातवाहनक दृष्टिमे पार्वतीक ईर्ष्यामान अतीव सुन्दर अछि। अन्यहु स्थलपर ओ एकर वर्णन करैत छथि -

सन्ध्यासमये जलपूरिताञ्जलिविघटितैकवामकरम्।
गौर्ये कोषपानोद्यतमिव प्रमथाधिपं नमत।।[६४]

कोनो मानिनी नायिकाक प्रसादनार्थ नायकक प्रति सखीक ई उक्ति अछि जे जखन शिवजी सन्ध्यावन्दनक हेतु जलांजलि लेलनि तँ पार्वती ईर्ष्याकोपवश अपन बामा हाथ हटाए लेलनि। कारण जे अर्ध्यनारीश्वरक आधा भाग पार्वतीक थिकनि। तखन हुनका [गौरीकेँ] मनएबाक हेतु महादेव कोषपान कयलनि। तहिना यदि अहूँ हमर सखीक मान त्यागक हेतु हुनका लग अपन अपराध स्वीकार कए प्रायश्चित्त करब ताहिसँ अहाँक प्रतिष्ठामे कोनो हानि नहि होयत।[६५]

शिवजी कखनहुँ तँ प्रायश्चित्त करबाक हेतु उद्यत होइत छथि, आ' कखनहुँ प्रियाक तमसाएल मुखाकृति केँ देखि एतेक अधिक विभोर भए जाइत छथि जे सन्ध्यावन्दनक मन्त्रकें बिसरि, फुसिये बुदबुदाए लगैत छथि। गाथा सप्तशतीक अन्तमे एही प्रकारक वर्णन अछि –

सन्ध्यागृहीतजलाञ्जलिप्रतिमासंक्रान्तगोरीमुखकमलम्।
अलीकमेव स्फुरितोष्ठविगलितमन्त्रहरं नमत।।[६६]

सन्ध्याक सलिलांजलिमे प्रतिबिम्बित गौरीक मुखक दर्शनसँ मुग्ध शिवजी धर्म–कर्म बिसरि जाइत छथि। एहि प्रकारक उल्लेख गोवर्धनाचार्य सेहो कएने छथि। परन्तु एहिमे हुनक [गौरीक] कोपक चर्चा नहि अछि। जेना–

प्रतिबिम्बितगोरीमुखविलोकनोत्कम्पशिथिलकरगलितः।
स्वेदभरपूर्यमाणः शम्भोः सलिलाञ्जलिर्जयति।।[६७]

अर्थात् शंकरजीक सलिलांजलि सर्वोत्कृष्ट अछि जाहिमे प्रतिबिम्बित गौरीक मुख देखलासँ कम्पितरूप सात्त्विकभावक कारणें हाथ शिथिल भए गेलनि तथा सभटा जल खसि पड़लनि परन्तु तत्काल स्वेदरूप सात्त्विकभावक आधिक्यसँ अंजलि पुनः [जलसँ] पूर्ण भए गेलनि।

गोवर्धनाचार्य पार्वतीक सापत्न्यभावक उल्लेख नहि कयने छथि। प्रायः ईर्ष्या खाहे ओ मानहिक ईर्ष्या किऐक ने हो, तकर कटुतासँ शिवपार्वतीक आह्लादक दाम्पत्यकेँ क्षणमात्रहुक हेतु दुःखद नहि बनबए चाहैत छथि। एतय अन्य ग्रन्थकारक मान्यतासँ हुनक मान्यता भिन्न बुझि पड़ैत अछि। साधारण मान्यता अछि जे नायिकाक कोपसँ प्रणय–सम्बन्धमे दृढ़ता अबैत छैक, परन्तु

ताहि कोपमे ईर्ष्याक कोपकेँ गोवर्धनाचार्य प्रायः हितकर नहि मानैत छथि, तेँ ने शिवगौरीक दाम्पत्यमे अन्य नायिकाक अस्तित्वक कल्पना कवि नहि करैत छथि।[६८]

ओना रूसलि गौरीक चर्चा इहो करैत छथि परन्तु से हुनक (उमाक) ईर्ष्यामान, नहि, प्रणयमान थिकनि। जेना :-

प्रणयकुपित प्रियापदलाक्षासन्ध्यानुबन्धमधुरेन्दुः।
तद्वलयकनकनिकष ग्रावग्रीवः शिवो जयति।।[६९]

अर्थात् प्रणयसँ (सत्ये नहि) कुपित प्रियाक मानापनोदनार्थ चरणमे मस्तक राखि देलासँ चरणक लाक्षारूप सन्ध्याक संगसँ जनिक चन्द्रमा सुशोभित भ' उठल छनि तथा एहि प्रकारेँ मान दूर कए प्रसन्न पार्वतीक द्वारा कण्ठपुरः सर आलिंगित कयल गेलापर जनिक ग्रीवा पार्वतीजीक कंकण-सुवर्णक कसौटीपर रूप सुशोभित भ' उठल छनि, एहेन शंकर जी सर्वोत्कृष्ट छथि।

पार्वतीक अतिरिक्त अन्य नायिकापर (जेना सन्ध्या) आकृष्ट भ' गेल होथि। तकर कारण ई बुझि पड़ैत अछि जे एहिसँ कवि गौरीक सौभाग्यक हीनता बुझैत छथि। अन्य नायिकाक प्रति नायकक आकर्षण ओकर (स्वकीयाक) सौभाग्यक प्रतिकूलताक द्योतक थिक। गौरी अखण्ड सौभाग्यवती छथि। तेँ ओ जे कुपित होइत छथि ताहिमे रहैत अछि प्रेमाधिक्यक व्यंजना, कलहक लेशो नहि। तेँ ई कहब अत्युक्ति नहि होयत जे हाल सातवाहनक गौरीसँ गौवर्धनाचार्यक गौरी अधिक सौभाग्यवतीक रूपमे वर्णित छथि।

ओना अनेक स्थल पर हाल सातवाहन शिवगौरीक दाम्पत्य चर्चा दोसरो रूपमे कएने छथि। जेना पाणिग्रहणक अवसर पर शिव अपन हाथसँ साँपक बाला एहि हेतु हटाए लैत छथि जेँ पार्वतीकेँ डर नहि होनि। एहिसँ हुनक (गौरीक) सखी लोकनि बुझि जाइत छथि जे गौरी अतीव सौभाग्यशालिनी छथि-

पाणिग्रहण एव पार्वत्या ज्ञातं संभिः सौभाग्यम्।
पशुपतिना वासुकिकंकणेऽ पखीरिते दूरम्।।[७०]

एकर अतिरिक्त कालिदास जकाँ शिवगौरीक रतिकीड़ाक चर्चा सेहो कवि हाल सातवाहन करैत छथि -

रतिकेलिधृतनिवसन करकिसलय रुद्ध नयनयुगलस्य।
रुद्रस्य तुतीयनयनं पार्वतीपरिचुम्बितं जयति।।[७१]

अर्थात् रति क्रीडाक समयमे भगवान् शिव पार्वतीक वस्त्र हटाए देलथिन। लाजसँ गौरी हुनक (शंकरक) दुनू आँखि अपन दुनू हाथेँ मूनि देलथिन। तखन शंकर अपन तेसर आँख खोलि प्रियाक सौन्दर्यकेँ देखलनि। पार्वती सँ परिचुम्बित शिवक एहेन तेसर नयनक जय हो।

शिवगौरीक रतिकीड़ाक आह्लादक स्थितिक वर्णन गोवर्धनाचार्य सेहो करैत छथि। जेना :-

उन्नालनाभिपंकेरुह हव येनामवाति शम्भुरपि।
जयति पुरुषयितायास्तदाननं शैलकन्यायाः।[७२]

अर्थात् पार्वतीक ओ मुखकमल सर्वोत्कृष्ट अछि, जे अपन कमलनाल सदृश शरीरकेँ भगवान् शंकरक उपर दए (विपरीत रतिमे) हुनका (शंकरकेँ) पद्मनाभ (विष्णु भगवान) जकाँ सुशोभित करैत छनि।

एहि दुनू श्लोकमे शिवगौरीक रतिक्रीड़ाक चर्चा अछि तेँ कालिदासक पश्चात् शिवगौरी आराध्यदेवसँ अधिक काव्यरसक अधिपतिक रूपमे उल्लिखित भेल छथि।

वस्तुतः गौरीशंकरक स्वरूप महान् अछि। हुनक वर्णन कए कवि लोकनिकेँ तृप्ति नहि होइत छनि। शाश्वत सौन्दर्य अगाध ओ अनन्त होइत अछि, जे गौरीशंकरमे निहित अछि :-

प्रयुक्तपाणिग्रहणं यदन्यद्वधूवरं पुष्यति कान्तिमस्याम्।
सान्निध्ययोगावन योस्तदानीं किं कथ्यते श्रीरुभयस्य तस्य।।[७३]

अर्थात् जाहि शिवगौरीक स्मरण मात्र कयला पर संसार भरिमे विवाहक अवसर पर वरवधूक शोभा बढ़ि जाइत अछि, हूनक दुहूक जखन स्वयं विवाह होइत रहनि तखनुक शोभा तँ सहजहिँ अनूप होयत।

❖❖❖

१. *सौन्दरनन्द (अश्वघोष), १०, ९ बुद्धचरित (अश्वघोष), सर्ग १।६१, ८८, १०।३ मृच्छकटिक अंक १, ३, ६, एवं १०क गद्यभाग।*
२. *कुमारसंभव*

३. विक्रमोर्वशीयम् (मङ्गलाचरण) एवं आभिज्ञान शाकुन्तलम्।

४. रघुवंश (मङ्गलाचरण) एवं मालविकाग्निमित्रम्।

५. विक्रमोर्वशीयम् मंगलपद्य

६. माल विकाग्निमित्रम् (मङ्गलाचरण)

७. (अ) रघुवंश (मङ्गलाचरण)

७. (आ) विमुच्य सा हार महार्यनिश्चया
विलोलयष्टि-प्रविलुप्त चन्दनम्।
बबन्ध बालारुण बभ्रु वल्कलं
प योधरोत्सेधविशीर्ण संहति।। -कु०सं० ५।८
यथा प्रसिद्धैर्मधुरं शिरोरुहै
र्जटाभिरप्येवमभूत् तदाननम्।
न षट्पदश्रेणिभिरेव पङ्कजं
सशैवलासङ्गमपि प्रकाशते।। -कु०सं०, ५।९,।।
प्रतिक्षणं सा कृतरोमविक्रियां,
व्रताय मौञ्जीं त्रिगुणां-बभार याम्।
अकारि तत्पूर्व निबद्धया तया
सरागमस्या रसनागुणास्पदम्।। -कु०सं० ५।१०।।
विसृष्टरागादधरान्नि वर्तितः
स्तनाङ्गरागारुणिता च्च कन्दुकात्।
कुशाङ्कुरादानपरिक्षाताङ्गुलिः
कृतोऽक्षसूत्रप्रणयी तयाकरः।। -कु०सं०, ५।।११

८. कुमारसंभव : ५।५३

९. कुमारसंभव : ५।१६, २७,

१०. कुमारसंभव : ५।२०

११. कुमारसंभव, ५।२१

१२. कुमारसंभव, ५।२३

१३. कुमारसंभव, ५/२२
१४. कुमारसंभव, ५/२८
१५. कुमारसंभव, ३/६८
१६. कुमारसंभव, १/६०
१७. कुमारसंभव, १/३२
१८. कुमारसंभव, १/३३
१९. कुमारसंभव, ७/१२
२०. कुमारसंभव, ७/७
२१. तदेव, ७/११
२२. तदेव, ७/२३, २४
२३–२४. कुमारसंभव, ७/३२, ३४, ३५, ४१, ४२, ३९, ४५
२५–३१. ३२सँ ३९ – कुमार संभव ७/४८, ४९, ५०, ५२, ६३, ६४, ६५, ७/६९, ७४, ७६, ७७, ८०, ८३, ८४, ८८, ८९, ९०
४०. तस्मात् प्रदेशाच्च वितानवन्तं युक्तं मणिस्तम्भचतुष्ट चे न।
पवित्रताभिः परिग्रह्य निन्ये क्लृप्तासनं कौतुकवेदिमध्यम्।।
–कु०सं०. ७/१२
४१. धूपोष्मणा त्याजितभार्द्रभावं केशान्तमन्तः कुसुमं तदीयम्।
पर्याक्षिपत् काचिदुदारबन्धं दूर्वावता पाण्डुमधूकदाम्ना।।
–कु०सं०, ७/१४
४२. विन्यस्त शुक्लागुरु चक्ररङ्गं गोरोचनापत्र विभ्रमस्याः।
सा चक्रवाकाङ्कित सैकतायास्त्रिस्त्रोत सः कान्तिमतीत्य तस्थौ।।
–कु०सं०, ७/१५
४३. आत्मानमालोक्य च शोभमानमादर्शबिम्बे स्तिमितायताक्षी।
हरोपयाने त्वरिता बभूव स्त्रीणां प्रियालोक फलो हि वेषः।।
–कु०सं०, ७/२२
४४. बभूव भस्मैव सिताङ्गरागः कपालमेवामल शेखरश्रीः।
उपान्त भागेषु च रोचनाङ्को गजाजिनस्यैव दुकूल भावः।।
–कु०सं० ७/३२

४५. यथा प्रदेशं भुजगेश्वराणां करिष्यतामाभरणान्तरत्वम्।
शरीरमात्रं विकृतिं प्रपेदे तथैव तस्थुः मणिरत्नशोभाः।।
–कु०सं० ७/३४

४६. उपाददे तस्य सहस्ररश्मिस्त्वष्ट्रा नवं निर्मितमातपत्रम्।
स तद्दूकूलादविदूरमौलिर्बभौ पतद्गङ्ग इवोत्तमाङ्ग।।
–कु०सं० ७/४१

४७. मूर्ते च गङ्गायमुने तदानीं सचामरे देवमसेविषाताम्।
समुद्रगारूप विपर्ययेऽपि सहंस पाते इव लक्ष्यमाणे।।
–कु०सं० ७/४२

४८. तासां च पश्चात् कनक प्रमाणा काली कपालाभरणा चकासे।
बलाकिनी नीलपयोदराजी दूरं पुरः क्षिप्तशतह्रदेव।। ७/३९

४९. कु०सं०, ७/४८

५०. कुमार संभवक अष्टम सर्ग सम्पूर्ण।

५१. श्री नीलाकण्ठ दीक्षितक शिवलीलार्णव एकादश सर्ग, श्लोक ११/६९

५२. शिवलीलार्णव – ११/७१

५३. शिवलीलार्णव – ११/६०

५४. शिवलीलार्णव – १२/९।

५५. शिवलीलार्णव – १२/१४

५६. शिवलीलार्णव – १२/१३

५७. शिवलीलार्णव – १२/२३, १२, ११

५८–६०. शिवलीलार्णव, १२/२३, १२, ११।

६१. शिवलीलार्णव, ११/६१, ६२

६२. शिवलीलार्णव, १२/२४

६३. गाथा सप्तशती, मङ्गलाचरण।

६४. गाथा सप्तशती पचंम शतकम् – श्लोक ४८

६५. कोनो दिव्य कर्ममे मनसा, वाचा, कर्मणा प्रवृत्त भेलासँ फल होइत छैक। पार्वती यदि अपन शरीरक कोनो भाग हटाए लैत छथि तँ शिवक तपश्चर्या अपूर्ण रहि जाइत छनि। हुनक आधा अंग तँ गिरिकन्ये छथिन।

कोषपान एक प्रकारक धर्मशास्त्रीय दिव्य कर्म छिऐक। ई अपराध अथवा कोनो पापक शोधन हेतु प्राचीन कालमे कराओल जाइत छलैक। याज्ञवल्क्य स्मृतिक व्यवहाराध्यायमे ई वचन छैक देवान् ग्रहान्
अर्थात दुर्गा, आदित्य आदि उग्र देवताक गन्धपुष्पादिसँ पूजा कए हुनक स्नानक जल के मङ्बाय तीन आँजुर जलपान कराबी। ई पद्धति गोमयमण्डित भूमिपर शोध्य पुरुष के आदित्याभिमुख स्थापित कएकें सम्पन्न कयल जाइत छैक। ई कार्य कोषपान अथवा वीर्यपान कहबैत छैक।

६६. *गाथाशप्तशती*
६७. *आर्यासप्तशती : ग्रन्थारम्भव्रज्या – १/७।*
६८. *आयार्सप्तशती : ग्रन्थारम्भव्रज्या – १/८।*
६९. *आयार्सप्तशती : ग्रन्थारम्भव्रज्या – १/८।*
७०. *गाथासप्तशती : ग्रन्थारम्भव्रज्या: श्लोक–१/९*
७१. *आर्यासप्तशती : ग्रन्थारम्भव्रज्या: श्लोक–६९*
७२. *हरस्य श्रृंगार रसाधिदेवता...*
शिवलीलार्णव : एकादशः सर्गः
७३. *कुमारसंभव, सप्तमः सर्गः – ७८*

❑❑

अध्याय- ५

मैथिली साहित्यमे वर्णित गौरीशंकर

मैथिलीमे शिवगौरी विषयक जे कवि वा लेखक रचना कएलनि, तनिका समयक अनुसारैं निम्न प्रकारक वर्गीकरण कएल जाए सकैत अछि -

१- विद्यापति एवं हुनक रचनाकार [१३५०क ई० सँ १५२७ ई० धरि]।

२- विद्यापतिक परवर्ती युगक रचनाकार [१५३० ई०सँ० १८६० ई० धरि] एवं

३- आधुनिक रचनाकार [१५६० ई० सँ० आइ धरि]।

[१] विद्यापति युगक रचनाकार :

विद्यापति एवं हुनक युगक रचनाकारमे -

विद्यापति [१३५० ई० सँ १४४० ई० धरि]

विष्णुपुरी [१४२५ सँ १५०० ई० धरि, द्रष्टव्य रामदेव झाक शै०सा०, पृ० ८६]

जयदेव [१४०० सँ० १५०० ई० धरि, द्रष्टव्य रामदेव झाक शै०सा०, पृ० ९०]

अमृतकर [१५म शताब्दीक पूर्वार्द्ध- हि० मै०लि०, डा० जयकान्त मिश्र, पृ० १९६]

गोविन्द [१४८२ सँ १५२७, मै०सा० इतिहास- डा० दुर्गानाथ झा 'श्रीश'- पृ० ८६]

विद्यापति:

विद्यापतिक आविर्भावकाल १३५० ई० सँ १४४० ई० धरि रहल। मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध ओ लोकप्रिय बनएबाक कारणेँ हिनका मैथिलीक भगीरथ कहल जाए सकैत अछि। विद्यापतिक गीत मिथिलाक जन-जनक कण्ठमे विद्यमान अछि। संगहि एहि गीत सभक संकलन ओ आलोचना सेहो अनेक विद्वान् द्वारा भेल अछि, जाहिमे नगेन्द्रनाथ गुप्त, विमानबिहारी मजुमदार, खगेन्द्रनाथ मित्र, म०म० बालकृष्णमिश्र, म०म०डॉ० उमेशमिश्र, डॉ०सुभद्र झा, प्रो० रमानाथ झा पं० गोविन्द झा एवं डॉ० शैलेन्द्र मोहन झाक नाम मुख्य रूपेँ उल्लेख्य अछि।

विद्यापतिक रचनामे राधा-कृष्णक प्रेमक वर्णन हृदयस्पर्शी अछि। तेँ अनेक आलोचक हिनका वैष्णव मानलनि। किन्तु ओ महेशवाणी सेहो एतेक तन्मयतासँ रचलनि जे अनेक विद्वान् हिनका शैव मानैत छथि।

विद्यापति वस्तुत: एकटा आशुकवि छलाह। मिथिलाक आचारमे साम्प्रदायिक संकीर्णता नगण्य छैक। एके व्यक्ति कालीक पूजा जो सत्यनारायणक पूजा करैत एखनो धरि देखल जाइत छथि। तेँ विद्यापतिकेँ सेहो विष्णु ओ शिवक आराधक कहल जाए सकैत अछि। हँ, एतबा तँ अवश्य जे महाकविक भक्तिक प्रगाढ़ता जेना गौरीशंकर विषयक रचनामे परिलक्षित होइत अछि, तकर अनुरूप राधाकृष्णक लीलामे नहि।

तेँ एतबा कहब असंगत नहि होएत जे विद्यापति सभ देवी देवताक भक्त छलाह। हुनक एहि भक्तिमे कोनो कट्टरता नहि छलनि। तेँ विद्यापति शैव छलाह वा वैष्णव वा शाक्त, एहि प्रकारक विवाद व्यर्थ थिक।

जयदेव

अनेक आलोचक जयदेवक गीतके अभिनव जयदेव [विद्यापति] रचित मानि लेने छथि। किन्तु डॉ० रामदेव झाक अनुसन्धानसँ ई सिद्ध भेल अछि जे गौरीशंकर विषयक गीत लिखनिहारमे जयदेव विद्यापतिसँ भिन्न कवि भए गेल छथि।[१] जार्ज ग्रियर्सन कहैत छथि जे हुनक स्थितिकाल १४०० ई० छल। ई सुगौनाक शिवसिंहक दरबारमे छलाह एवं विद्यापतिक समसामयिक छलाह। ई गीतगोविन्दक रचयिता जयदेवसँ भिन्न छलाह। किन्तु गियर्सन हुनक गीतक अनुसन्धान नहि कएलनि। डा० रामदेव झा हुनक छओ गोट गीतक चर्चा कएने

छथि, जाहिमे गौरी ओ लक्ष्मीक वार्तालाप बड़ रोचक अछि।

गोविन्द

मैथिलीक आरंभिक नचारीमे, 'माइ हे, उमत जमाए के करू'– खूब प्रसिद्ध भेल अछि। डॉ० जयकान्त मिश्र गोविन्द नामक अनेक कविक चर्चा करैत छथि। किन्तु एहि नचारीक रचयिता गोविन्दक विषयमे ओ विशेष नहि कहैत छथि। ओना, अनेक युक्तिक आधार पर हिनक समयक निर्धारण ओ १६०३ ई० क लगभग करैत छथि।

डा० दुर्गानाथ झा श्रीशजीक कथन छनि जे हमरा लोकनिक कवि घुसोतय नगवार मूलक ओ सोनो देवीक बालक म०म० गोविन्द ठाकुर सएह छथि, जे प्रसिद्ध तान्त्रिक छलाह तथा जे काव्यप्रकाशक प्रसिद्ध टीका काव्यप्रदीपक रचना कएल। हिनकहि बालक देवनाथ ठाकुर ४१० ल०स० [१५२९ ई० मे] तन्त्रक प्रसिद्ध ग्रन्थ मन्त्रकौमुदीक रचना कएल। हिनक रचनामे हरगौरी विवाहक [जगज्ज्योतिर्मल्ल] द्यूत क्रीड़ा एवं नलचरित नाटकक द्यूतक्रीड़ाक वर्णन बड़ लोकप्रिय भेल अछि।[२]

विष्णुपुरी

विष्णुपुरी मुख्यतः विष्णु वा हुनक अवतारक [कृष्णक] भक्त छलाह। किन्तु हिनक रचल किछु पद एहनो उपलब्ध भेल अछि, जाहिमे गौरीशंकरक अलौकिकताक रोचक वर्णन अछि। हिनक रचना हरगौरी विवाह[३] प्रकाशित अछि। अनुमानतः हिनक स्थितिकाल १४०० सँ १४७५ ई०क मध्य मानल जाइत अछि।

एकर अतिरिक्त एहि अवधिमे धाराधर, सुकुल आदि अनेक कवि भ' गेल छथि, जनिक महेशवाणी हृदयग्राही अछि। हिनका लोकनिक जीवन-वृत्तक विशेष परिचय अद्यावधि उपलब्ध नहि भए सकल अछि।

विद्यापतिक परवर्ती युगक रचनाकारमे [१५३० ई० सं० १८६० ई० धरि] लोचन, गोविन्ददास, उमापति उपाध्याय, रामदास, रमापति उपाध्याय, लालकवि, सुकवि, आनन्द कवि, छत्रनाथ, हरिनाथ झा, रत्नपाणि, करण श्याम, लक्ष्मीनाथ गोसाँइ, रामरूपदास, परमानन्ददास, तुलसीदास, अधम कवि, अभिनव कवि, गोपीनाथ द्वितीय, ईश्वरपति, मनबोध, खड्गपाणि, हरिदास, दत्तकवि, भीषम

आदि प्रमुख छथि।

हिनका लोकनिक परिचय उपलब्ध सामग्रीक आधार पर एहि प्रकारक अछि–

[१] लोचन

लोचनक स्थान मैथिली साहित्यमे बड़ महत्वपूर्ण अछि। डॉ० श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीशक' अनुसारेँ हिनक समय १६२५–८५क मध्य पड़ैत अछि। एहि तथ्यकेँ ओ अपन 'मैथिली साहित्यक इतिहास'मे प्रमाणित कए देने छथि।[४]

पाँजिक अनुसारेँ ई एकहरे कन्हौली श्रोत्रिय वंशक वैद्यनाथ झाक प्रपौत्र परमानन्द झाक पौत्र एवं बाबू झाक पुत्र छलाह। हिनक रागतरंगिणी मैथिलीक काव्यपरम्पराक मार्गदर्शन प्रस्तुत करैत अछि।

[२] लालकवि

प्रो० रमानाथ झा, डॉ० जयकान्त मिश्र एवं डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क मतानुसारेँ लालकविक समय १७४४–६१ निश्चित अछि। ई 'गौरी स्वयम्बर' नामक कीर्तनिया परम्पराक नाटिका रचलनि। हिनक पिताक नाम सोनमणि झा छलनि। ई ज्योतिर्विद छलाह, तेँ कवि 'गणकक' भनिता सेहो हिनके नामक पर्याय थिक। प्रो० श्री उपेन्द्र झाक मतानुसारेँ पलिवार जमदौल मूलक ज्योतिर्विद झड़ुला झा इएह थिकाह।

[३] मनबोध

मनबोधक समय अठारहम शताब्दीक अन्त एवं उनैसम शताब्दीक आरम्भमे मानल गेल अछि।[५] डा० रामदेव झा हिनक एकटा गीतकेँ उद्धृत कएने छथि जे शिवकेँ सम्बोधित आत्मनिवेदन मूलक भक्तिगीत थिक।[६] एकर भाव, भाषा, छन्द आदि बड़ परिमार्जित एवं हृदयग्राही भेल अछि। जेना–

विखम विषय रस वस भय रहलहुँ वएस सगर बिति गेल।

संकट हरण चरण सरसीरुह मधुकर भए नहि गेल।

[४] हरिनाथ

हरिनाथ महाराज माधव सिंहक समकालीन अर्थात् अठारहम शताब्दीक उत्तरार्द्धक कवि छलाह। कोनो–कोनो विद्वान् हिनक जन्म तिथि १७४७ ई०

मानैत छथि। ई वैद्यनाथ निवास नामक ग्रन्थक रचना कएल, जाहिमे वैद्यनाथक महिमाक वर्णन अछि।

[५] रत्नपाणि

नवानी ग्रामवासी सर्वतन्त्र स्वतन्त्र धर्मदत्त (बच्चा) झाक पितामह महाकवि रत्नपाणिक सम्बन्धमे डॉ० श्री जयकान्त मिश्र लिखैत छथि जे पहिने ओ महाराज छत्रसिंहक आश्रयमे छलाह [१८०८ सँ १८३९ घरि][७अ] तत्पश्चात् महाराज रुद्रसिंहक दरबार मे छलाह [१८३९ सँ १८५० घरि][७] मैथिल भक्त प्रकाश नामक ग्रन्थमे दू गोट शिवगौरी विषयक गीत अछि। हिनक प्रसिद्धि उषाहरण नाटकसँ भेल। शिवगौरीक गार्हस्थ्य जीवनक वर्णन ओ भक्तिभावक प्रदर्शन हिनक गीतक आकर्षण अछि।

[६] करण श्याम

श्री नरेन्द्रनाथ दासक संगमे करण श्यामक अनेक गीतक संकलन छल जे अद्यावधि प्रकाशित नहि भए सकल अछि। अपन गीतक भनितामे ई महाराज छत्रसिंह [१८०८-३९] क उल्लेख करैत छथि। तेँ उन्नैसम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे हिनक स्थितिकाल निश्चित भेल अछि। हरगौरी विवाहक वर्णन ई विस्तृत रूपेँ कएलनि अछि।

[७] आनन्द

कवि आनन्द विख्यात देवानन्दक [उषाहरणक रचयिता] उपाधि थिकनि। ओ बाबा वैद्यनाथक भक्त छलाह। अपन आश्रयदाताक नाम 'माधवेश' लिखैत छथि, तेँ महाराज माधव सिंहक समकालीन १८म शताब्दीक समयमे ई प्रसिद्ध भेल हेताह। डा० श्री रामदेव का एकटा आन कविक उल्लेख करैत छथि, जनिका ओ एहि आनन्दसँ भिन्न होयबाक संभावना व्यक्त करैत छथि। किन्तु स्वयं ईहो लिखैत छथि- ''गीत मौखिक परम्परासँ उपलब्ध, तेँ संभव जे आनन्दक पाठ आनन भए गेल हो। हमरा जनैत डा० झाक तर्क समीचीन छनि, कारण जे भाव, भाषा वा आश्रयदाता एकेटाक आधार पर हिनक दू होएबाक लक्षण नहि भेटैत अछि। हिनक रचनामे दूटा परिछनिक गीतक संकलन डा० रामदेव झाक मैथिली शैव साहित्य'मे पृ० [१६०] कएल गेल अछि।

[८] छत्रनाथ

छत्रनाथक जन्मतिथि वा मृत्युतिथिक निश्चय एखन धरि नहि भेल अछि। किन्तु अठारहम शताब्दीमे हिनक जीवनकाल छल से डा० श्री रामदेव झाक मत छनि।[८] ई नन्दलालक पुत्र छलाह। हिनक जन्मस्थान सहरसा जिलाक वनगाम छल। छत्रनाथक शिवगीत शताधिक संख्यामे सहरसा परिसरक लोककण्ठमे विद्यमान अछि, जाहिमे शिवगौरी विषयक अनेक चित्रण भेटैत अछि। डा० रामदेव झा हिनक किछु गीत अपन 'शैव साहित्यमे उद्धृत कएने छथि, किन्तु हिनक सभटा गीतक संकलन एखन धरि नहि भए सकल अछि। आवश्यकता अछि जे कोनो विद्वान् द्वारा एकर संकलन होअए।

[९] उमापति उपाध्याय

डा० रामदेव झाक मतें मध्यकालक शैव साहित्यक रचनाकारक पंक्तिमे सर्वप्रथम स्थान उमापतिक अबैत छनि। हिनक समयक विषयमे विद्वान् लोकनिमे विवाद अछि। डा० रामदेव झा अनेक तर्कक आधार पर सिद्ध कएलनि अछि जे हिनक समय १५८० ई० सँ १६५० ई० धरि होएबाक चाही।[९] उमा-महेशक परस्पर विनोदक मनोहर चित्रण हिनक कवितामे परिलक्षित होइत अछि।

[१०] रमापति उपाध्याय

रामदास जकाँ रमापति उपाध्याय सेहो स्फुट रूपें नचारीक रचना नहि कएलनि। हिनक प्रसिद्ध नाटक 'रुक्मिणी हरण' जे 'रुक्मिणी स्वयंवर एवं 'रुक्मिणी परिणय' नामसँ सेहो ख्यात अछि, ताहि मे शिवगीत भेटैत अछि। डा० रामदेव झाक मतानुसारेँ – एहि गीतमे छओ गोट खण्ड अछि– १. अभिनेताक नृत्यवेश प्रसाधन, २. रंगभूमि ओ आतोद्य व्यवस्था, ३. नृत्यारम्भ सूचना, ४. अंग-संचालन एवं तज्जन्य परिणाम ओ प्रभाव,५. समावर्त्तनक आग्रह एवं ६. कविक प्रार्थना।[१०] एकरा ओ बड़ नीक जकाँ प्रतिपादित कएने छथि। हिनक समय अठारहम शताब्दीक मध्य मानल गेल अछि।

[११] रामदास

रामदास कुजौलिवार मूलक श्रोत्रिय ब्राह्मण कृष्णदासक पुत्र छलाह।[११] ई प्रसिद्ध कवि गोविन्ददासक अनुज छलाह एवं महाराज सुन्दर ठाकुरक आश्रित छलाह [१६४३-४४ सँ १६७०-७१ ई० धरि]। मैथिलीमे ओ आनन्द-विजय

नाटिका लिखलनि जाहिमे प्रसंगवश चारिगोट गीतमे गौरीशंकरक चर्चा कएल गेल अछि।

[१२] लक्ष्मीनाथ गोसाँइ

लक्ष्मीनाथ गोसाँइक आविर्भाव १७८० ई० मे सहरसा जिलाक परसरमा गाममे भेल छलनि। ओ एकटा प्रसिद्ध योगी छलाह। डा० रामदेव झा 'मैथिली शैव-साहित्य' मे हिनक विस्तृत परिचय दैत लिखैत छथि जे हुनक शिष्योपशिष्य परम्परामे सहस्त्रो व्यक्ति मिथिलामे विद्यामान छथि। वरियाहां कोठीक[सहरसाक] वासी जाऑन साहेब नामक यूरोपीय इसाई हुनक श्रेष्ठ भक्त छलथिन। मिथिलाक वनगाम, भटिका, भीठ, तारागाँव, महिनाथपुर, लखनौर आदि विभिन्न स्थानमे हुनका द्वारा निर्मित मन्दिर, कुटी एवं अन्य स्थल सभ विद्यमान अछि।

लक्ष्मीनाथ गोसाँई पहिने विष्णुपदक रचयिताक रूपमे ख्याति प्राप्त कएलनि[११] किन्तु डा० रामदेव झा हिनका शैव साहित्यक विशिष्ट निर्माताक रूपमे उल्लिखित कए हिनक कृतिक विवेचना कएलनि अछि, जे शैव-साहित्यक अनुसन्धानकर्त्ताक हेतु महत्त्वपूर्ण वस्तु अछि।

[१३] भीषम कवि

भीषम कवि भीष्म कविक नामसँ सेहो प्रसिद्ध छथि। डा० श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश' हिनक समय परम्परया १५७२-१५८६ ई० मानल अछि। हिनक एकटा गीत डा० रामदेव झा संकलित कएने छथि, जाहिमे शिवक विकट स्वरूपक चित्रण अछि।[१२]

मैथिली साहित्यक मध्यकालमे गोपीनाथ, ईश्वरपति, कलानाथ, रत्नपाणि, हरिदास, जीवनाथ, द्विज छकौड़ी, दत्त, गणक आदि अनेक कविक रचना उपलब्ध होइत अछि, जाहिमे गौरीशंकरक विभिन्न रूप दृष्टिगोचर होइत अछि किन्तु कविगणक सम्बन्धमे निश्चित परिचय उपलब्ध नहि भए सकल अछि।

मध्यकालहिमे मैथिली साहित्यक अनेक प्रसिद्ध रचना नेपालमे भेल, जाहि विषयमे संक्षिप्त परिचय देब आवश्यक प्रतीत होइछ।

मैथिली साहित्यमे शिवगौरीसँ सम्बन्धित काव्यक अतुल भण्डार नेपालमे सुरक्षित अछि। एकर रचना नेपालक शासकक संरक्षणमे पन्द्रहम शताब्दीक नवम दशकसँ [१४९० सँ] अठारहम शताब्दीक आरम्भ धरि होइत रहल।

नेपालक कान्तिपुर, भक्तपुर ओ ललितपुर एहि तीनू अंचलक राजा लोकनि मैथिलीक रचनाकारक्ँ प्रश्रय ओ प्रोत्साहन देलनि, जकर परिणामस्वरूप शताधिक संख्यामे नाटक, मुक्तक वा अन्य विवाहक गीतक रचना भेल।

१- भक्तपुर शाखा

जगज्ज्योतिर्मल्ल

भक्तपुर शाखामे जगज्योतिर्मल्ल [१६१३-१६३३]क प्राचीन गीतावली संगृहीत अछि। हिनक संग्रहमे शिवगौरी विषयक गीत सभ तथा हरगौरी विवाह नाटक प्रमुख अछि। एकर अतिरिक्त मुदित कुवलयाश्व एवं कुंजबिहारी नाटकमे सेहो प्रसंगवश गौरीशंकरक उल्लेख भेल अछि। जगज्योतिर्मल्ल मुक्तक रचनामे नचारीओ लिखलनि।

वंशमणि उपाध्याय

वंशमणि उपाध्याय नाटककारक रूपमे विशेष रूपेँ परिचित छथि। हिनक रचित हरिहरक एकटा वन्दना डॉ० रामदेव जा उद्धृत कएने छथि, जाहिसँ हुनक शिव-विषयक भक्ति प्रदर्शित होइत अछि।[१३]

जगज्योतिर्मल्लक पुत्र शशिशेखर सिंह सेहो नचारी लिखैत छलाह, किन्तु हिनक बेशी रचना अद्यावधि उपलब्ध नहि भए सकल अछि।

जितामित्रमल्ल

जगज्ज्योतिर्मल्लक पश्चात् 'सती वियोग' वा 'कुमार प्रादुर्भाव' नामक नाटकक रचना भेल। एकर रचनामे जगज्ज्योतिर्मल्लक पौत्र जितामित्रमल्लक संरक्षण तँ अछिए, किन्तु रचनाकार वैह छथि वा अमिअकर नामक कोनो कवि, तकर निश्चय नहि भए सकल अछि।

भूपतीन्द्रमल्ल

नेपालमे संवत् ८२६ मे भूपतीन्द्रमल्ल गौरी-विवाह नामक रचना कएलनि। ई कुशल शासक ओ कला-प्रेमी छलाह। गौरी-विवाह नाटक रचनाक दृष्टिएँ, बड़ महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि।

रणजितमल्ल

रणजितमल्लक समयमे पाँचटा शिव-विषयक नाटक लिखल गेल-

कृष्ण-कैलास आख्यान, त्रिपाल गणेशोपाख्यान, सुब्रह्मण्योपाख्यान, हरगणकथा एवं अन्धकासुरवधोपाख्यान। एहि ग्रन्थ सभक अध्ययन ओ अनुशीलन नहि भए सकल अछि।

एकर अतिरिक्त कान्तिपुर शाखामे 'गीत दिगम्बर' [वंशमणि उपाध्याय] क रचना भेल। एहि शाखाक प्रतापमल्ल एवं कृष्णानन्द दुनू गोटए शिवगौरी विषयक रचनाकारक रूपमे प्रसिद्ध छथि।

२. ललितपुर शाखा

नेपालक ललितपुर शाखामे श्रीनिवासमल्ल 'तारकासुर वध' वा 'कुमार विजय' नामक नाटकक रचना कएलनि। हुनक पश्चात् ओ गोपगणेश मल्ल [१६८४-१७०५], लोकप्रकाशमल्ल, इन्द्रमल्ल, महीन्द्रमल्ल ई चारू गोटए शिव-गौरीसँ सम्बन्धित काव्यक रचना कएलनि वा करबओलनि। पश्चात् महीन्द्रमल्लक समयमे बलदेव अपन दूटा पुत्र कविरामजु एवं विद्यारामजुक सहयोगसँ [१७०९-१७१५] 'सर्वेश्वर कुम्भेश्वरोत्पत्ति' नामक रचना कएलनि।

नेपालक रचनाकार लोकनिक व्यक्तिगत परिचय एखन धरि अनुसन्धानसापेक्षे अछि।

ई तँ भेल शैव-साहित्यक रचनाकार लोकनिक संक्षिप्त परिचय। आब मैथिली साहित्यमे गौरीशंकरक स्वरूपक चर्चा आवश्यक बूझि पड़ैए।

भारतीय वाङ्मयमे जेना राम वा कृष्ण विष्णुक अवतारक रूपमे प्रतिष्ठित छथि, तकर अननुरूप शिव साक्षात् देवता छथि। तेँ शैव साहित्यमे शिवक जन्मक उल्लेख नहि होएब स्वाभाविक।

मैथिली साहित्यमे शिव-पार्वतीक कथाक आधार पुराण रहल अछि। शिव साक्षात् देवता ओ पार्वती शक्तिक अवतारक रूपमे उल्लिखित भेल छथि, तेँ इएह परम्परा दृष्टिगोचर होइत अछि। गौरीक जन्मक विवरण सेहो अल्प रूपेँ उपलब्ध अछि।

कवि लालदास कृत महेश्वर विनोदेमे कहल गेल अछि जे दक्षक यज्ञमे अपन शरीरकेँ त्यागि सती विलीन भए गेलीह, भगवान् शंकर हुनक विरहमे खिन्न भए गेलाह। ओ लोकनि शक्तिसँ प्रार्थना कएलनि जे पुनः अवतार लेथि। शक्ति देवगणक स्तुतिसँ प्रसन्न भए हिमवानक पुत्रीक रूपमे अवतार लेलनि-

एतए देवगण विकल छलाह। विश्वनाथ केँ देखि वताह
निशिदिन शिव काँ सती वियोग। लागल अचल समाधि प्रयोग।
कौखन शिव काँ हो नहि नीन। मन एकाग्र शक्तिक स्वाधीन।
विष्णु विरंचि देल दुख भार। सुरगण मिलि तेँह कयल विचार।
महादेव सभ देवक देव। सुलभ सकल सुख जनिकेँ सेव।
से सम्प्रति छथि शक्ति विहीन। कि करब सभ भेल शोक अधीन।
जगदम्बा देलनि वरदान। भेल विलम्ब नहि गति अछि आन।
जावत शिव न शक्ति पौताह। एहि विधि से रहताह बताह।
चलिय सहित सुरगण समुदाय। देवी काँ पुनि कहिय मनाय।
ब्रह्मादिक सुरगण सुविचार। स्तुति नति शक्तिक कएल अपार।
देवी कहल करुण रस पूर। चुप रहु चुप रहु दुख गेल दूर।

पार्वतीक आविर्भाव हिमवानक गृहमे –

पूर्वदक्ष कन्या सती, शिवक पतिव्रत वाम।
पितु अपमाने त्यागि तन, अयिलिह हिमगिरि धाम।
पितृक कन्या मेना नाम। अति सुन्दरि गिरिराजक वाम।
तनिक गर्भ पावन भल पाबि। वास कयल जगदम्बा आबि।
किछु दिन पर पुनि लेल अवतार। पारवती भेल नाम उदार।
सफल मनोरथ गिरि हिमवान। पूर्वहि ओ पौलनि वरदान।
जन्मअन्ध के सूझल आँखि। महामूक जनि उठला भाषि।
जनि दरिद्र केँ निधि भेटि गेल। तेहने सुख हिमगिरि केँ भेल।
बाल विनोद कयल किछु काल। मेना के देल हर्ष विशाल।
दिन दिन चन्द्रकलाक समान। लगलिह बढ़य के करय बखान।
खेलथि हँसथि सखीगण संग। करथि बाल लीला कति रंग।
मन्दाकिनीक बालुका आनि। बनबथि वेदी से निज पाणि।

कन्या बालक से कय गोट। मृतिकामय बनबथि छोट-छोट।
सखि मिलि खेलथि गाबथि गीत। कहल न हो बाला सुख प्रीति।
विद्या सभ अपनहिं गेल आबि। यथा हंस गंगा ऋतु पाबि।
पुत्रहु सँ कन्याक प्रति, रहथि तृप्त हिमवान।
यथा भ्रमर सभ सुमन सौं आमहिं मे सुखमान।१४

पार्वतीक जन्मक उल्लेख राजपण्डित बलदेव मिश्र अपन अप्रकाशित नाटक राज-राजेश्वरी मे कयने छथि-

जखन जनम लेल अम्ब हिमाचल मन्दिर रे। ललना।
भानु सहस सम तेज दशो दिश सुन्दर रे।
गगन सुमन सुरपुर जन मुदमन वर्षण रे। ललना
आङन आङन पुरजन मन अति हर्षण रे।
बाजन बाज उछाह सुमन महि छाजय रे। ललना।
मानहु चेतन चन्द्र हेमत घर राजय रे।
कतहु गणक गण करथि गणित अति सुन्दर रे। ललना।
केन्दु त्रिकोण विराजित ग्रह सब चन्दिर रे।
भन बलदेव विचारि सुनहु नर नागरि रे।
हिम तनया जगदम्ब थिकथि गुण आगरि रे।

वस्तुतः मैथिली साहित्यमे गौरीशंकरक छवि नर-नारीक परस्पर सम्बन्धक प्रतीकक रूपमे अंकित भेल अछि। तेँ शक्तिक अवतारक रूपमे गौरीक जन्मक वर्णन कतहु-कतहु अछि, किन्तु से थोड़ अछि। हुनक सभक वैवाहिक एवं गार्हस्थ्य जीवनक उल्लेख विस्तार पूर्वक भेटैत अछि।

महादेव तपसी भिखारिक रूपमे होथु वा हुनक दिव्य स्वरूप रहनु, ओ गौरीक पतिक रूपमे एवं गौरी शंकरक अर्द्धांगिनीक रूपमे वर्णित छथि।

मैथिली साहित्यमे गौरीशंकरक स्वरूपके वर्णित करबाक हेतु विभिन्न पक्षक चर्चा आवश्यक अछि, जाहिमे निम्नलिखित रूपक उल्लेख प्रस्तुत अध्यायमे होएत।

क– मैथिली साहित्यमे गौरीशंकरक संक्षिप्त विवरण।

ख– शिवक तपसी भिखारिक रूप एवं मनाइनिक कोप।

ग– महादेवक अद्‌भुत रूप

घ– गौरीशंकरक प्रणय अ परिणयः दिव्य रूप।

ङ– गौरीशंकरक आराध्य रूप

च– शिव– भक्त वत्सल

[क] मैथिली साहित्यमे गौरीशंकरः संक्षिप्त विवरण

मैथिली साहित्यमे गौरीशंकर विद्यापतिसँ लए आधुनिक कालक कवि लोकनिक रचना धरिमे वर्णित भेल छथि।

विद्यापति मुक्तक काव्यक रूपमे गौरीशंकर विषयक रचना कएलनि, जाहिमे भक्तिभावक प्राधान्य अछि। जेना–

जगत विदित वैद्यनाथ, सकलगुण आगर हे।
तोहें प्रभु त्रिभुवन नाथ, दया केर सागर हे।। [१५]

तथा

शिव हो, उतरब पार कओन विधि। [१६] आदि।

मैथिलीक नाटकमे स्व० ईशनाथ झा कृत 'उगना'मे गौरीशंकरक चर्चा कएल गेल अछि। शिव जखन विद्यापति पर प्रसन्न भए उगनाक रूपमे हुनक चाकरी करए लगैत छथि, तँ गौरी शिवक विरहसँ पीड़ित भए जाइत छथि। एहि क्रममे गौरीक विरहक वर्णन बड़ सुन्दर ढंगसँ प्रस्तुत कएल गेल अछि।

एकर पश्चात् श्री मणिपद्म द्वारा रचित 'कण्ठहार' मे सेहो भक्तवत्सल शिवक उल्लेख भेल अछि। किन्तु दुनू नाटकक नायक विद्यापति थिकाह, शिव–गौरीक उल्लेख प्रासंगिक रूपैं भेल अछि।

आधुनिक विकसित परम्पराक नाटकमे शिव वा गौरी मुख्य पात्रक रूपमे नहि वर्णित छथि।

आलोचना साहित्यमे डा० रामदेव झाक लिखल 'मैथिली–शैव–साहित्य' अपन अद्वितीय स्थान रखैत अछि। एहिमे जहिना अनुसन्धानक तहिना विश्लेषणक

विपुल भंडार भेटैत अछि। एकर अतिरिक्त मिथिला मिहिरमे छोट-छोट निबन्ध सेहो समय-समय पर प्रकाशित होइत रहल अछि।

एकर कारणक उल्लेख अध्यायान्तरमे होएत। सम्प्रति गौरीशंकरकेँ नाटकक मुख्य पात्र, जाहि रचनामे देखाओल गेल अछि, तकर उल्लेख अपेक्षित अछि।

मैथिली साहित्यमे जेना मुक्तक काव्यमे गौरीशंकरक उल्लेख प्रचुरतया भेल अछि, तकर अपेक्षा नाटक व महाकाव्यक संख्या थोड़ अछि। एहि क्रममे डॉ० जयकान्त मिश्र द्वारा सम्पादित तीनटा पोथीक उल्लेख आवश्यक अछि। ओ नेपालक राजपुस्तकालयसँ तीनटा कीर्तनिया नाटकक सम्पादन कए प्रकाशित करओलनि- गौरीस्वयंवर [कान्हारामकृत], गौरीस्वयंवर [कवि लाल कृत] एवं गौरीपरिणय [शिवदत्त कृत]। नेपालक पुस्तकालयमे एखनहु कीर्तनिया शैलीमे रचित गौरीशंकर विषयक रचनाक विपुल भण्डार अछि, जाहिमे गीत दिगम्बर [वंशमणि झाक] आदि प्रसिद्ध अछि। अधिकतर पोथीक प्रकाशन नहि भेल अछि।

उपलब्ध सामग्रीक आधार पर कहल जा सकैत अछि जे कीर्तनियाँ नाटकक तीनटा पोथी [डा० जयकान्त मिश्र द्वारा सम्पादित] बड़ महत्त्वपूर्ण अछि जकर विश्लेषण आवश्यक अछि।

कवि लाल कृत गौरी स्वयंवर नाटिकामे तपमग्न महादेवके विचलित करबाक हेतु कामदेव हुनका पर कुसुमवाणसँ प्रहार करैत छथिन्ह। शंकरजी तपसँ विचलित होमए लगैत छथि, तावत् हुनक दृष्टि कामदेवपर पड़ैत छनि। अपन तपस्यामे एहि बाधाकेँ देखि हुनका क्रोध भए जाइत छनि। एहि हेतु ओ अपन तेसर नयन खोलि लैत छथि, जकर दाहसँ कामदेव भस्म भए जाइत छथि।

एहिसँ कामदेवक पत्नी अत्यन्त दुःखी भए विलाप करए लगैत छथि। ई वर्णन बड़ मर्मस्पर्शी अछि-

हे हर कओन हरल मोर नाह।
अछल अभेद भेद नहि भरमहु से नहि मन अवगाह।
पल कवि लेख पहरसों मानिअ कोन परि होयत निवाह।
शोक कलाप ताप दह मानस उर उपजाबए धाह।
विरहक अवधि अबूह पड़ल अछि चहु दिश लागु अथाह।।

मानक आधि बेआधि साधि बरु रंग रभस गेल दूर।
विहि भेल मोर कोन निरदय मोर हरलन्हि सिरक सिन्दूर।
कुसुमक वान जहान जकर वश सब गुन आगर कन्त।
से मोर साथ हाथ धए लाओल की करत बन्धु बसन्त।
सुकवि लाल कह धैरज धए रहु हरिसुत होएत अनंग।
ओ मनमथ तोहि रति पलटि पुनु होएत तैं विधि संग।।[१७]

किन्तु एकर पश्चात् लगले शिवक अद्भुत रूपक उल्लेख अछि। देखू-

जटिल भेषें देल परवेश, भसम भूषित कपिल केश।।
खालक वसन कए लेल काछ, आठहु आंग बान्हि रुदराछ।।
भांगक झोरा कांख बोकान, मांगथि फिरि फिरि भीख दोकान।।
कान्ह विराजि उपवीत शेष, काहु न बुझि परसि सेष।।

[शिव विशेष][१८]

एहि स्थल पर कथाक्रम असम्बद्ध बुझि पड़ैत अछि। कामदहनक पश्चात् गौरीक तपस्याक उल्लेख परम्परया होइत रहल अछि। कथानकक दृष्टिएँ सेहो सएह समीचीन बुझि पड़ैत अछि, कारण जे विमुख पतिक हेतु तपस्या कए हुनका प्रसन्न करबाक चेष्टा स्वाभाविक अछि। किन्तु कामदहनक पश्चात् शिवक गौरीक समक्ष उपस्थित होएब अस्वाभाविक बुझि पड़ैत अछि।

कथानकक विश्रृंखलता एतबहि नहि अछि। एहि घटनाक पश्चात् तारकासुरक उत्पात एवं देवगणक चिन्तित होएबाक वर्णन अछि। तखन क्रमशः देवगणक ई मन्त्रणा जे शिवगौरीक संयोगसँ उत्पन्न कुमार सएह एकर संहार कए सकैत छथि, शिवकें पार्वतीक प्रति आकृष्ट करएबाक आयोजन वसन्तक आगमन, पार्वतीक सूक्ति जे शिवक निन्दा नहि करी आदि एहि प्रकारेँ वर्णित अछि, जे एक दोसरासँ भिन्न वस्तु बुझि पड़ैत अछि।

हँ, अनेक स्थलपर कविक काव्य वैदग्ध्य अवश्य प्रशंसनीय अछि। जेना वसन्त वर्णनमे अनुप्रासक चमत्कार एवं भाषाक लयात्मक प्रवाह हृदयग्राही भेल अछि। जेना-

रितुराज सरस विराज दशदिश सबहु से एक सार यो।
कुंज कुंजर मत्त मधुकर करय भन-भनकार यो।।

वारि वारि नेवारि चम्पक कुन्द सुन्दर भास यो।

जवा केतकि मालती नव मल्लिका परगास यो।।[१९]

बुझि पड़ैत अछि जे विशृंखल रूपेँ राखल मातृकामे सम्पादकीय प्रमाद भेल अछि। मातृका विशृंखल अछि तकरा ओ अपन अंगरेजीमे लिखल सम्पादकीयमे स्वीकार करैत छथि

इन मेनी पेज द प्रेजेंट टेक्स्ट इज वेरी करप्ट। संस्कृत पैसेजेज आर रेअरली करप्ट ऐवरप्ट स्पीचेज अकर नाउ ऐण्ड देन। ऐक्ट वन हैज मेन्शन्ड टु हैव बिगन नोट टु हैव एन्डेड, इनडीज, अदर ऐक्ट्स आर नॉट इभेन मेन्शन्ड ऐण्ड द प्रोग्रेस ऑफ द स्टोरी इज रैपिड। इट इज पोसिबुल दैट इट रिप्रेजेन्ट्स ए स्टेज कोपी ओफ द प्ले इन लेटर इयर्स ह्वेन द रेगुलर कीर्तनियाँ प्ले हैड ओलमोस्ट मर्ज्ड इनटु दि रेगुलर कीर्तनियाँ प्ले।[२०]

किन्तु एही पोथीक मैथिलीमे लिखल भूमिकामे कहल गेल अछि जे-

e h [कवि लालक] पद लालित्य ओ कथानकक सुसम्बद्धताके ओ [कान्हा रामदास] नहि पाबि सकैत छथि। प्रस्तुत निबन्धमे कथानकक अंशक उल्लेख अछिए। ताहिमे सुसम्बद्धता नहि अछि, तेँ सम्पादकक ई कथन भ्रामक अछि।

हँ, मिथिलाक विधि-व्यवहार यथा नयनायोगिन, सिन्दूरदान आदिक वर्णन बड़ सुन्दर ढंगसँ कयल गेल अछि। गोत्राध्याय कालक रोचक वर्णन कविक लेखनीक चमत्कार प्रस्तुत करैत अछिः-

गौरीशंकर माड़व गेल, बड़ कठिन पुरहित काँ भेल।

बाप पितामह नाम नहि जान, कोन परि होयत कन्यादान।।

तिनू नाम वरहिक कहि देल, तेँ विधि गोत्र उच्चारण भेल।।

पुरहित कयलनि अपन छुटानि, महा हरषमय भेल शूलपाणि।।

सुकवि लाल एहो अचरज भान, एहनो देखल विवाह विधान।।२१

कान्हा रामदासक 'गौरी परिणय'मे सेहो अनके स्थल पर कथानकक असम्बद्धता परिलक्षित होइत अछि। एहिमे पहिल दृश्यमे शिव गौरीक समक्ष प्रसन्न भए उपस्थित होइत छथि। तकर पश्चात् कामदेव शिवक तपस्या भंग करबाक चेष्टा करैत छथि। किन्तु एकर अतिरिक्त कथानक सम्बद्ध अछि।

एहि नाटिकाक आरंभ दक्ष प्रजापतिक यज्ञक वर्णनसँ होइत अछि। ओ जखन यज्ञ करैत छथि तँ सभ देवताकेँ निमन्त्रित करैत छथि किन्तु महादेवकेँ नहि। हुनक कन्या सती बिनु निमन्त्रणहि नैहर चल अबैत छथि। एतए हुनक पतिक अपमान होइत छनि, जकरा ओ नहि सहि पबैत छथि एवं शरीर त्याग कए लैत छथि।

पुनः शिवकेँ पतिक रूपमे प्राप्त करबाक हेतु सती हिमवानक कन्याक रूपमे जन्म लैत छथि। हिमालय एवं मेना एहि सुन्दरि कन्याकेँ प्राप्त कए अत्यन्त प्रसन्न होइत छथि। हिमवान नारद मुनिकेँ बजाए पुछैत छथि जे हिनक भाग्य केहेन छनि। नारद मुनि कहैत छथि जे भाग्य तँ बड़ नीक छनि मुदा दू-एकटा दोष सेहो छनि। हिनक पति बूढ़ एवं कुरूप हेथिन। नारदक एहि वाणीसँ मेना अत्यन्त दुःखी भए जाइत छथि–

दुइ चारि दोख विचारि नारद कैल पुनि अनुसार यो।
पितु मातु हिन दीनता अति घर न कुल परिवार यो।।
नगन जटिल अकाम सब खन असुभ भेख अपार यो।
एहेन वर घर होएत गिरिजहि विधि लिखल कपार यो।।

दोहा– **पुनु लक्षण गिरिराज सुनु कहो मे हृदय विचारि।**
अचल हिनक अहिवात जग परम पिआक पिआरि।[२२]

नारद वचन झूठ नहि रे जिउ सत्य के जानी।
दम्पति सहित विकल नृप रे गौरी गुन खानी।।
सुभग सुकोमल दुल्लहि रे विहि सिरजल जानी।
तनिका लिखल वर वाउर रे विधि मति भुलानी।।[२३]

एकर पश्चात् शिवक तपस्या, कामदेवक चेष्टा देखि, शिवक कोपानलसँ कामदहन, रति विलाप आदि गौरीशंकरक कथासँ सम्बद्ध विषयक वर्णन अछि किन्तु ततेक विशृंखल अछि जे रोचक नहि भए सकल।

शिवदत्तक 'गौरी परिणय' सेहो कीर्तनियाँ शैलीक नाटिका थिक। उक्त दुनू नाटिकाक कथानकसँ अधिक सुसम्बद्ध कथानक एहिमे भेटैत अछि। किन्तु

एहू नाटिकामे शिवक प्रसन्न होएबाक वर्णन पहिने एवं कामदहनक प्रसंग पश्चात् अछि। जेना –

भेख बदलि शिव आजे। आएल गौरिक समाजे।।
एतेक करिअ कथिलाई। के मोहि कहिअ बुझाई।। [२४]

अति आकुल भय रति परवेश। रोदन करय शिर फूजल केश।।
कहु कहु शंकर की कैल से तोर। बिनु दोख नाह हरन भेल मोर।। [२५]

ई तँ भेल नाटिकाक संक्षिप्त विवरण।

महाकाव्यमे लालदास कृत महेश्वर विनोद उल्लेखनीय अछि। ई पोथी मेघदूत जकाँ [जे पूर्वमेघ एवं उत्तरमेघ मे विभाजित अछि] पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध, दू भागमे विभक्त अछि। पूर्वार्द्ध मे शक्ति ओ पुरुषक उत्पत्तिसँ लए दक्ष यज्ञक ध्वंस धरिक कथा वर्णित अछि। एवं उत्तरार्द्धमे पार्वतीक जन्मसँ लए विवाह धरिक वर्णन अछि। वर्णन शैली, कथानकक सुसम्बद्धता, कथ्यक स्पष्टता एवं भाषाक सरलता एवं प्राजंलताक दृष्टिएँ ई काव्य उत्तम श्रेणीक महाकाव्यमे परिगणित कएल जा सकैत अछि। ई कहब अत्युक्ति नहि हैत जे मैथिली साहित्यमे शिवगौरी विषयक कथानकक दृष्टिएँ ई महाकाव्य सर्वोत्कृष्ट रचना थिक। मैथिलीमे रामायणक रचयिता महाकवि लालदास गौरीशंकरक कथाकेँ सेहो अतीव विलक्षणतासँ प्रस्तुत कएलनि अछि।

उपन्यासमे श्री 'मणिपद्म' द्वारा रचित 'अर्द्धनारीश्वर' नामक उपन्यासमे गौरीशंकरक छवि परिलक्षित होइत अछि, किन्तु ओकर साहित्यिक विश्लेषणसँ पहिने तान्त्रिक पृष्ठभूमिक वर्णन आवश्यक अछि। ओ प्रस्तुत प्रसंगसँ विषयान्तर होएत तँ ओकर विश्लेषण एकटा पृथक् दृष्टिक अपेक्षा रखैत अछि, जे सम्प्रति अवांछनीय अछि। उपन्यासमे गौरीशंकरक उल्लेखक परम्परा नहि परिलक्षित होइत अछि।

गौरीकशंकरक अनेक रूप मुक्तक वा अन्यहु विधामे कोन प्रकारे वर्णित अछि तकर विवरण सम्प्रति आवश्यक अछि।

(ख) शिवक तपस्वी-भिखारिक रूप एवं मनाईनिक कोप

शिवक संग गौरीक वा गौरीक संग शिवक चर्चा भारतीय साहित्यमे

प्रचुरतया भेटैत अछि। गौरीक सौभाग्यक उल्लेखक क्रममे महादेवक अनेकानेक रूप चर्चित आ अर्चित होइत रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे गौरी-शंकरक विषयमे जतेक चर्चा अछि, ताहिमे सभसँ अधिक चर्चा अछि गौरीक वरक, जे तपसी-भिखारिक रूपमे आएल साक्षात् त्रिलोकनाथ छथि।

शंकर एकटा बूढ़, यति, तापसी, जोगिया, भिखारि आदिक रूपमे गौरीसँ विवाह करबाक हेतु अबैत छथि तथा गौरीक माता मनाइनि एहिसँ अत्यन्त दुःखी ओ क्षुब्ध भए जाइत छथि। ओ एहेन विवाहक विरोध करैत छथि तथा महादेवक रूपक भर्त्सना करैत छथि।

जे घर-घर बौआइत रहए, जकर ने कुल-गोत्रक ठेकान, तकरा संग कोन माए अपन बेटीक बियाह करबए चाहत? तेँ मनाइनि अपन क्षोभ व्यक्त करैत कहैत छथि-

घर-घर भमरि जनम नित, तनिकाँ केहन विवाह।
से अब करब गौरि वर इ होय कतय निवाह।।
केतय भवन कत आंगन बाप कतइ कत भाए।
कतहु ठहोर नहि ठोहर ककर एहन जमाय।।
कोन कयल एहो असुजन केओ न हिनक परिवार।
जे कएल हिनक निबन्धन धिक-धिक से पजियार।।[२६]

मायक ममता असीम होइत छैक। मनाइनि ई सोचि आओर अधिक दुःखी भए जाइत छथि जे गौरीकें वर टा भिखारि नहि हेतनि अपितु सासुरमे परिजनक नामपर भूत-बेताल मात्रक परिवार छनि तथा हुनक दिन ओकरे सभक संग कटतनि-

कुल परिवार एको नहि परिजन भूत बेताल।
देखि-देखि झूर होएत के सहत हृदयक साल।।[२७]

जाहि व्यक्तिकेँ अपन शरीरहुक मोह नहि छैक, वस्त्रक नामपर काँखतर बघछल्ला मात्र छैक, से गौरीकेँ कोन गति रखतनि-

नाहि करब वर हर निरमोहिया।

बिता भरि तन न वसन तिन्हका, बघछल काँखतर रहिया।।

वन-वन फिरथि मसान जगाबथि घर आँगन ऊ बनौलन्हि कहिया।

सासु ससुर नहि ननदि जेठानी जाए बैठति धिया केकरा ठहिया।। [२८]

परन्तु गौरीक तपस्यासँ त्रिभुवननाथ प्रसन्न छथिन्ह। तँ ओ स्वयं हुनक आवासपर आबि जाइत छथिन्ह। गौरी तँ तपमे मग्न रहैत छथि, अतः शिवक आगमनक आभास हुनका नहि होइत छनि, किन्तु मनाइनिकेँ महादेवक दर्शन पहिनहि भए जाइत छनि। ओ बुझि जाइत छथि जे ई जटाधारी योगी गौरीसँ विवाह करबाक हेतु आएल अछि। योगीकेँ तीनटा आँखि छैक, काँख तर झोरा छैक तथा ओकर अंगके साँप लपेटने छैक। मस्तक परक तेसर नयन अत्यन्त दीप्तिमान छैक जकरा द' उमाक माता कहैत छथिन्ह जे तृतीय नयनमे आगि जरि रहल छैकः-

एतए कतए अएल जति गोरि अछि तपे।

राज रे कुमारि बेटि डरब देखि सापे।।

तोड़ब मोयँ जटाजुट फोड़ब बोकाने।

हटल न मान जति होएत अपमाने।।

तीनि नयन हर विसम शर दहनू।

उमा मोरि ननुमि हेरह जनू।।

भनहि विद्यापति सन जगमाता।

ओ नहि उमत त्रिभुवन दाता।। [२९]

विद्यापतिक अन्य पदमे शिवक पञ्चवदनक उल्लेख अछि। यदि उक्त पदमे मनाइनिक वचनसँ नारी-सुलभ सरलता ओ वात्सल्यक कोमल भावना अभिव्यंजित होइत अछि तँ निम्नलिखित पदमे सनातन धर्मक संस्कारमे प्रतिपालित एकटा नारी हृदयक गंभीर उद्‌गार ध्वनित होइत अछि।

कन्याक विवाह जाहि वरसँ होइक, ओ सुन्दर एवं स्वस्थ रहैक तथा कन्याक कुलक अनुरूप ओकर कुल रहैक से शास्त्रसम्मत विधान अछि। परन्तु महादेवक ने रूप सुन्दर छनि, ने माय-बापक ठेकान छनि, तखन गौरी

सन सुन्दरि कुलांगनासँ हुनक पाणिग्रहण ककरहु हेतु दुःखद होइतैक। आ' मनाइनि तँ हुनक जननीए छथिन्ह।

मनाइनि कहैत छथि जेकर माता-पिता, कुलशील धरिक नहि ठेकान छैक, दरिद्र आ' वृद्ध अछि तकरासँ गौरीक विवाह कोना हेतैन्ह-

जोगिया हम एक देखलौँ गे माई।
अनहद रूप कहलो ने जाई।।
पाँच वदन तिन नयन विसाला।
वसन बिहुन ओढ़न बघछाला।।
सिर बहे गंगा तिलक सोहे चन्दा।
देखि सरूप मेटल दुख दन्दा।।
जाहि जोगिया संग रहति भवानी।
मन आनलि वर कोन गुन जानी।।
कुल नहि सिल नहि तात महतारी।
वएस दिनक थिक लघु जुग चारी।।
भन विद्यापति सुनु ए मनाइनि।
एहो जोगिया थिक त्रिभुवन दानी।।[३०]

आधुनिक कविताक अग्रगण्य उन्नायक कवीश्वर चन्द्र(चन्दा) झा महादेवक नचारी शताधिक संख्यामे रचलनि। ओना हुनक नचारीमे भक्तिभाव ओ अद्भुत रसक आधिक्य अछि किन्तु परम्पराक आवेगसँ ओ वंचित नहि छथि। मनाइनिक हृदयक वात्सल्यक कारुण्य हुनको पदमे कतहु-कतहु ध्वनित भेल अछि-

सखि नहि करब जमाय तपसिया।
पर्व्वतराज नाम यश बड़ गे होएत जगत भरि हँसिया।।
कन्या रहति जनम भरि दीना बनब ने हम दुर यशिया।
बलसौं अपन कण्ठ लपटायब नहि हम चिन्ता फसियाँ।।
बरु विष खाय मरब हम एहि सौं भल लाबह क्यो विष असिया।
भल कवि चन्द्र कहाँ भे नुकयला नारद घटक मधसिया।।[३१]

विद्यापतिक पश्चात् एहेन अनेक नचारी रचल गेल, जकर भनिता लुप्त अछि। अत: रचयिताक नाम नहि बुझल जा' सकैत अछि। निम्नलिखित पदमे सएह द्रष्टव्य, ओना शिवके दीन-हीन दशाक वर्णन एहूमे देखल जाइत अछि-

बड़ दुख देलक नारद बाभन फेरलक हिम ऋषि चित गे माई।
से बभना केर एतबे हिस्सक टहल लगाबए नित गे माई।।
सुनलहुँ हर थिका त्रिभुवन दानी दक्षक पहिल जमाय गे माई।
सासु ससुर सब के से हतलक वनिता देलक गमाय गे माई।।[३२]

मैथिली गीतक ई परम्परा आधुनिक कालक कविमे सेहो अक्षुण्ण अछि। स्व० ईशनाथ झा द्वारा रचित ई नचारी उदाहरण स्वरूप देखल जा' सकैत अछि-

गौरी कथिलए करब बिआह।
एहेन दिगम्बर बुढ़वा वर सँ कथिलए करब बिआह।।
नहि भरि बीत खेत छनि हिनका नहि हर ओ हरवाह।
भीख माङिके पेट पोसै छथि अहाँक कोना निरबाह।।१।।
भरि दिन भाङ धथुर विष माहुर खाए भेर रहताह।
किछु टोकबनि तँ रूसि पड़ेता बौसनहुँ नहि घुरताह।।२।।
सब दिन जाए मसान रमओता भूत सङ्ग नचताह।
रहब कोना हुनका लग गौरा बसहो छनि मरखाह।।३।।
अपनहि लङटा तखन अहाँ केरि कोना लाज रखताह।
कतबो जँ कानब तैयो नहि घुरि पाछू ओ तकताह।।४।।
सुनिअ मनाइनि ईश थिकथि ई एहन ने वर भेटताह।
अनके दुख हरबा लए अपने छथि ई भेल बताह।।६।।[३३]

एवं प्रकारेँ शिवके बूढ़ एवं बताहक रूपमे चित्रित कएकेँ मनाइनिक आक्रोशक वर्णन करबाक परम्परा मैथिलीमे बड़ लोकप्रिय भेल अछि। एकर हेतु थिक मिथिलाक सामाजिक परिस्थिति, जकर विवेचन अध्यायान्तरमे होएत।

[ग] महादेवः अद्भुत रूपमे

मैथिली साहित्यमे शिवक अनेक रूपमे हुनक कुतूहलपूर्ण रूप एवं स्वभावक उल्लेखक परिपाटी सेहो व्यापक रूपें प्रचलित अछि।

महादेव भिखारिएक रूपमे वर्णित नहि छथि। हुनक प्रसंगक एक-एकटा वर्णन कुतूहलपूर्ण अछि।

ओ भाङ-धुथुर खाइत उन्मत्त भेल रहैत छथि, साँपक संग खेलाइत छथि, हुनक जटासँ गंगाक धारा प्रवाहित भए रहल छनि, हुनकर चारूकात भूत-प्रेत नचैत छनि। एहि प्रकारक विस्मयकारी वर्णन मैथिलीक शैव साहित्यमे प्रचुरतया परिलक्षित होइत अछि।

एहेन व्यक्तिक संग अपन कन्याक विवाह करबाक कल्पना मात्रसँ मनाइनि क्षुब्ध भए जाइत छथि। विद्यापति हुनक क्षोभकेँ ताहि प्रकारें व्यक्त कएलनि अछि जे एक दिस जँ महादेवक अद्भुत रूपक दर्शन होइत अछि तँ दोसर दिस एकटा सरल हृदया महिलाक सहज मनोवृत्तिक । आ' दुनू मिलाए पाठकक हेतु हास्य-विनोदक सुन्दर सामग्री प्रस्तुत भए जाइत अछि। जेना-

यहि विधि ब्याहन आयो एहन बाउर योगी।

टपर-टपर कए बसहा आयल लटर-लटर रुण्डमाल।।

भकर-भकर शिव भांग भकोसथि डमरू लेल कर लाय।। ३४

उपर्युक्त पदक भकर-भकर, टपर-टपर आदि शब्द मनाइनिक वात्सल्यक प्रगाढ़ताक संग हुनक नारी-सुलभ सरलता अभिव्यंजित करैत अछि।

शिव भाङटा खाए अपन विस्मयकारी रूपके नहि देखबैत छथि अपितु हुनका संग साँप खेलाइत रहैत छनि वा हुनक हाथ, गर्दनि आदि मे लेपटायल रहैत छनि। से देखि भयक संचार होइत छैक।

महादेव विवाह करबाक हेतु सापक संग आएल छथि से देखि मनाइनि आओर अधिक विस्मित भए जाइत छथि। जेना-

एतए कतए आएल जति गोरि अछि तपे।

राज रे कुमारि बेटि डरब देखि सापे।। ३५

पुनः तामसेँ खौंझाए लगैत छथि-

तोड़ब मोयँ जटाजुट फोड़ब वोकाने।
हटल न मानत जति होएत अपमाने।।
तीनि नयन हर विसम शर दहनू।
उमा मोरि ननुमि हेरह जनू। [३६]

महादेवक रूपक अनुकूल हुनक कार्य–कलाप सेहो अद्भुत अछि। हुनक जटासँ गंगाक धारा बहि रहल छनि, साँप तँ संग छनिए, ताहूसँ विस्मयोत्पादक ई जे ओ विवाहक विधि नहि करैत छथि, अपितु पासा खेलाए लगैत छथि। महुअक कौर नहि खाए गाजा पीबए लगैत छथि –

अइसन ठाकुर हर सम्पति झोरी।
भर उठ आइलि छइन्हि भसमक झोरी।।
विधि न करए हर लेलए पासा पसारि।
सापक संग सिवे रचलि धमारि।।
खिरि न खाए हर चुकति गजाए।
एहन उमत कोन जोहल जमाए।। [३७]

मनाइनि एहेन विवाहक तीव्र विरोध करैत छथि। ओ कहैत छथि जे एहेन वरक संग हम बेटीक विवाह नहि करब। यदि विवाह होमए लगतैक तँ हुनक डमरू तथा रुण्डमाल तोड़ि–ताड़ि देबनि आ' अपन धीयाकें छीनि एतएसँ भागि जाएब आदि–

हम नहि आजु रहब एहि आंगन जौँ बुढ़ होयता जमाई गे माई।।

पहिलुक बाजनि डामरु तोड़ब दोसरे तोड़ब रुण्डमाल।
बरद हाँकि बरिआति बेलाइब धीया लए जाएब पराई गे माई।।
धोती लोटा पोथी पतरा एहो सब लेबनि छिनाए।
जौं किछु बजता नारद बाभन दाढ़ी धए घिसिआएब गे माई। [३८]

विद्यापतिक अनेक नचारीमे मिथिलाक विवाह कालिक विधि–व्यवहारक संग अद्भुत दृश्यक चित्रण कएल गेल अछि।

शिवजीक त्रिशूल [अँकुसी] सँ हुनक जटा ओझराए जाइत छनि। ओकरा जखन झीकैत छथि तँ मस्तकसँ गंगाक धारा वेगवती भए जाइत छनि। वेदीपर जखन लाबा छिड़िअबैत छथि तखन हुनक नाग ओकरा बिछि-बिछि खाए लगैत अछि। [स्मरणीय जे लाबा नागक प्रिय भोजन थिक]-

हे मनाइनि देखह जमाय।
सिवक माथ फुटल जटा,
आगे माइ ताहि उपर नाग घटा।।
जटा देल अँकुसी लगाय,
आगे माइ ताहि उपर नाग घटा।।
झिकितहि सुरसरि गेलि बहराय।
वेदी देल लाबा छिड़िआय।
आगे माइ ताहि उपर नाग घटा।।
भूखल बासुकि बिछि-बिछि खाय।
बट्टा भरि घोरल कसाय,
आगे माइ ताहि उपर नाग घटा।।
उमत महादेव भस्म लगाय,
भनहिँ विद्यापति गाओल
आगे माइ गौरि सहित वर कोबर जाइ।[३९]

एही प्रकारक वर्णनक विचित्रता निम्नलिखित नचारीमे मेटैत अछि -

विआह चचला शिवशंकर हरबंकर।
माइ हे डामरु लेल कर लाय विभूति भुअंकर।।
परिछय चलली मनाइनि गीतगाइनि।।
माइ हे नाग कयल फुफकार दुरहि पड़ाइलि।।
एहन उमत वर के कर शिर ससधर।
माइहे गौरि बरु रहथु कुमारि करब वर दोसर।।[४०]

जेना पहिनहुँ उल्लिखित अछि जे विद्यापतिक परवर्त्ती कविमे कवि लाल, शिवदत्त, कान्हारामदास आदि कवि लोकनि गौरीशंकर विषयक काव्य रचना कएलनि।

लालकविक [१७४४ सँ १७६१] 'गौरी स्वयंवर' मे मनाइनिक रोष एहूसँ अधिक तीव्रताक संग अभिव्यंजित भेल अछि। एहेन बूढ़ जमाए होयबासँ पहिने ओ अपन पुत्रीकेँ मारि देब तथा स्वयं आत्महत्या कए लेब श्रेयस्कर बुझैत छथि –

मेना से सुनि आकुलि भेल,
गोरि गोद गहि मन्दिर गेलि।
मारब बेटी मरब विष खाय,
मय नहि हिनका करब जमाय।।
फोरब पुरहर अरिपन भांग,
सभ भसिआयल सिरबहु गाँग।।
डाला हाथी धयलन्हि जाय
देलन्हि चौमुख दीप मिझाय।।[४१]

कवि लालकृत गौरी स्वयंवरमे वर्णित महादेवक रूप अद्भुत अछि। हुनक पीताभ जटामे भस्म लेपल छनि, ओ अपन कटिमे बाघम्बर ओ आठहु आंगमे रुद्राक्ष बान्हि लेने छथि आ' भांगक झोराकेँ काँख तर लए ओ भीख मङैत रहैत छथि।

जटिल भेषे देल परवेश। भसम भूषित कपिल केश।।
खालक वसन कय लेल काछ। आठहु आंग बान्हि रुदराछ।।
भांगक झोरा काँख बोकान। माङथि फिर-फिरि भीख दोकान।।
कान्ह विराजित उपबीत शेष। काह न बुझि परसि शेष।[४२]

[शिव विशेष]

एहि पंक्तिमे 'काहु न, बुझि परसि सेष' [शिव विशेष] सँ बुझि पड़ैत अछि जे मातृकाक अस्पष्टताक कारणेँ सम्पादक, स्वयं कोनो निर्णय नहि कए

पाठकक बुद्धि पर एकर निर्णयक भार छोड़ि देने छथि, जे प्रसंगवश उचित निर्णय कए सकथि। हमरा जनैत 'काहु न बुझि शिव शेष विशेष' पाठ आलोचनक क्रमसँ उचित बुझि पड़ैत अछि। 'बुझि' पदक पश्चात् 'पर' तथा 'सेषा' क पश्चात् 'शी' अक्षर मातृकाक पुरान भए जयबाक कारणेँ अस्पष्ट भए गेल छैक। जे क्रमबद्ध रूपे 'काहु न बुझि शिव शेष विशेष' हेतैक, एकर अर्थ सेहो स्पष्ट छैक जे शिवक अंगपर ततेक साँप लेपटाएल छनि जे ओहिमे [महादेव] कोन बड़का नाग [शेषनाग] थीक आ कोन छोटका तकर चिन्ता शिवकेँ नहि छनि। अर्थात् एतेक भयंकर साँपसँ घेरल रहनहुँ ओ भयसँ सर्वथा मुक्त छथि, निर्विकार छथि।

शिवक रूप अद्भुत एहि हेतु कहल गेल अछि जे भयानक आ शान्त रूप एकत्रित भए गेल अछि। भयानक रसक संग तँ रौद्र अथवा बीभत्स रूप प्रसिद्ध अछि, किन्तु शंकरक रूप एहिसँ भिन्न, भयानकक संग शान्तक, बीभत्सक संग भक्तिक एवं रौद्रक संग वात्सल्यक विरोधाभास अभिव्यंजित अछि, जे हुनक अद्भुत रूपक द्योतक अछि।

एक दिस तँ शिव तपस्यामे मग्न छथि, दोसर दिस हुनक चारूकात भूत-प्रेत नाचि रहल छनि, ओ मुण्डमाल पहिरने छथि, तथा बाघछालपर आसन जमौने छथि-

आयल जगपति देव महेश, शंकर नाम भयंकर भेस।
लाधल तप तपोवन साधि, आसन लय लगाय समाधि।।

आसन जटिल वसन खाल, निकट विकट भूत वेताल।
वितल एहि विधि बहुत काल, हरषि आएल मुण्डक माल।।

भावक भगत भनय लाल, भगत जगत होअय नेहाल।[४३]

शिवदत्त कृत 'गौरीपरिणय'मे शंकरक कुतूहलपूर्ण रूप एहि प्रकारेँ वर्णित अछि-

हरषि हर बरियात काँ साजल भूत दानव ठाट रे।
व्याल जाल कराल साजल चलत पाव नहि बाट रे।।

रुण्ड मुण्ड तनु भसम राजित वसन बाघहि छाल रे।।
वरद पीठि असवार संकट बाजन बाजत गाल रे।।

चन्द्र तिलक ललाट सुन्दर वदन सोभे तीनि आँखि रे।
नगर निकट बरियात लागल बैसलि सखिगन भाखि रे।।
शिवदत्त भन चरन मन दय छवि वरनय के पार रे।
सेषनाग काँ परम कठिन थिक जौं मुख थिक हजार रे।।[४४]

एतए उल्लेखनीय अछि जे शिवक अद्भुत रूपक वर्णनक क्रममे कवि लोकनिक भक्ति भाव विशेष रूपैं अभिव्यंजित भेल अछि। जेना कविलाल 'काहु न बुझि शिव शेष विशेष' तन्मय भए जाइत छथि जे कहैत छथि जे शेषनागकेँ हजार मुँह रहितहुँ हुनक [महाँदेवक] सौन्दर्यक वर्णन करबामे असौकर्य हेतनि, हमरा तँ एकेटा मुँह अछि –

------------छवि वरनय के पार रे।
सेसनाग काँ परम कठिन थिक जौ मुख थिक हज़ार रे।।[४५]

कान्हारामदासक गौरी स्वयंवरमे महादेवक अद्भुत रूपमे काव्यगत वैशिष्ट्य अछि। भावक अनुरूप शब्दहुक चयनमे ओ सिद्धहस्त भेल छथि –

वरद चढ़ल हर चलल बियाहय भूतप्रेत बरात गे माई।
डिमि-डिमि डमरू बजाव वृखभपर आक धुथुर खात गे माई।।
गरा गरल उर फनिपति लहलह विभूति भरल भरि गात गे माई।
पाट पटम्बर अम्बर तन नहि बाघ छाल फहरात गे माई।।
दिग परिधान छाज नहि तनमह छन छन् धरए ध्यान गे माई।।
मगु पुर लोक देखि वर वाउर काहु नहि रहल गेआन गे माई।
वर वौराह भेख विकट अति देखो लोग धाय गे माई।।
एहन उमत वर कोना वियाहब देखितहि लोक डराय गे माई।
धन्य हिवा तेहि माय बाप के जे करए एहेन जमाय गे माई।।
एहन उमत दुल्लह संग दुलहिनि निवहब कोन उपाए गे माई।।
कान्हाराम मन सुमरि सिव मन सुनहु सबल नरनारि गे माई।
धन्य भाग अहिबात अचल तेहि जेहि पर मिलु त्रिपुरारि गे माई।।[४६]

एहि पोथीमे शंकरक कुतूहलपूर्ण चित्र आनो गीतमे वर्णित अछि:-

उमत उगन वर चलल विवाह कर हे आगे माई।
उमते संग बरियात एहन वर के कर हे।।
नगन सतत रह लाज न तन मह हे आगे माई।।
बूढ़ झुथूर वर लाय धुथुर फर हे।।
थर थर कपइत देह एहन वर के कर हे आगे माई।।
डगमगात चल नयन अनल वर हे।
भूतप्रेत सिनेह एहेन वर के कर हे आगे माई।।
त्रिशूल खटंग धर असुभ भेख वर हे।
देखइत परम भयान एहेन वर के कर हे आगे माई।।
थिकाह सुन्दर वर कयल कुरूप हर हे।
कान्हाराम कवि भान एहन वर के कर हे।।[४७]

महादेवक रूपक अनुरूपे हुनक गणक रूपरंग अछि। ककरहु काने नहि, ककरहु नाके नहि तँ ककरहु आँखिए नहि छैक। ककरहु अंग खूब मोट-डाँट तँ ककरहु अत्यन्त क्षीण छैक -

भेख अमित अनेक वाहन करत नाना रंग हे।
देखि सकल समाज संकर बिहुसि कय लेल संग हे।।
काहु नयन न श्रवन नासा कर तमासा धाए हे।
काहु बाहु विहीन देखिअ काहु बाहु घने रहे।।
रिष्ट पुष्टि अनिष्ट धूसर रंगरूप कराल हे।
छीन तन कोपीन काहु न भूखन कर कपाल हे।।
असुर श्वान श्रृगाल खर मुख मरे सो नित गात हे।।
आर मर्द जे गर्द करते चले सम्भु बरात हे।।
कान्हाराम भन गन भेख अगनित कौन बरन जमाति हे।।
चले जात बरात भूतगन करत अद्भुत भाँति हे।।[४८]

गौरीक माता, मनाइनि एहि प्रकारक विवाहक तीव्र विरोध करैत छथि। ओ कहैत छथि जे यदि ई विवाह हेतै तँ एहि घरमे नहि रहब। शिवजीक डमरू तोड़ि देबनि। हुनक रुण्डमाल सेहो तोड़ि कए फेकि देबनि। वरदके बैलाए देबैक एवं अपन बेटी ल' कए पड़ा जाएब–

हम नहि आजु रहब एहि आंगन जौं बुढ़ होयत जमाई गे माई।

:: :: :: :

पहिलुक बाजन डमरू तोड़ब दोसरे तोड़ब रुण्डमाल।

वरद हाँकि बरियात बैलाएब धिया लए जाएब पराई गे माई।।[४८]

* * * * *

जटाजुट दस दिस दए हलु नमाए। बसह चढ़ल उपगत भेल आए।।

दुर सयँ मनाइनि हलिअ पुछाए। के बरिआती के छथि जमाए।।

कण्ठे आएल छन्हि वासुकि राए। सेहो बरिआत इसर जमाए।।

अइसन ठाकुर हर सम्पति थोरी। भर उठ आइलि छइन्हि भसमक झोरी।।

भनहि विद्यापति एहो रस जान। ओ नहि उमता जगत किसान।।[४९]

विद्यापति शिवक कुतूहलपूर्ण व्यवहारक वर्णन अनेक प्रकारेँ करैत छथि। ओ [महादेव] सासुरमे सेहो अपन विकट रूप धारण करैत छथि। सिरपर गंगा छथिन्ह आ नृत्य करए लगैत छथि। गंगाजल भूमिपर उझकि–उझकि खसए लगैत अछि। भूमि पिच्छर भए जाइत अछि। किन्तु शंकर तँ अपन नृत्यमे मग्न छथिए। एतेक धरि जे पिच्छर भूमिक कारणेँ स्वयं खसए लगैत छथि किन्तु हुनक ध्यान नहि टुटैत छन्हि। गौरीकें ई नहि देखल जाइत छनि। ओ शिवक हाथ पकड़ि हुनका उठबए चाहैत छथिन। किन्तु तखनहि शिवक हाथक नाग फुफकार छोड़ैत अछि। गौरी डेरा कए भागि जाइत छथि–

उमता न तेजए अपनि वानि।

बस ससुरा कत कर उबानि।।

गंगाजले सिचु रंगभूमि।

पिछरि खसल हर घुमि-घूमि।

अबलम्बने गौरी तोरए जाए।

करकंकन फनि उठ फँफाए।।
सबे सबतहु बोल गिरिजामाए।
बसह चढ़ल हर रूसल जाए।।
जमाइक पहिरन बाघछाल।
चरन घाघर बजाए मुण्डमाल।।
भनहिं वद्यापति सिव विलास।
गौरि हित हर पुरथु आस।।[५१]

शिवक अद्भुत रूप हुनक नृत्यकालहिटामे नहि, प्रत्युत अनेक अवसरपर दृष्टिगोचर होइत अछि। ओ भांग खाइ छथि तँ निसाँ लागि जाइत छनि। अपने खसए लगैत छथि। बसहाक डोरी हाथसँ छूटि जाइत छनि। ओ पड़ाए जाइत अछि। गौरी कहैत छथिन जे सभ अपन गृहिणीक कथा सुनैत अछि किंतु हुनक तँ [शंकर] स्वभावे हठ करबाक छनि –

बुढ़हु वयस हर बेसन न छड़ले
की फल बसह धवाइ।
भाग भेल सिव चोट न लगले
के जान की होइ आइ।।
बसह पड़ाएल के जन कतए गेल
हाड़ माल की भेला।
फुटि गेल डामरू भसम छिड़िआएल
अपथे संपति दुर गेला।।
हमर हटल सिव तोहहि न मानह
अपना हठ वेवहारे।
सगर जगत सबहुँ काए सुनिअ
घरनिक बोल नहि टारे।।
भनइ विद्यापति सुनह महेसर

ई जानि एलहु तुअ पासे।
तोहरा लग सिव विधि विआहल
आनक कोन तरासे।।[५२]

उपर्युक्त पदमे गौरीक भाव एकटा ममतामयी पत्नीक रूपमे अभिव्यक्त भेल अछि। कारण जे एक दिस शिवक हठी स्वभावक वर्णन करैत छथि तँ दोसर दिस 'भाग भेल सिव चोट न लगले' सँ अपन ममत्त्व व्यक्त करैत छथि।

'महेश्वर विनोद'क उत्तरार्द्धमे तँ शिवक विवाहकालिक वर्णन आओर कौतुकपूर्ण अछि–

चलु-चलु सजनि घुरि घरहि जाउ। एहि बतहा के जनु चुमाउ।
जतेक नारिगण परिछय गेलि। वरकेँ देखितहिं चकित भेलि।
स्त्रीगण जों-जों सन्निधि जाय। देखि इजोत साप फुफुआय।
सुनि-सुनि गीत घोल पुनि डोल। भड़कय वरद प्रलय सन बोल।
दौड़य अखरय हनय विषाण। घुमि-घुमि ढरकय अति घमसान।
रोकथि शिव नहि रोकल मान। नाथ तोड़िकर घात महान।
पकड़य बरबस भूत पिशाच। देखबय सबकाँ अद्भुत नाच।
बढ़ल वधूगण काँ देखि ताप। डर सौं सबजनि थर-थर काँप।
हा हा हा हा कहि उठलीह। भय विहवल अति विकल भेलीह।
इयेह थिकथि वर बुझलक लोक। स्त्रीगण काँ बाढ़ल बड़ शोक।
हरि अनुमति सौं नारद जाय। सभजनि काँ कांति कहल बुझाय।
डरि जनु डरि जनु दुलह चुम। परिछि शम्भु मंडप लय जाउ।।[५३]

शिवक कुतूहलपूर्ण रूपक वर्णन कवि तन्त्रनाथ झा बड़ सरसताक संग कएलनि अछि। भगवान् विष्णु हुनक भेंट करबाक हेतु गरूड़ पर चढ़ल आबि रहल छथिन। शिव हुनका दूरहि सँ अबैत देखि अपन साँपक डोरी बनाए डाँड़मे वस्त्र धारण कए लैत छथि। किन्तु विष्णु जखन हुनक लगमे अबैत छथिन तखन गरूड़क डरेँ महादेवक डाँड़सँ सांप पड़ाए लगैत अछि। अपन पतिके एहेन स्थितिमे देखि गौरी लाजेँ गड़ि जाइत छथि –

देखि विष्णुके गरुड़ चढ़ल अबइत कैलासहिँ।
देल बघम्बर वसन रूप गिरिजा दिगवासहि।।
कटि लेपटाएल फणि फँसाए दृढ़तर रसना कए।
उपगत विष्णु विलोकि शंभु चलला अरिआतए।।
देखितहिँ गरुड़ समक्ष फणि, ससरि पड़ाएल प्राण लए।
निरखि ताहि-विध शंकरहिं गौरि लजाइलि हरथु भय।।[५४]

दिगम्बर भेल पतिक प्रति गौरीक सलज्ज व्यवहार एकटा आओर पदमे वर्णित अछि

मातः, की थिक पितृदारक गर बिच?
पन्नगपति।
मस्तक पर? सुरसरि, करमे की?
परशु निशित अति
एहि प्रकार मुग्ध गणपति-प्रश्नक कए उत्तर।
भए सशंक पुछइत ई करए हुनका निरुत्तर।।
निरखि दिगम्बर पति-वदन
गौरी हँसइत दाबि मुख।
हरथु विघ्न-बाधा-सहित
मुदित चित्त भए, त्रिविध दुख।[५५]

एहिपदमे वात्सल्यक सरलचित्रण मर्मस्पर्शी तँ अछिए, संगहिँ कविक कल्पनामे गार्हस्थ्यक अत्यन्त सुखद स्थितिक आभास भेटैत अछि। जखन नारी पति आ पुत्रक बीचमे रहैत अछि तँ ओ क्षण ओकर प्रसन्नताक आतिशय्यक रूपमे स्मरणीय रहैत छैक। तेँ ने गौरी अपन हँसीकेँ नहि रोकि सकलीह।

एके पदमे अद्भुत, वात्सल्य ओ भक्तिरसक समन्वय सेहो सहृदय संवेद्य अछि।

मदनान्तक शिव उपगत गिरिजा वसन रक्त अति
हर-भालस्थ-चन्द्र बुझि नयनानल कातर मति

भयत्रस्त तनि तनसँ चुबइत स्वेद-सुधा-जल
पड़ितहिँ व्याघ्र-चर्म जीवित भए वृष लखि गुम्हड़ल
से सुनि भनित मेघ ध्वनि
शिखी नृत्य सस्वान करू,
भए साकांक्ष परेखि हँसि
उमा महेस अपाय हरू।।[५६]

शिवक बीभत्स रूपक वर्णन महाकवि लालदास कृत 'महेश्वर विनोद'मे भेटैत अछि। एकटा महाकाव्य रहबाक कारणेँ एहि ग्रन्थमे ई स्पष्ट अछि जे शिव शक्तिक विरहमे खिन्न भए ई रूप धारण कएलनि। कथा एहि प्रकारें अछि जे सृष्टिक आरंभमे पुरुषक तीन रूप ब्रह्मा, विष्णु ओ महेश बनि ओ शक्तिक तीन रूप ब्रह्माणी, लक्ष्मी तथा गौरी बनि क्रमशः उक्त तीनू देवताक पत्नी भेलीह। एकबेर पुरुष द्वारा पत्नीक अपमान भए गेलैन्हि। फलतः लक्ष्मी आ दुर्गा (गौरी) रुसि कए अन्यत्र, चलि गेलीह। एहि घटनासँ विष्णु ओ महादेवकेँ प्रिया विरहक कष्ट भए गेलनि। दुनू पुरुष व्याकुल भए गेलाह। विष्णु तँ विरहसँ कातर भए मूर्च्छित भए गेलाह किन्तु महादेवक ज्ञान हरण नहि भेलनि। ओ चेतनावस्थहिमे अत्यन्त दुःखी रहए लगलाह। अपन सुन्दर वसन, अभरण आदिक त्याग कए विकट स्वरूप धारण कए लेलनि। विरह वैधुर्यक असह्य अवस्थाक कारणें हुनक सुन्दर स्वरूप वीभत्स भए गेल। से वर्णन एहि प्रकारें अछि-

चेष्टा अपन जखन भेल नष्ट। भेला बताह वियोगक कष्ट।
भूषन वसनक कय देल त्याग। नङटे रहला मनक विराग।
शोकेँ केश जटा बनि गेल। चिता भस्म अनुलेपन भेल।
त्यागल मणिगृह कंचन कोट। बसथि मसान विरह बड़ गोट।
तेजल सुखद शिव शाल-दोशाल। धुनी मसान तपथि सभकाल।
पहिरथि मृतकक हाडक हार। जलभाजन खप्पर आधार।
भोजन भोग्य वस्तु देल देल त्यागि। भांग धुथुर खाथि नित जागि।
तेजल प्रिया बिनु सुखद पलंग। व्याघ्र चर्म शय्या लेल संग।

मणि अभरन त्यागल सुम अंग। भेल भुजा भूषण भल रंग।
सुखदायक निद्रा परित्यागि। सन्तत रहथि प्रिया बिनु जागि।
विषतिख पीबथि मरणक आश। मृत्युंजयक कि कतहु विनाश।[५७]

महादेवक अद्‌भुत वा बीभत्स रूपेसँ ई अभिव्यक्त होइत अछि जे शक्तिक विरहमे शिवकेँ अपन स्वरूपक प्रति कोनो ममत्व नहि रहि गेलनि, तेँ ओ कुरूप भए गेलाह। अतः ई कहब अत्युक्ति नहि होएत जे शिवक विद्रूपता वस्तुतः हुनक शक्तिक प्रति प्रेमक तन्मयता थिक। ई तन्मयता शारीरिक वा बाह्य सौन्दर्यसँ ऊपर, दू प्राणीक दू आत्माक प्रेममिलनक परिणाम थिक।

प्रायः एही कारणेँ महेशवाणीमे शिवक दारिद्र्य ओ विद्रूपताक वर्णन कवि लोकनिकेँ विशेष प्रिय भए गेलनि। विद्यापतिसँ लए ईशनाथ झा, तन्त्रनाथ झा, मधुपजी प्रभृति धरि एहि परम्पराक निर्वाह कएलनि अछि। बुझि पड़ैत अछि जे शिवक पार्वतीक प्रति अनन्यासक्तिक व्यंग्य एहि प्रकारक अपूर्व रूप थिक जे लोकहितकारी अछि। शिवक ई रूप वस्तुतः शिवत्वक चरम उत्कर्ष अभिव्यक्त करैत अछि।

बसहा भिरल पलान रे, कर धए लेल डोरी।
पन्थ चलल नहि जाए रे, व्याकुलि भेलि गौरी।
साँझ पड़ल वन माँझ रे, गणपति छथि कोरा।
बाहुँ करिअ दृढ़ ज्ञान रे, बुढ़ भंगी मोरा।।
आक धथुर केर चूर रे, फाँकथि भरि गाला।
परिजन भूत बेताल रे, विनती कर जोड़ी।
हर थिक त्रिभुवन नाथ रे, सुनु गौरी मोरी।[५८]

[घ] गौरीशंकरक प्रणय आ परिणय- दिव्यरूप

ई कहब असंगत होएत जे मैथिली साहित्यमे शिवगौरी विवाहक वर्णनमे शिवक विपन्न वा अद्‌भुत रूप मात्र परिलक्षित होइत अछि। मैथिलीक काव्यपरम्परामे शिवक अनेक रूप भेटैत अछि।

निम्नलिखित गीतमे महाकवि विद्यापति महादेवक दर्शनसँ पार्वतीक हृदयमे उत्पन्न भावक उल्लेख जे कएलनि से मर्मस्पर्शी भेल अछि। कुमारि गिरिजा

शिवकें वरक रूपमे प्राप्त करबाक हेतु सदा तनमनसँ हुनक आराधना करैत आएलि छथि। ओ प्रतिदिन मन्दिर जा कए शिवमूर्त्तिक समक्ष अपन मनकामना प्रकट करैत छथि। भगवान शंकरक हृदय एहि दिव्य कुमारिक कठिन तपः साधनासँ द्रवित भए जाइत छनि। ओ स्वयं प्रकट भए जाइत छथि। अपन दुनू आँखिसँ प्रियतमाक अनुपम सौन्दर्यकें निहारए लगैत छथि मुदा ओ तृप्त नहि भए रहल छथि। ओ अपन तेसरो नयनसँ ताकए लगैत छथि, जाहिसँ एहि दिव्य सुन्दरीक माधुर्यपानसँ सन्तुष्ट भ' सकथि। गिरिकन्या प्रियतमाक हृदगत भावकें' जानि कामाधिक ज्वालासँ पीड़ित भए जाइत छथि। हुनक तरहत्थी काँपि उठैत छनि तथा पूजाक फूल छिरिया जाइत छनि। लाजें अपन देहकें झाँपि लैत छथि एवं कामाभिभूत भए जप-तप बिसरि जाइत छथि –

अंजलि भरि फुल तोड़ि लेल आनी।
संभु अराधए चललि भवानी।।
जाहि जुहि तोरल मोयँ आओर बेलपाते।
उठिअ महादेव भए गेल पराते।।
जखन हेरलि हरे तिनहु नयने।
ताहि अवसर गौरि पिड़लि मदने।।
करतल काँपु कुसुम छिरिआऊ।
विपुल पुलक तनु वसन झँपाऊ।।
भल हर भल गौरि भल व्यवहारे।
जप-तप दुर गेल मदन विकारे।।
भनई विद्यापति ई रस गाबे।
हर दरसने गौरि मदनसँ तारे।।[५१]

शिवक प्रति पार्वतीक प्रेम अतुलनीय छनि। हुनक रूप योगी सन रहनु वा भिखारि सन, गौरीक चित्त सदिखन शंकरहिमे लागल रहैत छनि–

जोगिया मन भावइ हे, मनाइनि।
आएल बसहा चढ़ि विभूति लगाय हे।

मन मोर हरलन्हि डमरू बजाय हे।।
सुन्दर गात अजर पति से नाहे।
चित्त सों ने छुटथि जानथि किछु टोना हे।।[६०]

उपर्युक्त पदमे अपन प्रियतमक प्रति सुन्दर, अजर आदि शब्द गौरीक आकर्षणकेँ अभिव्यक्त करैत अछि। पार्वतीक अनन्यासक्तिसँ आकृष्ट भए शिव भिखारिक रूपमे हुनक सम्मुख उपस्थित होइत छथि। गिरिजा हाथमे किछु खएबाक-सामग्री ल' भिखारिकेँ देबाक हेतु उद्यत होइत छथि। कम पदार्थ रहबाक कारणें भिखारि पहिने तँ क्रोधक प्रदर्शन करैत अछि किन्तु अपन हृद्गत भावकेँ अधिक काल धरि अव्यक्त नहि राखि सकैत अछि। ओकर अधरपर हासक मधुरिमा विकसित भए उठैत छैक। ओ दयार्द्र भए प्रियतमा दिस दृष्टिपात करैत अछि। पार्वती शिवक हाव-भावसँ हुनका चीन्हि जाइत छथि। ओ विह्वल भए जाइत छथि -

आजे अकामिक आएल भेखधारी
भीखि भुगुति कए चलली भवानी।
भिखिआ न लेई बढ़ाबए रिसी
वदन निहारए विहुँसि हँसी
एठमा सखी सङे निकहि अछली
ओहि जोगिया देखि मुरुछि पड़ली।।[६१]

सखी लोकनि चिन्तित भए रहलि छथि। किछु काल पहिने धरि तँ पार्वती स्वस्थे छलीह किन्तु हठात् ओ मूर्च्छित कोना भए गेलीह? ओ सभ अनुमान करैत छथि जे ई भिखारि अवश्य कोनो टोना-टापर जनैत अछि। एकरे नजरि लागि गेलासँ कुमारि गिरिजाक एहेन स्थिति भए गेल छनि। ओ सभ भिखारिकेँ खिसिआइत कहैत छथिन जे तोँ अपन गुणक प्रदर्शन एतए नहि करह। तोँ राजकुमारीपर डीठमूठ किऐक लगा देलह? ओ सभ अपन प्रिय सखी गिरिजाक उपचारमे व्यस्त भए जाइत अछि। केओ कहैत अछि जे एतए कोनो अन्य व्यक्तिकेँ नहि आब' दियौक, केओ कहैत अछि जे ओझाके बजाओल जाए तथा केओ ई जे एही योगीक अभयदानसँ गिरिजा स्वस्थ भए सकतीह -

दुरकर गुनपन अरे भेषधारी।
का दिठिअओलह राजकुमारी।।
केओ बोल देखए देहे जनु काहु।
केओ बोल ओझा आनि चाहु।।
केओ बोल जोगिअहि देहे दहु आनी।
हुनि कि अभए बरू जिव ओ भवानी।।[६२]

एहि प्रकारेँ विद्यापतिक अनेक नचारीमे शिव-गौरी प्रणयक चित्रण एहेन भेटैत अछि, जाहिमे दुःख-दैन्यक लेशो नहि अछि। शिवगौरी विवाह मैथिली साहित्यमे अनेक स्थलपर देवगणक बीच सम्पन्न होइत अछि, जाहिमे परिलक्षित होइत अछि हास-परिहास ओ कौतुकक विलक्षण समन्वय –

दोहा– विष्णु महाकौतूहली, युक्ति कयल ततकाल।
कहल गरुड़काँ शिवक लग, जाय निकालू ब्याल।।

चौपाइ

अयला खगपति शिवक समीप। फुकरय जतय सर्प देखि दीप।
नारद कहलनि गरुड़क कान। पकड़ शम्भुक सर्प भयान।
खगपति काँ देखितहि सभ सर्प। विकल पड़ायल निर्गत दर्प।
छल जे अहि शिव डाँड़क डोरि। सेहो पड़ायल धोती छोड़ि।
खसल बघम्बर बिन आधार। भेला दिगम्बर देह उघार।
स्त्रीगण वरके नाङट जानि, मुख फेरल लेल घोघट तानि।
लाजेँ सभ देल दीप मिझाय। हँसि-हँसि कह सभ केहन जमाय।
शिव लेल तेसर नयन उघारि। भेल इजोत गेल अन्धियारि।
नारद हँसि-हँसि कहल चेताय। वरगुण देखि लिअ ठोकि बजाय।
अयश पछाति दिअ जनु मोहि। लोकक कहलें करु जनु द्रोहि।
सुनि मुनि धुरधुर कह सब नारि। मुनि पड़ाय अयलाह विचारि।
बड़ विचित्र तहँ कौतुक भेल। स्त्रीगण अवनत लाजक लेल।

जे जे घुरि ताकय भय त्यागि। लागि गेल आँचरमे आगि।
क्यों मिझबय क्यों डरे पड़ाय। दैव-दैव कहि कनयित जाय।
देखि भूत प्रेतक मुख कान। सबहिँ पड़ेलिह लयकेँ प्रान।
क्यों नहि रहल बढ़ल बड़ त्रास। अयला शिव हँसयित जनवास।[६२]

महेश्वर विनोदमे पार्वतीक प्रगाढ़ अनुराग तखन प्रकट होइत अछि जखन बटुक वेषधारी शिव पार्वतीक आराध्य देवक [शंकरक] निन्दा करैत कहैत छथि जे एहेन भिखारिक हेतु अहाँ तपस्या किऐक करैत छी –

बटुक वचन सुनलनि प्रतिकूल। भेल भँग दुहू भ्रुकुटी मूल।
अधरक पल भेल दुहू दृग लाल। बजलिह गिरिजा क्रोध विशाल।
जे जन मूर्ख होथि मतिमन्द। करथि महात्मा लोकक निन्द।
हम बुझलहुँ अहाँ सज्जन लोक। शिवनिन्दा कहि देलहुँ शोक।
शिव महिमा अहकाँ नहि ज्ञात। बजलहुँ की अहँ अनुचित बात।
थिकथि सदाशिव निर्गुण साँच। तनिकहि माया सौं जग नाच।
तनिके स्वास थिकथि सभ वेद। ब्रह्मादिक नहि पाबथि भेद।
हुनकहि कयने इन्द्र सुरेश। तनिकहिँ कृपैँ कुबेर धनेश।
तनिकहिं भजने मुनि का मुक्ति। साधक काँ सुख सम्पत्ति युक्ति।
जे शिवपूजा कयल सप्रीति। जरा मृत्युकेँ से लेल जीति।
सुरगण पड़ता कालक ग्रास। कौखन मत्युंजयक न नाश।
सुर कहबथि साधारण देव। महादेव सभ देवक देव।[६४]
पार्वतीक तहँ अनुमति पाबि। उत्तर कहल सखी एक आबि।
इन्द्रादिक सभ देव बिहाय। शिवक हेतु तप करथि सदाय।
सखिक दशा कि कहब बटु आज। दुख बड़ हो पुनि कहितहुँ लाज।
कामक शर शिव काँ नहिं गड़ल। फिरल वाण हिनकहिपर पड़ल।
अपने यद्यपि मुइला काम। रहय न देल शिवकाँ एहिठाम।
तेहि दिन सौं तन भेलनि क्षीण। तनिका बिनु हुनका नहि नीन।

राति शेषमे उठथि चेहाय। कहथि कतय शिव गेलहुँ पड़ाय।
शिवगुण गाबि करथि कति शोर। सबकाँ आँखि सँ बहबथि नोर।
हिनक चित्त शिव तन्मय भेल। देखथि ध्यानहि प्रेमक लेल।
दौड़थि पकड़य बाँहि पसारि। भेटथि न शिव पुनि बैसथि हारि।
त्यागि बचन बन आबि भयान। शिवहित अर्पण कयलनि प्राण।
करथि तपस्या तनिके लागि। तनि बिनु जीवन देतिहि त्यागि।[६५]
सभकाँ देथि रूप धनराज। धन रूपक तनिका की काज।
सभ घटमे छनि जनिक निवास। कथि लए से करता आवास।
रोग-शोक छुट जनिक प्रसाद। रोगी कहि की देल विषाद।
शिव पूजककेँ सभ दुख नाश। तनिकहि गृहलक्ष्मीक निवास।
शिवकाँ जदपि अमंगल वेश। पूजककाँ कल्याण विशेष।
शिव आगाँ नाचथि सभ सिद्धि। साधक काँ सम्पत्तिक वृद्धि।[६६]

शिव गिरिजाक एहि उक्तिसँ प्रसन्न भए साक्षात प्रकट होइत छथि। विद्यापतिक 'करतल काँपु कुसुम छिड़िआउ' जकाँ एहू गीतमे शिव-गौरीक प्रणय ध्वनित भेल अछि। किन्तु विद्यापति जतए गौरीक हृद्‌गत भावक उल्लेख करैत छथि, लालदास शिवक उक्तिक वर्णन करैत छथि –

छलनि गिरिजा काँ हृदयमे जेहि स्वामिक ध्यान।
धयल शंकर रूप तेहने सुभग अति द्युतिमान।।
बढ़ल प्रेम न रहल सम्भ्रम हाथ धयलनि दौड़ि।
कहल सुन्दरि कतय चललहुँ किअये हमरा छोड़ि।।
हम अहाँक बिनु एक छन भरि राखि सकब न प्राण।
अहिँक वश अछि हमर जीवन करिय सुन्दरि त्राण।।
कयल अहँ जेहि हेतु बड़ तप भेल से सम्पन्न।।
भेलहुँ एखनहि सौँ अहँक वश सुमुखि होउ प्रसन्न।
अपन तप सौन्दर्य गुण सौँ कीनि हमरा लेल।

भेलहु हम सब विधि अहँक वश आधि दुख सभ गेल।।
करिय जनु अब कठिन साहस सिद्धि वांछित भेल।
अहँक अभिमत सकल पूरल हरषि हम वर देल।।[६७]

मैथिलीक अन्यान्य कवि सेहो एहि भावक पदरचना कयलनि-

बोली बिहुसि भवानी, मुनि हे सुनिअ तोहि बड़ ज्ञानी।
हेम उपल भए जाएत मुनि हे हठ न प्रीति दुराए।।
नारद वचन न त्यागे, मुनि हे सिव पद चित अनुरागे।
अवगुन भरल महेसे, मुनि हे, तनि पद प्रीति हमसे।।
विष्णु गुणक निधि धामे, मुनि हे, तनिक मोहि किछु कामे।
कान्हाराम कवि भाने, मुनि हे, सिव छाड़ि दोसर न भावे।।[६८]

कान्हारामक उपर्युक्त पदमे सेहो शिवक प्रति गौरीक प्रगाढ़ अनुराग वर्णित भेल अछि। शिवदत्तक गौरी परिणयमे एहने भाव अभिव्यक्त भेल अछि-

देखल तपोधन पुलक पुरल मन हे,
आहे सखि बाढ़ल शिवक सिनेह गेह नहि जाएब हे।।
थिक त्रिभुवनपति उचित हमर पति हे।
हम नहि छोड़ब समाज आज सखि हिनकहि हे।।
शिव भए परसन जखन पुरत मन हे।
आहे सखि ता लगि धरब धेआन आन नहि मनपर हे।।
सुन्दर तरंग देखु जटामह गंग देखु हे।
आहे सखि शशि शिव-तिलक विराज साज सखि देखहु हे।।
तीनि नयन हर पांच वदन वर हे।
आहे सखि रुण्डमाल बघछाल व्याल उर ऊपर हे।।
[illegible] कर हे।
आहे सखि [illegible] हमर मन लागल हे।।

शिवदत्त मन तोरित पुरह मन हे।
आगे माइ गौरि सहित सुलपाणि जानि सरनागत हे।।[६९]

अनेक नचारी लोकगीतक रूपमे बेशी प्रसिद्ध भेल। गौरीकेँ सासुर विदा करैत मनाइनिक उद्‌गार एकटा समदाउनमे देखू -

सुनहु सदाशिव धिया अनभिगिया कोन विधि जानत तोहि।
तुअ गुन लुबुधलि तुअ पद सेबिअ हृदय बसल शिव ओहि।।
बहुत विभव गुन धन तेजि सुधिआ धयल शरण तोहि जोहि।
करहु कृपा कय निज पद चेरिआ देहु दया दृग ओहि।।
तन मन जन धन जीव अरपिया निज जन जानहु मोहि।।[७०]

गौरीशंकरक परस्पर विनोद फागुमे ध्वनित भेल अछि-

मुण्डमाल उर व्याल दहिन दिशि बाघ-छाल फहराब।
भाँति-भाँति योगिनिगण नाचए, फागु अलाप मचाव।।
नन्दी भृंगी भैरवगण मिलि डम्फ मृदंग बजाव।
मिथिलापति माधव बड़ दाता, के नहि अभिमत पाब।।
गौरीशंकर होरी खेलथि, सेवक आनन्द गाव।।[७१]

गौरी अरधङ्गी संगहिँ लए हर होरी मचाव।
वामे अतर अरगजा केसरि योगिनि अबिर उराव।
दाहिने भूत प्रेत गण नाचए मलि-मलि भसम चढ़ाव।।
सिन्दुर लालवसन मणि मुकुता वाम भाग झलकाव।
मुण्डमाल उर ब्याल दहिन दिशि बाघ छाल फहराव।।
भाँति भाँति योगिनिगण नाचे, फागु अलाप मचाव।
नन्दी भृंगी भैरवगण मिलि, डम्फ मृदंग बजाव।
मिथिलापति माधव बड़ दाता, के नहि अभिमत पाव।
गौरीशंकर होरी खेलहि, सेवक आनन्द गाव।।[७२]

शिव-पार्वतीक प्रणयक अनेक रूप मैथली साहित्यमे परिलक्षित होइत छि। शिव एकटा गृहस्थक रूपमे वर्णित भेल छथि। कखनहुँ शिव गौरीक विरहमे व्यथित भेल वर्णित भेल छथि तँ कखनहुँ गौरी शिवक विरहमे रने वने बौआइत छथि। स्वप्नोमे शिवकेँ गौरीक विरह सह्य नहि भए रहल छनि -

गौरीशंकरक दाम्पत्य

आजु महादेव कुटिअहि सूतल मने मन रहे पछताय गे माई।
अपने जाय उमा कहाँ रहली, गेलीह घर बिलटाय गे माई।।
अपन संग कार्तिक गणपति कें, कथि ले लेल लगाय गे माई।
ओ दुहु भाई बिलटि बुड़ि जायत, हमरा गेलिह कनाय गे माई।।
नन्दी के खोलि हाँकि लए गेलिह, विजया देल छिरिआय गे माई।
अपन सिंह के एतहि राखि देल, देखितहि से फुफुआय गे माई।।
बड़ रे बिपति भेल भांग छुटल मोर, आब कोन करब उपाय गे माई।
कुमर सुतल शिव सपनहि बाजथि हम धनि सुनि बिहँसाय गे माई।[७३]

गौरीशंकरकेँ अर्द्धनारीश्वरक रूपमे एक ठाम बड़ सुन्दर जकाँ वर्णित कएल गेल अछि-

सदाशिव बसथि उमा केर संग।
पार्वती पति छथि हमरो गति वाम उमा अर्द्धंग।।
दीनबन्धु करुणाकर कहबथि जारल देखि अनंग।।[७४]

गौरीशंकरक दाम्पत्यक अनेक चित्रणमे एक दिस दुनूक प्रणयक प्रगाढ़ता ध्वनित भेल अछि तँ दोसर दिस एहि भावक तल्लीनतासँ गार्हस्थ्य जीवनक क्षणिक विशृंखलताक वर्णन आओर अधिक रोचक भए गेल अछि। गौरी गणेशजीके कोरामे लए शिवक सम्मुख अबैत छथि। हुनक सान्निध्य पाबि ओ ततेक सुखक अनुभव करैत छथि जे आत्मविभोर भए जाइत छथि। बालक गणपति माताकेँ अनवधान भेलि देखि कोरासँ ससरि जाइत छथि आ बालसुलभ चांचल्यसँ उत्पात करए लगैत छथि। ओ अपन पिता, शिवक विभूतिक उठाए सौंसे छीटए लगैत छथि। सुर-मुनि गणेशक एहि उत्पातसँ हर्षित भए शिवक विभूति पयबा लेल उद्यत भए जाइत छथि -

गणपतिकेँ लए कोड़ भवानी। आइलि जतए शिव अघहर दानी।।
बैसल शंकर साधि समाधि। मूनि नयन हर हर भव आधि।।
त्रिभुवनपति पति रूप निहारि। सुधि बुधि बिसरि गौरी भेलि ठाढ़ि।।
गणपति ससरि कोड़सँ कात। लागल जाए करए उतपात।।
लेल उठाए विभूतिक झोरी। लागल छीटए आँजुर बोरी।।
दौड़ल सुर मुनि लोक लोभाए विकल 'मुकुन्द' प्रणत तरसाए।।[७५]

जहिना उपर्युक्त गीतमे गौरीक प्रेमक आतिशय्य अभिव्यक्त भेल अछि तहिना एकटा गीतमे आओर हुनक वर्णन एकटा सरलहृदया पत्नीक रूपमे भेल अछि। किन्तु एहिमे गौरी एकटा प्रणयिनीसँ भिन्न ममतामयी गृहिणी ध्वनित भेल छथि–

बसहा भिरल पलान रे, कर धए लेल डोरी।
पन्थ चलल नहि जाए रे, व्याकुल भेलि गौरी।।
साँझ पड़ल वनमाझ रे, गणपति छथि कोरा।
अबहुँ करिअ दृढ़ ज्ञान रे, बुढ़ भंगी मोरा।।
आक धुथुर केर चूर रे, फाँकथि भरि गाला।
परिजन भूत बेताल रे, ओढ़न बघछाला।।
रत्नपाणि धरु ध्यान रे, विनती कर जोड़ी।
हर थिक त्रिभुवननाथ रे, सुनु गौरी मोरी।।[७६]

उपर्युक्त वर्णनसँ सिद्ध होइत अछि जे मैथिलीक गौरीशंकर एक दिस दाम्पत्यक आदर्श छथि, तँ दोसर दिस यथार्थक प्रतिमूर्ति। पारिवारिक शृंखलामे प्रणयक तन्तु कोना समन्वित रहैत अछि तकर उदाहरण गौरीशंकरक दाम्पत्य थिक, जे सुन्दर आ' लोक-हितकारी भेल अछि।

[ङ] गौरीशंकरक आराध्य स्वरूप

ई मानब असंगत हैत जे गौरीशंकरक आराध्य स्वरूपक उल्लेख मैथिली साहित्यमे थोड़ अछि। शिवक वा गौरीक स्तुतिक परम्परा मिथिलाक प्रत्येक घरमे प्रचलित अछि आ' सहस्रक संख्यामे भक्तिगीतक रचना भेल अछि। एकर

किछु उल्लेख एतए आवश्यक अछि।

गौरी अखण्ड सौभाग्यवती छथि। हिनक पूजा मिथिलाक घर-घरमे कुमारि आ' अइहब द्वारा सौभाग्यक कामनासँ होइत आएल अछि। मिथिलामे शक्तिक पूजा-अर्चाक विशेष महत्व रहल अछि। महाकवि लालदास कृत महेश्वर विनोदमे मिथिलाक आचारक वर्णन एहि रूपें भेटैत अछि-

कयल दक्ष शक्तिक अपमान। माला राखल शयन स्थान।।

ततहि कयल से रति संभोग। भेल पाप दुख व्यापल शोग।।

तेहि पाप थिर रहल न ज्ञान। करता दक्ष शिवक अपमान।।

हयतनि हिनक व्याज अवलम्ब। करती त्याग देह जगदम्ब।।[७७]

सौभाग्यक देवी गौरी

मिथिलामे गौरी सौभाग्यक देवीक रूपमे कुमारि ओ नवविवाहिता बालिका द्वारा पूजित होइत छथि। पूजाकालमे गौरीक गीत गाओल जाइत अछि, जाहिमे वधूक अखण्ड सौभाग्यक कल्पना कएल जाइत अछि।

मनबोध कृष्णजन्मक आरम्भहिमे गौरीक वन्दना करैत छथि-

वन्दओं हिमगिरि कूमरि चरण।

तहिना उमापति अपन प्रसिद्ध गीत 'अरुण पुरुब दिसि बहलि सगरि निशि' [परिजात हरणक]- अन्तमे- हिमगिरि कूमरि चरन हृदय धरि सुमति उमापति भाने- कहि गिरिजाक प्रति भक्ति भावना प्रदर्शित करैत छथि।

गौरीक गीतक रूपमे मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि लोककण्ठमे प्रचलित अछि जकर संकलन आंशिक रूपमे भए सकल अछि। एतए किछु उदाहरण देल जाइत अछि -

[१]

जय गिरिनन्दिनि जग दुःख भंजनि

जय शंकर प्रिय दासी।

गिरिपर वासिनि शंभु विलासिनि

हरहु हमर दुख राशी।।

शंकर सहित अहँक शरण तजि
जाउ कतए हम दासी।
नन्दिनीक विनती सुनु गौरी
तुअ पद विनु की काशी?।।

[२]

चकित चित भए दिवस यामिनि,
पुजय गौरी चललि कामिनि।
अछत चानन लेल डाला,
कुसुम सिन्दुर फूल माला।।
बारि कए कर दीप चौमुख
गान करइत रे।
गौरि पूजि मनाए कामिनि,
चललि बाल मराल गामिनि।।
हम ने जानिअ भक्ति पूजा,
कहब हम की छमिय गिरिजा।
विनय मानिअ रे।।
नन्दिनी कर जोरि गाबथि,
गौरि गणपति नित मनाबथि।
भक्ति चाहिय रे।।[७८]

गौरीक सौभाग्य हुनक तपस्याक प्रतिफल थिक, ताहि प्रकारक आशय अनेक गीतमे अभिव्यक्त भेल अछि –

मेना माय मनाय जाय तप-तानल।
कय मति पतिपदप्रेम नेम अति ठानल।।
गौरी योग अनेक एकचित छानल।
योगी शिव कामारि नारिवस आनल।।

देखल योगिनि देह नेहवर मानल।
हरल हरक अरधंग संग गति जानल।।
भोग अमृत आनन्द कन्दफल पाओल।
जीव युगल संयोग योग शुभ पाओल।।[७९]

उपर्युक्त गीत योग थिक। ई जमायक भोजनकालमे गाओल जाइत अछि। गौरीक सौभाग्यक उल्लेख अन्यो प्रकारक व्यवहारक गीतमे भेटैत अछि। एकटा फागुमे उमा महेशक रंग अबीरक खेलक वर्णन अछि –

गौरी अरधंगी संगहि लए हर होरी मचाव।
वामे अतर अरगजा केसरि योगिनि अबिर उराव।।
दहिने भूत प्रेतगण नाचए मलि-मलि भसम चढ़ाव।
सिन्दुर लाल वसन मणिमुकुता वाम भाग झलकाव।।

* * * *

हेमन्त मनाओल सुन्दर कोबर।
लिखलनि मेना माय हे, गौरी के कोबर।
सखि सभ मिलिकए पलंग ओछओलनि
सेज देल फूल छिड़िआइ हे, गौरी के कोबर।।
शिवशंकर वर देखि मगन भेल
गौरि लेल हृदय लगाय हे, गौरी के कोबर।।
सखि सब मिलि कए आशिष देलनि
नगर नारि मिलि कोबर गाबथि
मेना मगन मन भेल हे, गौरी के कोबर।
नन्दिनी ई कोबर गाओल
युग युग जीबथु जमाय हे, गौरी के कोबर।।[८०]

:: :: ::

आजु उमाक चरण दुहु पूजह पूजह लए बेलपात।

सुरभित कोमल तरुन पुहुप लए परस चरन जलजात।।
चानन अगर विमल कस्तूरी गंगाजल भरि थार।
नागरि नागर विमल प्रेमसँ दुहुजन पैर पखार।।
लए सिन्दुर उमाक सगर तन रंजन करू भल भाँति।
कंचन बरनि त्रिपुर सुन्दरि से बिजुरिक सन उठ काँति।।
दिन दिन तरु अहिबात बढ़त ओ लह-लह तोहर मांग।
कुमरि उमा पूजन मनसँ करु दिन-दिन बढ़त सोहाग।।[८१]

कतेक कवि एहनो रचना कएलनि अछि, जकरा लोकगीतक रूपमे नहि, विशुद्ध साहित्यिक निधिक रूपमे उल्लिखित कएल जा सकैत अछि। निम्नलिखित पद 'महेश्वर विनोदक' एकटा अंश थिक, जाहिमे गौरीक बिनु शिवकेँ इकारक बिनु शव कहि अभिव्यक्त भेल अछि –

जखनहिं शंकर लेल समाधि। शक्तिहीन सभके भेल आधि।।
दुख समुद्रमे जग भेल मग्न। कतिविधि रोग ग्रस्त तन भग्न।।
ग्रहगण सभक चलल विपरीत। भेल सत्य धर्मक गति रीति।।
तारक असुर से तहिकाल। महाबली भेल दैत्य विशाल।।[८२]

कतहु गौरीक बिनु शिवक विक्षिप्त रूप आ ताहिसँ विनाशक चित्र वर्णित अछि तँ कतहु शिवक बिनु गौरीक कठिन तपस्याक वर्णन अछि। किन्तु हुनक तपस्यासँ प्रसन्न शिव आ' दुनूक मिलनक चित्र जगतक हेतु मंगलदायक भए गेल अछि। गौरीक सौभाग्य वस्तुतः जगतक प्रत्येक प्राणीक हेतु सुखद भए जाइत अछि। एही भावनासँ अनुप्राणित श्री तन्त्रनाथ झाक ई पद उल्लेखनीय अछि –

जय-जय उमे, तपश्चारिणि किसलय सुकुमारी।
वल्कल वसनि अक्षमालिनि नगराज-कुमारी।।
उपरत-सती-हेतु-कातर, तप करइत स्मरहर।
धूर्जटि खण्ड परशुकाँ कए दृढ़-संकल्पित वर।।
जनिक तपस्यासँ विचल
उपगत शिव वटु रूप धए।

कएल परीक्षण तुष्ट भए
पुरल काम अर्धाङ्ग भए।[८३]

एकटा आओर पदमे कवि गौरी आ कमलाक विनोदक वार्ताक्रममे जगक हेतु शुभकामना व्यक्त करैत छथि–

गौरि, कतए छथि भिक्षु? इन्दिरे! बलिक सदनमे।
फणिभूषण? क्षीरोधिमध्य, पशुपति? व्रजवनमे।
कतए पिनाकपाणि? छथि यज्ञहि जनक नगरमे।
कतए जटाधर? चिखइत वदरी शवरी घरमे।
एवं विध परिहास-रत उभय परस्पर पतिक प्रति।
रमा-अम्बिका मुख-हसित दुरित निवारओ त्वरित अति।[८४]

जहिना गौरीकेँ शक्ति ओ सौभाग्यक देवीक रूपमे कवि लोकनि वर्णित कएने छथि, तहिना शिवक प्रति सेहो भक्ति भावना अभिव्यक्त कएने छथि।

[च] शिवः भक्तवत्सल;

जहिना गौरीकेँ सौभाग्यक देवी मानि विभिन्न कवि हुनक स्तुति कएलनि अछि, तहिना शिवके जगतक पिता एवं पालनकर्ता मानि हुनका प्रति अनेक प्रकारेँ भक्तिभावना प्रदर्शित करैत छथि। मैथिलीक शिव-विषयक रचनामे भक्तगणक चारिटा रूप [अर्थार्थी, ज्ञानी, जिज्ञासु ओ आर्त्त] अभिव्यक्त भेल अछि।

महाकवि विद्यापति शिवक रूपकें प्रत्येक देवतामे देखैत छथिन। शिव वस्तुतः एकहि परमेश्वर थिकाह, जनिक अनेक स्वरूपक दर्शन नारायण, कृष्ण, गोविन्द, महादेव आदिक रूपमे होइत अछि। एही भावकेँ निम्नलिखित पदमे कवि व्यक्त करैत छथि–

भल हर भल हरि भल तुअ कला।
खन पित वसन खनहि बघछला।।
खन पंचानन खन भुज चारि।
खन शंकर खन देव मुरारि।।

खन गोकुल भए चराइअ गाय।
खन भिखि माँगिए डमरू बजाए।।
खन गोविन्द भए लिअ महादान।
खनहि भसम भरू काँख बोकान।।
एक सरीर लेल दुइ वास।
खन बैकुण्ठ खनहि कैलास।।
भनइ विद्यापति विपरीत वानि।
ओ नारायन ओ सुलपानि।।[८५]

विद्यापतिक शिव–विषयक उपर्युक्त गीतमे जहिना एकटा दार्शनिक ध्वनि अभिव्यंजित अछि, तहिना दोसर पदमे आत्म–निवेदनक विलक्षण अर्थ परिलक्षित होइत अछि। कविकेँ अपन जीवनक अन्त समय धरि पांचो इन्द्रिय शिथिल भए गेल छनि किन्तु एकहुसँ शिवक सान्निध्यकेँ प्राप्त नहि कए सकलाह। ने हुनका आँखिसँ देखि सकलाह, ने कानसँ हुनक गुण सुनि सकलाह, ने मुँहसँ स्तुति क' सकलाह, ने गंध वा स्पर्शसँ शिवत्वक अनुभूतिसँ अभिभूत भए सकलाह, एही तथ्यकेँ कवि करुण रूपें वर्णित करैत छथि –

शिवशंकर हे।
भलि अनुगति फल भेला।
एतए संगति एहि परतर कोन गति
मनोरथ मनहि रहला।।
तोंहे होए न परसन
पाओब अमोल धन
जनम बहलि एहि आसे।
जमहु संकट पुनु उपेखि हलह जनु
सेओलाहे बड़े पर आसे।।
स्रवन नयन गेले तनु अवसन भेले जदि तोहेँ होएब परसने।
कि करब तहिखने होइ गअ मनि धने

भखइते बेआकुल मने।।
ईद चाँद गन हरि कमलासन
सबैं परिहरि हमे देवा।
भगत वछल प्रभु बान महेसर
इ जानि कइलि तुअ सेवा।।
विद्यापति मन पुरह हमर मन
छाड़ो जमक तरासे।
हरहक हमर दुख तथिहु तोहर सुख
सब होअओ तुअ परसादे।।[८६]

अन्यहु कविक रचनामे एंहि प्रकारक आर्त्तभाव हृदयग्राही भेल अछि। निम्नलिखित पद एकरे उदाहरण थिक–

कखन हरब हर हमर कलेश।
अयलहुँ हम शिव शरण उदेश।।
नहि मोहि जपतप योग उपदेश।
नियत सुनल वर करुण महेश।।
नहि जहि जानथि विधिवुध सेश।
जानत के नहि तखन उमेश।।
थिकहुँ अहीं हर सकल भवेश।
जीव हृदय बिच करिय निवेश।।[८७]

एहि प्रकारक भक्ति-पदक रचना करबामे कविवर चन्दा झाक स्थान प्रमुख छनि। हुनक किछु पदक उल्लेख एतय समीचीन होएत –

कत दिन रखबह तनमे प्रान।
आन यतन होयत पुन आन।।
सुमिरह मन दय शिव भगवान।
त्यागह तन धन जन अभिमान।।

सुनह भगति सो शिव गुणगान।
सुखद तनिक पद अविचल ध्यान।।
एतय ओतय तोर ध्रुव कल्यान।
कहथि चन्द्र मन ने करु ध्यान।।[८८]

कवीश्वरक पदक भाव-प्रवणता सहृदयहृदयसंवेद्य अछि। शिवपदक बिना शास्त्र, पुराण सभ व्यर्थ थिक –

की भेल एतदिन नरतन जीवि। त्यागि अमृत जनु विष लैह पीबि।।
की भेल पढ़ि-पढ़ि शास्त्र पुरान। करम कयल हम आनक आन।।
की भेल बसि-बसि भारत भूमि। गरभ निवास करब गे घूमि।।
कहथि चन्द्र चिन्ता करु त्याग। शिव-पद अचल करह अनुराग।।[८९]

उक्त पदमे 'बसि-बसि भारत भूमि'- एहि उक्तिसँ अपन देशक प्रति गौरवक भावना कवि व्यक्त करैत छथि। भारत सदासँ आध्यात्मिक ज्ञानक क्षेत्र रहल अछि। किन्तु एहनो सुन्दर स्थल पर रहि कवि शिवके प्राप्त करबामे असमर्थ भेलाह, हुनक नाम ओ गुणगानसँ विरत रहि गेलाह, तकर हुनका अनुताप छनि। जेना कोनो मलाहकेँ मोती लागल सितुआ चिन्हबामे नहि अबैत छैक आ फेकला पर ओकर छवि दृष्टिगोचर होइत छैक, तहिना कविकेँ सेहो जीवनक अन्तमे अपन जन्मभूमिक महत्त्व एवं शिवक प्रति भक्तिभावना जागृत होइत छनि। जीवनमे ओकरा प्रति अनभिज्ञ रहलाह, अतः अन्तकालमे पश्चात्तापक ध्वनिक अभिव्यक्त करुण भए उठल अछि।

कवीश्वर चन्दा झाक रचनाक ई परिपाटी बड़ लोकप्रिय भेल। मिथिलाक जन-जनक कण्ठमे एहि प्रकारक गीत व्याप्त भए गेल। शिवक रूप-वर्णन एवं कविक भक्तिभावना एहेन गीतमे बड़ हृदयग्राही भेल अछि। निम्नलिखित गीत ओही क्रममे उल्लेखनीय बुझि पड़ैत अछि –

जगत विदित वैद्यनाथ, सकल गुण आगर हे।
तोहे प्रभु त्रिभुवन नाथ, दया केर सागर हे।।
अंग भसम सिर गंग, गले बिच विषधर हे।
लोचन लाल बिसाल, भाल बिच शशधर हे।।

जानि शरण दीनबन्धु, शरण धय रहलहुँ हे।
मन दय करु प्रतिपाल, अगम जल पड़लहुँ हे।।
सुनिय सदाशिव गोचर, एहि अवसर हे।
कोन सुनत दुख मोर, छाड़ि कए तोहर हे।
वैद्यनाथ निज दोष, कतेक हम भाषव हे।
तोंहे प्रभु त्रिभुवन नाथ, अपन कय राखब हे।।[९०]

एहि भावक नचारी महाकवि विद्यापतिक रचनामे बड़ हृदयग्राही भेल अछि। शिवक प्रति अनन्य भक्ति एवं अपन निरीह अस्तित्वक अभिव्यंजना एहि प्रकारक पदक मुख्य विशेषता अछि। उगना विद्यापतिक तथाकथित भृत्यक नाम छल, जे मनुष्यक रूपमे साक्षात् उग्रनाथ छलाह। कहल जाइत अछि जे विद्यापतिक अत्यन्त भक्तिभावनासँ प्रभावित भए महादेव हुनक सेवाक हेतु मनुष्य बनि आबि गेल छलाह। किन्तु एकदिन दुर्योगसँ ई रहस्य प्रकट भए गेल, तँ शिव अन्तर्धान भए गेलाह। विद्यापति व्याकुल भए गेलाह। शिवक दर्शनक बिनु ओ विचलित भए निम्नलिखित पदक रचना कएलनि –

उगना हे मोर कतय गेला। कतय गेला शिव किदहु भेला।
भाङ नहि बटुआ रुसि बैसलाह। जोहि हेरि आनि देल हँसि उठलाह।।
जे मोर कहता उगना उदेस। ताहि देबै कर कगना वेस।।
नन्दन वनमे भेटल महेस। गौरि मन हरखित मेटल कलेस।।
विद्यापति भन उगना सौं काज। नहि हितकर मोर त्रिभुवन राज।।[९१]

उपर्युक्त पदमे एकटा भक्तक तन्मयता 'जे मोर कहता उगना उदेस, ताहि देबै कर कगना बेस' सँ ध्वनित होइत अछि।

ओना कहल जाइत अछि जे शिवक विरहमे स्वयं विद्यापति आतुर भए एकर रचना कयलनि, किन्तु से दन्तकथा मात्र धरि रोचक अछि। तथ्य तँ ई अछि जे विद्यापति अतिशय भक्तिक कारणेँ एकर रचना कएलनि, जे शिवक विरहमे गौरीक उक्ति मानल जाएत। कारण जे कगना उपहृत करब तँ गौरीक कल्पना भए सकैत छनि। एकर अतिरिक्त नन्दम वन मे भेटल महेस,' 'गौरि मन हरखित मेटल कलेस' सँ ई तथ्य आओर स्पष्ट अछि।

विद्यापतिक अधिकतर नाचारीमे एहने आर्त्त भक्तक हृदयक संवेदना प्रस्फुटित भेल अछि। किछु पदक उद्धरण एतए देल जाए रहल अछि –

हर जनि बिसरब मो ममिता, हम नर अधम परम पतिता।
तुअ सन अधम उधार न दोसर, हम सन जग नहि पतिता।।
जम के द्वार जबाब कोन देब, जखन बुझत जिन गुन कर बतिया।
जब जम किंकर कोपि उठाएत तखन के होत धरहरिया।
भन विद्यापति सुकवि पुनित मति संकर विपरीत बानी।
असरन सरन चरन सिर नाओल दया करू दिअ सुलपानी।[१२]

:: :: ::

तोंहे प्रभु त्रिभुवन नाथे। हे हर, हम निरदीस अनाथे।।
करम धरम तप हीने। पड़लहु पाप अधीने।।
बेड़ भसल मझधारे। भैरव धरु करुआरे।।
सागर सभ दुख भारे। अबहु करिअ प्रतिकारे।।
भनहि विद्यापति भाने। संकट करिअ तराने।।[१३]

:: :: ::

कखन हरब दुख मोर हे भोलानाथ।
दुखहि जनम मेल दुखहि गमाओल सुख सपनहु नहि भेल हे भोलानाथ।
अछत चानन आओर गंगाजल बेलपात तोहि देब, हे भोलानाथ।
एहि भवसागर थाह कतहु नहि भैरव धरु करुआरे हे भोलानाथ।
भन विद्यापति मोर भोलानाथ गति देहु अभय वर मोहि हे भोलानाथ।।[१४]

:: :: ::

शिव हो, उतरब पार कओन विधि।
लोढ़ब कुसुम तोड़ब बेलपात।
पुजब सदाशिव गौरिक साथ।।
बसहा चढ़ल सिव फिरहु मसान।

भङिया जठर दरदो नहि जान।।
जप तप नहि केलहु नित दान।
बित गेला तिनपन करइत आन।।
भनहि विद्यापति सुनु हे महेस।
निरधन जानि के हरहु कलेस।[९५]

जहिना विद्यापति एवं चन्दा झा सन युग प्रवर्तक कविक रचनामे शिवक दर्शनक प्रति आतुरताक भाव परिलक्षित होइत अछि तहिना अन्य कविक पदमे शिवक रूप ओ गुणक वर्णनक आधिक्य अछि।

अनेक कवि शिवक स्तुतिक क्रममे हुनक देवत्वक वर्णन कयलनि। जे पुराणमे वर्णित कथा सभक निर्देश करैत अछि। जेना मुकुन्द झा रचित निम्नलिखित पदमे शंकरकेँ त्रिपुरदहन, कृत्तिवसन, दुरित-विदूषण आदिक संज्ञा पुराणक अनेक सन्दर्भकेँ अभिव्यंजित करैत अछि। एकर अतिरिक्त त्रिनेत्र, त्रिगुण, त्रिवेद कहि कवि शिवक सर्वव्यापकता सिद्ध करैत छथि –

जय जय शंकर शिव सर्वेश।
त्रिगुण त्रिनेत्र त्रिवेद त्रिकालिक त्रिभुवन हर त्रिभवेश।
वृषवाहन त्रिपुरदाहन पंचानन परमेश।।
महादेव महदाधिनिवारण भवतारण भुवनेश।
कृत्तिवसन श्रुतिरसन विषासन खलशासन सकलेश।।
चन्द्रविभूषण दुरित विदूषण सर्प विभूषण भेश।
भस्माभरण भवेश भुवन्धर भुवनेश्वर भुजगेश।।
त्रिगुण त्रिमूल त्रिशूल सुधाकर कामदहन कामेश।
जगदानन्द जनेश जगद्धर जगदीश्वर जीवेश।।

*   *   *   *

अब शिव नाम हो भवपाल।
आशुतोष महेश शंकर चन्द्रलसित शुभभाल।
भूतगण सह सतत नर्तित क्षण-क्षण करत करताल।।

व्याघ्रगजवरचर्म्म राजित अंग लसित बहुव्याल।
जीव हृद्गत कलुषहारक सकल दुरितक काल।।७।।
जय महेश रमेशपूजित नौमि ते पदपंकजम्।
सुरसुरेशदिनेशवन्दित मोहमपहर संगजम्।।
वेदविधिवुधविदितबोधित स्तोमि तं श्रुतिसंस्तुतम्।
कृत्त जटाजूट चन्द्र शोभित धृतमहोक्ष तमद्भुतम्।।
सर्पभूषणदुरितदूषण शिवशिवेति वदाम्यहम्।
भक्तभावित भस्मभूषित भर्गमेव भजाम्यहम्।।
जन्ममृत्युजरापहारक त्वां मुहुः प्रणमाम्यहम्।
जीव हृद्गत [योग मनुगत] जीवनेश नमाम्यहम्।।[१६]

उपर्युक्त पद रावण कृत शिव-ताण्डव स्तोत्रसँ प्रभावित बुझि पड़ैत अछि। जेना भक्त भावित भस्म भूषित भर्गमेव भजाम्यहम्-आदिक शब्द-विन्यास **चकार चण्ड ताण्डवं, तनोतु नः शिवः शिवम्** [रावणकृत स्तोत्र] आदि पंक्तिसँ साम्य रखैत अछि। मैथिलीमे संस्कृतक प्रभावसँ अन्तक अनेक शब्द संस्कृतक यथावत् अनुकरण बुझि पड़ैछ [जेना भजाम्यहम्, प्रणमाम्यहम् आदि] जकरा भाषागत अनुकरण कही तँ अत्युक्ति नहि होयत। ओना काव्यमे ध्वनिक प्रवाहक दृष्टिएँ ओहि प्रकारक प्रयोग बहुधा भए जाइत छैक, जे श्रुति सुखद अवश्य होइत अछि।

मिथिलामे संस्कृतक पठन-पाठनक कारणेँ अनेक विद्वान् एकरा [संस्कृतकेँ] मातृभाषा जकाँ ग्रहण क' लैत छथि, तेँ अधिकतर रचनाकेँ संस्कृत बहुल होयब स्वाभाविको। निम्नलिखित रचना, जे आधुनिक कालक कवि लोकनिक देन थिक, ताहिमे संस्कृत शब्दक विन्यास तँ अछिए, किन्तु भाषामे ओ विशुद्ध मैथिली थिक।

भजु मन शंभुक चरण अमूल।
जे नित निरत नृत्य ताण्डव महँ नाशथि पाप-समाज।
जग-मंगल कारण शिव धएलहुँ अशिव वेष नटराज।।

जहि पद निकसथि गंग महानदि अहि मणि मुकुट निघृष्ट।
शिवपद कमल विराजसु नितदिन नाशथु पाप निकृष्ट।।
हिमदुहिताकाँ देल सकल मणि पीठ निवास निपाप।
वसथि सदाशिव भस्म विभूषित शमशाने नशि पाप।।
हाथहि धरथि मनुख-शिर खप्पर भसमहि देह रङाए।
देह विभूषित नागहिँ गिरिजापति निज वेष सजाए।।
चलथि उमापति निशिदिन मरघट मंगल वेष बनाए।
ई अजगुत गति देखू सज्जन भजु तहि चित्त लगाए।
श्रीकर आश एक अछि निश्चय लेब चरण लपटाए।।
अन्तकाल शिव अपन अंग बनि लेबह आबि मिलाए।।[९७]

:: :: ::

भोला अढरन ढरन कहाय,
औढर दानी शंभु भवानी बसथि तपोवन जाए।
सभकेँ भोला देथि अमित धन अपनहिं भिखारि कहाए।।
बसहा चढ़ल शिव डमरू बजाबथि अंगमे भस्म लगाय।
रुद्रमाल शशि भाल विराजय नीलकण्ठ छवि छाय।
नन्दिनी अति हृदय मगन भए नित उठि ध्यान लगाए।।[९८]

उपर्युक्त दुनू नचारी दू गोटएक रचना थिक, जाहिमे श्रीकरजीक रचनामे शिवक मंगल रूपक वर्णन हुनक विस्मयक संग कयल गेल अछि। अद्भुत रूपमे विरूपताक वितृष्णा नहि, सौन्दर्यक आकर्षण अछि, जे अपनहिमे अनुपम अछि। शिवक सौन्दर्य शिवहिमे निहित अछि-- असीम, अनन्त। ओकर साम्य रखनिहार किछु नहि अछि-- एहि तथ्यकेँ कवि-- **चलथि उमापति निशिदिन मरघट मंगल वेष बनाय**-- एहि कथन सँ नीक जकाँ सिद्ध क' देने छथि।

दोसर पद नन्दिनी देवीक रचना थिकनि, जाहिमे एकटा सरल हृदया कवयित्रीक भक्ति-भावनाक सहज-प्रस्फुटन भेल अछि। एहि प्रकारक भाव हिनक दोसरो रचनामे अभिव्यक्त भेल अछि -

शिवशंकर शिवशंकर भोला नित उठि सुमिरू माइ।

जटाजूट सिर गंग फणिमणिमाल सोहाइ।

शशि ललाट शोभे भुजंग अरु अंगमे भस्म लगाइ।

रुद्रमाल कर दण्डताल शिव डमरू देथि बजाइ।।

एहन रूप दिगम्बर शम्भुक सुर मुनि ध्यान लगाइ।

भनहि नन्दिनी छन्द बिना शिव केरि गीत बनाइ।।४६।।[१८]

उपर्युक्त नचारीक अन्तिम पंक्ति- भनहि नन्दिनी छन्द बिना शिव केरि गीत बनाइ-- एहिसँ बुझि पड़ैत अछि जे कवयित्री शिवक प्रति अतिशय भक्तिभावनाकेँ नहि रोकि सकलीह एवं हृदयक तीव्र अनुभूति गीतमे प्रस्फुटित भए गेल। किन्तु जखन ओ गाबि लैत छथि तँ एहि हेतु अनुताप सेहो व्यक्त करैत छथि जे गीतकेँ छन्दबद्ध करबाक ज्ञान हुनका नहि छनि।

वस्तुतः मिथिलामे शिवक प्रति अगाध भक्ति प्रत्येक घरमे व्याप्त रहल अछि। अनेक उद्धरणसँ ई सिद्ध भए गेल अछि जे भाषा, भाव आदिक वैषम्य रहितहुँ प्रत्येक कविक भक्ति-भावनाक प्रगाढ़ता हृदयग्राही अछि। आधुनिक काल धरि एहि परिपाटीक रक्षा भए रहल अछि।

जेना श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुरक रचना सेहो एही धाराक एकटा लहरि थिक-

शिवक छनि महिमा अपरम्पार।

सघन तिमिर सन मोह-व्यूहमे

घनक घटा सन जटाजूटमे

पावन गंगा धार।

विष लय कंठ लपेटल विषधर

यदपि दिगम्बर, लेल बघम्बर

भाङधुथुर आहार।

बसहा चढ़थि, त्रिशूलो राखथि

भरिसक अपनाकेँ बूझै छथि

हाथी केर हथवार।।
डमरू पीटि कहथि छी राजा,
भूत-प्रेत बजाबय बाजा,
भस्मक करथि ओङार।
सासु-ससुर सुख बुझलि न गौरी
घर-घोड़सार ने फूटल कौड़ी
नहि छनि खेत पथार।
जे नारद, नगपति फुसियाओल
मैना के मति के भरमाओल
सुनता गारि हजार।।[१००]

एहि प्रकारेँ कहि सकैत छी जे मैथिली साहित्यमे गौरीशंकरक वर्णनमे हुनक अनेक रूपक दर्शन होइत अछि जाहिमे कवि लोकनिक भक्तिभावना विशेष रूपेँ मुखरित भेल अछि। संगहिँ तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति सेहो नीक जकाँ चित्रित भेल अछि।

* * *

१. *मैथिली शैव साहित्य: डा० रामदेव झा- पृ० ९०.*

२. *मैथिली साहित्यक इतिहास: डा० दुर्गानाथ झा 'श्रीश'*

३. *मैथिली शैव साहित्य: डा० रामदेव झा- पृ० ८६.*

४. *मैथिली साहित्यक इतिहास : डा० दुर्गानाथ झा 'श्रीश'- पृ० ९०-९१.*

५. *डा० जयकान्त मिश्र-- ए हिस्ट्री आफ मैथिली लिटरेचर [प्रथम भाग १, पृ० ४१७]*

६. *मैथिली शैव साहित्य: डा० रामदेव झा- पृ० १५६.*

७. *मैथिली साहित्यिक इतिहास- डॉ. जयकान्त मिश्र*

८. *मैथिली शैव साहित्य : डा० रामदेव झा- पृ० १६२.*

९. *मैथिली शैव साहित्य: डा० रामदेव झा- पृ० १३४.*

१०-११. मैथिली शैव साहित्यः डा० रामदेव झा- पृ० १५८.

मैथिली शैव साहित्यः डा० रामदेव झा- पृ० १७३.

१२. मैथिली शैव साहित्य : डा० रामदेव झा- पृ० १९४.

१३. मैथिली शैव साहित्य : डा० रामदेव झा- पृ० २५१.

१४. महेश्वर विनोद [उत्तरार्द्ध कथा] – कवि लालदास।

१५-१६. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार- पदसं० ७७९, पृ० ५०८.

१७. गौरी स्वयंवर : कविलाल

१८. गौरा स्वयंवर : कविलाल

१९. गौरी शंकरः कविलाल-

२०. लालकृत गौरीस्वयंवरक सम्पादकीय।

२१. कविलालकृत गौरीस्वयंवर नाटिकासँ।

२२. कान्हारामदास कृत गौरी स्वयंवरसँ।

२३. कान्हारामदास कृत गौरी स्वयंवरसँ।

२४. शिवदत्तकृत गौरीपरिणय – पृ० ४.

२५. शिवदत्तकृत गौरीपरिणय – पृ० ९.

२६-२७. विद्यापतिः विमान बिहारी मजुमदार- पद सं० ६०६

२८. विद्यापतिः विमान बिहारी मजुमदार- पदसंख्या ९०५

२९. विद्यापतिः विमान बिहारी मजुमदार- पदसंख्या ७८२

३०. विद्यापतिः विमान बिहारी मजुमदार- पदसंख्या- ९०६

३१-३२. महेशवाणी [प्रथमभाग]

३३. मैथिली गीत रत्नावली मे संकलित ईशनाथ झाक पदः सं० बदरीनाथ झा।

३४. विद्यापतिः विमान बिहारी मजुमदारः पदसंख्या- ९०९

३५-३६. विद्यापतिः विमान बिहारी मजुमदार पदसं० ७८२

३७. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार पद सं० ७८७

३८. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार- पद सं० ९०४

३९. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद सं० ९०३
४०. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद सं० ७८५
४१. हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर: डा० जयकान्त मिश्रा। [भाग–१] पृ० ३२१.
४२. गौरी स्वयंवर : कवि लाल [सं० डा० जयकान्त मिश्र]।
४३. गौरी स्वयंवर : कवि लाल [सं० डा० जयकान्त मिश्र]
४४. गौरी परिणय : शिवदत्त [सं० डा० जयकान्त मिश्र]
४५. गौरी स्वयंवर : कान्हारामदास [सं० डा० जयाकन्त मिश्र]
४६. गौरी स्वयंवर: कान्हारामदास [सं० डा० जयकान्त मिश्र]
४७. गौरी स्वयंवर: कान्हारामदास [सं० डा० जयकान्त मिश्र]
४८. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद सं० ९०४
४९. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद सं० ७८७
५०. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद सं० ७८९
५१. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद सं० ८००
५२. महेश्वर विनोद: लालदास [उत्तरार्द्ध कथा] – पृ० १३३.
५३. मंगल पंचाशिका : प्रो० तन्त्रनाथ झा– पद सं० ४८.
५४. मंगल पंचाशिका : प्रो० तन्त्रनाथ झा– पद सं० ४७.
५५. मंगल पंचाशिका : प्रो० तन्त्रनाथ झा– पद सं०४६
५६. महेश्वर विनोद : (पूर्वार्द्ध)– लालदास
५७. मैथिली गीत रत्नावली– पद सं० ८५.
५८. विद्यापति: विमान बिहारी मजुमदार– पदसंख्या ७९०
५९. विद्यापति: विमान बिहारी मजुमदार– पदसंख्या ७८४
६०. विद्यापति: विमान बिहारी मजुमदार– पदसंख्या ६०८
६१. विद्यापति: विमान बिहारी मजुमदार– पदसंख्या ...
६२. महेश्वर विनोद: (उत्तरार्द्धकथा) लालदास

६३. महेश्वर विनोदः (उत्तरार्द्धकथा) लालदास पृ० १०९.

६४–६५. महेश्वर विनोद : लालदास [उत्तरार्द्ध]

६६. महेश्वर विनोद (उत्तर्राद्ध)– लालदास

६७. गौरी स्वयंवर : कान्हाराम [सं० डा० जयकान्त मिश्र]– पृ० २५.

६८. गौरी परिणय : शिवदत्त।

६९. मिथिला भजनावली : प० श्री मुकुन्द झा– पदसं० ४९

७०. मैथिली गीत रत्नावली: प. श्री बदरीनाथ झा।

७१. मैथिली गीत रत्नावली [कवि आनन्द रचित]:
सं० बदरीनाथ झा– पदसं० ८२.

७२. महेशवाणी प्रथम भाग।

७३. मैथिली गीतांजलि : नन्दिनी देवी।

७४. मैथिली गीत रत्नावली : सं० प. श्री बदरीनाथ झा

७५. मैथिली गीत रत्नावली : सं० प. श्री बदरीनाथ झा
[कवि रत्नपाणि क रचित]– पद सं० ८५.

७५. महेश्वर विनोद : लालदास।

७७. मैथिली गीतांजलि : नन्दिनी देवी।

७८. मिथिला भजनावली।

७९. मैथिली गीतांजलि : नन्दिनी देवी– पदसं० ९५.

८०. मैथिली गीतांजलि : नन्दिनी देवी– पृ० ४०.

८१. महेश्वर विनोद : लालदास [पूर्वार्द्ध कथा]– पृ० ७८.

८२. मंगल पंचाशिका : प्रो० तन्त्रनाथ झा– पद सं० ४५.

८३. मंगल पंचाशिका : प्रो० तन्त्रनाथ झा– पद सं० ५०.

८४. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद सं० ७७३.

८५. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद सं० ७७६.

८६. पदावली अशुद्ध छपाइक कारणे संशोधित कएल :-

	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
क.	हमर	हरह	तुम	तुअ

८७. मिथिला भजनावली : प० मुकुन्द झा

८८. चंद्र पद्यावली : पद सं० २०६.

८९. चन्द्र पद्यावली– पद सं० २०७ [एकर अतिरिक्त पदसंख्या १०० सँ १२७ धरि एहि सन्दर्भमे द्रष्टव्य]

९०. महेशवाणी [प्रथमभाग]– प्रथमगीत। [पुस्तकमे छाड़ि दोसर हे छैक, जकरा हम अशुद्ध बुझि छाड़ि तोहर हे कएल अछि।

९१. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद संख्या ७९२.

९२. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद संख्या ७७४.

९३. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद संख्या ७७५.

९४. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद संख्या ७७७.

९५. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद संख्या ७७९.

९६. मिथिला भजनावली : पं० मुकुन्द झा।

९७. श्रीकर भक्ति तरंग।

९८. मैथिली गीतांजलि : नन्दिनी देवी।

९९. मैथिली गीतांजलि : नन्दिनी देवी।

१००. श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुरक कण्ठसँ।

❑❑

अध्याय– ६

संस्कृत एवं मैथिली साहित्यमे गौरीशंकर : तुलनात्मक दृष्टि

संस्कृत साहित्यमे गौरीशंकर सामान्यतः ऐश्वर्य ओ समृद्धिक वातावरणमे वर्णित छथि परन्तु मैथिली साहित्यमे हुनक छवि दरिद्र गृहस्थक रूपमे अंकित भेल अछि। दुनू साहित्यमे हिनक सभ रूपक साम्य ओ वैषम्य निम्नलिखित सन्दर्भमे उल्लेखनीय अछि –

१– गौरीक कौमार्य, तपस्या ओ मनन।

२– गौरीक नैहर।

३– शंकरक स्वरूप।

४– हर–गौरी विवाह।

५– गौरीशंकरक दाम्पत्य जीवन– प्रणय आ' वात्सल्य।

१– गौरीक कौमार्य, तपस्या ओ मनन

संस्कृत साहित्यमे हरगौरीक उल्लेख कालिदास ओ मैथिली साहित्यमे विद्यापति जाहि रूपेँ कएलनि से परम्परा दुनू साहित्यक गौरीशंकर विषयक काव्यमे विशेष प्रचलित भेल। तेँ प्रस्तुत सन्दर्भमे कालिदास ओ विद्यापतिक रचनाक उल्लेख मुख्य रूपें विहित अछि।

कुमारसंभवक गौरी एकटा षोड़सी बालाक रूपमे परिलक्षित होइत छथि। हुनका सर्वांग सुन्दरी, मृगाक्षी, सुकेशी, सुभाषिणी आदिक रूपमे वर्णित कएल गेल छनि।

ब्रह्मा संसार तँ बनौलनि परन्तु संसारक सम्पूर्ण सौन्दर्यकेँ एक स्थानपर नहि देखि हुनका एकर लालसा भेलनि जे विश्वक सौन्दर्य कोनो एकहि स्थानपर एकत्रित भए जाय। आ' सएह सोचि ओ पार्वतीक रचना कएलनि। विश्वक सुन्दरतम वस्तुकेँ समेटिकए ओ सोचलनि जे एकरे अनुरूप पार्वतीक प्रत्येक अंगक निर्माण कयल जाए आ बड़ यत्नसँ हुनक प्रत्येक अंगकेँ तदनुरूप बनौलनि –

सर्वोपमाद्रव्यसमुच्चयेन यथाप्रदेशं विनिवेशितेन।

सा निर्मिता विश्वसृजा प्रयत्नादेकत्र सौन्दर्यदिदृक्षयेव।।[१]

गौरीक आँखिक तुलना बिहाड़िक बसातमे हिलैत नीलकमलसँ कए कवि नयनक चांचल्यके कतेक सजीवता प्रदान कयलनि अछि से उल्लेखनीय अछि–

प्रवातनीलोत्पलनिर्विशेषमधीरविप्रेक्षितमायताक्ष्याः।

तया गृहीतं नु मृगांगनाभ्यस्ततो गृहीतं नु मृगांगनाभिः।।[२]

मदिराक बिना मादक ओ कामदेवक स्वतः वाण [जकरा फूलक अपेक्षा नहि छैक] नवीन यौवनक आगमनसँ पार्वतीक शरीरमे लालित्यक आविर्भाव भ' जाइत छनि–

असंभृतं मण्डनमंगयष्टेरनासवाख्यं करणं मदस्य।

कामस्य पुष्पव्यतिरिक्तमस्त्रं बाल्यात्परं साथ वयः प्रपेदे।।[३]

गौरीक हावभावक वर्णन तँ आओर चमत्कारपूर्ण अछि। हुनक चललापर पाँजेबसँ मधुर ध्वनि मुखरित होइत छल। हंसके एहि ध्वनिक लोभ भेलैक। ओ एकरा सिखबाक हेतु गौरीकेँ अपन चालि [गति] सँ बदलामे सिखाए देने हो तेहने बुझि पड़ैत छल। अर्थात् गौरीक अंग संचालनक लालित्य हंसगमन सन मोहक छल। हुनक पाँजेबक [नूपुर] ध्वनि ओकरे [हंसक] स्वर सन आकर्षक ओ मधुर छल–

सा राजहंसैरिव संनतांगी गतेषु लीलांचितविक्रमेषु।

व्यनीयत प्रत्युपदेशलुब्धैरादित्सुभिर्नूपुर सिंजितानि।।[४]

उपर्युक्त प्रत्येक पदमे गौरीक कौमार्यक लालित्यक चित्रणक संग कविक काव्य-वैदग्ध्य सहृदयहृदयसंवेद्य अछि।

एही प्रकारेँ पार्वतीक केश, भऊँह आदिक वर्णन मनोहारी भेल अछि। हुनक धनुष सन टेढ़ आ' नाम भऊँह बुझि पड़ैत छलैक जेना क्यो तूलिकासँ लिखि देने होइक। ओकरा देखि कामदेव सेहो अपन [धनुषक] अभिमान बिसरि गेलाह–

तस्याः शलाकाक्रमनिर्मितेव कान्तिभ्रुवोरायतलेखयोर्या।

तां वीक्ष्य लीलाचतुरामनंगः स्वचापसौन्दर्यमदं मुमोच।।[५]

एही प्रकारेँ पशु–पक्षीकेँ यदि लज्जा रहितैक तँ चमरी गाय हुनक नाम–नाम केश देखि लजा जइते–

लज्जा तिरश्चां यदि चेतसि स्यादसंशयं पर्वराजपुत्र्याः।

तं केशपाशं प्रसमीक्ष्य कुर्युर्बालप्रियत्वं शिथिलं चमर्यः।।[६]

परन्तु कुमारि पार्वतीक अंगक एतबे वर्णन कए कवि सन्तुष्ट नहि होइत छथि। स्त्रीक अंग–प्रत्यंगक वर्णन करब अधिकतर कविकेँ विशेष प्रिय रहलनि अछि। कालिदास सेहो एहि प्रवृत्तिक अपवादमे नहि छथि। तेँ एकटा भावुक, सहृदय कविक सहज भावक प्रस्फुटन हुनक लेखनीसँ होएब स्वाभाविके, परन्तु कुमारि कन्याक अनावृत अंगक वर्णन काव्यहुमे सौन्दर्य–बोधक परिचायक नहि भए सकैत अछि। ओहिसँ रसाभासे परिलक्षित होइत छैक।[७]

एतबा होइतहुँ कालिदासक कुमारि गौरी अनिन्द्य रूपसी तरूणीक रूपमे चित्रित भेलि छथि।

परन्तु मैथिली साहित्यक कुमारि गौरी अल्पवयस्का छथि। हुमकामे तारुण्यक लक्षण नहि, एकटा छोट बालाक चांचल्य ओ सरलता दृष्टिगोचर होइत अछि। जेना–

गौरी अउरी ककरापर करती, वर भेल तपसी भिखारि।।

उपर्युक्त गीतक अंश विद्यापति रचित थिक, जे लोककण्ठसँ संकलित अछि। एहिमे 'अउरी' पदसँ गौरीक अल्पवयस्क होयब व्यक्त होइत अछि। एकटा आओर पदमे– 'गौरी मोर ननुमि' [पद सं० ७८२, वि०म०]– कहि मेना गौरीक बाल्यावस्था दिस संकेत करैत छथि।

गौरीक तपस्या

गौरी महादेवकेँ वर रूपमे प्राप्त करबाक हेतु तपस्यामे रत छथि ओ एखन अल्पवयस्का बालिका छथि। हुनक तपस्यासँ प्रसन्न भए स्वयं शंकर एकटा साधुक [संन्यासी] रूपमे प्रकट होइत छथिन। परन्तु गौरीक माता मेना हुनका गौरीक समक्ष जयबासँ रोकैत छथिन।

ओ कहैत छथिन जे हमर पुत्री राजकुमारी छथि। हुनक शरीर कोमल छनि। तेँ ई साधु, जे साँप धारण कएने अछि, जकर तेसर आँखिसँ आगि पजरि रहल छैक, से यदि गौरीक समक्ष जाएत तँ ओ डेराए जयतीह तथा हुनका तेसर नयनक धाह लगतनि। एकरा तीनटा जे विकट नयन छैक ताहिसँ हमर उमाकेँ नहि ताकए, ओ छोटि छथि। अर्थात् यदि ई अपन एँहि विकट आँखिसँ हुनका दिस ताकत तँ हुनका नजरि लागि सकैत छनि–

एतए कतए आएल जती गोरि अछि तपे।
राज रे कुमारि बेटि। डरब देखि सापे।।
तोड़ब मोयँ जटाजुट फोड़ब बोकाने।
हटल न मान जती होइत अपमाने।।
तीनि नयन हर बीसम जर दहनू।
उमा मोरि ननुमि हेरह जनु।
भनइ विद्यापति सुन जगमाता।
ओ नहि उमत त्रिभुवन दाता।[८]

बालिका गौरीक सरलता निम्नलिखित पदमे स्पष्टतया परिलक्षित होइत अछि–

ए माँ कहइ मोय पुछों तोही
ओहि तपोवन तापस भेटल
कुसुम तोड़ए देल मोही।।
अंजलि भरि कुसुम तोड़ल
जे जत अछल जाहां।

तीनि नअने खने मोहि निहारए
बइसलि रहलि जाहाँ।।
गरा गरल नयन अनल
सिर सोभइन्हि ससी।
डिमि-डिमि कर डमरू बाजए
एहे आएल ससी।।
सिर सुरसरि भ्रमु कपाला।
हाथ कमण्डलु गोटा।
बसहा चढ़ल आएल दिगम्बर
विभुति कएल फोटा।।
भन विद्यापति सामिक निन्दा
न करु गोरी माता।
तोहर सामि जगत इसर
भुगति मुकुति दाता।[१]

उपर्युक्त पदमे गौरी अपन मायक समक्ष महादेवक अद्भुत रूपक वर्णन कए रहलि छथि। एतए गौरीक उद्‌गारसँ एकटा अनचिन्हार योगीक प्रति कुमारि बालाक अनासक्त भाव अभिव्यंजित होइत अछि। ओ ई नहि बुझि रहलि छथि जे एही योगीक हेतु ओ तपोवन गेलि छलीह। एहू-ठाम हुनका एकटा सरलहृदया बालाक रूपमे वर्णित कएल गेल अछि। अन्तमे [भणिता मे] विद्यापति स्वयं ई स्वीकार करैत छथि गौरीक उक्तिसँ शंकरक भक्ति ध्वनित होइत छनि।

दोसर दिस कालिदासक गौरी सुशिक्षिता ओ तपस्विनी छथि। महादेव जखन हुनका समक्ष, अपन छद्म वेशमे उपस्थित भए ई कहैत छथिन जे जाहि वरक हेतु अहाँ एतेक कष्टसँ तपस्या कए रहलि छी ओ अत्यन्त कुरूप, बूढ़ आ अनुपयुक्त छथि। तँ पार्वती हुनका ई कहि चुप कए दैत छथिन जे ई विवाद समाप्त करू। अहाँ हुनका प्रति जे सुनलहुँ से यदि सत्यो अछि, तैयो हमर मन हुनकहिमे अनुरक्त अछि। जखन ककरो प्रति ककरो आकर्षण भ' जाइत छैक तखन ओ कहला-सुनलासँ अन्य भावमे परिवर्तित नहि होइत छैक -

अलं विवादेन यथा श्रुतस्त्वया
तथाविधस्तावदशेषमस्तु सः।
ममात्र भावैकरसं मनः स्थितं
न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्षते।।५।८२।

दुनू पदमे ई तँ स्पष्ट अछि जे गौरी नहि चीन्हि सकलीह जे समक्षमे आएल योगी स्वयं शंकर छथि परन्तु विद्यापतिक पदमे ओ योगीसँ वार्तालाप करैत नहि परिलक्षित होइत छथि। योगीक प्रति अपन मायसँ जेहो शब्द बजैत छथि ताहिमे शंकरक प्रति कोनो प्रकारक भावना नहि प्रकट भेल अछि। तपोवन पद मात्र ई अभिव्यंजित करैत अछि जे गौरी तपस्या वा पूजाक हेतु किछु कालक हेतु वनमे जाइत छलीह आ' पुनः घर आबि अपन माताक संग रहैत छलीह। कारण जे अपन मायकेँ सम्बोधित कए कुतूहलपूर्ण वस्तुक वर्णन करब छोट बालिकाक सहज गुण होइत छैक।

अतः विद्यापतिक गौरी एकटा एहेन कुलीन गृहकन्या बुझि पड़ैत छथि जे नीक वरक प्राप्तिक निमित्त कोने मन्दिर वा वन जाए पूजा करैत होथि आ पूजाक पश्चात् घर आबि जाइत छथि।

परन्तु कालिदासक गौरीक तपस्याक वर्णन एहेन अछि जाहिसँ हुनका मनसा, वाचा ओ कर्मणा समर्पिता प्रणयिनी युवती कहल जाए सकैत अछि। हुनक तपस्याक कठोरता ओ धैर्यक पराकाष्ठा एकटा प्रणयिनिअहुँसँ अधिक योगिनी सिद्ध करैत अछि, जे हृदयक समर्पण मात्रसँ नहि, तपस्याक सामर्थ्यसँ महादेव सन जितेन्द्रियकेँ आकृष्ट कए लैत छथि।

हुनक तपस्याक कठोरता हुनका एकटा कोमलांगी राजकुमारीक अननुरूप एकटा साधिकाक रूपमे परिणत कए दैत अछि।

पार्वती शिवकेँ वर रूपमे प्राप्त करबाक हेतु कठिन तपस्या करबाक निश्चय कए लैत छथि–

तथा समक्षं दहता मनोभवं पिनाकिना भग्नमनोरथा सती।
निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता।।५१।।

इयेष सा कर्तुमवन्ध्यरूपतां समाधिमास्थाय तपोभिरात्मनः।
अवाप्यते वा कथमन्यथाद्वयं तथाविधं प्रेम पतिश्च तादृशः।।५२।।

[अर्थात् जखनि पार्वतीजी देखलनि जे कामदेवकेँ शिवजी भस्म कए देलनि अछि तँ हुनक सभटा आशा समाप्त भए गेलनि। ओ अपन सौन्दर्यक निन्दा करए लगलीह। कारण जे प्रियतमसँ उपेक्षित सौन्दर्य व्यर्थ थिक।

ई सोचि ओ मनमे निश्चय कए लेलनि जे जिनका हम अपन रूपसँ प्रसन्न नहि कए सकलहुँ हुनका अपन तपस्यासँ प्राप्त करब। ई उचिते छैक, कारण जे एहेन दिव्य प्रेम आ' पति तपस्याकं बिना कोना भेटि सकैत अछि?]

एहि प्रकारक निश्चय ओ धैर्य पार्वती सन ऐश्वर्यमयी, रूपसी ओ मातापिताक दुलारू कन्याक हेतु अद्भुत अछि। सेहो ओहि अवस्थामे, जखन ओ प्रियतम द्वारा उपेक्षित भेल छथि। एहि अवस्थामे साधारणतया नारी पतिक निन्दा कए अपन आक्रोश व्यक्त करैत अछि वा अपन भाग्यक निन्दा करैत नैराश्यक प्रदर्शन करैत अछि। कालिदासक पार्वती एहि दुनूसँ असम्पृक्त लोकोत्तर गुणमयी देवी भए दृढ़ विश्वासक संग ओही शंकरक हेतु तपस्यामे रत भए जाइत छथि, जनिकासँ ओ पहिले बेर तिरस्कृत भेलि छथि।

पार्वती अपन हृदयक हार उतारि, ओकर स्थानपर वल्कल वसन धारणा कए लैत छथि –

विमुच्य सा हारमहार्यनिश्चया
विलोलयष्टिप्रविलुप्तचन्दनम्।
बबन्ध बालारुणबभ्रुवल्कलं
पयोधरोत्सेधविशीर्णसंहतिः।।[११]

ओ अपन केश विन्यासक परित्याग करैत छथि। ओकर स्थान पर जटा राखि लैत छथि, कटिमे रेशमी वस्त्रक स्थानपर मूंज बान्हि लैत छथि तथा अपनहि हाथेँ कुश उखाड़ि एवं रुद्राक्षक माला लए महादेवक हेतु पूजा करैत छथि।[१२]

जखन एहि दैनिक क्रियाकलापसँ हुनक मनोरथ सफल नहि भेलनि तँ ओ आओर अधिक कठोर तप करबाक निश्चय कए लेलनि। ओ ग्रीष्म ऋतुमे एकटक सूर्य दिस तकैत रहैत छलीह, वर्षाऋतुमे निराहार रहि ध्यानमग्न होइत छलीह, एवं जाड़क मासमे भरि छाती जलमे ठाढ़ भए शंकरजीक हेतु तपस्या करैत छलीह।[१३]

अहर्निश निराहार रहबाक कारणेँ हुनक तपस्याक चर्चा दूर-दूर धरि होमए लागल तथा पण्डित लोकनि हुनक नाम अपर्णा रखलनि। [अपनहिसँ टूटिकए खसल पात खाए जीवन धारण करब तपस्याक पराकाष्ठा मानल जाइत अछि परन्तु पार्वती तकरो परित्याग कए अभूतपूर्व तपस्याक परिचय देलनि, तेँ अपर्णा नामसँ प्रसिद्ध भेलीह]।[१४अ]

वस्तुतः कालिदास जेना 'कुमार संभव' लिखि गौरीशंकर विषयक एकटा क्रमबद्ध ओ विस्तृत कथानक उपस्थित कएलनि, ताहि प्रकारेँ मैथिली साहित्यमे लालदास रचित महेश्वर विनोद अछि। एहिमे महाकाव्य एवं अन्य मुक्तक रचनामे कुमारि पार्वतीकेँ शंकरक प्रति आसक्ति वा हुनका पएबाक हेतु यत्नक जे वर्णन अछि तकर आधार पर हुनका [गौरीके] तपस्विनी नहि, एकनिष्ठ प्रणयिनी कहल जाए सकैत अछि। १४आ

मैथिली साहित्यमे गौरीक विषयमे जे किछु कहल गेल अछि ताहिमे अधिकतर उक्ति गौरीक माता मनाइनिक अछि। शंकरकेँ बूढ़, तपसी, भङेर आदिक संज्ञा दैत मनाइनि कहैत छथि जे हमर धीआ बड़ कोमल ओ दुलारि छथि, अतः हुनकासँ हिनक विवाह नहि होएतनि।

कुमारि गौरीक अपन भावना बड़ कम स्थानपर मुखरित भेल अछि, तेँ मनाइनिक उक्तिसँ गौरीक कौमार्यावस्थाक किछु चित्र परिलक्षित होइत अछि।

गौरी औरी ककरा पर करती
वर भेल तपसी भिखारि।
आगे माइ हेमसिखर पर बसथि
एक घर ने छैन्ह अपन परार।
वारि कुमारि राज दुलारी
ऋषि के प्रान अधार।
से गौरी कोना विपति गमौती
के मुख करत दुलार।
तेल फुलेल लए केश बन्हाबथि
और उँगारथि आंग।

से गौरा कोना भस्म लोटेती
नित उठि कुटती भांग।
भनहिं विद्यापति सुनिअ मनाइनि
इहो थिका त्रिभुवन नाथ।
सुभ सुभ कए सिरि गौरी विवाहिअ
इहो वर लिखल ललाट।।[१५]

३ अ- शिवक स्वरूप-

संस्कृत ओ मैथिली दुनू साहित्यमे शिव आदिपुरूष, त्रिगुणमय एवं भक्तवत्सलक रूपमे वर्णित छथि।

कादम्बरीक रचयिता महाकवि बाणभट्ट हुनका सृष्टिक उद्भवकालमे रजोगुण, पालन हेतु सत्वगुण, प्रलयकालमे तमो गुणसँ युक्त आदिपुरुष कहि प्रणाम करैत छथिन–

रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये
स्थितौ प्रजानां प्रलये तमःस्पृशे।
अजाय सर्गस्थितिनाशहेतवे
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः।[१६]

महादेवक अनेक रूपक वर्णन मैथिलीक कविकेँ सेहो रुचिर बुझि पड़लनि। शिवक रूपमे ओ डमरू बजबैत छथि, विष्णुक रूपमे पीत वसन धारण करैत छथि एवं मुरारि बनि गोकुलमे गाए चरबैत छथि। एहि प्रकारे एक शरीरमे दूटा देव- हरि ओ हरक कल्पना कए महाकवि विद्यापति एहि रूपें हुनक स्तुति करैत छथि -

भल हरि भल हर भल तुअ कला।
खन पित वसन खनहि बघछला।।
खन पंचानन खन भुज चारि।
खन संकर खन देव मुरारि।।
खन गोकुल भए चराइअ गाए।

खन भिखि माँगिअ डमरू बजाए।।

खन गोविन्द भए लिअ महादान।

खनहि भसम भरु कांख बोकान।।

एक सरीर लेल दुइ वास।

खन बैकुंठ खनहि कैलास।।

भनइ विद्यापति विपरीत वानि।

ओ नाराएन ओ सुलपानि।।[१७]

उपर्युक्त दुनू पदमे शिवक अनेक रूपक उल्लेख रहितहुँ कविक दृष्टिक अन्तर अछि। महाकवि बाणभट्टक रचनामे जेना दार्शनिक दृष्टिकोणक अभिव्यंजना अछि, से विद्यापतिक रचनामे नहि परिलक्षित होइत अछि। हुनक स्तुतिमे ईश्वरक अनेक लीलाक संकेत अछि, जे विभिन्न पुराणक कथासँ प्रभावित अछि। दुनू कवि अनेक रूपमे एकताक कल्पना कएने छथि किन्तु एहू एक रूपक शिवमे दृष्टिभेद अछि। आदिपुरुषक रूपमे शिवक ओ हरिहरक रूपमे ईश्वरक–दुनूक दू परिकल्पना कएल गेल अछि।

शिवक स्वरूपक वर्णन पौराणिक कथाक आधारपर विशेष रूपैँ भेल। जे बाणासुर संग्रामक कथा काव्य–जगतमे वेश चर्चित भेल।

कादम्बरीक मंगलाचरणमे एहि कथाक संकेत भेटैत अछि –

जयन्ति बाणसुरमौलिलालिताः

दशास्यचूड़ामणिचक्रचुम्बिनः।

सुरासुराधीशशिखान्तशायिनो

भवच्छिदस्त्र्यम्बकपादपांसवः।।[१८]

[अर्थात् भवसागर पार करौनिहार शंकर भगवानक ओहि चरणधूलिक जय हो जे बाणसुरक माँथसँ लालित अछि, रावणक चूड़ामणिक समूहसँ चुम्बित अछि। देवता एवं असुरक माँथक शयन स्थाने रहने पूजित अछि।]

महाकवि कालिदास सेहो मालविकाग्निमित्रक मंगलाचरणमे– 'यः स्वयं कृत्तिवासा'– कहि एहि दिस संकेत कएने छथि।

मैथिली साहित्यमे महाकवि रत्नपाणि कृत उषाहरणमे बाणासुर संग्रामक प्रसंग भिन्न रूपें उल्लिखित अछि। किन्तु ओहिमे भक्ति विषयक गीतमे अधिकतर गौरीपति हिक एक रूपमे शंकर वर्णित छथि।[१९]

महाकवि कालिदास शिवक अष्टमूर्तिक उल्लेख कएने छथि[२०] किन्तु से मैथिलीमे अत्यल्प भेटैत अछि।

संस्कृत साहित्यक अनेक पदमे शंकरक दार्शनिक वा पौराणिक स्वरूप जे हो, गौरीक संग हुनक जाहि रूपक वर्णन अछि, ताहिमे ओ तरुण एवं सुन्दर छथि।

अश्मारोहणक समय पार्वतीक औंठाकेँ अपन हाथसँ छुबैत शिव मनहि मन सोचैत छथि जे विश्वक संभटा सुख हस्तगते भए गेल अछि। एहि समयमे संसारके शरण देनिहार शिव आओर सुन्दर लागि रहल छथि: –

कान्तः शरण्यो जगतां त्रयाणां तस्याः करस्थे चरणारविन्दे।

ऐश्वर्यमुर्व्यादि सदा शिवान्तमव्याहतं तद्बुबुधे करस्थम्।।[२१]

कुमार संभवमे शिवक तारुण्यक उल्लेख कालिदास कएने छथि।[२२] किन्तु मैथिली साहित्यक शिव अधिकतर बूढ़, तपसी ओ यति छथि। खाहे ओ गौरीक संग रहथु वा नहि, हुनक वृद्धावस्थामे परिवर्तन होएबाक उल्लेख बड़ थोड़ अछि।

हर-गौरी विवाह :

मैथिली साहित्यमे हर गौरी विवाहक वर्णन विस्तृत रूपसँ भेल अछि। विवाहकालक अधिकतर वर्णनमे शंकरक दारिद्र्य ओ गौरीक निरीहता दृष्टिगोचर होइत अछि।

महादेव एकटा भिखारिक रूपमे विवाहक हेतु मनाइनिक घर अबैत छथि। मनाइनिकेँ ई देखि दुःख होइत छनि तथा ओ कहैत छथि जे एहेन जे निर्मोह वर अछि, जकरा अपना हेतु बीतो भरि वसन नहि छैक, कुटुम्ब-परिवार नहि छैक, तकरा संग हम अपन बेटीक विवाह कोना करब –

नाहि करब वर हर निरमोहिया।

बिता भरि तन वसन न तिन्हका

बघछल कान्हपर रहिया।
वन-वन फिरथि मसान जगाबथि
घर आंगन ओ बनौलन्हि कहिया।।
सासु ससुर नहि ननदि जेठानी
जाए बैसति धिया ककरा ठहिया।
बूढ़ वरद टकटोल गोल एक
सम्पत्ति भाङक झोरिया।
भनहि विद्यापति सुनु ए मनाइनि
सिव सन दानि जगत के कहिया।।[२३]

उपर्युक्त पदमे 'बूढ़ वरद टकटोल' ई पंक्ति मनाइनिक खौँझाहटिसँ महादेवक उपहास अभिव्यंजित होइत अछि। ई उपहास कखनो हास्य-विनोद आ कखनो करुणा प्रदर्शित करैत अछि। जेना निम्नलिखित पदक ध्वन्यात्मक वैचित्र्य हास्योत्पादक भेल अछि –

एहि विधि व्याहन आयो।
एहन बाउर योगी।।
टपर-टपर कए बसहा आयल
खटर-खटर रुण्डमाल।
भकर-भकर सिव भाङ भकोसथि
डमरू लेल कर लाय।।

एकर विपरीत संस्कृत साहित्यमे शंकर विवाहकालमे सुन्दर, सुसज्जित युवकक रूपमे प्रस्तुत होइत छथि। यद्यपि शंकर योगी छथि, एहि तथ्यकेँ कालिदास सेहो नकारि नहि सकल छथि परन्तु योगबलक द्वारा ओ अपनाकेँ दिव्य तपस्वीक रूपमे परिवर्तित कए विवाहक हेतु सुन्दर रूप धारण कए लैत छथि।

हुनक [शंकरजीक] चिताक भस्म उज्ज्वल अंगराग, कपालक माला सुन्दर आभूषण आ गजचर्म एहेन रेशमी वस्त्रमे परिणत भए जाइत छनि, जकर आँचर पर गोरोचनसँ लिखल गेल रहैक –

बभूव भस्मैव सितांगरागः कपालमेवामलशेखरश्रीः।

उपान्तभागेषु च रोचनांको गजाजिनस्यैव दुकूलभावः।[२४]

हुनक सिरक पीयर तारिकाबला तृतीय नेत्र हरतालक सुन्दर तिलकमे परिणत भए गेलनि–

शङ्खान्तरद्योति विलोचनं यदन्तर्निविष्टामलपिंगतारम्।

सान्निध्यपक्षे हरितालमय्यास्तदेव जातं तिलकक्रियायाः।।[२५]

एही प्रकारेँ हुनक अंगक साँप सभ सम्बद्ध अंगक आभूषण एवं चन्द्रमा सिरक चूड़ामणि बनि जाइत छनि।[२६]

मैथिली काव्यमे एहि संदर्भमे ई उल्लेखनीय अछि जे यैह साँप, तृतीय नेत्र ओ चिताक भस्म आदि अपन शरीरमे यथावत् धारण कएने अबैत छथि महादेव विवाह मण्डपमे, तँ ओ केहेन हास्यास्पद चित्र उपस्थित करैत छथि–

विवाह चलला शिवशंकर हरबंकर। माइहे।।

डामरु लेल कर लय विभूति भुअंकर।।[२६अ]

एहि भावक गीत चन्दा झा द्वारा शताधिक संख्यामे रचल गेल अछि। उदाहरण स्वरूप एकटा एतए उद्धरणीय अछि –

वर भोलाके चुमाउ।।

उमाक फलित तप नयन जुड़ाउ।।

तनिक तेसर आँखि निकट ने जाउ।।

सावधान सों अपन आँचर बचाउ।।

व्यालराज बलया निहारि ने पड़ाउ।।

लाबा दूध संग राखू तनिका लोभाउ।।

चन्द्र कह सभ जनि शुभ-शुभ गाउ।।

युग-युग अहिबात उमाक मनाउ।।[२६आ]

आधुनिक युगक कवि लोकनि सेहो एहि भावक नचारी रचलनि। जेना–

अपनहि जाय मसान रमौता, भूत संग नचताह।
रहब कोना हुनका लग गौरा, बसहो छनि मरखाह।।[२६इ]

उपर्युक्त पदसभमे मनाइनिकेँ जहिना असहाय अवस्थामे खौंझाइत देखाओल गेल अछि तकर अनुरूप कालिदासक मनाइनि एकटा शालीन आ प्रसन्न चित्र उपस्थित करतै छथि।[२७]

मनाइनिक एहि दू प्रकारक रूपक दुनू साहित्यमे जे कारण भए सकैत अछि तकर उल्लेख अध्यायान्तरमे होएत, सम्प्रति शिवगौरी विवाहमे देवता सभक उल्लेख कोन प्रकारक अछि से द्रष्टव्य।

जखन शंकर विवाहक हेतु विदा होइत छथि तँ हुनक संग सप्तमाताक [सप्तर्षिक पत्नी लोकनि] दीप्त मुखमण्डल रथ पर शोभित भए रहल अछि–

तं मातरो देवमनुव्रजन्त्यः स्ववाहनक्षोभचलावतंसाः।
मुखैः प्रभामण्डलरेणुगौरैः पद्माकरं चक्रुरिवान्तरीक्षम्।।[२८]

ओहि मातालोकनिक पाछू पाछू स्वर्ण आभामयी भद्रकाली एहि प्रकारेँ चलि रहलि छलीह मानू बगुलासँ भरल बिजलीयुक्त नील मेघ चलि रहल हो।

तासां च पश्चात्कनकप्रभाणां काली कपालाभरणा चकासे।।
बलाकिनी नीलपयोदराजी दूरं पुरः क्षिप्तशतह्रदेव।।

गंगा आ यमुना मूर्त रूपमे प्रकट भए शंकरकेँ चरसँ हौंकए लगैत छथिन –

मूर्ते च गंगा यमुने तदानीं सचामरे देवमसेविषाताम्।
समुद्रगारूपविपर्ययेऽपि सहंसपाते इव लक्ष्यमाणे।।[२९]

मैथिली साहित्यमे वर्णित गौरीशंकरक विवाहमे बरियातीक हेतु कोनो भगवती नहि जाइत छथि। हँ, ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताक उपस्थितिक वर्णन एहि सन्दर्भमे दुनू साहित्यमे भेटैत अछि। एकटा आओर तथ्य विशेष रूपेँ ध्यातव्य ई, जे जखन शंकरक विवाहमे देवता लेकनिक उपस्थितिक वर्णन अछि, ओहि कालक शंकर मैथिली साहित्यमे सेहो सुन्दर ओ सौम्य परिलक्षित होइत छथि।

जखन महादेव गौरीक हाथ धए विवाह मण्डपमे उपस्थित होइत छथि ओहि समयक शोभा एहेन बुझि पड़ैत अछि, जेना सन्ध्याकालमे पूर्ण चन्द्रमाक उदय भए गेल हो। (एतय सन्ध्याक चर्चा महादेवक श्यामल वर्णक कारणें एवं चन्द्रमाक उल्लेख पार्वतीक गौरवर्णक दीप्तिक कारणेँ भेल अछि।) ब्रह्मा आ विष्णु तथा इन्द्र ओतए बैसल छथि। ई देखि मनाइनि ओ हिमालय हर्षातिरेकसँ विभोर छथि –

जखने संकरे गौरि करे धरि आनलि मण्डप माझ
सरदक संपुन जनि ससधर उगल समय साँझ।।
चौदह भुअन सिव सोहाओन गौरी राजकुमारि।
हेरि हरषित भेलि मनाइनि आएल जनि जमारि।।
हेमत सरिर पुलके पूरल सफल जनम मोरि।
हरि बिरंचि दुहु जन बैसल हरकेँ देल मोयँ गौरि।।
नारद तुम्बुर मंगल गाबथि आओर कत नर नारि।
कौतुके कोबर कौसले कामिनि सबे सबे देअ गारि।।
भन विद्यापति गौरी परिनय कौतुक कहए न जाए।
साँप फुफकारे नारि पड़ाइलि वसन ठाम नड़ाए।[३०]

एहि पदमे शंकरक सौम्य रूपक वर्णन रहितहुँ विवाहकालिक हास्य-विनोदक चित्र उपस्थित करबाक लोभक संवरण कवि नहि कए सकल छथि।

परन्तु कुमारसम्भवमे कालिदास हास-परिहासक नहि, वैदिक कर्मकाण्डक वर्णन विस्तृत रूपेँ कएलनि अछि।[३१]

मैथिली साहित्यमे गौरी शंकरक विवाहमे लोकाचारक वर्णन विशेष रूपेँ परिलक्षित होइत अछि। वैदिक विधि-विधानक वर्णन मैथिलीक कोनो कवि एहि प्रसंगमे कालिदास जकाँ सांगोपांग रूपेँ नहि कएने छथि।

ई कहब असंगत होएत जे संस्कृत काव्यमे शिवगौरी विवाहक चर्चाक क्रममे लोकाचारक उल्लेख ओकरा मैथिली साहित्यसँ भिन्नता प्रदान करैत छैक।

लोकाचारक वर्णन सेहो संस्कृत ओ मैथिली साहित्यक हर गौरी विवाहमे भिन्न-भिन्न प्रकारक अछि। परन्तु एकर विस्तृत चर्चा अध्यायान्तरक वस्तु

थिक। संक्षेपमे, ई कहल जाए सकैत अछि जे संस्कृत साहित्यमे जाहि ऐश्वर्य ओ सौन्दर्यक दिग्दर्शन एहि क्रममे परिलक्षित होइत अछि, मैथिली साहित्यमे नहि। एहिमे महादेव तँ दरिद्र-तपस्वीक रूपमे वर्णित छथि, हिमवान सेहो संस्कृत साहित्यक हिमवान जकाँ वैभवशाली नहि दृष्टिगोचर होइत छथि। मैथिली साहित्यक हिमवान एकटा सम्भ्रान्त कुलीन ब्राह्मण अवश्य छथि, परन्तु हुनका अतीव ऐश्वर्यक स्वामी नहि कहल जाए सकैत अछि।

कुमार सम्भवमे हिमवानक नगर, औषधिप्रस्थक वर्णन अत्यन्त मनोरम अछि। ओ नगर धन-सम्पत्तिसँ पूर्ण, स्वर्गक समान सुन्दर अछि। अलकापुरी ओकर आगाँ तुच्छ अछि-

अलकामतिवाह्येव वसतिं वसुसंपदाम्।

स्वर्गाभिष्यन्दवमनं कृत्वेवोपनिवेशितम्।[३२] आदि।

हिमालयक गरिमाक वर्णन सेहो गौरवपूर्ण अछि। शंकरक बरियातीमे आगत मुनि सभक स्वागतक हेतु हिमवान जखन डेग बढ़बैत छथि तँ हुनक भारी पयरक डेगसँ धरती सेहो हिलि जाइत अछि-

तानर्घ्यानर्घ्यमादाय दूरात्प्रत्युद्ययौ गिरिः।

नमयन्सारगुरुभिः पादन्यासैर्वसुन्धराम्।[३३]

एहि प्रकारक वर्णन मैथिली साहित्यमे नहि परिलक्षित होइत अछि। जेना संस्कृतक कवि लोकनि गौरीशंकरक विवाहक क्रममे हिमवान ओ हुनक नगर औषधिप्रस्थक वर्णन करैत छथि, तकर विपरीत मैथिलीक कवि पार्वतीक माता मनाइनिक तीव्र संवेदना आ' प्रतिक्रियाक उल्लेख करैत छथि। शिवपार्वतीक विवाहमे मनाइनिक उक्तिसँ ई अवश्य ध्वनित होइत अछि जे हिमवानक घर सुसंस्कृत मैथिलक परिवारमे अछि, परन्तु हिमवानक कोनो विशेष ऐश्वर्य वा प्रभुत्त्वक उल्लेक नहि भेटैत अछि। जेना-

अरिपन निपलनि पुरहर फोरलनि फेकलनि चौमुख दीप।

एहिमे अरिपन, पुरहर, आदिक अस्तित्वसँ मिथिलाक सांस्कृतिक चित्र परिलक्षित होइत अछि।

शिव-पार्वतीक प्रणय

संस्कृत साहित्यमे गौरीशंकरक प्रणय-वर्णनक क्रममे श्रृंगार रसक प्रत्येक पक्ष परिलक्षित होइत अछि। जहिना संयोग श्रृंगारक परिपुष्ट उल्लेख अछि तहिना वियोगक प्रत्येक अवस्थाक वर्णन अछि। किन्तु मैथिलीक कवि लोकनि शिव-गौरीकेँ भक्ति-भावनासँ देखैत रहलाह अछि। हुनका [गौरीशंकरके] साधारण नायक-नायिकाक रूपमे कवि लोकनि नहि देखि, माता-पिताक रूपमे देखलनि। तेँ मैथिलीक काव्यमे शिव-गौरीसँ सम्बन्धित संयोग श्रृंगारक जे छवि भेटैत अछि ताहिमें संस्कृत काव्यसँ भिन्न वस्तु दृष्टिगोचर होइत अछि।

कुमार संभवमे कामक्रीड़ा नामक एकटा भिन्ने सर्ग अछि। अष्टम सर्गमे गौरी ओ शंकरक संयोगक वर्णनमे दैहिक सुख भोगक प्रसंग अनेक रूपेँ उल्लिखित अछि। शंकर द्वारा पार्वतीकेँ मदिरा पिआयब, पार्वतीक लाल-लाल नेत्र, शंकरक कोरामे मदमत्त गौरीक ओंघरायब, हुनक केश छिड़िआएब, माला टूटब, शरीर परक नख-क्षत ओ दन्तक्षत एवं शंकरक निहारब इत्यादिक उल्लेखसँ कवि गौरीशंकरके साधारण मानवीय संवेदनासँ युक्त क' दैत छथिन। एहि वर्णनसँ गौरीक छवि एकटा अति साधारण तरुणीक एवं शंकरक छवि एकटा कामुक युवकक रूपमे अंकित भेल अछि।[३४]

शिवक कामुकताक आतिशय्य एहिसँ अभिव्यंजित होइत अछि जे हुनक दर्शन करबाक हेतु जे केयो अबैत छलाह से निराशे भए आपस घुरि जाइत छलाह। एहि प्रकारेँ ओ गौरीक संग कतेक वर्ष धरि सहवास कएलनि किन्तु हुनक हृदय ओहिना तृप्त नहि भेलनि जेना समुद्रक अगाध जलमे रहितहुँ बड़वानल जरितहिँ रहि जाइत छथि -

स प्रियामुखरसं दिवानिशं हर्षवृद्धिजननं सिषेविषुः।
दर्शनप्रणयिनामदृश्यतामाजगाम विजयानिवेदनात्।।[३५]

ओना कालिदास जाहि परिस्थितिमे एहि प्रकारक रचना कएलनि तकरा दृष्टिमे रखैत ई मानल जाए सकैत अछि जे ई प्रवृत्ति तत्कालीन परिस्थितिक अनुकूल छल [एकर विवेचना अध्यान्तरमे होयत] किन्तु हुनक अन्य रचनामे शाश्वत सौन्दर्यक जे छवि परिलक्षित होइत अछि, तकर अनुरूप सौष्ठवकेँ उक्त रचनाक अंश नहि प्राप्त कए सकल।

शिव पार्वतीक संयोगक वर्णन अन्यो कविक रचनामे दृष्टिगोचर होइत अछि। बाणभट्टकृत हर्षचरितक मंगलाचरणमे कहल गेल अछि जे गौरी शिवक कण्ठमे सटि कए [संयोग सुखक अतिशय आनन्दक कारणे] अपन आँखि मूनि स्तब्ध भए गेलि छथि। से बुझि पड़ैत अछि जे हुनक [शिवक] कण्ठक विषक तापकेँ ओ नहि सहि एहि अवस्था [अचेतावस्था] मे पड़ि गेलि होथि –

नमस्तुंगशिरश्चुम्बिचन्द्रचामरचारवे

त्रैलोक्यनगरारम्भमूलस्तम्भाय शम्भवे।

हरकण्ठग्रहानन्दमीलिताक्षीं नमाम्युमाम्

कालकूटविषस्पर्शजातमूर्च्छागमामिव।।[३६]

ओना कालिदास शिव–गौरीक संयोगक वर्णन अनेक प्रकारेँ कएलनि। किन्तु हुनक वर्णनमे काव्य–वैदग्ध्यक एहेन विशिष्ट रूप नहि परिलक्षित होइत अछि। संयोग वर्णनक क्रममे शारीरिक अनावृत प्रवृत्तिसँ मुक्त भए, भावक एहि प्रकारक वैशिष्ट्यक अभिव्यंजना विश्वक कोनो साहित्यमे विरल देखल जाइत अछि, जाहिमे प्रणयी हृदयक अनुराग, भावक गाम्भीर्य, कल्पनाक प्रकर्ष एवं सौन्दर्यक पुंज एकत्रित भए गेल हो।

मैथिलीक कविगणमे विद्यापति एहि प्रकारक रचना कएने छथि, जाहिमे शिवक दर्शनसँ गौरीक सात्त्विक भावक उल्लेख भेटैत अछि। गौरीक तपस्यासँ शिव प्रसन्न भए हुनक समक्ष उपस्थित होइत छथि। गौरी तँ महादेवक मन्दिरमे हुनक मूर्त्तिक पूजा कए रहलि छलीह, किन्तु जखन ओ शिवकेँ साक्षात् देखैत छथि तँ प्रेमसँ विह्वल भए जाइत छथि, हुनक शरीर काँपए लगैत छनि एवं हाथसँ फूल खसिकए छिड़िया जाइत छनि –

अंजलि भरि फुल तोरि लेल आनी।
संभु अराधए चललि भवानी।।
जाहि जुहि तोड़ल मोँय आओर बेलपाते।
उठिअ महादेव भए गेल पराते।।
जखनि हेरलि हरे तिनहु नयने।
ताहि अवसर गौरि पिड़लि मदने।।

करतल काँपु कुसुम छिड़िआउ।
विपुल पुलक तनु वसन झँपाउ।।
भल हर भल गौरि भल वेवहारे।
जप-तप दुर गेल मदन विकारे।।
भनइ विद्यापति ई रस गावे।
हर दरसने गौरि मदन संतारे।।[३७]

उपर्युक्त पदमे विद्यापति पार्वतीक प्रेमक वर्णन बड़ ढंगसँ कएलनि अछि, किन्तु महाकवि वाणक पदक अनुरूप काव्य वैदग्ध्य एहिमे [विद्यापतिक पदमे] नहि परिलक्षित होइत अछि।

विद्यापति वस्तुतः शिवगौरीक भक्त छलाह, अतः उत्कट शृंगारिक रचना [शिवगौरी विषयक] करब हुनका विहित नहि छलनि। तेँ एहिसँ [करतल काँपु कुसुम छिड़िआउ-पार्वतीक कम्पनक व्यंग्य]सँ आगाँ बढ़बाक साहब हुनका नहि भेलनि।

संस्कृतक कवि एहि मर्यादाकेँ नहि मानलनि। श्री नीलकण्ठ दीक्षित रचित शिवलीलार्णवमे शिवगौरीक संयोगक वर्णन अनेक रूपेँ परिलक्षित होइत अछि।

एकर रचना सत्रहम शताब्दीमे भेल एवं कथा स्कन्दपुराणक हालास्य माहात्म्यपर आधारित अछि। एहिमे बाइस सर्ग अछि जाहिमे शिव-गौरीक प्रणयक किछु अंशक उल्लेख एतय अपेक्षित अछि।[३८]

गौरीशंकरक विवाह वर्णनक्रममे एकठाम कहल गेल अछि जे शृंगार रसक अधिदेवता शिवजीक समक्ष जखन शृङ्गार कए गौरी नहुएँ-नहुएँ आबि रहलि छलीह तखन संसारक आदि सुन्दरी [अर्थात् त्रिपुरसुन्दरी]लज्जित भए गेलीह एवं हुनक लज्जा देखि अपन सौन्दर्यपर गर्व कयनिहारि स्वर्गक अप्सरा लोकनि लाजो करबामे लज्जित भए गेलीह [अर्थात् विमूढ़ भए गेलीह]-

हरस्य शृंगाररसाधिदेवतामवेक्ष्य तां मन्थरमायतीं पुरः।
अलज्जत श्रीजगदादिसुन्दरी ललज्जिरे लज्जितुमप्सरोगणाः।।[३९]

श्री नीलकण्ठ दीक्षितक एहि पदमे गौरीशंकरक मिलनक उल्लास ध्वनित होइत अछि। पतिक सान्निध्यसँ नारीक सौन्दर्यक उत्कर्ष एहिमे अभिव्यंजित भेल अछि।

'शिव लीलार्णव'मे गौरीशंकरक परिणयक कालमे हुनक प्रणयक विस्तृत उल्लेख कएल गेल अछि। शिवगौरीक मिलनक एकटा रूपक उल्लेख कए कवि हुनका सभक परस्पर अनुरागक प्रगाढ़ताकेँ उल्लिखित कयने छथि।–

आसन्नमप्यन्तरलेशशून्यं मिथो न तृप्तिं मिथुनं तदूहे।

अतृप्तयोरेकशरीरभावेऽप्यासक्तिरेषा कतमा तयोःस्यात्।।[४०]

अर्थात् एक स्थान पर रहितहुँ नीक जकाँ मिलल परस्पर अतृप्त अतएव चिरकाल धरि संभिन्न [एक] रहबाक इच्छुक व्यक्ति युगलक मिलन मिथुन कहबैत अछि, से तर्कसँ ज्ञात अछि। शिव–पार्वतीक दू आत्मा आ' एक शरीर होइतहुँ केहेन आसक्ति छलनि [अति अनुराग छलनि से व्यंग्य] से के कहत? [मिथः न तृप्तिं इति मिथुनं। मिथः – परस्परं। परस्पर एक भेलहु पर जे तृप्त नहि होइक से मिथुन]।

उपर्युक्त कवि लोकनिक रचनामे गौरीशंकरक प्रगाढ़ अनुराग एवं सौन्दर्य परिलक्षित होइत अछि। किन्तु मैथिलीक कवि लोकनि एहि प्रकारक प्रवृत्तिक उपेक्षा करैत रहलाह, जाहिमे शिव–गौरीक दैहिक सुखभोगक अभिव्यंजना होअए।

जेना संस्कृतक अनेक रचनामे गौरीशंकर यौवनक मदसँ लिप्त प्रणयी–प्रणयिनी अभिव्यंजित भेल छथिं, तकर अननुरूप मैथिली काव्यक शिवपार्वती जीवनक यथार्थकेँ भोगैत गृहस्थ ओ गृहिणीक रूपमे अधिकतर वर्णित भेल छथि।

एहि कथनकेँ नीक जकाँ बुझबाक हेतु 'महेश्वर विनोद'क एकटा अंश उद्धृत करब समीचीन होएत। पार्वतीक तपस्यासँ प्रसन्न भए शिव हुनक समक्ष उपस्थित होइत छथिन तथा अतिशय अनुरागक कारणेँ अपनाकेँ नहि रोकि पबैत छथि, दौड़ि कए हुनकर हाथ पकड़ि लैत छथिन –

छलनि गिरिजाकाँ हृदयमे जेहि स्वरूपक ध्यान।

धयल शंकर रूप तेहने सुभग अति द्युतिमान।।

बढ़ल प्रेम न रहल सम्भ्रम हाथ धयलनि दौड़ि।
कहल सुन्दरि कतय चललहुँ किअय हमरा छोड़ि।।१।।
हम अहँक बिनु एक छन भरि राखि सकब न प्राण।
अहिंक वश अछि हमर जीवन करिअ सुन्दरि त्राण।।
कयल अहँ जेहि हेतु बड़ तप भेल से सम्पन्न।
भेलहुँ एखनहिसौं अहँक वश सुमुखि होउ प्रसन्न।।२।।
अपन तप सौन्दर्य गुणसौं कीनि हमरा लेल।
भेलहुँ हम सब विधि अहँक वस आधि दुख सब गेल।।
करिय जनु अब कठिन साहस सिद्धि वांछित भेल।
अहँक अभिमत सकल पूरल हरषि हम वर देल।।३।।

शिवक एहि निवेदनसँ गौरी प्रेमसँ विह्वल भ' जाइत छथि, हुनका हर्षक नोर बहए लगैत छनि एवं रोमांच भए जाइत छनि –

बेरि-बेरि शंकर कहल प्रसन्न। भेल प्रिये जप-तप सम्पन्न।।
अब जनु साहस करु सुकुमारि। चलु कैलाश गिरीन्द्र कुमारि।।
कयल अहँक हम अंगीकार। करब विहार प्रीति विस्तार।।
सुनि आनन्द उमाकाँ भेल। निरस शरीर सरस भय गेल।।
शिव स्वरूप सुन्दर अति देखि। पारवती पति हरल निमेखि।।
बढ़ल प्रेम मन रहल न थीर। लागल बहए नयन सौं नीर।।
मन हरषित रोमावलि ठाढ़। यथा कदम्ब कुसुम अषाढ़।।
देखि उमाक अलौकिक प्रीति। महादेव बोधल कत रीति।।
चलु कैलास सोक सभ त्यागि। बसब गहनमे ककरा लागि।।
तखन उमा सखि दिस मुसुकाय। संकेतहि किछु देल बुझाय।।
से बुझि सखि शिव आगाँ आबि। लागलि कहय प्रसर भल पाबि।।
सुनु-सुनु हे शिव करुणागार। कयल सखिक जप-तप स्वीकार।।
पुरल उमाक सकल मनकाम। अपने पति सब विधि अभिराम।।

अहिंक थिकथि सहधर्मिणि वाम। जनु लय जाउ एखन निजधाम।।[४१]

किन्तु गौरीकेँ एहू संवेगात्मक क्षणमे शिवक साहचर्यक प्रति उदित तारतम्यक भाव मुखर होइत छनि। ओ धर्म एवं लोकलाजकेँ सर्वोपरि मानैत छथि। शिवक गृह जयबासँ वा हुनका संग रमण करबासँ पूर्व धर्मविहित विधि क' लेब उचित बुझैत छथि –

वेद विहित कय लिअ विवाह। जेहि सौं क्यो न कहय अधलाह।।

एखन जाय दिय बापक धाम। अपनहुँ आउ झटिति तेहि ठाम।।

पार्वतीकेँ शिवक प्रति अगाध स्नेह छनि, किन्तु ओ अधीर भए मर्यादाक उल्लंघन नहि क' पबैत छथि। अपन पिताक गौरवकेँ सदिखन स्मरण रखैत छथि। एकटा स्वाभिमानिनी नारीक रूपमे उपस्थित होइत शिवसँ निवेदन करैत छथि जे चुपचाप विवाह करबासँ लोकमे कलंक होएत, अतः सभक सोझाँमे लोकविहित रीतिक अनुसरण कए हमरा ग्रहण करू –

करू विवाह प्रभु ढोल बजाय। गुप-चुप सौं जन कह अन्याय।।

हिमगिरिकेँ जग कहत कलंक। गौरिक मनमे तकरे शंक।।[४२]

'महेश्वर विनोद'क उपर्युक्त उद्धरणमे गौरीशंकरक मिलनमे मानव जीवनक व्यावहारिक पक्ष विशेष रूपें ध्वनित भेल अछि। कारण जे शिवक प्रेमक एहेन आवेग जे ओ दौड़िकए गौरीक हाथ पकड़ि लैथि, लोक जीवनक परम्परागत मान्यताक अनुरूप नहि भेल। तेँ संस्कृत काव्यमे हुनक गौरीक प्रति अनुरागक वर्णन अनेक रूपेँ रहितहुँ एहेन नहि अछि जाहिसँ ओ [शंकर] धैर्यच्युत दृष्टिगोचर होथि।

मैथिलीक अनेक रचनामे गौरीशंकरक सहज स्नेह उल्लिखित भेल अछि जाहिमे कामक लिप्सा नहि, आत्मीयताक अनुराग ध्वनित भेल अछि।

गौरीशंकरक परस्पर वार्तालापक उल्लेख महाकवि विद्यापतिक नचारीमे हृदयग्राही भेल अछि। कोनो विनोदक क्षणमे महादेवकेँ पार्वती नृत्य करबाक आग्रह करैत छथिन। किन्तु एहिमे शिवकेँ तारतम्य होइत छनि। ओ कहैत छथिन जे हमरा नृत्य कएला पर हमर ग'रासँ साँप ससरिकए कार्तिकक मयूरकेँ खा जाएत, अमृत चूबिकए पृथ्वीपर खसत, अतः श्मशानक सभ प्राणी जीबि जाएत। बाघम्बर बाघमे परिणत भ' जायत एवं हमर बसहाकेँ खा जायत एवं

जटासँ गंग उझकए लगतीह। हुनक धारा चारूकात वेगवती भ' जाएत। अहाँ तँ डुमबाक डरेँ पड़ाइये जायब, तखन नाच के देखत–

आजु नाथ एक व्रत महासुख लागत हे।
तोहें शिव धरु नटवेश कि डमरू बजाबह हे।।
तोहेँ गौरी कहै छह नाचय हम कोना नाचब हे।
चारि सोच मोर होय कओन विधि वाँचब हे।
सिरसँ ससरत साँप दहो दिसि भागत हे।
आहे कार्तिक पोसल मयूर सेहो धरि खायत हे।
जटासौं छिलकत गंग दहौ दिस पाटत हे।
होएत सहसमुख धार समेटलोने जाएत हे।।
अमिय चूबि भुमि खसत बघम्बर जागत हे।
होएत बघम्बर बाघ बसहा धरि खाएत हे।
रुण्डमाल टुटि खसत मसानी जागत हे।
तोहे गौरा जएबह पड़ाए नाच के देखत हे।।[४३]

उक्त पदमे शिवगौरी जीवनक यथार्थक निकट अधिक छथि जे भावनात्मक सौन्दर्य हृदयहिँ धरि सीमित राखि पबैत छथि। ओकर उन्मुक्त रूप हुनका सभक गार्हस्थ्य जीवनक हेतु बाधक भ' जयतनि। तेँ नृत्य आदि आमोदक उपेक्षा कए अपन घर बसौने रहब हुनका [शिवके] विशेष प्रिय बुझि पड़ैत छनि।

शिवक नृत्यक प्रसंग अन्य कविक रचनामे अन्य प्रकारक भाव अभिव्यंजित भेल अछि।[४४] शिव गौरी दिस हँसि–हँसि तकैत नृत्य क' रहल छथि।

जय संभु नटा जय संभु नटा, हँसि हर हेरथि गौरि निकटा। ध्रुव।।
भृंगी मधुर मृदंग बजाबथि, नन्दी निपुण झालि झमटा।।
ताल मोर लए गुण गाबथि, संगहि नारद मुनि विपटा।।
चान कलासँ चुअल अमिय रस, तेहि जीउल अजिन लपटा।
अमित मानु जटा लए झाँपल, चमकि उठए जनि जलद घटा।।
गंग तरंग भूमि भीजल अछि, नयन चमक जनि विजुलि छटा।

हँसि सखी सभ दए करताली, ताल धरथि जनि सहस्त्र घटा।।

सानन भए वर दिअओ दिगम्बर, सुमति उमापति मिनति गोटा।।[४५]

उपर्युक्त पद उमापतिक 'परिजात हरण' नाटकक अंश थिक। एहिमे प्रत्येक पंक्ति अन्तक 'टा' क ध्वनि नृत्यमय वातावरण दिस संकेत करैत अछि। पदक वर्णमात्रमे नृत्यात्मक गतिक उल्लेख नहि, वर्णनक सम्पूर्ण परिस्थितिसँ उल्लासपूर्ण ध्वनि मुखर भेल अछि।

गौरीशंकरक वार्तालापक क्रममे सरस विनोद जगज्ज्योतिर्मल्लक 'हरगौरी विवाह' मे एहि प्रकारेँ वर्णित अछि: –

भसम रूख होअ सब मुख सुनिअ मसृण होअ तुअ तनू हर हे।
नील रतन सम सामर सुन्दर जारल कुसुम धनू गोरि हे।।
भुजंग भुषण तुअ दूषण सबे देअ किए धइल दिनमणि मासे हर हे।
विमल कमल सम मुख मण्डल दरसन होओ ते आसे गोरि हे।।
अनल चाँद रवि विषम विलोचन, ई किए अद्‌भुत रूपे हर हे।
पिबए लागि धएल तीनि विलोचन, तुअ रूप अमिअ सरूपे गोरि हे।।
भूत वेताल ताल रवे नाचिअ याचिअ घरे घरे भीखि हर हे।
आन केओ जनु हमर सरूप बुझ, तोहे एक बुझह विशेषी गोरि हे।।
नृत्य जगजोति कह काहि न सोहए, गिरिजा गिरिश विलासे हर हे।
प्रणमि प्रणमि ओहे पुनु-पुनु विनमए दुर करू कलुष तरासे।।[४६]

एहि नाटकमे 'हर-गौरी संवाद'क अतिरिक्त शिवक मुखसँ गौरीक गुणक वर्णन सेहो बड़ रोचक अछि –

तोह वर नागरि सबतह आगरि तोह छाड़ि के मोरा आने।

जनमे जनमे हमे अनेक तपस कए पओलह तोहहि किसाने।।

तोहर पिरिति गुन सुनह सुलोचनि बाँटि देल तनु आधे।

तोहर चरित सबे कठिन होअ आबे पुरल मनोरथ साधे।।[४८]

मैथिलीक अनेक पद्यमे संस्कृतक श्लोकसँ एतेक साम्य परिलक्षित होइत अछि जे भाषा छोड़ि सभटा एके बुझि पड़ैत अछि।

'गीत पंचाशिका' [जगज्ज्योतिर्मल्ल] मे गौरीशंकरक परस्पर विनोदक एकटा एहने वर्णन भेटैत अछि जे संस्कृतक पदसँ साम्य रखैत अछि–

भवहि भवानी भेल बड़ दन्द। कौशल कौतुक कएल कत छन्द।।
लहु लहु अंबर हरे हरि लेल। तखने भवानी दह दिश हेर।।
हँसि कह देखि कतहु नहि केओ। चोरि फाब तोह देबक देओ।।
गाँग चाँद फणि साखी मोर। बुझल तोहहि पए अम्बर चोर।।
तखने बोलथि हर ई जनु बाज। वामा बोल दी जिहे की काज।।
जौं तोहे प्रभु नहि साक्षी मान। तओ थिक समुचित शपथ विधान।।
एत सुनि हर किछु बोलिहि न जाए। लाज बिहुँसि देल वचल देखाए।।
ईश गोरिका भेल विलास। नृप जगजोति कह पुराबथु आस।। [४९]

उपर्युक्त पद्यमे शिवगौरा लीलाक मनोरम वर्णन परिलक्षित भेल अछि। संस्कृतक निम्नलिखित श्लोकमे सेहो शिवक अम्बर चौर्यक वर्णन अछि, जाहिमे पार्वती ओ महादेवक विनोद प्रश्नोत्तरक रूपमे वर्णित अछि। शंकर गौरीक वस्त्रकें चोराए हुनक सौन्दर्य देखबाक उपक्रम करए लगैत छथि। गौरी अपन निर्वस्त्र तनकें झपबाक हेतु वस्त्र ताकए लगैत छथि। तकैत-तकैत ओ शंकरकेँ कहैत छथिन जे हमर वस्त्र अहाँ लेलहुँ अछि। शंकर कहैत छथिन जे के देखलक अछि। गौरी कहैत छथिन जे चन्द्रमा देखलनि।

शंकर– ओ तँ टेढ़ छथि। [सोझ बात नहि कहताह, अतएव अविश्वासक पात्र छथि]

गौरी– तखन गंगा जनैत छथि।

शंकर– ओ स्त्री [चंचल मति] थिकीह, तँ कोना हुनक बात मानल जाय।

गौरी– तँ ई साँप देखलक अछि।

शंकर– किन्तु ई दू मुँहा थिक [चुगलपन जकर जन्मजात गुण छैक]

एकर पश्चात् पार्वतीकेँ कोनो उपाय नहि सूझैत छनि तँ कहैत छथिन जे हमर देह छूवि कहू जे अहाँ हमर वस्त्र नहि लेलहुँ अछि। शपथ खयबाक डरेँ शिव हुनक वस्त्र द' दैत छथिन –

स्वामिन् वासो ममैतन्नहि नहि विदितं शीतरश्मे स वक्रः
स्वर्गङ्गा देव सा स्त्री भुजगपरिवृढः शोभने स द्विजिह्वः।
स्वीयांगस्पर्शपूर्वं तदिह भगवते बोध्यतामित्यकस्मात्
अर्थप्रत्यर्थिभावः शिव शिव शिवयोः श्रेयसे नः सदास्तु।।[५०]

शिवक कौतुकपूर्ण लीलाक वर्णन महाकवि कालिदास सेहो बड़ रोचकतासँ कएलनि अछि। किन्तु मैथिलीमे एहि प्रकारक उल्लेख [शिवगौरीक प्रसंगक] अत्यल्प परिलक्षित होइत अछि। पार्वतीक सौन्दर्यकेँ महादेव निहारए लगैत छथि। एहिसँ लज्जाकुल भए गौरी हुनक दुनू नेत्र अपन हाथसँ झाँपि दैत छथिन। किन्तु शिव अपन तेसर नयनसँ ताकए लगैत छथि, गौरी अपन प्रयत्नमे असफल भए जाइत छथि–

शूलिनः करतलद्वयेन सा संनिरुध्य नयने हृतांशुका।
तस्य पश्यति ललाटलोचने मोघयत्नविधुरा रहस्यभूत।।[५१]

उपर्युक्त पद जकाँ शिवगौरीक विलास मैथिलीमे अत्यल्प परिलक्षित होइत अछि किन्तु हुनका सभक विलासक अन्य रूपक दर्शन निम्नलिखित पदमे होइत अछि–

मृगनयना सुन मोर बोल।
अपरूब नागरि सबे गुन आगरि सुन्दरि रीति रसखानि।
तुअ मुख्र देखिअ विकसित होअ हिअ कैरब जनि शशि मानि।।
कनक कलश दुहु करकय देह महु अधर अमिअ देह पान।
अति दुरगत मोय सदय हृदय भय सुखदय राखह मान।।
रति संगर कय आँचर गढ़ धय आध नयन छाड़ वान।
बाहुलतायँ मोहि बाधि राखह शिव उकुति भूपतीन्द्र भान।।[५२]

उपर्युक्त गीतमे शिवक मुखसँ गौरिक रूप गुणक प्रशंसा ओ हुनकासँ रति याचना कएल गेल अछि। ई नेपालक राजा भूपतीन्द्र रचित एकटा अपूर्ण उपलब्ध सामग्रीक आधार पर नाटकक अंश थिक।

एहि तथ्यक आधार पर ई कहल जा सकैत अछि जे गौरीशंकरक संयोग वर्णन क्रममे हुनका सभक रतिक्रीड़ाक उल्लेख मैथिली साहित्यमे कतहु–कतहु

परिलक्षित होइत अछि। एहि प्रवृत्तिक प्रचलन नाटकमे विशेष रूपे देखल जाइत अछि। ताहूमे नेपालक राजा लोकनि वा हुनक आश्रित कवि लोकनिक द्वारा रचल गेल नाटकमे गौरीशंकरक रतिक्रीड़ाक अभिव्यंजना विशेष रूपें भेल अछि। किन्तु एहि प्रवृत्तिक विकास नहि भए सकल। विद्यापति जकाँ मैथिलीक मुक्तक काव्यक रचयिता लोकनि गौरीशंकरक अन्य रूपक वर्णनमे अधिक रुचि देखौलनि अछि।

जहिना दैहिक सुख–भोगसँ प्रणयीजनकेँ आनन्द होइत छनि, तहिना अपन–अपन दू आत्माक ऐक्यकेँ मूर्त्त रूपमे देखि आह्लादक अनुभूति होइत छनि। ओ ऐक्य सन्तानक रूपमे परिणत भए प्रणयक तन्तुकेँ शाश्वत पवित्रता ओ सौन्दर्य प्रदान करैत छैक। तें सन्तानक, विशेषतया नवजात शिशुक, जे सांसारिक विषयसँ सर्वथा अनभिज्ञ रहैत अछि तकर निश्छल क्रिया–कलाप दम्पतीकेँ आनन्दातिरेकसँ विह्वल क' दैत छैक। वात्सल्यसँ अनुप्राणित विनोद वस्तुतः संयोग–सुखक चरम अनुभूति थिक।

प्रायः एही तथ्यके स्वीकार करैत गौरीशंकरक दाम्पत्यक मधुमय क्षणक रूपमे गणेशक बाललीलाक वर्णन अनेक कवि कयलनि अछि। जेना मुंशी रघुनन्दन दास कार्तिक ओ गणेशक परस्पर क्रीड़ाक वर्णन एहि रूपें करैत छथि–

गौरिक कोरमे बेसि गणेश षडानन भाषु पिता लग जाउ।
डामरू लए पुनि भाषथि ताहि त्रिशूल अहाँ कर लए चमकाउ।।
मोदक भाय के देती हमरा अहं भाङ्क पातकेँ चूरि चिबाउ।
बाल विनोद कथा मुद दम्पति दे सुख सम्पत्ति आस पुराउ।।१।।
मोरक पीठि षडानन बैसि पुकारथि भाइ गजानन आउ।
मूसक पीठि अहाँ चढ़िकेँ बढ़िकए चलबाक कला दरसाउ।।
मोरक पुच्छकैं सूढ़हिं दाबिकें भाषु गणेश अहाँ उड़ि जाउ।
बाल–विनोद विनोदित दम्पति दे सुख–सम्पति आस पुराउ।।२।।
गौरि गजानन शम्भु षडानन आनन्दसँ निज अंक मे लाए।
मातृ–सिनेहक जे उपदेश दुहू दुहुकें देल बुझाए।।

प्रेम परस्पर बाढ़ अशेष, दुहू मिलि कए एक संग खेलाए।
बाल-विनोद विलोकि कए दम्पति दे सुख सम्पति होथ सहाय।।३।।[५३]

एही प्रकारेँ गणपतिकें महादेवक कोरामे बैसल हुनक बालसुलभ चांचल्य ओ जिज्ञासाक चित्रण श्री काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क नचारीमे बड़ मनोरम भेल अछि। पंचवदन शंकरक कोरामे बैसल गणेश अपन पिताक मुँहकेँ गनैत छथि। किन्तु छोट बालक गनब की जानओ। ओ तँ एकटा मुंहकेँ एक, दोसरकेँ चारि, तेसरकेँ तीन आदि कहि [असम्बद्ध रूपे] गनैत जाइत छथि। महादेवक सिरपर स्थित गंगक जलमे हाथ दए घोंकए लगैत छथि [स्मरणीय जे पानि घोंकब शिशुक मनोरम उकट्ठ थिक] किन्तु हाथ ठिठुरि जाइत छनि तँ शिवक तेसर नयनक आगिमे तापए लगैत छथि। कखनहुँ साँपकेँ गहना बुझि आँगुरसँ छूबए लगैत छथि किन्तु जखन ओ फुफकार कटैत अछि तँ अकचका कए डेराए जाइत छथि। महादेवक सिरक चन्द्रमासँ जे अमृत चूबि रहल छनि तकरा अपन सूँढ़सँ चाटि लैत छथि आ अपन जेठ भाए [कार्तिक] केँ अबैत देखि हुनका मुँह दूसए लगैत छथिन। कखनहुँ चन्द्रमाकेँ पकड़ि हुनका दाबए लगैत छथि, फलस्वरूप ओहिसँ सुधा गरए लगैत अछि। तेँ शंकरक गराक मुण्डमाल 'जय-शिव' कहैत जीबि उठैत अछि। गौरीक नहकेँ अनेक चन्द्रमा बुझि ओहि दिस लपकैत हार्थें दौड़ैत छथि– गणेशक एहि प्रकारक लीलासँ प्रसन्न भए महादेव आ गौरी हुनका कोरामे उठाए मुँह चूमए लगैत छथिन–

नगन मगन मन गनपति कोर शिवक चढ़ि रे।
ललना गनथि वदन हुनि एक चारि तिन पढ़ि-मढ़ि रे।।
गांग लेल खन घोंकि ठिठुरिताहिँ हाथक रे।
ललना तापथि तेसर नयन अनल वृषनाथक रे।।
खन भव भूषण भुजंगहु आङुर देखाबथि रे।
ललना सुनि फणिक फुफकार भीत भय चौंकथि रे।।
स्रावित सुधांशु-सुधा खन सूँढ़हि चाटथि रे।
ललना अबइत अग्रज देखि दूसि मुँह डाँटथि रे।।
मुण्डमाल पर कौखन शशि गहि गारथि रे।

ललना मृतक पीबि अमृतक बल जय शिव गाबथि रे।।
गौरिक पदनख खान बुझि बहुतो शशि रे।
ललना लपकथि लैक निमित्त देखथि दुहु हँसि-हँसि रे।।
देखितहुँ उकठ सहास शिवा-शिव मुँह चुमि रे।
ललना लेल लगाय हिय सुत लखि मुदित 'मधुप' झुमि रे।।[५४]

उपर्युक्त पदमे बालक गणेशक पानि घोंकब, भाइके देखि मुँह दूसब आदिसँ हुनक सरल मतिक मनोहर चित्रण होइत अछि। तहिना गौरिक नखसँ शशिक भ्रम होयबासँ हुनक [गौरिक] सौन्दर्य अभिव्यंजित होइत अछि।

महाकवि कालिदास रचित कुमारसंभवमे सेहो शिवगौरीक एहि प्रकारक विनोदक क्षणक वर्णन अछि, जखन ओ बालक गणेशक लीलाकेँ देखि हर्षित भए रहल छथि। गणेशजी खिलखिलाकए हँसए लगैत छथि, आङनमे लेटाइत-लेटाइत शरीरमे धूरा लगा लैत छथि एवं तोतराकए बाजए लगैत छथि। कखनहुँ शंकरजीक कण्ठमे पड़ल मुण्डमालक दाँतकेँ मोती बुझि ओकरा गनए लगैत छथि तँ कखनहुँ गंगक चंचल लहरिमे अपन हाथ दए दैत छथि। फलतः हुनक हाथ ठिठुरि जाइत छनि, तखन ओकरा शंकरजीक तेसर नयनक आगि लग लए जाए तापए लगैत छथि –

अहेतुहासच्छुरिताननेन्दुर्गृहाङ्गणे क्रीड़नधूलिधूम्रः।
मुहुर्वदन्किञ्चिदलक्षितार्थं मुदं तयोरंकगतस्ततान।।११/४३।।
गृह्णन्विषाणे हरवाहनस्य स्पृशन्नुमा केसरिणं सलीलम्।
स भृंगिणः सूक्ष्मतरं शिखाग्रं कर्षन्बभूव प्रमदाय पित्रोः।।११/४४।।
एको नव द्वौ दश पञ्च सप्तेत्यजीगणन्नात्ममुखं प्रसार्य।
महेशकण्ठोरगदन्तपंक्तिं तदङ्कगः शैशवमौग्ध्यमैशिः।।११/४५।।
कपर्दिकण्ठान्तकपालदाम्नोऽङ्गुलिं प्रवेश्याननकोटरेषु।
दन्तानुपात्तुं रभसी बभूव मुक्ताफलभ्रान्तिकरः कुमारः।।११/४६।।
शम्भोः शिरोन्तः सरितस्तरंगान् विगाह्य गाढं शिशिरान्रसेन।
स जातजाढ्यं निजपाणिपद्ममतापयद्भालविलेचनाग्नौ११/४७।।

एहि प्रकारेँ गौरीशंकरक शरीर ओ आत्माक मिलनक विभिन्न प्रकारक चित्रण कए कवि लोकनि अपन-अपन काव्य सौष्ठवसँ गौरवान्वित भेल छथि।

केओ तँ गौरीशंकरकेँ आत्मीय बन्धुक रूपमे चित्रित करैत हुनका सभक हृद्गत अनुराग देखौलनि अछि तँ केओ शारीरिक संयोग सुखक वर्णन कए महादेवक कामेश्वर नामक सार्थकताक आ' गौरीक अखण्ड सौभाग्यक कल्पना कएलनि अछि।

गौरीशंकरक संयोग वस्तुतः प्रकृति-पुरुषक ओ रूप थिक जे स्रष्टा भए सम्पूर्ण विश्वमे व्याप्त छथि। तँ हुनका सभकें दू प्राणीक रूपमे कल्पना करब सृष्टिक हेतु श्रेयस्कर नहि थिक। गौरीशंकरक ऐक्यकेँ अर्द्धनारीश्वरक रूपमे दार्शनिक लोकनि तँ स्वीकार कएनहिँ छथि, कवि लोकनि सेहो अपन विभिन्न रचनामे ओहि रूपक सौन्दर्यक वर्णन कएने छथि।

अर्द्धनारीश्वरक रूपमे शिवगौरीक उल्लेख संस्कृत ओ मैथिलीक अनेक कवि कएने छथि। महाकवि कालिदास शिवगौरीकेँ शब्द ओ अर्थ जकाँ एक दोसरासँ संश्लिष्ट मानि विश्वक स्रष्टाक रूपमे प्रणाम करैत छथि-

वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।

जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।१/१(रघुवंश)

एहि श्लोकमे गौरीशंकरक प्रति भक्ति-भावनाक अभिव्यंजना भेल अछि। एहि प्रकारक भाव कालिदासक अन्यहु रचनामे देखल जाइत अछि। मालविकाग्निमित्रक मंगलचरणमे अर्द्धनारीश्वरक कल्पनामे भावक मनोहर उल्लेख एहि प्रकारक अछि -

एकैश्वर्ये स्थितोऽपि प्रणतबहुफले यः स्वयं कृत्तिवासाः।

कान्तासम्मिश्रदेहोऽप्यविषयमनसां यः परस्ताद्यतीनाम्।।

अष्टाभिर्यस्य कृत्स्नं जगदपि तनुभिर्बिभ्रतो नाभिमानः।

सन्मार्गालोकनाय व्यपनयतु स नस्तामसीं वृत्तिमीशः।।१।।[१]

शिव अपन भक्तकेँ अतुल धन दितहुँ स्वयं हाथीक खाल ओढ़ि अपन काज चलाए लैत छथि, अपन शरीरकेँ पत्नीक शरीरसँ संपृक्त कयलहुपर सांसारिक विषयभोगसँ अपनाकेँ सर्वथा निर्लिप्त कएने रहैत छथि, एवं जे अपन

आठहु रूपमे संसारक पालन करैत अहंकारसँ दूर छथि, ओहि महादेवकेँ कवि कहैत छथिन जे पाप दिस उन्मुख भेनिहार बुद्धिकेँ सद्वृत्तिक मार्ग देखाए प्रशस्त करथि। अर्द्धनारीश्वरक प्रति मैथिलीक कवि लोकनिक भक्तिभावना एही प्रकारेँ भक्तिरस प्रधान रहल अछि।

रागतरंगिणीमे अर्द्धनारीश्वरक रूपक वर्णन एहि प्रकारेँ अछि –

कतहु श्मश्रुधर कतहु पयोधर भल वर मिलल सुशोभे।
अधग धहलि नारि न गुनलि निज गारि गरुअ गौरि गुन लोभे।।
आलो शिव संभू तुमि जो बधलो पचवाने।
गाँग लागि गिरिजाक मनोलहि तुअ के देवि बोलह मन्दा।।
चरन नमित फनि मनिमय भूषण घर खिसाएल चन्दा।।
भनइ विद्यापति सुनह तिलोचन पद पंकज मोरि सेवा।
चन्दल देह पति वैद्यनाथ गति नीलकंठ हरदेवा।।[५८]

स्व० आचार्य रमानाथ झाक अनुसारेँ एकर अर्थ एहि प्रकारेँ होइत अछि –

पार्वतीक सखीक संग शिवक परिहास–आलाप। अर्द्धनारीश्वरक ध्यान व्यंग्य। दाढ़ी ओ पयोधर दुहूक सम्मिश्रण अद्‌भुत। कामदेवकेँ डाहल ओ आपन आधा शरीर गौरीकेँ देल। वाह रे महादेव। ई परिहास। कामके नष्ट कएल की कामकेँ प्रश्रय देल?

शिवक उत्तर– गंगाकेँ माथ पर लेलिऐन्हि तँ रूसलि गौरीकेँ अपन आधा शरीरमे लए लेल, मुदा की कहू, ककर–ककर दोष कहू, साँप लटकिके पाएर धरि आएल तँ ओकर फणिकेँ मणि बुझि कपार परक चन्द्रमा बिगड़ि गेलाह, पाएर पर एहेन मणि रखने छथि जे हमरहुसँ सुन्दर अछि।

ओना प्राचीन गीतसंग्रहक टिप्पणीमे उपर्युक्त कथन उल्लिखित अछि जाहिमे अन्तिम पंक्ति 'चरन नमित............चन्दा' जकर अर्थ हमरा जनैत ई अछि जे गौरीकेँ मनएबाक हेतु शिव जखन माथ झुकबए लगलाह तँ गराक सर्प वा गौरीक पएर पकड़बाक हेतु उद्यत शिवक हाथक सर्पक मणिक सान्निध्य शिवक सिरपर स्थित चन्द्रमाके प्राप्त भेलनि। एतेक देदीप्यमान मणि हुनक [चन्द्रमाकेँ] अपनहुँ सँ सुन्दर बुझि पड़लन्हि। फलस्वरूप ओ ईर्ष्यावश खिसिआए

गेलाह। एहि वर्णनमे उन्नत [चन्द्रमा सन] क स्वभाव आनक उन्नति नहि सहबाक प्रवृत्तिक सहज व्यंग्य होइत अछि। 'परोत्कर्षासहिष्णुता' पैघ लोकक स्वभाव होइत छैक से कहल गेल अछि।

उपर्युक्त पद्यमे अर्द्धनारीश्वरक रूपमे गौरीशंकरक कल्पना कए कवि एकटा अद्‌भुत प्रसंग उल्लिखित करैत छथि। शिव तँ उमाकेँ अपन अर्द्धांगिनी बना लेने छथि। अतः ओ हुनक तनसँ सटलि छथि, किन्तु ओ [गौरी] मान कए लेने छथि।

अर्द्धनारीश्वरक रूपमे गौरीक मानक उल्लेख महेश ठाकुर तत्त्वचिन्तामणिक व्याख्या आलोक दर्पणक मंगलाचरणमे एहूसँ अधिक चमत्कारपूर्ण भेल अछि। अर्द्धनारीश्वरक वाम भागमे पार्वती छथिन। मानिनीक मानापनोदन हेतु शिवजी यदि हुनकर पएर पकड़ए चाहैत छथि तँ गौरी अपन भागक माथक आध अंश नहि झुकबैत छथिन, शिवजी यदि पार्वतीक रूपगुणक प्रशंसा कए हुनका मनबए चाहैत छथिन तँ गौरी अपन भागक मुँह बन्दे रखैत छथि, फलतः ओ मुँह सेहो मूकायित अछि, शिवजी विफल मनोरथ भ' जाइत छथि। जखन शंकर आलिंगन कए गौरीक मानकेँ भंग करए चाहैत छथिन तँ अपन वाम भागक बाँहिसँ [ओ पार्वतीक भ' जाइत छनि] सहयोग नहि पाबि असफल रहि जाइत छथि –

धत्ते नावनतिं महीधरसुताभागावरुद्धं शिरो
नैवोदञ्चति चारुसान्त्वनवचो मूकायितेऽर्धे मुखे।
आश्लेषोऽपि यथोचितं न हि भवत्येकाकिना बाहुना
मामव्यादिति विक्लवः प्रियतमामानापनोदे शिवः।।[५९]

अर्द्धनारीश्वरक रूपमे गौरीक मान वस्तुतः शिवगौरीक मिथुन [**मिथो न तृप्ति मिथुनः तदूहे**] परस्पर एक भेलहुपर अतृप्त] स्वरूपक उदाहरण थिक। गौरी ओ शंकर एक–दोसराकेँ परस्पर अपन–अपन आधा अंगमे लिप्त करितहुँ तृप्त नहि भए रहल छथि--तकरे अभिव्यंजना उक्त पद सभमे ध्वनित भेल अछि।

प्रणयी जनक ओ प्रेम जे विरहमे मिलन ओ मिलनमे विरहक अनुभूतिसँ अभिभूत हो, वस्तुतः प्रगाढ़ अनुरागक परिचायक थिक, जकर चिरन्तन सौन्दर्य,

वर्णनातीत लावण्य ओ भावनाक कोमलतासँ प्राणी व्याकुल भ' जाइत अछि।

तेँ ई कहब असंगत नहि होयत जे अर्द्धनारीश्वरक रूपमे गौरीशंकर अपन सम्पूर्ण सौन्दर्य लए उपस्थित भेल छथि। एहि सौन्दर्यमे कवि लोकनि प्रणय ओ दार्शनिक सृष्टिक मूर्त्त रूप देखैत छथि।

मैथिली ओ संस्कृतक कविलोकनिक विरह-वर्णन

ई तँ भेल गौरीशंकरक संयोग शृङ्गारक किछु उदाहरण। हिनका सभक विरहक तीनू अवस्था पूर्वराग, मान ओ प्रवासक वर्णन संस्कृत ओ मैथिलीक कवि अपन-अपन रचनामे विस्तृत रूपेँ कएलनि अछि।

गौरीक पूर्वरागक रूपमे कालिदास विरचित कुमारसंभवक किछु अंशक उल्लेख एतय कएल जाए सकैत अछि। ओ [गौरी] शिवक प्रति अनुरक्त भए हुनका प्राप्त करबाक कामनासँ तपस्या करए लगैत छथि।

शिवक साहचर्यक बिना पार्वतीकेँ अपन सौन्दर्यक प्रसाधन व्यर्थ बुझि पड़ैत छनि। ओ अपन हार हटाए लैत छथि, विन्यस्त केशक स्थानपर जटा धारण कए लैत छथि, कटिमे बल्कल पहिरि, डोरी बान्हि लैत छथि एवं कोमल हाथमे रुद्राक्ष लए लैत छथि। एतबे नहि, महादेवक पूजाक हेतु कुशक काज जे होइत छनि तकरा ओ अपनिहि हाथेँ उखारि अनैत छथि। कुमारसंभवक पाँचम सर्गमे एकर वर्णन अछि -

> विमुच्य सा हारमहायनिश्चया विलोलयष्टिप्रविलुप्तचन्दनम्।
> बबन्ध बालारुणबभ्रु वल्कलं पयोधरोत्सधविशीर्णसंहतिः।।८।।
> यथा प्रसिद्धैर्मधुरं शिरोरुहर्जटाभिरप्येवमभत्तदाननम्।
> न षट्पदश्रेणिभिरेव पंकजं सशवलासंगमपि प्रकाशते।।९।।
> प्रतिक्षणं सा कृतरोमविक्रियां व्रताय मौञ्जीं त्रिगुणां बभार याम्।
> अकारि तत्पूर्वनिबद्धया तया सरागमस्या रसनागुणास्पदम्।।१०।।
> विसृष्टरागादधरान्निवर्तितस्तनांगरागारुणिताच्च कन्दुकात्।
> कुशांकुरादानपरिक्षतांगुलिः कृताऽक्षसूत्रप्रणयी तया करः[६०]।।११।।

शिवक प्रति गौरीक अनन्यासक्तिक अभिव्यंजना जेना हुनक पूर्वरागक रूपमे ध्वनित भेल अछि से वस्तुतः गौरीक मनक सौन्दर्यकेँ साकार करैत

अछि। गौरी जखन शंकरजीकेँ वररूपमे प्राप्त करबाक हेतु दृढ़प्रतिज्ञ भ' जाइत छथि तँ माता मनाइनिक वात्सल्य जाग्रत भए जाइत छनि। कत' तँ गौरी सन कोमल बालिका आ कत' कठोर तपक कष्ट। एतेक सुन्दरि कन्या कोना पूजाक नियमक पालन करत, कोना जाड़ ओ गर्मीक कष्ट सहत इत्यादिक कल्पनासँ हुनक माता [मनाइनि] दुःखी भए जाइत छथिन। अतः ओ तपस्या करबासँ गौरीकेँ रोकैत कहैत छथिन जे अहाँक घरहिमे एतेक महान देवता सभ छथि जे जखन जे चाहब से दए देताह। दोसर जे तपस्या करब कोनो साधारण बात नहि छैक- 'अहाँ सन सुकुमारि बालिका ओकर कष्ट कोना सहत? जहिना सिरीष पुष्प पर यदि भमरा बैसैत अछि तँ ओकरा सहल होइत छैक किन्तु यदि कोनो पक्षी बैसैत अछि तँ फूल झड़ि जाइत छैक, तहिना कठिन तपकेँ धारण कएलासँ अहाँक तनकेँ असह्य कष्ट भए जेतैक –

निशम्य चैनां तपसे कृतोद्यमां सुतां गिरीशप्रतिसक्तमानसाम्।
उवाच मेना परिरभ्य वक्षसा निवारयन्ती महतो मुनिव्रतात्।।३।।
मनीषिताः सन्ति गृहेषु देवतास्तपः क्व वत्से क्व च तावकं वपुः।
पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीषपुष्पं न पुनः पतत्रिणः[६१]।।४।।

उक्त पदमे मेनाक ई कहब जे- अहाँक घरहिमे महान् देवता छथि [मनीषिता सन्ति गृहेषु केदेवताः]- एकर संकेत करैत अछि जे मनाइनि गौरीकेँ महादेवकेँ छोड़ि अन्य देवतासँ प्रेम करबाक उपदेश दए रहलि छथिन, जनिका प्राप्त करबाक हेतु कोनो कठोर व्रतक आवश्यकता नहि हो। एतए एकटा आओर तथ्य ध्यातव्य थिक जे अतिशय ममता रखनिहारि मनाइनि सेहो एहि तथ्यकेँ संकेतहिसँ कहि सकलि छथिन। वस्तुतः गौरीक प्रसंगमे शिवक अतिरिक्त कोनो अन्य देवताक उल्लेख करब ककरहु हेतु कल्पनातीत वस्तु थिक। गौरीक मनस्विताक उपेक्षा के कए सकैत अछि? ओ अपन निश्चय पर दृढ़ रहैत छथि –

इति ध्रुवेच्छामनुशासती सुतां शशाक मेना न नियन्तुमुद्यमात्।
क ईप्सितार्थस्थिरनिश्चयं मनः पयश्च निम्नाभिमुखं प्रतीपयेत्[६२]।।

अर्थात् सभटा कहलो पर ओ अपन पुत्रीक निश्चयकेँ नहि हटाए सकलीह। कारण जे अभिलषित विषयमे मनक निश्चय आ' अधोमुखी जलक वेगवती

धाराकेँ के रोकि सकैत अछि?

पार्वतीक तपस्यासँ हुनक अनुरागक अभिव्यंजना मैथिली साहित्यमे सेहो मनोरम भेल अछि। जहिना मुक्तक रचनामे गौरीशंकरक परस्पर अनुराग परिलक्षित होइत अछि तहिना नाटक वा काव्यक अन्य विधामे। किन्तु जेना मैथिलीमे गौरीशंकर विषयक रचना विद्यापति आरम्भ कएलनि, ओहि प्रसंगक पूर्वरागक उल्लेख हुनक नचारीमे बड़ कम देखल जाइत अछि। हुनक जे रचना एहि रूपक अछि से सहृदय संवेद्य अछि। गौरीक तपस्यासँ शिव प्रसन्न भए हुनक समक्ष भिखारि बनिकए अबैत छथिन। गौरी भीख दिअ जाइत छथिन, तँ चीन्हि जाइत छथिन, अतः शंकरक सान्निध्यक इच्छा तीव्रतर भ' जाइत छनि। किन्तु एकटा भिखारिक [जाहि रूपमे ओ छलाह] रूपमे ओ [शंकर] गौरीसँ कात भए जाइत छथिन। गौरी एहिसँ अचेत जकाँ भए जाइत छथि। सखी लोकनि अनेक उपचार करैत ओहि भिखारिकेँ बजाए कहए लगैत छथिन जे अपन दुर्दृष्टि गौरिए पर देखौंले? हमर सखीकेँ तोहर नजरि लागि गेल छनि–

आजे अकामिक आएल भेखधारी। भीखि भुगुति लए चललि कुमारी।।
भिखिआ ने लेइ बढ़ाबए रिसी। वदन निहारए बिहुसि हँसी।।
एठमा सखि संगे निकहि अछली। ओहि जोगिआ देखि मुरुछि पड़ली।।
दुरकर गुनपन अरे भेषधारी। का डिठि अओलए राजकुमारी।।
केओ बोल देखए देहे जनु काहु। केओ बोल ओझा आनि चाहु।।
केओ बोल जोगिआहि देहे दहु आनी। हुनि कि भय वर जिवो भवानी।।
भनइ विद्यापति अभिमत सेवा। चन्दन देवि पति बैजल देवा।।[६३]

विद्यापतिक परवर्त्ती कविलोकनि एहि प्रवृत्तिकेँ विकसित कएलनि। गौरीक अनुरागक एहेन वर्णन नाटकमे विशेष रूपेँ मुखर भेल।

कवि लालकृत 'गौरी स्वयंवर' मे जखन गौरी अपन पूजाक हेतु फूल लोढ़ए जाइत छथि तँ संयोगवश शंकर सेहो ओतए योग करबाक हेतु पहुँचि जाइत छथि। ओही अवस्थामे [योग करबाकाल] शंकरके गौरी देखि लैत छथिन आ' अपन आराध्य देवक दर्शनसँ हुनका असीम आनन्द भए जाइत छनि। ओ [गौरी] शंकर पर मोहित भए अपन सखीसँ कहए लगैत छथि –

आगे माइ जोगिया एक अद्भुत भूतगण संचर हे।
देखिअ तपोवन हरलन्हि मोर मन हे।
आगे माइ मए ने जाएब निज वास पास तेजि हिनकर हे।
थिक त्रिभुवनपति हमरहु ऐह गति हे।।[६४]

हुनकासँ मिलनक हेतु एतेक उत्कण्ठित भए जाइत छथि जे अपन सखीकेँ कहैत छथि जे अहाँ सभ घुरि क' घर चल जाउ। हम तँ आब हिनके संग जाएब –

आगे माइ जाह सबहि फिरि गेह नेह जनु विसरिअ हे।।[६५]

गौरीक मानस शिवक रूपसँ आच्छादित भ' जाइत छनि–

असन गरल कर वसन बघम्बर हे।
आगे माइ वरदक पीठ असवार छार तन अभरन हे।।
उरपर विषधर चान तिलक कर हे।
आगे माइ हरलन्हि हमर गेआन आन नहि मनपर हे।।[६६]

दर्शनजन्य पूर्वरागक ई रूप मैथिलीक आनो नाटकमे भेटैत अछि।

कान्हारामदास कृत 'गौरी स्वयंवर'मे गौरी ओ हुनक सखीक वार्तालापक रूपमे 'पुरुब प्रीति'क उल्लेख एहि प्रकारेँ अछि –

भल हर दरसन देला, किअये विमुख भय गेला।
उमा हुनिवस भेली, बुझल न संग सहेली।।
मानस परम आनन्दे, कोन परि मिलब महेसे।
विरह विकल भवानी, लखल सखी सयानी।।
धैरज धरू सुकुमारी, वर आयल त्रिपुरारी।
सुनि सखि मृदु बानी, मन पुलकित भवानी।।
पुरुब प्रीति आनी, चलिलि सुमरि सुलपानी।
करण कान्हाराम भावे, शिवपद धरि मन ध्याने।।[६७]

उपर्युक्त पद्यक आधारपर ई कहल जाए सकैत अछि जे संस्कृतमे गौरीक पूर्वराग अलौकिक प्रणय अभिव्यंजित करैत अछि। गौरीक तपस्या

साधारण नहि अछि। ओ तँ शिवकेँ नररूपमे प्राप्त करबाक हेतु कठिन साधना थिक। गौरी अपन कोमल तनकें सुखाए लैत छथि, पात पर्यन्तकेँ भोजनक रूपमे ग्रहण नहि करैत अपर्णा बनि जाइत छथि –

स्वयं विशीर्णद्रुमपर्णवृत्तिता परा हि काष्ठा तपसस्तया पुनः।
तदप्यपाकीर्णमतः प्रियंवदां वदन्त्यपर्णेति च तां पुराविदः।।
मृणालिकापेलवमेवमादिभिर्व्रतैः स्वमंगं ग्लपयन्त्यहर्निशम्।
तपः शरीरैः कठिनैरुपार्जितम् तपस्विनां दूरमधश्चकार सा।।[६८]

किन्तु मैथिलीमे एहि प्रकारक भावना पार्वतीक पूर्वरागक रूपमे नहि परिलक्षित भेल अछि। जाहि प्रकारेँ उपरक दू–चारि टा दृष्टान्त अछि। ताहि प्रकारक वस्तु प्रायः सम्पूर्ण मैथिली साहित्यमे विरल दृष्टिगोचर होइत अछि। गौरी शिवपर अनुरक्त अवश्य छथि, किन्तु ओ अनुराग मानवक सहज स्नेहक परिचायक थिक। मैथिली साहित्यक गौरी स्वीया नायिकाक उत्तम उदाहरणक रूपमे अवश्य उपस्थित भेल छथि किन्तु ओ कालिदासक गौरी सन आराध्यदेव शंकरक प्रति समर्पिता नायिका नहि, हुनक अर्धांगिनीक चित्र प्रस्तुत करैत छथि।

मैथिली साहित्यमे जहिना गौरीक पूर्वरागमे हुनक उत्कण्ठाक वर्णन अछि तहिना शंकरक अनुरागसँ विरहक व्याकुलता ध्वनित होइत अछि। 'महेश्वर विनोद' मे शिवक अनुराग, गौरीक प्रति एहि प्रकारेँ वर्णित अछि–

निशिदिन शिवकाँ सती वियोग। लागल अचल समाधि प्रयोग।।
कौखन शिवकाँ हो नहि नीन। मन एकाग्र शक्तिक स्वाधीन।।[६९]

गौरीक एहि प्रकारक अनुरागक एकटा आओर वर्णन मैथिली ओ संस्कृत साहित्य दुनूमे विस्तृत रूपेँ कएल गेल अछि– ओ थिक शिवक जखन बटुकक रूपमे गौरीक समक्ष अबैत छथि, आ' ओही छद्मवेशमे ई कहए लगैत छथि जे एहेन कुरूपक हेतु अहाँ किऐक व्यग्र छी, तँ गौरी अनेक गुणक वर्णन करए लगैत छथि आ' कहैत छथि जे एहेन महानक निन्दा जहिना कयनिहारक हेतु पापकर थिक, तहिना सुननिहारक हेतु अनुचित [द्रष्टव्य कुमारसंभव पंचम सर्ग, श्लोक ६५ सँ ८३ धरि एवं अन्य। मैथिली शैव साहित्य पृ० ३५०।]

मिथिलामे शक्ति पूजाक प्राधान्य रहल अछि। गौरीकेँ शक्तिक अवतार मानल जाइत अछि, तेँ कोनो सन्दर्भमे गौरीसँ शिवकेँ अधिक श्रेष्ठ मानब कविलोकनिकेँ विहित नहि भेलनि। प्राय: एही कारणेँ शिवक प्रति अत्यधिक अनुराग रखितहुँ गौरी एहेन रूपमे नहि वर्णित छथि, जाहिसँ ओ शंकरक महत्वकेँ प्राप्त नहि कयने होथि। वस्तुत: मैथिलीक गौरीकशंकरक बीच अन्योन्याश्रय सम्बन्ध अछि, एक-दोसराक पूरक थिकाह।

शिवगौरीक विरहक अन्य रूप गौरीक मान अछि, जे संस्कृत ओ मैथिली साहित्यमे बड़ रोचक प्रसंग प्रस्तुत करैत अछि।

'कुमार संभव'मे सन्ध्या वन्दनक हेतु शिवजी जाइत छथि तँ पार्वती मान क' लैत छथि –

निर्विभुज्य दशनच्छदं ततो वाचि भर्तुरवधीरणापरा।

शैलराजतनया समीपगामाललाप विजयामहेतुकम्।।[७०]

ओ (पार्वती) विजयासँ एम्हर-ओम्हरक गप्प करतै महादेवसँ विमुख भए जाइत छथि। हुनक मानापनोदनक हेतु शिवक वैदग्ध्यपूर्ण वचन सहृदय संवेद्य अछि। ओ कहैत छथि जे अहाँ क्रोध नहि करू। हम सन्ध्या करबा लेल गेल छलहुँ। अहाँक संग हम सभटा धर्मक काज करैत छी। हे पार्वती, की हमरा चकवा जकाँ दृढ़ प्रेम नहि अछि? एही संग ओ सन्ध्यावन्दक कारण बुझबैत कहतै छथिन जे ब्रह्मा जखन पितरकेँ रचि रहल छलाह, तखनहिँ एकटा अपन छोट सन मूर्त्ति बना लेलनि। सएह मूर्ति सन्ध्याक रूपमे सूर्योदय एवं सूर्यास्त काल पूजल' जाइत अछि। तेँ हम सन्ध्याक एतेक आदर करैत छियनि–

ईश्वरोऽपि दिवसात्ययोचितं मन्त्रपूर्वमनुतस्थिवान्विधिम्।

पार्वतीमवचनामसूयया प्रत्युपेत्य पुनराह सस्मितम्।।[७१]

गौरीक मानापनोदनक हेतु शंकरक कहल एहि उक्तिमे सन्ध्याक प्रति भाव अभिव्यंजित अछि। अत: हुनक कहबाक तात्पर्य ई भेलनि जे हमरा कोनो प्रकारक आसक्तिक भाव एहि नारीक प्रति नहि अछि। किन्तु गौरी लगले मानए वाली नहि। ओ रूसले रहि जाइत छथि। तखन महादेव अधिक चतुरतासँ हुनक मनोरंजन करए लगैत छथि। गौरीक रूपगुणक उल्लेख करैत ओ प्राकृतिक छविक वर्णन अनेक रूपेँ करए लगैत छथि।[७२]

गौरीक मानभंगक क्रममे एतेक विस्तृत ओ सुन्दर वर्णन मैथिली वा संस्कृत साहित्यमे विरल पाओल जाइत अछि।

एहि प्रकारक प्रसंग जगज्योतिर्मल्लकृत 'हरगौरी विवाह' मे उल्लिखित अछि। गौरीकेँ मनयबाक हेतु शिव कहैत छथिन जे अहाँ नैहर जाउ। जे-जे माङब सेसे देब। भूख लागत तँ विषमे भांग सानि कए देव चढ़बाक हेतु बसहाक सवारी देब-

रूसलि भवानी न मानए बोध। आजे क्षमह गोरि मोर अनुरोध।।

जत किछु मंगलहु अछए भड़ार। पहिलहि देव ग्रिम फणिमणि हार।।

भुखलाँ भाग देअओ विष सानि। चढ़इक बसहा देवउ पलानि।।[७३]

पण्डित जीवानन्द ठाकुरक संकलनमे सेहो एहि भावक गीतमे महादेवक (गौरीक प्रति) अनुनयक वर्णन मेटैत अछि -

मन जनु झाँखीअ गौरी।

सब विधि औरि सम्हारब तोरी।।

चान मंगाय देब चूड़ा।

सुरसरि नीर समारब जूड़ा।।

विजय ओठ देब जयमाला।

घोघट देव बाघम्बर छाला।।

त्रिशूल भाए देब गाठी।

फणिमय हार गरा देब गाथी।।

भनहि विद्यापति गाबए।

इहो अभरन गौरि मन भावे।।[७४]

उपर्युक्त तीनू उद्धरण (कालिदास, जगज्योतिर्मल्ल ओ विद्यापति) सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे जाहि प्रकारक भाव-प्रवणता कालिदासक उक्तिमे होइत अछि, तकर अनुरूप वैदग्ध्य मैथिलीक कवि लोकनि नहि पाबि सकल छथि। प्रियतमक द्वारा अपन रूप-गुणक प्रशंसा सुनब नारीक हेतु सर्वाधिक सुखद स्थिति थिक। संसारक कोनो वस्तु ओकर आगाँ तुच्छ होइत छैक। ध्यातव्य जे मैथिलीक कवि लोकनि एकर वर्णन कएलनि अछि जे शिव गौरीकेँ अनेक वस्तु

देबाक प्रलोभन दैत छथिन, किन्तु कालिदास हुनका वग्लु वादिनी, मानिनी, अनिमित्तकोपने आदि कहि हुनक गुणक प्रशंसा करतै छथिन।

अन्यहु स्थलपर गौरीक मानक विविध भाँति चित्रणमे संस्कृत कविलोकनिक वैदध्यकेँ मैथिलीक कवि लोकनि नहि प्राप्त कए सकल छथि।

गाथा सप्तशती एवं अर्यासप्तशतीमे सन्ध्यावन्दन कएनिहार शिवकेँ गौरीक कोपभाजन होमए पड़ैत छनि।[७५] ओहि प्रकारक मनोहर वर्णन मैथिली काव्यमे नहि परिलक्षित होइत अछि।

तहिना शिवकेँ गंगाक प्रति आसक्तिक कल्पना कए गौरी रूसि जाइत छथि, सेहो अनेक कवि देखौने छथि।

श्री नीलकण्ठ दीक्षित द्वारा पार्वतीक प्रणयकोपक वर्णनमे शंकरक माथपर हुनक पएरक कल्पना कएल गेल अछि–

पूतं स्वतः पूततरं ततो यद्

गाङ्गं पयः शंकरमौलिसंगात्।

तत् पातु मातुः प्रणयापराध

पादाहतैः पूततमं ततो नः।।[७६]

अर्थात् जे स्वयं पवित्र छथि, शंकरक माथपर जाए पवित्रतर भए गेलीह एवं जे माता [पार्वतीक] द्वारा पयरसँ मारल [स्पृष्ट] तेँ पवित्रतम भए गेलीह से गंगा हमर सभक कल्याण करथु।

गौरीक मानक वर्णन मैथिलीमे बड़ थोड़ अछि किन्तु श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' द्वारा रचित 'गंगास्तुतिमे' ई कहल गेल अछि जे गंगाक स्थान गिरिजासँ ऊपर छनि कारण जे पार्वती तँ शिवक वाम भागमे स्थित छथिन किन्तु गंगा हुनक [शिवक] माथहिपर विराजमान छथिन –

गिरिजा वामहि अंग अहाँ शशिलकहुँ उपर चढ़ि

की न बनलि छी प्रिया जगत्पतिपतिक अधिक बढ़ि।

ओना उक्त प्रसंगमे गौरीशंकरक सान्निध्यमात्रक उल्लेख अछि, कविक अभिप्राय सेहो भतृहरि द्वारा रचित गंगाक प्रसंगेँ एहि उक्तिक '**विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातश्शतमुखः**– केर प्रतिक्रिया स्वरूप लिखल वचन बुझि पड़ैत

अछि, किन्तु गौरीक सौभाग्यक अपकर्षक व्यंग्य ध्वनित होइत अछि, जे मैथिली साहित्यक हेतु अभिनव वस्तु थिक।

गौरीक मानक स्पष्ट उल्लेख गंगास्तुकि प्रसंगमे पण्डितराज करैत छथि। गंगाकेँ शंकरक सिरपर देखितहिँ गौरीक भौंउह क्रोधे टेढ़ भए जाइत छनि–

कटाक्षव्याक्षेपक्षणजनित संक्षोभ निवहा।७७

वस्तुतः गौरीक मानक वर्णन करब कविलोकनिकेँ विशेष प्रिय भए गेल छनि। कारण जे कालिदाससँ लए मैथिलीक आधुनिक कवि श्री सुमनजी धरि एहि परम्पराक निर्वाह कयलनि अछि। मानिनी गौरीक कोप सेहो सुन्दर अछि, कल्याणमय अछि। तेँ मंगलश्लोकक रूपमे सेहो एकर चर्चा कयल गेल अछि।

गौरीक मानक वर्णन नैयायिक रुचिदत्तक मंगलाचरणक रूपमे देखल जाए। शिवजीक अपराध सिद्ध भेलापर गौरी क्रोधेँ ओछाओनक आधा भागपर सूति रहलीह। ओ शंकरजीसँ नीक जकाँ हटल रहथि, दीपक प्रकाशसँ हुनक छाया धरि काते रहि जाय से सोचि उलौंचक बीचमे कारी परदा लगा देलनि [ध्यातव्य जे फीका रंगक परदापर छाह पड़बाक संभावना छलैक, वा ओ छाह प्रत्यावर्तित भए गौरीक देहपर पड़ितनि]। हुनकर तेज साँससँ सुतलोपर पयोधर युगल काँपि रहल छलनि। एहेन कुपित गौरी लोकक कल्याण करथु –

कृष्णोत्तरच्छदपटार्धकृतान्तराल
मुत्तालनिःश्वसितनुन्नपयोधराग्रम्।
ईशे स्फुटागसि विभिन्नतनोस्तुनोतु
सुप्तं रुषा शयनसीम्नि शिवं शिवायाः।।७८

एहि परम्परामे नेपालक एकटा मैथिलीक कवि आओर अद्‌भुत प्रयोग कयलनि अछि। शंकर एकहि बेर गंगा ओ गौरीसँ रतियाचना करैत छथिन, किन्तु गौरीक कोनो प्रकारक प्रतिक्रियाक अभिव्यंजना शंकरक एहि उक्तिसँ नहि भेल छनि।

नेपालक राजा जितामित्र मल्लक आश्रयमे द्विज शिवहरि रचित बरूथिनी हरण मे शिवक उक्ति– 'गौरि गंगा, अमारे सुरत दान दे हे।'– सँ ई अभिव्यंजित होइत अछि जे मैथिलीक कवि नारीक मनोभावनाक चित्रणमे सफलता नहि प्राप्त क' सकलाह। कथाक नाटकीय पक्ष खाहे जे हो, गौरीक मनोभावकेँ

अभिव्यंजित करबामे ओ लोकनि संस्कृत कविक अपेक्षा पाछू रहलाह।

एकर दूटा कारण भए सकैत अछि। जेना कि पहिनहुँ कहल गेल अछि, मैथिलीमे शिवगौरी विषयक काव्य भक्ति–भावनासँ अनुप्राणित भए लिखल गेल अछि। हुनका सभकेँ माता–पिता मानि, प्रणयक उल्लेख करब कवि लोकनि दोषपूर्ण माननै होथि वा गौरीक मान शिवक अन्य नायिकाक प्रति आसक्ति सूचक होइत। स्मरणीय जे गौरीक अखण्ड सौभाग्य अर्चित होइत अछि। तेँ हुनक सौभाग्यक गौरवकेँ ध्यानमे रखैत कवि लोकनि केँ खण्डिता नायिकाक रूपमे गौरीकेँ चित्रित करब विहित नहि भेल होनि से सम्भव अछि।

पूर्वराग वा प्रवास विप्रलम्भक अवस्था कोनो नायिकाक सौभाग्यक अपकर्ष नहि सूचित करैत अछि। प्रायः एही कारणेँ शिव–गौरीक विरह–वर्णनमे एहि दुनू रूपक उल्लेख मैथिलीक कवि लोकनिकेँ प्रिय लगलनि।

एहि प्रसंगक प्रवास विप्रलंभक उल्लेख संस्कृतक प्राचीन काव्यमे नगण्य अछि। एकर कारण जे गौरीशंकर विषयक जे काव्य लिखल गेल तकर कथानकक उद्देश्य सुरलोकक विजय ओ असुरक पराजयक वर्णन करब रहलैक। तेँ शिवगौरीक संयोगसँ कुमार कार्त्तिकेयक जन्म ओ हुनका द्वारा [कार्त्तिक द्वारा] तारकासुरक वध कथानकक मुख्य केन्द्र बिन्दु रहल। शिवगौरीक विवाह आदि ओ कुमारक जन्म धरिक वर्णनमे प्रवास वियोगक सन्दर्भ असंगते भेल। तकर पश्चात् कथा–क्रममे कुमारक ओज आदिक चर्चा अपेक्षित रहलैक तेँ संस्कृत काव्यमे गौरीशंकरक अनेक रूप वर्णित रहितहुँ प्रवासक चर्चा नहि भेल। जेना कुमारसंभव, शिवलीलार्णवमे अछि। एकटा ईहो तथ्य स्मरणीय जे उमा–महेशक जे छवि कालिदास रूपायित कएलनि, ताहि परम्पराक प्रभाव संस्कृतक परवर्त्ती कविपर चिरकाल धरि अक्षुण्ण रहल। तेँ मुक्तक रचनामे सेहो गौरीकशंकरक श्रृंगारिक वर्णन अनेक रूपमे प्रवासक चर्चा नहि भेटैत अछि।

एम्हर सोलहम शताब्दीमे भानुदत्त मात्र एहेन कवि भेलाह जे गौरीशंकर विषयक काव्यक एहि कमीकेँ बुझलन्हि ओ अपन 'गीत गौरीपति', मे प्रवास–विरहक वर्णन कए शिव ओ गौरीक परस्पर अगाध स्नेहक वर्णन कएलनि।

'गीत गौरीपति' जयदेवक लिखल 'गीत गोविन्दक' माधुर्य गुणसँ ओतप्रोत एकटा खण्डकाव्य थिक। एकर किछु श्लोकसँ स्पष्ट भ' जाएत जे कविक उद्देश्य मुख्यतः ई देखाएब छनि जे कोनो प्रकारेँ शिवगौरीक स्नेहक प्रगाढता

राधा–कृष्णक प्रणयसँ कम नहि छनि।

'गीत गौरीपति' मे पार्वतीक ईर्ष्यामान एहि रूपेँ अभिव्यंजित भेल अछि–

संसारमे के एहेन स्त्री वा पुरुष अछि जे कामकलामे निपुण नहि अछि, किन्तु कोनो पुरुष स्त्रीके माथपर नहि रखैत अछि। एकटा अहाँ एहेन छी जे गंगाकेँ माथपर धारण करैत कनेको लज्जाक अनुभव नहि करतै छी। [एक तँ अन्य स्त्री आ' तकरा माथपर चढ़ौने रहब की उचित होइत अछि?]

के वा कामकलापकेलिकुशलाः क्रीड़न्ति नो कामिनः
कान्ता क्वापि कदापि कापि शिरसा केनापि किं धार्यते।
गंगां मूर्ध्नि दधासि नापि वहसि ब्रीडां न धत्से कथं
किं वा वाच्यमिदं निगद्य गिरिजा कक्षान्तरं निर्ययौ।।[७९]

किन्तु शंकर जखन एहि वचनसँ रुष्ट भए, हुनकासँ विमुख भए जाइत छथिन तँ गौरी विरहसँ व्यथित भए जाइत छथि। ओ कहैत छथि जे –

जंगलमे, घरमे, पर्वतपर भ्रमण करतै छी किन्तु विश्वमे अलौकिक गुणवान भगवान् शंकरक सान्निध्य हमरा नहि प्राप्त भ' रहल अछि। शिव शिव [खेदसूचक] हमरा द्वारा महादेवक निन्दा कएल गेल। (वीप्सा)।

कानने भवने महीधरमण्डले विचरामि।
तस्य विश्वविलक्षणस्य न साम्यमाकलयामि।।
शिव शिव मया कुपितया निन्दितो गिरिशोऽपि।।[८०]

गौरीक अनुताप अत्यन्त तीव्र छनि। हुनक वचनसँ एकर आभास भेटैत अछि– सखी लोकनिक उपदेश नहि मानि हम शंकरक उपेक्षा कएलहुँ। तेँ हमरा जे ई कष्ट जे भए रहल अछि से उचिते।

वारितो दयितो वचो न कृतं सखीनिवहस्य।
युक्तमेव ततो यतो मम यातना हृदयस्य।।
शिव शिव मया कुपितया निन्दितो गिरिशोऽपि।।[८१]

पुनः शंकर प्रसन्न भए पार्वतीक मानभंग करबाक हेतु कहैत छथिन–

विरचय हारं प्रसरतु तारं मदनयशो महनीयम्।
फलमनवरतं कलयतु सुकृतं सकलभुवनकमनीयम्।।
विसृज विषादं मुञ्च विवादं संत्यज खरनिश्वासम्।।[८२]

शंकर गौरीक विरहमे व्याकुल भए हुनका मान त्यागि शृंगार करबाक हेतु कहैत छथिन-

सरसिजवदने केलीसदने रचय चरणविन्यासम्।
इयमपि सहसा हिमकरमहसा वहति निशा परिहासम्।।[८३]

पुनः गौरीक विरह वर्णन तँ आओर अधिक चमत्कारी अछि-

आकाशे भ्रमरा भ्रमन्ति शबराः पुष्पसृजो वागुराः।
कुञ्जे किंशुक कोरके हितवहः पापर्द्धिकारः स्मरः।।
जालं दिक्षु सुधांशुकान्तिनिकरः श्येनो वसन्तानिल-
श्चेतो मे हरिणः क्व गच्छतु यतः सर्वत्र वामो विधिः।[८४]
अर्थं वक्ति विलोचनं यदि यदि श्रोत्रं पुनः स्मारकं
देहं यद्युपदेशकारि लिखनं कुर्वीत चेतो यदि।
सन्तापस्य लिपिर्भवेदपि तदा निःश्वासवातोर्मिभिः
सामग्र्या किल तस्य सुन्दरि नं चेद्वैग्र्यपमुत्पादयेत्।[८५]

यदि हमर आँखिए अर्थ कहए, हमर काने स्मरण दिआबए, देहेसँ हुनका [शंकर के] उपदेश भेटि जाइन, यदि हृदयहि लेखक भए जाए, दीर्घश्वासरूपी सन्तापक उर्मि [आदि सामग्री] द्वारा हम अपन व्यथा लिखि पठाबी, तँ की शंकरकेँ विकलता नहि हेतनि? [वक्रोक्ति]।

मदनपहीपतिभुवनविजयकरमचलसुतातनुरूपा।
चेतसि चित्रितमिव वनचम्पकरोचिरुचिरप्रतिरूपा।[८६]

'गीतगौरीपति'मे शिवगौरीक शृंगारिक पक्षकेँ लए हुनका सभक परस्पर स्नेह अभिव्यंजना अछि किन्तु मैथिलीक कविलोकनि हुनका सभक विरहमे एकटा आदर्शक चित्र उपस्थित कएने छथि। शंकर बूढ़, छथि तैं की गौरीकेँ एहिसँ उपेक्षाक भाव नहि होइत छनि, ओ [महादेव] हुनक प्रियजन छथिन। तैं

कनेको कालक हेतु यदि आँखिसँ कात भए जाइत छथिन तँ गौरी व्याकुल भए जाइत छथि।

सभकेँ दौड़ि-दौड़ि पुछथि विकल गौरा।
आहे, एहि पंथ देखल दिगम्बर रे की।[८७]

गौरी दिगम्बरक विरहमे हुनक रूप वर्णन करतै कहैत छथि–

देखइत बुढ़ सन बसथि सभक मन
आहे लखइत पुरुष पुरन्दर रे की।
अपने ने आयल शिव घर नहि लोड़ी थिक
आहे गनपति अउरि पसारल रे की।।
बसहा चढ़ल शिव फिरथि आनन्द वन
आहे घुमि-घुमि डमरू बजाबथि रे की।
भनइ विद्यापति सुनु गौरा पारवति
आहे इहो थिक त्रिभुवन नाथे रे की।।[८८]

मैथिली पदमे प्रणयी-हृदयक सहजता ओ निश्छलता विशेष रूपेँ मुखरित भेल अछि। निम्नलिखित उद्धरणमे ई तथ्य आओर स्पष्ट होएत–

मोर भंगिया भोला कोन राखल बिलमाए।
गौरि विकल मन पुछथि पथिक सौं हरक उदेस कहु पाए।
जीवनाथ मोर कतए गेल छथि, तें नहि भवन सोहाए।
जखन देखथि मुख फेरथि कतहु नहि तकितहिं रहथि सदाय।।
से जे प्राणपति कतए गेल छथि एकसरि देलन्हि नड़ाए।
बसथि तपोवन हरलन्हि मोर मन सिंगी नाद बजाए।
हुनि लए हम जे कठिन व्रत साधल पथ हेरि नयन झझाए।[८९]

* * * *

उगना रे मोर कतए गेला। कतए गेला शिव किदहु भेला।।
भाङ नहि बटुआ रुसि बैसलाह। जोहि हेरि आनि देल हँसि उठलाह
जे मोरा कहता उगना उदेस। तनिकहु देब कर कंगना बेस।।

नन्दन वनमे भेटल महेस। गौरिमन हरषित मेटल कलेस।।[१०]

* * * *

पुछइत फिरै गौरा बटिया हे राम
कहु रे माई जाइत देखल मोर भंगिया हे राम।।
हाथ भसम कर गोला हे राम।
बैल रे चढ़ी कवन वन गेल भोला हे राम।
भिखिआ मंगैते गीत गवइत हे राम।
दान रे लेते फिरे योगी डमरू बजबिते हे राम।
वैद्यनाथ जस तोहे लेहु हे राम।
गौरी रे पति साहेब राम भगति देहु हे राम।[११]

* * * *

बसहा भिरल पलान रे कर धए लेल डोरी।
पन्थ चलल नहि जाए रे, व्याकुल भेल गौरी।।
साँझि पड़ल वन माझि रे, गणपति छथि कोरा।
अबहुँ करिअ दृढ़ ज्ञान रे बुढ़ भंगी मोरा।।
आक धुथुर केर चूर रे फाँकथि भरि गला।
परिजन भूत बेताल रे ओढ़न बघछाला।।
रत्नपाणि धरु ध्यान रे विनती करजोरी।
हर थिक त्रिभुवननाथ रे सुनु गौरी मोरी।।[१२]

एवं प्रकारेँ मैथिलीक कवि शिव-गौरीक विरहक एकटा अलौकिक चित्र उपस्थित कयने छथि।

एम्हर नेपालक राजदरबारमे गौरीशंकरक शृंगारिक पक्षकेँ ध्यानमे राखि काव्यरचनाक प्रवृत्ति आरम्भ भेल। ओना एहि प्रवृत्तिक विकास नहि भए सकल, किन्तु थोड़ रचनामे, एहि प्रकारक वर्णन केहन विलक्षण अछि तकर उदाहरण निम्नलिखित कविता अछि-

हरि हरि पहु गेल परिहरि।
विषम बसन्त वेआपित नयन नीर पर ढरि ढरि।।
काहि कहब दुख आपन केओ न समाहर हे।
यतने रतन हमे पाओल विहि विघटाओल रे।
निअ अगेआने गमाओल गिरिसम गौरव रे।
विहि मोहि देल पराभव जिबितहि रौरव रे।
मने जनु झाँखब नव धनि कह वंशमणि रे।
अवस आओत तुअ वालमु पुरूब प्रेम गुनि रे।।[१३]

एहि वर्णनसँ ई विदित होइत अछि जे संस्कृत साहित्यक गौरीशंकर यौवन ओ ऐश्वर्य युक्त छथि। हुनका सभके दारिद्र्यक लेश नहि छनि। किन्तु मैथिली साहित्यमे ओ एकटा गरीब दम्पतीक रूपमे अधिकतर वर्णित छथि। वृद्धवर [शंकर] केँ तरुणी भार्या [गौरी] गार्हस्थ्य जीवनमे धन–सम्पत्तिक अभाव एवं परिजनक नामपर भूत–बेताल आदि एहेन विसंगति उपस्थित करैत अछि जे करुणोत्पादक भए गेल अछि।

दुनू साहित्यक एहि प्रकारक अन्तरक कारणक उल्लेख अगिला अध्यायमे होएत, सम्प्रति एतबा कहब आवश्यक जे गौरीशंकरक शृंगारिक वर्णन जेना संस्कृत साहित्यमे मानवीय संवेदनाकेँ अभिव्यंजित करैत अछि तेना मैथिलीमे नहि। दाम्पत्य जीवनक अन्य पक्ष, जेना नोक–झोंक आदिक वर्णनमे मैथिलीक कवि लोकनि विशेष सफलता प्राप्त कएलनि अछि। एकटा आदर्शकेँ प्रस्तुत करबाक लोभमे ओ लोकनि [मैथिलीक कवि] यथार्थक उपेक्षा नहि कएलनि एवं गौरीक मुखसँ जे गार्हस्थ्य जीवनक सुख–दुःखक वर्णन भेल, ताहिसँ हुनक सौभाग्यक अपकर्ष नहि मानलनि, प्रत्युत ओकरा जीवनक यथार्थ मानि स्वीकार कएलनि।

* * * *

१. *कुमार संभव : सर्ग १– श्लोक ४९.*

२. *कुमार संभव : सर्ग १– श्लोक ४६.*

३. *कुमार संभव : सर्ग १– श्लोक ३१.*

४. कुमार संभव : सर्ग १– श्लोक ३४.

५. कुमार संभव : सर्ग १– श्लोक ४७.

६. कुमार संभव : सर्ग १– श्लोक ४८.

७. कुमार संभव : सर्ग १– श्लोक ४०, ४२, ३६, ३७ आदि।

८. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद सं० ७८२.

९. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद सं० ७८३.

१०. कुमार संभव : सर्ग ५– श्लोक १–२.

११. कुमार संभव : सर्ग ५– श्लोक ८.

१२. कुमार संभव : सर्ग ५– श्लोक ९, १०, ११.

१३. कुमार संभव : सर्ग ५ – श्लोक २०, २१, २२, २६.

१४ अ. कुमार संभव : सर्ग ५– श्लोक २८.

१४ आ. महेश्वर विनोद [उत्तरार्द्ध]

१५. मित्रमजुमदार विद्यापति : पदसंख्या ११४.

१६. कादम्बरी : मंगलाचरण।

१७. विद्यापति : विमन बिहारी मजुमदार : पद सं० ७७३.

१८. कादम्बरी [बाणभट्ट] : मंगलाचरण – २.

१९. मैथिली शैव साहित्य : डा० रामदेव झा– पृ० १६७.

२०. अभिज्ञान शाकुन्तलम् : मंगलाचरण।

२१. शिवलीलार्णव : श्री नीलकण्ठ दीक्षित– एकादश सर्ग– श्लोक १४.

२२. कुमार संभव, अध्याय ३ मे द्रष्टव्य।

२३. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद सं० ९०५.

२४. कुमार संभव : सर्ग ७– श्लोक सं० ३२.

२५. कुमार संभव : सर्ग ७– श्लोक सं० ३३.

२६. *कुमार संभव : सर्ग ७– श्लोक सं० ३४, ३५.*

२६ अ. *विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद सं०*

२७ आ. *चन्द्र पद्मावली– पद सं० ७९.*

२६ इ। *स्व० ईशनाथ झा [लोककण्ठ सँ संगृहीत]*

२७. *कुमार संभव : सर्ग ७– श्लोक २४, २५, २७.*

२८–२९. *कुमार संभव : सर्ग ७– श्लोक ३८, ३९ एवं ४२.*

३०. *विद्यापति : मजुमदार*

३१. *कुमार संभव : सर्ग ७– श्लोक ४७, ५४, ७२, ७६, ७९, ८०, ८१, ८२, ८५, ८६, ८७.*

३२. *कुमार संभव : सर्ग ६– श्लोक ३७, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६.*

३३. *कुमार संभव : सर्ग ७– श्लोक ५०.*

३४. *मान्यभक्तिरथवा सखीजन : सेव्यतामिद्मनंगदीपनम्।*
इत्युदारमभिधाय शंकरस्तामपाययत पानमम्बिकाम्। ७७
पार्वतीं तदुपयोगसम्भवां विक्रियामपि सतां मनोहराम्।
अप्रतर्क्यविधियोगनिर्मितामाम्रतेव सहकारतां ययौ।।७८।।
तत्क्षणं विपरिवर्तितह्रियोर्नेष्यतो : शयनमिद्धरागयो :।
सा बभूव वशवर्तिनी द्वयो : शूलिन : सुवदना मदस्य च।।७९.।
घूर्णमाननयनं स्खलत्कथं स्वेदबिन्दुमदकारणस्मितम्।
आननेन न तु तावदीश्वरश्चक्षुषा चिरमुमामुखं पपौ।८०।।
तां विलम्बि तपनीयमेखलामुद्वहज्जघनपौरदुर्वहाम्।
ध्यानसंभृतविभूतिरीश्वरः प्राविशन्मणिशिलागृहं रहः।।८१।।
तत्र हंसधवलोत्तरच्छदं जाह्नवीपुलिन चारुदर्शनम्।

अध्यशेत शयनं प्रियासखः शारदाभ्रमिव रोहिणीपतिः।।८२।।

क्लिष्टकेशमवलुप्तचन्दनं व्यत्ययार्पितनखं समत्सरम्।

तस्य तच्छिदुरमेखला गुणं पार्वतीरतमभून्न तृप्तये।।८३।।

केवलं प्रियतमा दयालुना ज्योतिषामवनतासु पंक्तिषु।

तेन तत्प्रतिगृहीतवक्षसा ने त्रमीलनकुतूहलं कृतम्।।८४।।

स व्यबुध्यत बुधस्तवोचितः शातकुम्भकमलाकरैः समम्।

मूर्च्छना परिगृहीतकैशिकैः किन्नरैरुषसि गीतमंगलः।।८५।।

ऊरुमूलनखमार्गराजिभिस्तत्क्षणं हृतविलोचनो हरः।

वाससः प्रशिथिलस्य संयमं कुर्वतीं प्रियतमामवारयत्।८७।।

स प्रजागरकषाय लोचनं गाढ़दन्तपरिताड़िताधरम्।

आकुलालकमंरस्त रागवान्प्रेक्ष्य भिन्नतिलकं प्रियामुखम्।।८८।।

तेनभिन्नविषमोत्तरच्छदं मध्यपिण्डित विसूत्रमेखलम्।

निर्मलेऽपि शयनं निशात्यये नोज्झितं चरणरागलांछितम्।।८९।।

३५. *कुमार संभव : सर्ग ८ – श्लोक ९०।*

३६. *कादम्बरी : बाणभट्ट– मंगलाचरण।*

३७. *विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद सं० ९८०*

३८. *सम्प्रति शिवलीलार्णव दुर्लभ ग्रन्थ भ' गेल अछि। गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठमे एक प्रति सुरक्षित अछि, जकर सम्पादक त० गणपति शास्त्री थिकाह।*

३९. *शिवलीलार्णव : एकादशः सर्ग– श्लोक ७६.*

४०. *शिवलीलार्णव : एकादशः सर्ग– श्लोक २०.*

४१–४२. *महेश्वर विनोद : लालदास– उत्तरार्द्धकथा।*

४३. *विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद सं० ८०२.*

४४. ओना डा० जयकान्त मिश्र एहि पदके विद्यापतिक अनुकरण मात्र मानैत कहैत छथि –

ही मियरली रिपीट्स ऐण्ड इकोज विद्यापति

– ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर [वौल्यूम १] :

कीर्तनिया ड्रामा ओफ मिथिला : डा० जयकान्तमिश्र।

४५. पारिजात हरण : उमापति।

४६. हर गौरी विवाह [जगज्ज्योतिर्मल्ल]

४७. हरगौरी विवाह [जगज्ज्योतिर्मल्ल] २

४८. मैथिली शैव साहित्य : डा० रामदेव झा– पृ० ३४६.

५०. मैथिली शैव साहित्य : डा० रामदेव झा– पृ० २४६.

५१. कुमार संभव : सर्ग ८ – श्लोक ७.

५२. मैथिली शैव साहित्य : डा० रामदेव झा– पृ० २८५.

५३. मैथिली शैव साहित्य : डा० रामदेव झा– पृ० ३७५.

५४. चौंकि चुप्पे : श्री काशीकान्त मिश्र मधुप, पद सं० ३९.

५५. कुमारसंभवम् : सर्गः – ११

५६. रघुवंश : मंगलाचरण।

५७. मालविकाग्निमित्रम् : मंगलाचरण

५८. रागतरंगिणी

५९. महेशठाकुर कृत तत्त्व चिन्तामणि आलोक दर्पणसँ।

५९. क. शिव लीलार्णव : श्री नीलकण्ठ दीक्षित।

६०. कुमार संभव : सर्गः–५

६१. कुमार संभव : सर्गः–५

६२. कुमार संभव : सर्गः–५

६३. *विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद संद० ६०८.*

६४, ६५, ६६. – *गौरी स्वयंवर : कविलाल।*

६७. *कान्हाराम कृत गौरी स्वयंवर सँ,*

६८. *कुमारसंभवम् : सर्ग ५– श्लोक २८–२९.*

६९. *महेश्वर विनोद [उत्तरार्द्धकथा]*

७०. *कुमार संभव : सर्गः ८, शलोक ४९.*

७१. *कुमार संभव : सर्ग – ८ श्लोक ५०, ५१, ५२.*

७२. *कुमार संभव : सर्ग – ८, श्लोक ५३, सँ ७० धरि।*

७३. *मैथिली सैव साहित्य : डा० रामदेव झा– पृ० ६९.*

७४. *मैथिली शैव साहित्य : डा० रामदेव झा– ६९.*

७५. *एकर उल्लेख अध्याय चारिमे कयल गेल अछि।*

७६. *शिवलीलार्णव : श्री नीलकण्ठ दीक्षित : मंगलाचरण– १.१*

७७. *गङ्गालहरी : पण्डितराज जगन्नाथ– श्लोक– ३.*

७८. *रुचिदत्तकृत तत्त्वचिन्तामणि प्रकाश सँ।*

७९. *द्वितीय सर्ग [गीत गौरीपति] : भानुदत्त, श्लोक–*

८०. *गीत गौरीपति : भानुदत्त : द्वितीय सर्ग– तेसरगीतक श्लोक ५*

८१. *गीत गौरीपति : भानुदत्त : अष्टम' सर्ग– दोसरगीतक श्लोक ६.*

८२. *गीत गौरीपति : भानुदत्त : अष्टम' सर्ग– दोसरगीतक श्लोक १.*

८३. *गीत गौरीपति : भानुदत्त : अष्टम' सर्ग– दोसरगीतक श्लोक ३.*

८४. *ओएह : चतुर्थ सर्गः, श्लोक– १.*

८५. *ओएह : पंचम सर्गः, श्लोक– १६.*

८६. *ओएह : षष्ठ सर्गः, श्लोक–*

८७. *लोककण्ठसँ।*

८८. *मैथिली शैव साहित्य : डा० रामदेव झा पृ० ६७.*

८९. *मैथिली शैव साहित्य : डा० रामदेव झा पृ० ६७.*

९०. *विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– गीत सं० ७९२.*

९१. *मैथिली शैव साहित्य : डा० रामदेव झा पृ० १५०.*

९२. *मैथिली गीतरत्नावली– गीत ८४.*

८३. *गीत दिगम्बर : वंशमणि झा– रमणि–रमणिका रोष।*

❑❑

अध्याय - ७

गौरीशंकर काव्य : सामाजिक परिस्थिति

मैथिली ओ संस्कृत साहित्य दुनूमे गौरीशंकरक अनेक रूप अनेक प्रकारेँ वर्णित कएल गेल अछि। कखनहुँ तँ ओ हिमवानक वैभवशाली नगरमे नव-दम्पतीक रूपमे रमण करैत परिलक्षित होइत छथि[१] तँ कखनहुँ बूढ़ यतिक एवं बालिका गौरीक युगल स्वरूपक रूपमे सामाजिक विसंगतिक परिचय प्रस्तुत करैत छथि।[२]

संस्कृत साहित्यक गौरी बालिका रहितहुँ मनस्विनी छथि।[३] ओ शंकरकेँ प्राप्त करबाक संकल्प करैत छथि तँ कोनो विघ्न-बाधासँ ओ विचलित नहि होइत छथि।[४] ओ शंकरकेँ वररूपमे प्राप्त कए अपन साधना सफल बुझैत छथि।[५] किन्तु मैथिलीक गौरी छोटि बालिका छथि, हुनका यतिकेँ देखि कोनो-कोनो ठाम डरो होइत छनि।[६] हुनक विवाह जखन एकटा बूढ़ वरक संग होएब निश्चित होइत छनि तँ हुनक माता, मेना अवश्य कनैत-बजैत छथि किन्तु गौरीकेँ एहि हेतु विशेष दुःख नहि होइत छनि। वस्तुतः छोटि बालिका विवाह वा दाम्पत्यक प्रसंगे सोचिए की सकैत अछि? एकर विपरीत संस्कृतक शिव तरुण ओ सुन्दर छथि।[७] गौरीक संग ओ सहस्रो वर्ष धरि रमण करैत छथि।[८] किन्तु मैथिलीक शिव बूढ़ एवं गार्हस्थ्यक सुख-दुःखसँ विरत छथि। विवाहसँ पहिने मेना एवं विवाहक पश्चात् गौरी हुनक एहि रूप-गुणसँ खिन्न भए कखनहुँ कनैत छथि, कखनहुँ अनेक वचनसँ आक्रोश व्यक्त करतै छथि।[९]

दुनू साहित्यक गौरीशंकरक एहि परिवर्तित रूपक पृष्ठभूमिमे तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति चित्रित भेल अछि।

अध्याय दोसरमे एकर वर्णन अछि जे कालिदास गौरीशंकरक छविकेँ कतेक रोचक ओ सुन्दर ढंगसँ प्रस्तुत कएलनि। तकरा संगहि इहो देखाओल गेल अछि जे कालिदासक पश्चात् ई युगल छवि कतेक लोकप्रियता प्राप्त कएलनि।

प्रश्न उठैत अछि जे जखन पुराणमे वर्णित कथाक आधार पर कालिदास महाकाव्यक रचना कएलनि तँ राधाकृष्ण सन अनुपम युगलकेँ छोड़ि, सीताराम सन उदात्त दम्पतीकेँ बिसरि गौरीशंकरक लीलाक वर्णनमे एतेक लीन किऐक ओ कोना भए गेलाह? एकर कारण भारतक तत्कालीन धार्मिक ओ सामाजिक परिवेश छल।

राधाकृष्णक प्रणय अतिशय सौन्दर्यक अभिव्यंजना करितहुँ सर्वसाधारणक हेतु– विशेषतः सामाजिक व्यवस्थाकेँ ध्यानमे रखैत जन–जनक हेतु आदर्श नहि भए सकैत अछि, कारण जे ओ परकीय प्रणय थिक। ककरहु हेतु पर–पुरुष वा पर–स्त्रीक प्रति समर्पण पारिवारिक विशृंखलताक कारण होइत छैक। तेँ ओ [परकीय प्रणय] वर्णन सामाजिक स्थितिकेँ सुधारबाक दृष्टिएँ हेय मानल जाए सकैत अछि।

एम्हर सीतारामक दाम्पत्य अपन उच्चतम आदर्शक रक्षा करितहुँ सर्व साधारणक हेतु ग्राह्य नहि होएतैक। हुनका [सीताकेँ] प्रणम्य मानितहुँ साधारण स्त्री ओहि कठोर अग्निपरीक्षाक कामना नहि कए सकैत अछि, जे परीक्षा सीताकेँ देमए पड़लनि। पतिक पौरुषक प्रति गौरव रखनिहारि नारीक हृदयक कोनो कोनमे अपन स्त्रीतत्त्वक प्रति स्वाभिमान सेहो रहैत छैक, जकर उत्कर्ष हेतु प्रत्येक स्त्री प्रयत्नशील रहैत अछि। तेँ सीतारामक दाम्पत्य आदर्श जे हो, ओहि प्रकारक दाम्पत्य जीवनक कामना साधारण लोक नहि करैत अछि। स्वकीय प्रणयक एकटा आदर्श होइतहुँ सीतारामक दाम्पत्य मानव स्वभावक अनुकूल नहि अछि।

किन्तु गौरीशंकरक दाम्पत्य एहि दुनू युगलसँ भिन्न एक दिस आदर्शक प्रतिमूर्त्ति तँ दोसर दिस यथार्थक अभिव्यंजना थिक, जे अनुकरणीय ओ कल्याणकर अछि। जाहि समयमे कालिदासक आविर्भाव भेल ओहि समयमे एकटा एहेन छविक आवश्यकता छलैक जे टुटैत सामाजिक व्यवस्थाकेँ पुनर्गठन कए सकए। कालिदास गौरीशंकरक दाम्पत्यमे ओ छवि देखलनि एवं तकरा अपन

काव्यमे ताहि रूपें वर्णित कएलनि जे ओहि समयमे तँ सहजहिँ, युग-युग धरि सहृदयक मनोरंजनक अभिन्न अंग भए गेल। गौरीशंकरक दाम्पत्यक प्रत्येक पक्ष हृदयग्राही ओ सुन्दर भेल।

आब एकर वर्णन आवश्यक अछि जे ओहि समयमे समाजक की स्थिति भए गेल रहैक।

कालिदासक जाहि समयमे आविर्भाव भेलनि ओहि समयमे बौद्धक प्रभाव बढ़ि रहल छलैक। हिन्दूक कट्टर सनातन धर्मावलम्बनक कारणें साम्प्रदायिक संकीर्णता बढ़ि रहल छलैक। बौद्ध लोकनि ओकर लाभ उठौलनि। ओ जातिगत भेदभाव नहि मानैत छलाह। अतः हिन्दूक उपेक्षित वर्गकेँ बौद्धधर्मक प्रति आकर्षण होएब स्वाभाविक छलैक। बौद्धक उपदेश लोककेँ वैराग्य दिस उन्मुख करैत छलैक। गार्हस्थ्य जीवनक प्रति हेय भावक अभिव्यंजना अनेक बौद्ध ग्रन्थमे पाओल जाइत अछि।

अश्वघोष रचित 'सौन्दरनन्द'मे 'स्त्री-विघ्न' नामक एकटा सम्पूर्ण अध्याय अछि, जाहिमे स्त्रीकेँ मायाविनी, नीच ओ कामुकताक प्रतिमूर्त्ति कहल गेल छैक। ओकर सम्पर्कसँ मनुष्य दुःखक भागी भए जाइत अछि-

स्वजनः स्वजनेन भिद्यते सुहृदश्चापि सुहृज्जनेन यत्।

परदोषविचक्षणाः शठास्तद्भार्याः प्रचरन्ति योषितः।।[१०]

अर्थात् स्त्री अनकर दोष दिस ध्यान दए लोककेँ सम्बन्धिक ओ मित्रमे परस्पर वैमनस्य कराए दैत छैक एवं दुर्व्यवहार करैत छैक।

एतबे नहि, अश्वघोष नारीक चरित्रके विष सदृश मानैत छथि। एकटा श्लोकमे कहल गेल अछि जे ओकर वाणी मधुर होइत छैक किन्तु ओ चतुर होइत अछि, जकर परिणामस्वरूप ओकर जीहमे मधु एवं हृदयमे हालाहल भरल रहैत छैक -

वचनेन हरन्ति वल्गुना निशितेन प्रहरन्ति चेतसा।
मधु तिष्ठति वाचि योषितां हृदये हालाहलं महद्विषं।।[११]

उपर्युक्त दुनू शलोकक अनुरूप भाव सम्पूर्ण अध्यायमे उल्लिखित अछि।[१२]

अश्वघोष कृत बुद्धचरितमे सेहो जीवनक नश्वरता, वृद्धावस्थाक ओ रुग्णावस्थाक त्रासद स्थितिक वर्णन विस्तारपूर्वक कएल गेल अछि। नारी ओ

पुरुषक परस्पर राग एहि कष्टक मुख्य कारण मानल गेल अछि। तेँ स्त्री-पुरूष एक-दोसरपर आँखियो ने उठाबए, तकर स्पष्ट निर्देश अश्वघोष एहि शब्दमे कएने छथि –

वञ्चयन्ति न यद्येवं जातरागाः परस्परम्।

जनुनैव क्षमं द्रष्टुं नराः स्त्रीणां नृणां स्त्रियः।।[१३]

बौद्ध साहित्यक उपर्युक्त उद्धरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे बौद्धधर्ममे जरा, मृत्यु ओ रोगकेँ जीवनक चरम सत्य मानल गेल छैक। एहिसँ मुक्ति पएबाक हेतु स्त्री-पुरुषक परस्पर रागक विच्छिन्नता आवश्यक मानल गेल अछि। रागक लुप्त होएबाक अर्थ होइत अछि कामक अभाव। काम स्त्री-पुरुषक विलास मात्र नहि, सृष्टिक कारण होइत अछि। तेँ बुद्धसँ भिन्न सम्प्रदायक भारतीय चिन्तक लोकनि जीवनक दुःखसँ अवगत रहितहुँ सृष्टिक प्रमुख तत्त्वकेँ नकारि नहि सकलाह अछि।

पुरुषार्थ चतुष्टयमे कामक स्थान प्रमुख मानल गेल अछि। कामकेँ नकारि देव सृष्टिक विनाशक मार्ग होइत अछि। तेँ ई कही जे स्त्री-पुरुषक परस्पर संयोगकेँ निषेधात्मक दृष्टिसँ व्याख्या करब जीवनसँ पलायन होइत अछि, से कथमपि समीचीन नहि होएत।

हिन्दू धर्मक मनीषी लोकनि जीवनक सुख-दुःखकेँ स्वीकार करब उचित मानलनि। किन्तु आदर्शक सीमासँ बद्ध भए यथार्थसँ ओ लोकनि पलायन नहि कएलनि। नर-नारीक आकर्षणक भाव शाश्वत अछि, तँ ओकर निषेध कए जीवनक लक्ष्यकेँ प्राप्त करब हिन्दू धर्मक अनुसारेँ असंभव अछि। स्त्री-पुरुषक विवाहक बन्धन एक पक्ष दोसराकेँ सुख-दुःख भागी बनाए दैत छैक। वस्तुतः ओ बन्धन पुरुषार्थ चतुष्टयक एकटा आवश्यक अंग मानल गेल अछि, जे अन्ततः जीवनमुक्तिक साधन होइत अछि।

दोसर जे सृष्टिक रक्षाक हेतु जीवन आवश्यक छैक। अतः जन्म, मरण, रोग, जरा आदिसँ सम्पूर्ण रूपेँ मुक्ति प्राप्त करब मानवक हेतु असम्भव छैक। तेँ अनेक उच्च आदर्शक प्रतिपादन कए हिन्दू धर्मक आचार्य लोकनि जीवनमे मुक्तिक साधन देखौलनि। राजा जनक वैभवशाली रहितहुँ विदेह कहल जाइत छलाह। कालिदास सेहो- `कान्तासम्मिश्र देहोऽप्यविषयमनसां'- कहि शंकरके नारीक प्रति अनुराग रखितहुँ मोक्ष उपाय मानलनि।

वस्तुतः हिन्दू धर्मक मनीषी लोकनि नर-नारीक आकर्षणकेँ जीवनक अनावश्यक ओ दुःखद अंग नहि मानि सृष्टिक कल्याणकर तथ्य मानैत छथि।

दोसर दिस बौद्ध लोकनिक मार्गकेँ जीवनसँ पलायन कहल जा सकैत अछि। स्त्री-पुरुषक परस्पर आकर्षणक भावकेँ रोकलो तँ नहि जा सकैत अछि।

फलतः विवाह प्रथाक प्रति निषेधात्मक दृष्टि रखितहुँ अनेक बौद्ध बिहार दुराचारक केन्द्र बनि गेल। बुद्धक उत्तरकालीन सामाजिक स्थिति अत्यन्त अव्यवस्थित भए गेल जकर उल्लेख अनेक इतिहासमे भेटैत अछि। जेना-

"बौद्धों के अनीश्वरवाद, अनात्मवाद तथा हिन्दूधर्म के प्रति विद्रोह भावना के कारण बौद्ध धर्म का प्रभाव भारत में शनैः शनैः कम होने लगा। बौद्ध संघ, मठ, बिहार, संघाराम जैसे पवित्र स्थान भिक्षु-भिक्षुणियों के अनाचार के कारण अपवित्र होने लगे, जिससे इस धर्म के प्रति जनता की अरुचि भी बढ़ती गई। वज्रयान के उदय के साथ वामाचार का प्रभाव बढ़ने लगा तथा तामसी प्रवृत्तियों के प्रति बौद्धों की आस्था बढ़ती गई। परिणामस्वरूप इस धर्म के प्रति लोगों का विश्वास उठता गया।------------------कालान्तर में हिन्दू धर्म के सरल और सुबोध आचार के कारण भी बौद्ध धर्म बहुत पीछे रह गया। शंकर, कुमारिल, मण्डन मिश्र आदि हिन्दू दार्शनिकों ने हिन्दू धर्म की ऐसी व्यापक व्याख्या की कि लोग उसकी ओर सरलता से आकृष्ट होकर बौद्ध धर्म को भूलने लगे।"[१४]

अतः साहित्यिक रचयिता लोकनि सेहो बौद्धक वैराग्योन्मुख उपदेशक प्रभावकेँ नष्ट कए मानव सुलभ ओ सृष्टिक हेतु कल्याणकर मार्ग-प्रदर्शनक आवश्यकता अनुभव कएलनि। एहि हेतु एकटा एहेन छविक आवश्यकता छलैक जे एकहि संग सरस एवं कल्याणकर होअए।

पुराणक अनेक कथामे एहि परिस्थितिक अनुरूप गौरीशंकरक प्रणयवर्णन सर्वाधिक उपयुक्त बुझि पड़लैक। तेँ कालिदास गौरीशंकरक प्रणय लीलाक उल्लेख कएलनि जे एकहि संग कल्याणकर, रोचक एवं अनुकरणीय अछि।

कालिदासक वर्णन शैली एतेक अधिक लोकप्रिय भेल जे गौरीशंकरक विषयक रचना संस्कृते टा मे नहि, अपितु भारतक प्रत्येक भाषामे उल्लिखित भेल। ओना देश, काल ओ स्थानक वैभिन्न्यसँ ओहि रचनामे वैभिन्न्य परिलक्षित होइत अछि, किन्तु शिव-गौरीक उल्लेख करब, कोनो ने कोनो रूपेँ, भारतीय

साहित्यकार लोकनिक अविभाज्य मनोरंजन भए गेल।

मैथिलिओमे एहि प्रकारक रचना कएल गेल। विद्यापति ओहि प्रकारक विवाहकेँ सकारात्मक दृष्टिसँ देखैत छथि–

शुभ शुभ कए सिरि गौरि वियाहू

इहो वर लिखल लिलाट।।[१५]

पश्चात् अनेक कवि एहि प्रकारक असंगत, अनमेल विवाहकेँ शुभ शुभ कहबाक विरोध कएलनि, किन्तु से अत्यल्प रहल।

ई परम्परा मैथिलीमे अध्यावधि अविच्छिन्न रूपेँ आबि रहल अछि। यद्यपि आजुक युगमे ने तँ पुरुषक बहुविवाह आदरक दृष्टिसँ देखल जाइत अछि आ' ने बालिका स्वयं अपनाके एतेक निरीह मानैत अछि जे बूढ़ वा दरिद्र वरकेँ प्रसन्नतापूर्वक वरण करए। किन्तु नचारीक परम्परामे एखन धरि अन्तर नहि आएल अछि। गौरीशंकरक दाम्पत्यकेँ आदर्श मानितहुँ हुनक रूपक परम्परा जे विद्यापतिसँ आरंभ भेल से आइ धरि ओही रूपेँ वर्णित भय रहल अछि। तेँ ई कहब प्रायः असंगत नहि होएत जे शिवगौरी काव्यक रचनासँ मैथिलीक आधुनिक युगक परिवर्त्तनक चित्रण प्रति साहित्यकार उदासीन भए गेल छथि।

मैथिली साहित्यमे सेहो गौरीशंकरक उल्लेख तत्कालीन सामाजिक परिस्थितिक परिचय प्रस्तुत करैत अछि। जहिना संस्कृतमे गौरीशंकरक वर्णन कालिदाससँ आरंभ होइत अछि, तहिना मैथिलीमे विद्यापति एहि युगल मूर्त्तिक छविकेँ जनमानसमे अंकित कएलनि। जाहि समयमे विद्यापतिक आविर्भाव भेल, ओहि समयमे मुसलमानक शासन छल। तुर्क लोकनि भारत आबि अत्याचार करए लागल छल, जकर विशद वर्णन ओ कीर्तिलता ओ कीर्तिपताकामे कएने छथि।

धर्मक रक्षा करब भारतीयजनकेँ प्रमुख समस्या भए गेल रहनि। स्त्रीक सतीत्वक रक्षा ताहूमे मुख्य समस्या छल। तुर्क लोकनि अत्यन्त क्रूर ओ कामुक होइत छल। फलतः स्त्रीगणकेँ पर्दामे नुकाए रहए पड़लनि। एकर अतिरिक्त शीघ्रातिशीघ्र विवाहबन्धनमे बद्ध होएब सेहो आवश्यक छलैक जाहिसँ स्वामीक रक्षा ओ प्राप्त कए सकए एवं अत्याचारी तुर्कक दृष्टिसँ बाँचि सकए।

एक तँ पहिनहिँ सँ नारीके अबला कहि ओकर शोषण कएल जाइत रहलैक,[१७] दोसर परिस्थिति एहेन अएलैक जे नारी स्वयं अपनाके असुरक्षित एवं हीन मानए लागलि। फलस्वरूप बूढ़ सँ बूढ़ वरकेँ छोटि बालिकासँ विवाह होमए लगलैक। विवाहकेँ वर-वधूक जीवनक संयोगसँ अधिक सामाजिक व्यवस्थाक मार्ग मानल जाइत छलैक, अतः एकटा पुरुष अनेक विवाह करैत छलाह। ओना ई शास्त्र विरुद्ध नहि छलैक, हिन्दू धर्ममे बहुविवाहक विधान छैक, किन्तु ओहि समयक सामाजिक परिस्थिति एहेन छलैक जे एहि कार्यमे पुरुषकेँ प्रोत्साहन सेहो भेटैत छलनि। वरक माए, पिता वा पितामह अथवा कन्यागतेक कोनो पुरुष सदस्य एकर विरोध नहि करैत छलाह। कतेक घटना तँ एहेन भेल जे पाँच वर्षक कन्याक एवं साठि वर्षक वर रहैत छलाह।

एहि परिस्थितिमे विद्यापति शंकरकेँ अत्यन्त बूढ़, भङेर एवं दरिद्रक रूपमे वर्णित कएलनि एवं गौरीकेँ सुकुमारि एवं छोटि बालिकाक रूपमे उल्लिखित कएने छथि। संस्कृत साहित्य जकाँ हिमवानक विभव वा मनाइनिक प्रसन्नताक कल्पना[१८] मैथिलीक गौरीशंकरक विषयक काव्यमे नहि परिलक्षित होइत अछि। मैथिलीक मनाइनि अत्यन्त दुःखी एवं कातर छथि। विद्यापतिसँ लए आधुनिक कालक कवि ईशनाथ झा[१९] धरिक रचनामे एहेन उल्लेख भेल अछि।

संस्कृत ओ मैथिली दुनू साहित्यमे गौरीशंकरक अनेक रूप होइतहुँ एतबा निर्विवाद रूपेँ कहल जा सकैत अछि जे हुनक वर्णन दाम्पत्यक आदर्शक रूपमे भेल अछि। एहिमे मानवक प्रणय मात्र नहि, अपितु जीवनक अनेक पक्षक चित्रण कयल गेल अछि जे समाज एवं साहित्यक उत्कृष्ट निधिक रूपमे उल्लेखनीय अछि।

* * * *

१. कुमार संभव: सर्ग ८-श्लोक २सँ ९०.

२. विद्यापति : विमान बिहारी मजूमदार- पद सं० ९०४ आदि।

३. कुमारसंभव : सर्ग ५- श्लोक १६.

४. कुमारसंभव : सर्ग ५- श्लोक १७ सँ ८६ धरि।

५. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार- पद सं० ७८२.

६. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार- पद सं० ६०७.

७. कुमार संभव : सर्ग ७– श्लोक ३२ सँ ३५ धरि।

८. कुमार संभव : सर्ग ८ एवं सर्ग ९।

९. विद्यापति : विमान बिहारी मजुमदार– पद सं० ९०४.

१०. सौन्दरनन्द : अश्वघोष– ८।३३

११. सौन्दरनन्द : अश्वघोष– ८।३५

१२. सौदरनन्द : अश्वघोष– ८।५०

१३. बुद्धचरित : अश्वघोष– ४।९५

१४. प्राचीन भारत का इतिहास : डा० जयशंकर मिश्र– ४।१४

१५. लोकण्ठ सँ प्राप्त।

१७. पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने– मनुस्मृतिक एहि वचनमे नारीक निरीहता व्यंग्य, जखन कि परस्पर रक्षा [नर–नारीक] एक–दोसराक सहयोगसँ होइत छैक। तँ नारी मात्रक हेतु ई वचन ओकर दौर्बल्यक परिचय करबैत अछि।

१८. हम नहि आजु रहब एहि आंगन– विद्यापति। गौरा कथि लए करब विवाह– ईशनाथ झा।

१९. कुमार संभव : ७।२५, २६.

□□

परिशिष्ट-१

विवाहक मन्त्र

१. लाजाहोमक मन्त्रः

आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा। इमाँ लाजाना वपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव। मम तुभ्यं च संवदनं तदग्निरनुमन्यतामियं स्वाहा।

अर्थात् हमर पति आयुष्मान् होथु। हमर सम्बन्धिक लोकनिक अभिवृद्धि होनि। हम एहि लाबाके आगिमे द' रहल छी। पतिक कुलक समृद्धि होनि। ई अग्नि हमर एवं अहाँक एकीकरणक अनुमति दिअए।

२. पाणिग्रहणक मन्त्रः

गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः। भगो म अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वाऽदुर्गार्हपत्याय देवाः। अमोऽहमस्मि मात्वं मा त्वमस्य मो अहम्। सामाहमस्मि ऋक्त्वं द्योरहं पृथिवी त्वं तावेहि विवहावहै सह रेतो दधावहै प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान् विन्दावहै बहून्। ते सन्तु जरदष्टयः। सम्प्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतम्।

अर्थात् अहाँक हाथ अपन हाथमे ल' रहल छी। अहाँक सौभाग्य बढ़ए। अहाँ हमरा संग स्वस्थ रही। ऐश्वर्य एवं प्रकाशक देवता भग, अर्यमा एवं सविता हमरा अहाँकेँ प्रदान कएलनि, जाहिसँ हम गृहस्थ आश्रमक संग-संग निर्वाह करी। हम विष्णु छी, अहाँ लक्ष्मी छी। हम साम छी, अहाँ ऋक् छी। हम आकाश छी, अहाँ पृथिवी छी। हम विवाह करी, सन्तान उत्पन्न करी, परिवारक अभिवृद्धि करी एवं सए वर्ष धरि देखी, सुनी एवं जीबी।

३. कन्या पाथरपर पएर रखैत अछि, तकर मन्त्र।

आरोहेममश्मानमश्मेव त्वं स्थिरा भव। अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः। अर्थात् अहाँ एहि शिलापर पएर राखू, एहि शिला जकाँ अहाँ स्थिर प्रेमवाली बनू। कलह कयनिहार एवं करौनिहार शक्तिकेँ अहाँ पराभूत क' सकी।

४. सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनीवती। यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः। यस्यां भूतं सममवद्यस्यां विश्वमिदं जगत्। तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमँ यशः।

अर्थात् हे सरस्वती, हे वैखरीवाणी, हे सफल वाणी, हे अन्नमयी वाणी, अहीँ सँ सभटा उद्भूत अछि, अहीँमे सभटा स्थित अछि। हम ई गाथा गाबि रहल छी जे मातृरूपा स्त्रीक उत्तम यश थिकैक।

५.तुभ्यमग्रे पर्यवहन्सूर्यां बहुतना सह। पुनः पतिभ्यो जायां दाग्ने प्रजया सह।।

अर्थात् हे अग्नि, अहाँक हेतु देवता एहि कन्याकेँ एवं हमर पालन कएलनि। आइ हिनका हमर हाथमे देलनि।

६. सप्तपदीक एक-एकटा मन्त्र पढ़ैत वर-वधू एक-एकटा डेग उठबैत छथि। सात टा डेग एवं सात टा वाक्य पूर्ण भेलेपर विवाह सम्पन्न मानल जाइत अछि। एकर मन्त्र एहि प्रकारक अछि-

एकमिषे विष्णु स्त्वानयतु। द्वे ऊर्जे विष्णु स्त्वा नयतु।

त्रीणि रायस्पोषाय विष्णु स्त्वा नयतु। चत्वारि मयो भवाय विष्णुस्त्वा नयतु।

पञ्च पशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु। षड् ऋतुभ्यः विष्णुस्त्वा नयतु।

सखे सप्तपदा भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु।

अर्थात् हे सखी, अन्नवृद्धिक हेतु, बलक हेतु, धनवृद्धिक हेतु, कल्याणक हेतु, पशुवृद्धिक हेतु, छबो ऋतुक संग आनुकूल्यक हेतु, सात लोकमे ख्यातिक हेतु, विष्णु अहाँ के हमरा संग आनथि, अहाँ हमर व्रतमे सहचरी बनी।

मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु, मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिस्त्वा नियुनक्तु मह्यम्।

८. वधूकेँ वर उपस्थित लोकक समक्ष प्रस्तुत करैत मन्त्र पढ़ैत छथि-

सुमंगलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत। सौभाग्यमस्यै दत्त्वा याथास्तं विपरेत न।।

अर्थात् एहि मंगलशालिनी वधूकेँ अहाँ सब देखू, हिनका सौभाग्यक आशीर्वाद दए एवं अपन-अपन घर जाउ।

९. विवाहक चारिम दिन चतुर्थीकर्म होइत छैक, ओहिमे स्त्रीक अमंगलके क्षपित करबाक हेतु वर मन्त्र पढ़ैत छथि, जकर अर्थ होइत छैक जे अहाँक भीतर पति, सन्तान, पशु, गृह, यशक हेतु भाव होअए, जे अहाँक शरीरमे निन्द्य होअए, ओहि शरीरांशकेँ हम जीर्ण करैत छी, नष्ट करैत छी, आब हमरा संग अहाँ नवीन उज्ज्वल शरीरक संग आउ। – पारस्कर गृहसूत्र [१.६-८] भारतीय संस्कृतिमे प्रणयक आदर्श एवं गौरीशंकर [अध्याय ३] क सन्दर्भमे ई द्रष्टव्य।

□□

परिशिष्ट–२

शिवक द्वारा मदन-दहनक रहस्य

शिव जाहि समयमे आत्म–प्रत्यक्ष करए चाहैत छथि, ओहि समयमे काम हुनक मार्गमे विघ्न उपस्थित करैत छथिन। ओहि कामकेँ ओ अपन वशमे करैत छथि। बोधि–लाभ करबासँ पूर्व भगवान् बुद्धकेँ सेहो मार–विजय करए पड़ल रहनि।

काम तथा शिवक सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ छनि। कामक संज्ञा वृष छियनि, वृष नाम मेघक थिकैन्हि। मेघे वृषा इन्द्रक कामरूप पुरुष थिकाह, अर्थात् वृष, काम तथा मेघ एकहि तत्त्वक नामान्तर थिक। जाहिमे मेघकेँ दूत कल्पित कए यक्ष अपन कामोद्‌गारक प्रकाश करैत अछि, ओकरा बेर–बेर परामर्श छैक जे ओ शिवकेँ प्रसन्न कए, भक्तिसँ नम्र भए हरचरणन्यासक परिक्रमा करए तथा अपन स्निग्ध गंभीर घोष पशुपतिक संगीत–साजक हेतु उपयोगमे आनए।

कामक निग्रह कयनिहार शिव कामसँ कोन प्रकारेँ प्रसन्न भए सकैत छथि एकर उत्तर शिव पार्वतीक विवाह थिक।

पार्वती सुषुम्ना नाड़ीक नाम छिऐक। मेरुदण्ड हिमालय थिक। एकरे अन्दर सुषुम्ना छैक। एहि मेरुदण्डमे छओ टा चक्र तथा तैंतीस पर्वत तथा अस्थिपोर छैक। ई पोर एक–दोसरासँ सटल रहैत छैक। मेरु सएह पर्वत छिऐक [पर्वाणि सन्त्यस्य]। ओहिं पर्वतक अन्दर रहनिहारि सुषुम्ना पर्वतराजक पुत्री पार्वती थिकीह।

अस्थिपोरक अन्दर एकटा छिद्र छैक, पर्वत परस्पर मिलनसँ ओ रन्ध्र

दीर्घ–नलिकाकार भए जाइत छैक। एकरे अन्दर सुषुम्ना नाड़ी छैक। ई नाड़ी मस्तिष्कसँ होइत पृष्ठ–भूमिमे अवस्यूत भए सभसँ नीचाँ मूलाधार चक्र धरि अबैत अछि। पर्वास्थिक अन्दर पहिने श्वेत, पुनः विभूति वर्णक मज्जामय [मूसारंगक] पदार्थ भरल रहैत छैक जे मस्तिष्क कोषमे सेहो पाओल जाइत छैक। एही चित्रासंज्ञक सुषुम्नाक अन्दर एकटा सूक्ष्म विवर छैक जे नीचाँ सँ ऊपर धरि आयत रहैत छैक। सुषुम्नाक वामा कात इडा तथा दहिना कात पिंगला नामक दू टा नाड़ी छैक, जे सुषुम्नासँ सम्बद्ध रहैत छैक तथा सहस्रारमे पसरैत अन्तमे कपालस्थ आज्ञाचक्रमे सुषुम्नामे मिलि जाइत छैक। ई नाड़ी सभ प्राणक वाहिका छिऐक तथा प्राणे जीवन–तत्त्व थीक।

भौतिक पक्षमे एहि प्राणक आधार ई सभटा नाड़ी–जाल तथा षट्चक्र छिऐक। नाड़ीक सूक्ष्मताक कोनो सीमा नहि छैक। ओकर संख्या योग–शास्त्रक अनुसार करोड़ छैक। वस्तुतः आधुनिक शरीर–शास्त्री लोकनिक हेतु सेहो समस्त नाड़ी संख्याक निर्धारण कठिन छैक। एहि सभटामे मुख्य सुषुम्ना सएह छिएक। स्थूल–शरीर–विज्ञान जीव–तत्त्वक भौतिक आधारक परिचय प्राप्त कए सकैत अछि परन्तु ओकर भोगायतन [फिजियोलौजिकल] रूप प्रयोगसाध्य छैक। परन्तु योगविद्या मानसिक पक्षमे सेहो प्राणक गतिक निर्देश तथा सूक्ष्म परिचय करबैत अछि। तेँ भौतिक प्रयोगसँ जाहि वस्तुक ज्ञान नहि भए सकैत अछि, ध्यानमे ओही शारीरिक रहस्यक मानसिक क्रियाक संग प्रत्यक्ष भए जाइत छैक। तन्त्र–ग्रन्थमे एकर वर्णन दू प्रकारेँ प्राप्त होइत अछि। कतहु तँ भोगायतन–पक्षमे शरीर–संघटनमे जीवन–तत्त्वक अधिष्ठान बुझएबाक हेतु सुषुम्ना आदि संज्ञासँ कार्य लेल जाइत छैक तथा कतहु ओहि वर्णनके आध्यात्मिक स्वरूप दए शिव, पार्वती, कुमार, प्रमथ आदि संज्ञा सभ कल्पित कए योग–प्रत्यक्ष शब्दक द्वारा प्रकट कएल जाइत छैक। षट्–चक्रक स्थान तथा क्रम एहि प्रकारेँ अछि–

१– मूलाधार [कौक्सिजियल रीजन]:

एकर संयोग गुर्दा सँ छैक। एहिमे चारि पर्व [वर्टिब्री] छैक जे उपरका पर्वक अपेक्षा छोट तथा अपूर्ण दशा मे छैक। ई चारू पृथक्–पृथक् स्फुट स्वरूपक नहि भए एकहि अस्थि जकाँ प्रतीत होइत छैक जकरा अंग्रेजीमे कौक्सिक्स कहैत छैक। कीकसा अस्थि सेहो एतहि ज्ञात होइत अछि। कुण्डलिनी

शक्ति एतहि निवास करैत अछि। शिव-पार्वतीक विवाहमे कुण्डलिनीकेँ जगौलाक बादे ओकरा ब्रह्माण्ड अथवा मस्तिष्कमे लए गेल जाइत छैक। एकरे योगक परिभाषामे सर्पिणी कहैत छैक, कारण ई सर्पिणी जकाँ कुण्डल मारिकए सूतल रहैत छैक। मूलाधारमे पृथ्वी तत्त्वक स्थान छैक।

२- स्वाधिष्ठान [सकेल रीजन]

एकर अधिष्ठान लिंगमे छैक। एहिमे पाँच पर्व छैक। ई पाँचोटा पर्व एकहि अस्थिमे जुटल रहैत छैक जकरा अंग्रेजीमे सेक्रम कहैत छैक। एही दुनू अस्थिक नओ पर्वकेँ निकालिकए आधुनिक शरीरशास्त्री मेरूदण्डमे २४ अस्थिपोरक गणना करैत अछि। परन्तु भारतीय चिन्तक लोकनि एहिं शक्तिकेँ तैंतीस पर्वसँ युक्त मानलनि अछि। स्वाधिष्ठान चक्रमे चल-तत्त्वक अधिष्ठान छैक।

३- मणिपूर [लम्बर रीजन]:

एकर स्थान नाभि छैक तथा मेरुदण्डक एहि भागमे पाँचटा पर्व छैक। तेज एकर तत्त्व छैक। एहि तीनटा चक्रक भेद कए लेने योगी विराट् भावसँ युक्त भए जाइत अछि, ओकर मोहनिद्रा भंग भए जाइत छैक।

४- अनाहत [डोर्सल रीजन]:

मेरूदण्डमे १२ पर्वयुक्त ई चक्र हृदयमे स्थित अछि। ई वायु-तत्त्वक स्थान थिकैक।

५- विशुद्धिचक्र [सर्जिकल रीजन]:

एहिमे सातटा पर्व छैक तथा ई ग्रीवामे स्थित अछि। एतहिसँ आकाशक गुण शब्दक जन्म होइत छैक। एकर भेद कए लेने योगीकेँ आकाश-तत्त्व पर विजय प्राप्त भ' जाइत छन्हि।

६- आज्ञा चक्र:

मस्तिष्क प्रदेशक भ्रू मध्य अथवा त्रिकुटीमे योगी एकर स्थान मानैत छथि। एतहि सुषुम्नाक अन्त भए जाइत छैक। एतय मन, बुद्धि तथा अहंकारक निवास छैक। एतहि ज्ञानचक्षु छैक जे तृतीय नेत्र थिक। एतहि शिवक वास छनि।

जखन योगी पाँचटा चक्रकेँ सिद्ध कए लैत छथि तखन हुनका काम-

बाधा पीड़ित नहि कए सकैत छनि। शिवक हेतु कालिदास कहैत छथि- **अरूपहार्यं मदनस्य निग्रहात्**-अर्थात् मदनक निग्रहक कारणेँ रूप अथवा सौन्दर्य हुनक चित्तके नहि मोहित कए सकैत छनि।

पहिने शिव मदनक दहन करैत छथि तखन पार्वतीक संग विवाह कए षड़ानन कुमारकेँ जन्म दैत छथि।

आज्ञाचक्रक ऊपर सहस्रदल कमल छैक [सेरेब्रल रीजन] जतए साक्षात् शिव निवास करैत छथि। कुमारक जन्म शिवक स्कन्दित तेजसँ होइत अछि। ई तेज पार्वती१ रूपी सुषुम्नामे निक्षिप्त भए क्रमशः छवो चक्रक द्वारा पुष्ट तथा ललित होइत स्कन्दकेँ जन्म दैत अछि। एही कारणेँ ओ छओ माताक पुत्र अथवा षाण्मातुर कहल गेल छथि। देवलोक हुनक स्तुति करैत अछि।

१. सुषुम्न। सुम्न- आनन्द। षुअभिषवे धातुसँ सुषुम्न बनैत अछि। षट्चक्र भेदक पश्चात् स्कन्द जन्म लैत छथि। लोकमे स्कन्दक सम्बन्ध छओ संख्यासँ अछि- षड़ानन, स्कन्द षष्ठी।

आज्ञाचक्रक जे चित्र आर्थर एवेलन देने छथिन्ह ओहिमे कुमार षड़ानन देखाओल गेल छथि।

२. षट् चक्र सुषुम्ना नाड़ीमे रहैत अछि। शरीर विज्ञानमे सुषुम्नाक पाँच स्वाभाविक विभाग होइत अछि। छठम सभसँ ऊपर छैक। जतय सुषुम्ना [स्पाइनल कोर्ड] क्रौंच रन्ध्र [मैगनम फोरामेन अर्थात् पैघ छिद्र] मे होइत मस्तिष्क अथवा ब्रह्माण्डमे पसरि जाइत छैक। एहि पाँचटा चक्रक शक्ति प्रवाहिनी नाड़ीक सम्बन्ध क्रमशः गुदा, लिंग, नाभि, हृदय तथा कण्ठसँ छैक। उदाहरणार्थ मणिपूर चक्र-नाभि देशक नियन्त्रण करैत अछि। परन्तु एकर स्थान सुषुम्नामे सएह छैक। एही प्रकारे अन्यत्र चक्रक विषयमे सेहो छैक।

कालिदास तँ मेघदूतोमे स्कन्दक जन्मक रहस्य सूत्ररूपमे लिखि देने छथि-

तत्र स्कन्दं नियतिवसतिं पुष्पमेघीकृतात्मा।
पुष्पासारैः स्नपयतु भवान् व्योमगंगाजलार्द्रैः।।
रक्षाहेतोर्नवशशिभृता वासवीनां चमूना-
मत्यादित्यं हुतवहमुखे संभृतं तद्धि तेजः।।१।।४३।।

अर्थात् एतए देवगिरि पर बसनिहार कुमारकेँ अपन अभ्र-पुष्पात्मक बनाए आकाश गंगासँ सिंचित पुष्पवृष्टिसँ स्नान कराएब। देवसेनाक रक्षाक हेतु पावकक मुखमे संचित सूर्यहुसँ अधिक प्रभावशाली शिवक तेज सएह कुमार थिकाह-

अत्यादित्यं हुतवहमुखे सम्भृतं तद्धि तेजः।।

इएह स्कन्दक परिभाषा थिक। हुतवह अर्थात् अग्नि नामक सुषुम्नाक मुखमे सूर्यहुसँ अधिक प्रकाशित शिवक तेज़ स्कन्द थिक। कोषमे स्कन्दक पत्नीक नाम देवसेना थिक। इन्द्रिय सभक सात्त्विक ताथ तामसिक वृत्तिक द्वन्द्वे देवासुर संग्राम थिकैक। जखन सतोगुणी इन्द्रिय सभ कामसँ हारए लगैत अछि तखन ओ समाधिमे बैसल शिवसँ प्रार्थना करैत अछि जे ओकरा शिव एकटा सेनापति प्रदान करथि। देवतो लोकनि सएह कहैत छथिन्ह।

तदिच्छामो विभो स्त्रष्टुं सेन्यान्यं तस्य शान्तये।।कु० २।५१।।

अर्थात् ओहि असुरकें परास्त करबाक हेतु हम सभ एकटा सेनापतिक कामना करैत छी। शिवजी मदन दहन कएलनि, तदुपरान्त उमाक तपस्यासँ सुषुम्ना नाडीक द्वारा योग-साधनासँ शिव-पार्वतीक विवाह भेल, अर्थात् व्यक्तिक चिदात्मक शक्ति जे अधोमुखी छल ओ अन्तर्मुखी भए सहस्त्रदलमे स्थित परबिन्दु शिवसँ संयुक्त भए जाइत अछि, पुनः विषयसँ ओकरा कोनो भय नहि रहैत छैक।

जे इन्द्रिय सभ आओर सभकें मथि दैत छैक, वैह प्रमथगणक रूपमे शिवक पार्षद [परिषदि साधु] भएकेँ रहैत छैक। '**अत्यादित्यं हुतवह मुखे सभृतं तद्धि तेजः**' केँ जनबाक हेतु तीनू नाड़ीक नाम बुझि लेब आवश्यक छैक। सुषुम्ना- वह्निस्वरूपा, सरस्वती, लोहितवर्णा। इडा-चन्द्रस्वरूपा, गंगा, सतोगुणी, अमृतविग्रहा, पीतवर्णा। पिंगला-सूर्यस्वरूपा, तैजसवर्णा, रौद्रात्मिका, वज्रिणी, यमुना, राजसी।

सुषुम्नाक नाम वहि अथवा हुतवह छैक। एहीमे अपन तेज हवन करबाक कारणेँ शिव यज्वा कहबैत छथि। साधनामे पुरुषक तेज एही वह्निक मुखमे संचित होइत रहैत छैक। जखन छवो चक्र भेदन भए जाइत छैक तखन ओहि कुमारक जन्म होइत छनि जनिक अध्यक्षतामे देवसेना कहियो

ने हारैत अछि। पुराणक अनुसार कुमार ओ छथि जे आजन्म ब्रह्मचारी होथि।

सहस्रदलमे जे शिव छथि ओएह अक्षर तत्त्व छथि। वैह समस्त ब्रह्माण्डक चित्-शक्ति थिकाह। मूलाधार चक्रमे शक्तिपीठ अछि जतए व्यक्तिक शक्ति निवास करैत अछि। शक्तिक तीनटा कोण कहल गेल अछि इच्छा, ज्ञान तथा क्रिया। एकरे नाम त्रिपुर थिकैक। एकर मध्यमे वास कएनिहारि शक्ति त्रिपुरसुन्दरी कहल गेलि छथि। एही त्रिपुर अथवा त्रिकोणमे कुण्डल मारिकए शान्त बैसलि शक्तिक शब्दगत कल्पना सर्पिणीक थिक। एही कारणेँ शिवक शरीरमे भुजंग लेपटाएल रहैत छनि तथा शिवकेँ अहिवलय धारण कएनिहार कहल गेल अछि। कालिदास कहैत छथि-

हित्वा तस्मिन् भुजग-वलयं शम्भुना दत्तहस्ता।

क्रीड़ाशैले यदि च विहरेत् पादचारेण गौरी।। [मेघ० १.६०]

मूलाधारमे ई सर्पिणी शिव-ज्योतिक चारूकात लेपटाएल रहैत अछि, परन्तु आज्ञा-चक्रमे पहुँचिकए जखन शिव-पार्वतीक संयोग भए जाइत छन्हि तखन ई कुण्डलिनी पूर्णरूपेण खुजि जाइत अछि मानू शिवजी अपन सर्पवलयकेँ त्यागि दैत छथि। जतए धरि शरीरशास्त्रसँ प्रत्यक्ष करबाक विषय अछि, ओतए धरि एहि प्रकारक त्रिकोणात्मिका शक्तिस्वरूपकेँ शल्यशास्त्र द्वारा हमरालोकनि नहि देखि सकैत छिऐक। मानस प्रत्यक्षसँ सम्बन्ध रखनिहार वस्तु यन्त्र द्वारा कोना जानल जाए सकैत अछि? एकर दर्शन योगपक्षमे ध्याने[१] द्वारा जानल जाए सकैत अछि। ज्योति अथवा तेज-स्फुलिंगक आकारक शिवलिंग एकरे प्रतीक थिक। शिव एही शक्तिक त्रिकोण अथवा त्रिपुरक विजय करैत छथि, तेँ हुनक संज्ञा त्रिपुर-विजयी छनि। मेरुदण्डरूपी पर्वतक ओर [सिरा] पर हुनके एकटा प्रदेशक नाम कैलास छिऐक। मेरुदण्डक उर्ध्वसिरा कैलास थिकैक जतय आज्ञाचक्र छैक। एही कैलास पर अलकापुरी छैक।

कालिदास कहैत छथि जे एतय कामदेव अपन शरपर चाप नहि चढ़बैत छथि -

मत्वा देवं धनपतिसखं यत्र साक्षाद्वसन्तं।

प्रायश्चापं न वहति भयान्मन्मथः षट्पदज्यम्।। मेघ०२ ।।१०

अर्थात् कैलासक उत्संगमे बसल अलकामे शिवक साक्षात् निवास जानिकए बाहरसँ कामकेँ अपन भ्रमरक डोरीवला धनुषक उपयोग करबाक साहस नहि होइत छनि। से उचिते, आज्ञा-चक्र धरि सिद्धिप्राप्त योगीकेँ कामबाधा पीड़ित नहि कए सकैत छैक। तेँ ने एतय हिमालये पर किन्नरीलोकनि मिलिकए त्रिपुर विजयक गीत गबैत छथि –

संसक्ताभिस्त्रिपुरविजयो गीयते किन्नरीभिः । मे० १.५६.।

ओतहि धनपतिक यश किन्नर गबैत छथि कारण शिव तथा धनपतिमे सख्यभाव छनि –

उद्‌गायद्भिः धनपतियशः किन्नरैर्यत्र सार्धम्।। मे० २।१८।।

धनपति कुबेरक अनुचर यक्ष अवसर पबितहिँ अपन कामरूप पुरुषकेँ शिवक उपासना करबाक हेतु आदेश दैत छथि। पार्वतीक संज्ञा गुहा, स्कन्दक गुह तथा यज्ञक गुह्यक थिक। एहूसँ हिनकासमक परस्पर सम्बन्धक संकेत प्राप्त होइत अछि। यज्ञ कामक मूर्त्ति थिक। हुनक नेत्रेसँ कामदेव जेना प्रकट होइत रहथि। तेँ कामसँ पूर्ण मनुष्य अवश्य गुह्यक वा रक्षा करबाक पात्र थिक। ओ अपन रक्षक हेतु ओहि देवक शरणमे जाइत छथि जे कामदेवकेँ भस्म क' देने छथि तथा पुनः जनिक अनंग जित् रूपसँ सेनानी गुहक जन्म भेल अछि।[१] शिवजी पिनाकपाणि छथि –

अरूपहार्यं मदनस्य निग्रहात्
पिनाकपाणिं पतिमाप्तुमिच्छति।।कु०५।५३।।

पिनाककेँ शिवक धनुष कहल गेल अछि। निरुक्तमे पिनाकक अर्थ थिक–

रम्भः पिनाकमिति दण्डस्य। नैगम काण्ड ३.४.।

अर्थात् रम्भ तथा पिनाक दण्डक नाम थिक। ओतहि ई कथा सेहो लिखल छैकः **कृत्तिवासाः पिनाकहस्तोऽवततधन्वेत्यपि निगमो भवति।**

मेरुदण्डहिक नाम पिनाक छिऐक। यैह शिवक धनुष थिक। एहि दण्डाकार धनुषक दू कोटि– सिरा अछि। निचलका कोटि मूलाधार चक्रमे छैक। एतय जे कुण्डलिनी पड़ल छैक, ओकरे पिनाकक प्रत्यंचा कल्पित कएकेँ ओकर दोसर सिराकेँ शिव आज्ञाचक्रमे ल' जाइत छथि। यैह धनुषक प्रत्यंचा चढ़ाएब अथवा अततधन्वा होयब थिक। प्रायः धनुषक प्रत्यंचा खुजल रहैत छैक। तथा ओ

दण्डाकार होइत छैक। जे पुरुष धनुषपर डोरी चढ़ाए सकैत अछि, वैह ओहि धनुषक स्वामी मानल जाइत अछि। [प्रायः रामचन्द्रक द्वारा धनुष भंगक कथाक इएह रहस्य थिक]।

पिनाककेँ सभसँ पहिने शिव अधिज्य कयलनि तेँ वैह ओहि धनुषक स्वामी मानल जाइत छथि। शिवजीक संज्ञा खण्डपरशु छियनि–

भूतेशः खण्डपरशुर्गिरिशोगिरी शो मृडः।– अमरकोषः।।

तथा इएह संज्ञा भृगुपत्ति तनिको छनि। भृगुपतिक संज्ञा क्रौंचदारण कालिदासे देने छथिन्ह– **हंसद्वारं भृगुपतियशोवर्त्म यत्क्रौंचरन्ध्रम्।।मे०१।५७।**

क्रौंचदारण स्वामी कार्तिकेयकेँ सेहो कहल जाइत छनि –

कालिदास स्वामी कार्त्तिकेय तथा हुनक जन्मक उल्लेख सेहो कयने छथि। कार्तिकेय स्कन्द की थिक? शिवजीक जे सूर्यहुसँ अधिक प्रभावशाली तेज अछि से अग्निक मुखमे संचित भए कुमारक रूपमे प्रकट भेल अछि।

कुमारक निवासस्थान देवगिरि छियनि, मेघकेँ ओतय जाए पुष्पाकार जलबिन्दु बरसएबाक आदेश छैक। कारण स्कन्दक जन्म देवासुर संग्राममे देवसेनाक रक्षाक हेतु भेल छनि, तेँ ओ पूजाक अंजलिक अधिकारी छथि।[१]

कालिदास स्कन्दक मयूरक स्मरण सेहो कयलनि अछि। पुत्रक अतिशय प्रेमक कारणेँ भवानी पार्वती कुमारक वाहन मयूरके खसल पाँखिके कानक अलंकार बनाए पहिरैत छथि।[२] ओहि मयूरकेँ नृत्य द्वारा आनन्दित करबाकसेहो मेघकेँ परामर्श छैक।

एहिप्रकारेँ वृषराज–केतन शिवक स्वरूपक निर्देश कालिदास कएने छथि। कविक अनुसारेँ मेघ कामरूप पुरुष थिक तथा हर अपन कोपानलसँ कामके भस्म क' देने रहथि। इहो एकटा कारण थिक जे शिव तथा वृषात्मक मेघक घनिष्ठ सम्बन्ध अछि। वस्तुतः कालिदासक सम्पूर्ण दार्शनिक विज्ञान शिवमे नहिति अछि। [शिव, पार्वती तथा कुमार के थिकाह एहि पर सूक्ष्म विचार कए लेने हमसभ केवल कालिदासक नहि प्रत्युत अन्य साहित्यक सिद्धान्तकेँ सेहो सहानुभूतिपूर्वक बुझि सकैत छिऐक। कालिदास उत्कृष्ट कोटिक अद्वैत मतावलम्बी छलाह। वेदान्त प्रतिपादित ब्रह्मकेँ ओ शिव कहैत छलाह। ब्रह्मक शिव संज्ञा वेदमे सेहो अनेक स्थलपर आएल अछि –

नमः शम्भवाय च मयोभवाय मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च।

एतय शिवक शंभु, शंकर, मयस्कर, मयोभव आदि नाम आएल अछि। कालिदास शिवक अखण्ड सत्ताक गुणगान बेर-बेर कएलनि अछि। जे ब्रह्म सभ लोकक अधिष्ठाता थिकाह, जनिक आत्मशक्ति अपन गुणसँ युक्त भए प्रकृतिक रचना तथा ओकर विसर्जनक कार्य करैत रहैत अछि, वैह अव्ययात्मा, अज, स्वयंभू, अष्टमूर्त्ति भूतपति महेश थिकाह।।

कैलासगौरं वृषमारुरुक्षोः पदार्पणानुग्रहपूतपृष्ठम्।
अवेहि मां किंकरमष्टमूर्त्तेः कुम्भोदरं नाम निकुम्भमित्रम्।।

– रघुवंश २.३५.।

अर्थात् हे राजन्, कैलास पर्वतक समान श्वेत वरदपर चढ़बाक इच्छा कएनिहार, आठटा मूर्त्ति जनिक छनि, एहेन महादेवक चरण रखबा रूपक अनुग्रहसँ पवित्र पीठसँ युक्त, निकुम्भक मित्र कुम्भोदर नामसँ प्रसिद्ध शिवजीक खबास हम छी।

जाहि अष्टस्वरूपक स्तुति कालिदास शकुन्तलाक मंगल श्लोकमे कएलनि ओ गीतामे सेहो अछि –

भुमिरापोऽनलो वायुः खं मनोबुद्धिरेव च।
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ।।७।४।।

अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि तथा अहंकार-रूपमे हमर प्रकृति विभाजित अछि। कवि स्वयंभू, विष्णु तथा शिव एहि त्रिमूर्त्तिक अद्वैत भावक सेहो प्रतिपादन अछि। ब्रह्मक वर्णन करबा काल ओ स्पष्ट कहैत छथि जे शिव, ब्रह्मा तथा विष्णुमे ओ कोनो भेद नहि मानैत अछि।[३]

कालिदासक दार्शनिक मतमे एकटा अखण्ड शुद्ध अद्वैत ब्रह्म सएह परम तत्त्व थिकाह। हुनक त्रिदेव स्तुति सभ उपनिष्दक समान ब्रह्मक सरस तथा निर्भीक प्रतिपादन कएनिहार थिक। रघुवंशक दशम सर्गमे १६ सँ ३२ क्षीरसागर स्थित अवाङ्मनस गोचर शेषासीन विष्णु भगवान केँ प्रणाम कए देवलोक हुनक स्तुति करैत अछि।

१. केन्द्रस्थ नाड़ी– जालक रचना अत्यन्त जटिल छैक। ओहि तन्तु समूह, घटिका बिन्दु तथा प्रतन्तु सभमे घटित भेनिहार संवेदात्मक तथा संकल्पात्मक कार्यक ज्ञान पूर्णरूपेण आइ धरि ककरहु ने प्राप्त भए सकल छैक। कोनो आश्चर्य नहि जे भारतीय योगी एकर प्रत्यक्ष क' सकल होथि। ईहो स्मरणीय जे चेतनाक जे भौतिक आधार छैक ओ ओकर बहुत थोड़ अंश अथवा स्वरूपक परिचय करबैत अछि। किछु व्यक्ति भोगायतनक पक्षमे चेतनाक आधार नहि पाबिकए ओकर सत्तामे सन्देह उपस्थित करैत छथि। चेतन [चिदात्मक शक्ति] मनोविज्ञानसँ सम्बन्ध रखैत अछि। भौतिक रचनामे ओकर अपूर्ण आभास प्राप्त होइत अछि। तैं भौतिक रचनाकें ओकर प्रमाणदण्ड नहि मानि सकैत छिऐक।

१. गूहति रक्षति देवसेनामिति गुहः। इः कामः अक्षिषु यस्य स यक्षः [भानुजी दीक्षित] अर्थात् देवसेनाक जे रक्षा करैत अछि ओ गुह थिक। तकरा जकर आँखि कामसँ भरल रहैत छैक ओ यक्ष थिक।

१. षाण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारण– अमरकोष।

कैलासे धनदावासे क्रौञ्चे क्रौंचोऽभिधीयते। – वृहद्धारावली।

१. तत्र स्कन्दं नियतवसतिं पुष्पमेधीकृतात्मा।

पुष्पासारैः स्नपयतु भवान् व्योमगंगा जलार्द्रैः।।

रक्षाहेतोर्नवशशि भृता वासवीनां चमूना।

मत्यादित्यं हुतवहमुखे संभृतं तद्धि तेजः।।

– मेघदूत १.४३.।

अर्थात् हे मेघ, देवगिरिमे नित्य निवास कएनिहार स्कन्दकें फूलक वृष्टि केनिहार मेघक समान शरीरकें धारण करैत तों आकाशगंगाक जलसँ सिक्त फूलक वृष्टिसँ अभिषेक करिहें, कारण जे ओ [स्कन्द] इन्द्रक सैन्यक रक्षाक हेतु भगवान् चन्द्रशेखरसँ अग्निक मुखमे संचित तथा सूर्यहुकें अतिक्रमण कएनिहार तेज थिकाह।

२. ज्योतिर्लेखावलयि गलितं यस्य वर्हं भवानी।

पुत्रप्रेम्णा कुवलयदलप्राणि कर्णे करोति।

धौतापांगं हरशशिरुचा पावकैस्तं मयूरं
पश्चादद्रिग्रहणगुरुभिर्गर्जितैर्नर्तयेथाः।।

– मेघदूत १.४४।

३. *नमस्त्रिमूर्तये तुभ्यं प्राक्सृष्टेः केवलात्मने।*
गुणत्रयविभागाय पश्चाद्भेदमुपेयुषे।।

– कुमारसंभव २.४।

अर्थात् हे भगवन्, संसारक रचनाक पहिने अहाँक केवल एकटा रूप रहैत छल परन्तु अहाँ जखन संसारक रचना करए लगैत छी तखन सत्त्व, रज तथा तम ई तीनटा गुण उत्पन्न कए अहाँ ब्रह्मा, विष्णु तथा महेशक नामसँ त्रिमूर्त्ति बनि जाइत छी। अतः अहाँकें प्रणाम करैत छी।

४. *नमो विश्वसृजे पूर्वं विश्वं तदनु बिभ्रते।*
अथ विश्वस्य संहर्त्रे तुभ्यं त्रेधा स्थितात्मने।।

५. *डा० वासुदेव शरण अग्रवालक पोथी 'मेघदूतः एक अध्ययन' (हिन्दी) सँ उद्धृत एवं अनूदित।*

□□

परिशिष्ट–३

शिव-गौरीक कथामे मर्मस्पर्शी प्रसंग

शिवगौरी विषयक साहित्यमे किछु एहेन रोचक वर्णन भेल अछि जे सहृदयकेँ मोहि लैत छैक। ओहिमे प्रकृति–वर्णन, रति–विलाप आदि प्रमुख अछि। एहि वर्णन सबहिक अध्ययनसँ एक दिशि जँ काव्यानन्दजनित हृदयाह्लाद उत्पन्न होइत अछि तँ दोसर दिशि ईहो प्रमाणित होइत अछि जे भारतीय जीवनकेँ शिवगौरी वृत्तान्त प्राचीन कालसँ लए वर्त्तमान काल धरि निरन्तर कतेक बेसी अनुप्राणित करैत रहल अछि। सृष्टिक जड़ एवं चेतन प्रत्येक तत्त्वमे जे आशा–निराशा, वृद्धि–ह्रास तथा आकर्षण–विकर्षण अभिव्यंजित अछि तकर मूलमे शिव ओ गौरीक महिमा कार्यरत अछि, ताहि तथ्यक प्रतिपादन एहि कविता सबमे बड़ विलक्षण रूपेँ भेल अछि।

[क] शिव-गौरीक कथाक क्रममे प्रकृति–वर्णनः

गौरी–शंकरक लीलाक वर्णनमे प्राकृतिक छविक वर्णन बड़ नीक भेल अछि। ताहूमे संस्कृत आ मैथिली दुनू साहित्यमे शिवक समाधि–भंगक हेतु कामदेवक अभियानक वर्णन, वसन्तक उल्लेख अधिक विस्तारसँ कएल गेल अछि। तकर किछु उदाहरण देल जाइत अछि –

तस्मिन् वने संयमिनां मुनीनां तपः समाधेः प्रतिकूलवर्ती।

संकल्पयोनेरभिमानभूतमात्मानमाधाय मधुर्जजृम्भे।।कु.सं० ३/२४

अर्थात् ओहि समयमे वनमे जा कए संयमी मुनिक तप तथा समाधिकेँ भंग कएनिहार एक कामदेवक सहायक बनबाक घमण्ड कएनिहार वसन्त अपन पूर्ण शोभाक संग पसरि गेल।

कुबेरगुप्तां दिशमुष्णरश्मौ गन्तुं प्रवृत्ते समयं विलंघ्य।

दिग्दक्षिणागन्धवहं मुखेन व्यलीक निश्वासमिवोत्ससर्ज।।कु.सं.३/२५

अर्थात् वसन्तक आगमनक कारणे असमहिमे सूर्य उत्तरायणसँ दक्षिणायन भ' गेलाह। ओहि समयमे दक्षिणसँ बहनिहार मलय पवन एहेन लगैत छल मानू अपन पति सूर्यक चल गेला पर दक्षिण दिशा खिन्न भए अपन मुँहसँ निःश्वास छोड़ि रहल हो।

असूत सद्यः कुसुमान्यशोकः स्कन्धात्प्रभृत्येव सपल्लवानि।

पादेन नापैक्षत सुन्दरीणां संपर्कमासिञ्जितनूपुरेण।। कु.सं.३/२६

अर्थात् ओतय अशोकक वृक्ष सेहो तत्काल नीचासँ ऊपर धरि पल्लवित-पुष्पित भए गेल एवं ठनठनाइत पैरी पहिरने सुन्दरी सभक चरण प्रहारक बाट ओ नहि देखए लागल।

सद्यः प्रवालोद्गमचारुपत्रे नीते समाप्तिं नवचूतबाणे।

निवेशयामास मधुर्द्विरेफान् नामाक्षराणीव मनोभवस्य।।कु.सं.३/२७

अर्थात् तखनहि वसन्त नवीन किसलयमे पाँखि लगाकए आमक मंजरीक वाण तैयार कए देलखिन एवं ओहि पर जे ओ भमराके बैसौलनि से एहेन लागि रहल छलैक जेना ओहि वाण पर कामदेवक नामक आखर लिखल हो।

वर्णप्रकर्षे सति कर्णिकारं दुनोति निर्गन्धतया स्म चेतः।

प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां पराङ्मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः।।

कु.सं.३/२८

अर्थात् फुलाएल कनैल देखबामे तँ बड़ सुन्दर लगैत छलैक किन्तु ओहिमे सुगन्धि नहि हेबाक कारणें मनकें दुःखी करैत छलैक। ब्रह्माक किछु एहने प्रवृत्ति भए गेल छनि जे कोनो वस्तुमे पूर्ण गुण नहि भरैत छथिन।

बालेन्दु वक्राण्यविकासभावाद्बभुः पलाशान्यतिलोहितानि।

सद्यो वसन्तेन समागतानां नखक्षतानीव वनस्थलीनाम्।।३/२९

अर्थात् ओतय वसन्तक आगमन पर द्वितीयाक चन्द्रमा सदृश टेढ़, अत्यन्त लाल एवं अर्द्धविकसित पलाशक फूल एहेन सन लागि रहल छलैक जेना वनस्थलीकेँ वसन्त नहसँ चिह्न अंकित कए देने हो।

लग्नद्विरेफांजनभक्तिचित्रं मुखे मधुश्रीस्तिलकं प्रकाश्य।

रागेण बालारुणकोमलेन चूतप्रवालोष्ठमलंचकार।।३/३०

अर्थात् उड़ैत भमरा, फुलाएल फूल एवं प्रातः काल सूर्यक लाली सन द्युतिमान किसलय एहेन सन बुझि पड़ैत छलैक जेना वसन्तक शोभारूपी स्त्री भमरा रूपी आजन मुँहमे लगाए अपन माथपर तिलक फूलक ठोप कए प्रातः कालीन सूर्यक अरुणिमा जकाँ चमकैत आमक किसलयसँ अपन ठोर रंगि नेने होथि।

मृगाः प्रियाला द्रुममञ्जरीणां रजः कणैर्विघ्नितदृष्टिपाताः।

मदोद्धताः प्रत्यनिलं विवेरुर्वनस्थलीर्मर्मरपत्रमोक्षाः।।३/३१

अर्थात् प्रियालक फूलक पराग उड़ि-उड़िकए आँखिमे पड़लासँ जे मदमत्त हरिण नीक जकाँ नहि देखि सकैत छल, ओ पवनक झोंकसँ झड़ैत नुकाएल पात जकाँ मर्मर करैत झाँखुरमे एमहर-ओमहर दौड़ि रहल छल।

चूताङ्कुरास्वादकषायकण्ठः पुंस्कोकिलो यन्मधुरं चुकूज।

मनस्विनीमानविघातदक्षं तदेव जातं वचनं स्मरस्य।।३/३२

अर्थात् आमक मज्जरि खा लेबाक कारणे जाहि कोकलिक स्वर मधुर भए गेल हो, ओ जखन मधुर स्वरसँ कूकैत छल तँ ओ स्वर सुनि मानिनी अपन मान बिसरि जाइत छल।

हिमव्यपायाद्विशदाधराणामापाण्डरीभूतमुखच्छवीनाम्।

स्वेदोद्गमः किं पुरुषांगनानां चक्रे पदं पत्रविशेषकेषु।।३/३३

अर्थात् जाड़ बीति गेलापर एवं गर्मी अएलापर कोमल ठोर एवं गोर मुँहवाली किन्नरी सभक मुखपर रचित चित्रकारीपर घाम पसर लगलैक।

तपस्विनः स्थाणुवनोकसस्तामाकालिकीं वीक्ष्य मधुप्रवृत्तिम्।

प्रयत्नसंस्तम्भितविक्रियाणां कथंचिदीशा मनसां बभूवुः।।३/३४

अर्थात् महादेवजीक वनमे रहनिहार तपस्वी लोकनि असमयमे उपस्थित वसन्तकेँ देखि अपन मनकेँ विकारसँ हटाए बड़ कठिनतासँ रोकलनि।

तं देशमारोपितपुष्पचापे रतिद्वितीये मदने प्रपन्ने।

काष्ठागतस्नेहरसानुविद्धं द्वन्द्वानि वं क्रियया विवव्रुः।।३/३५

अर्थात् जखन फूलक धनुषपर बाण चढ़ाए रतिकेँ संग लेने कामदेव अयलाह तखन चर एवं अचर प्राणिक अत्यन्त बढ़ैत संभोगक इच्छा ओकर सभक क्रियाकलापमे दृष्टिगोचर होमए लगलैक।

मधुद्विरेफः कुसुमैकपात्रे पपौ प्रियां स्वामनुवर्तमानः।

शृंगेण च स्पर्शनिमिलिताक्षीं मृगीमकण्डूयत कृष्णसारः।।३/३६

अर्थात् भमरा अपन प्रिय भमरीक संग एकहि फूलक बाटीमे मकरन्द पीबए लागल। कृष्णमृग अपन ओहि मृगीक सींगकें कुरिआबए लागल जे स्पर्शक सुख लैत आँखि मूनि कए बैसल छल।

ददौ रसात्पंकजरेणुगन्धि गजाय गण्डूषजलं करेणुः।

अर्धोपभुक्तेन बिसेन जायां संभावयामास रथाङ्गनामा।।३/३७

अर्थात् हथिनी बड़ प्रेमसँ कमलक परागसँ सुवासित जल सूंड़सँ बहारकए अपन हाथीकेँ पियाबए लागल एवं चकबा आधा कतरल कमलनाल चकबीकेँ देमए लागल।

पर्याप्तपुष्पस्तबकस्तनाभ्यः स्फुरत्प्रवालोष्ठमनोहराभ्यः।

लतावधूभ्यस्तरवोऽप्यवापुर्विनम्रशाखाभुजबन्धनानि।।३/३९

अर्थात् वृक्ष सेहो अपन झुकल डारि सभ पसारिकए ओहि लतासँ लेपटाए लागल, जाहिमे पैध–पैध स्तनक रूपमे फूलक गुच्छा लटकि रहल छलैक एवं पातरूपी ठोर हिलि रहल छलैक।

मैथिली साहित्यमे सेहो एहि प्रकारक वर्णन भेल अछि। कान्हारामकृत गौरी स्वयंवरमे समाधिस्थ शंकरक तप भंगक हेतु कामदेवक सहायकक रूपमे वसन्तक वर्णन देखू –

जब चले श्री रतिनाथ, लय सुमन सरधनु हाथ।

कहि हृदय मह विचार, तब किन्ह बस संसार।।

मनसिज भयो कोउ कोपमान, तब रहा कछु न ठेकान।

ब्रह्मचारि व्रतकार, तूह ताहू उर से रस मार।

करत जपतप जोग, सेउ भुलि [गऊ] भोग।।

काहू न वीर धीरज धरम, भयो ज्ञान तेजि वेमर्म।।

नहि रहा काहु विवेक, सब छोड़ए धर्मक टेक।
धरनि नीर नर नारि, भयो काम बस विरचायि।।
सैल सैलहि घाव, भयो चल मन रसभाव।
उमगि सुरसरि नीर, तब मिले सागर तीर।।
उरू सबहि मदन विराज, सब छोड़ए छीरजलज।
नदी नाल तलाब, करत संग सधाव।।[१६]

कान्हारामक उपर्युक्त पद ठेठ मैथिलीक प्रयोग नहि भए, ब्रजवुलीसँ प्रभावित बुझि पड़ैत अछि। किन्तु निम्नलिखित गीत भाषा ओ भावक दृष्टिएँ किछु विशेष परिपक्व बुझि पड़ैछ।

सबक विवेक दुरि गेले, काम विवस सभ भेले।
जोगी जती तप ध्याने, छाड़ि भुलल रसपान।।
तेजल सब सद्ग्रन्थे, विसरल सुकृत पन्थे।
वेद विधान बिसारि, प्रेम मगन नरनारि।।
धनु सर जब लेल मारे, धीरज जगसँ बिसारे।
मदन कयल विपरीत, काहु रहल नहि धीती।।
निज निज तेज मरजाद, सबय कामरस स्वादे।
करन कान्हाराम गावे, पुनि जनि हो अस भावे।।[१७]

एहि प्रसंगक कवि लाल कृत गौरीस्वयंवरक वर्णन सेहो हृदयग्राही अछि–

कमल कुमुद कलाप किंसुक नब नागेसर फूलयो।
वारि यूथ नेवारिका करवीर चन्दन अमूलयो।।
मुनिहुक मानस मोहकारक परम तरु उन्माद यो।
अंग-अंग अनंग संगे तरुण करय विलास यो।।
एहन अवसर आपय मनसिज जाय करु परगासयो।
कुसुम वान जहना बस कर परमसुन्दर वेसयो।।[१८]

ई वर्णन शिवदत्त कृत गौरी परिणयमे सेहो मनोहर अछि–

चलल मदन दल साजि ना। तनु-तनु मदन विराजि ना।।
निरसौ मिलल नीर ना। मोहित भेल समीर ना।।
तरु-तरु भेल संयोग ना। पशुमन बाढ़ल योग ना।।
रहल न कोइ जग धीर ना। सब मनमथ पीड़ ना।।
बाढ़ल सभ मन देन ना। मुनि मन छोड़ल धेआन ना।।
शिवदत्त पद भान ना।।[१९]

* * * *

१-२ कुमार संभव : तृतीय सर्ग – पृ० २४ एवं २५.
३-७. कुमारसंभव : तृतीय सर्ग – श्लोक २६, २७, २८, एवं ३०.
८-१३. कुमार संभव : तृतीय सर्ग – श्लोक ३१, ३२, ३३, ३४, ३५ एवं ३६.
३४-१५. कुमार संभव : तृतीय सर्ग– श्लोक ३७ एवं ३९.
१६. गौरीस्वयंवर : कान्हाराम– स० डा० जयकान्त मिश्र।
१७. गौरी स्वयंवर : कान्हाराम।
१८. गौरीस्वयंवर : कविलाल।
१९. गौरीपरिणय : शिवदत्त।

[ख] रति-विलाप :

गौरीशंकर विषयक साहित्यमे प्रकृति वर्णनक अतिरिक्त एकटा आओर उल्लेखनीय प्रकरण भेटैत अछि ओ थिक रति-विलाप। कामदेव जखन शिवक तपस्या भंग करबाक उपक्रम करैत छथि तँ भगवानकेँ एकर ज्ञान भए जाइत छन्हि। ओ चारूकात तकैत छथि तँ कामदेवक चेष्टा नीक जकाँ विदित भए जाइत छनि। हुनका कामदेव पर क्रोध भए जाइत छनि एवं अपन तेसर आँखि खोलि लैत छथि जाहिसँ कामदेव जरि जाइत छथि। अपन पतिकेँ शिवक नेत्रक ज्वालासँ भस्म भेल देखि रति शोकाकुल भए विलाप करैत छथि। मैथिली ओ संस्कृत दुनू साहित्यमे करुण विप्रलम्भक एहेन वर्णन मर्मस्पर्शी भेल अछि।

कवि लाल कृत गौरी स्वयम्वरमे एहि प्रकारक वर्णन अछि–

हे हर कोन हरल मोर नाह।[१]
अछल अभेद भेद नहि भरमहुँ से नहि मन अवगाह।
पल विसलेख पहर सेओँ मानिअ कोन परि होयत निवाह।
शोक कलाप दाह दह मानस उर उपजावए धाह।
विरहक अवधि अबूह पड़ल अछि चहु दिश लाग अथाह।
मानक आधि वेआधि वाधि बरु रंग रभस गेल दूर।
विहि भेल मोर कोन निरदय मोर हरलन्हि शिरक सिन्दूर।
कुसुमक वान जहान जकर वश सब गुन आगर कन्त।
से मोर साथ हाथ धै लाओब की करत बंधु वसन्त।
सुकवि लाल कह धैरज धै रहु हरिसुत होएत अनंग।
ओ मनमथ तोहि रीति पलटि पुनु होएत तें विधि संग।।

'कुमार संभव'मे सेहो रति–विलाप अत्यन्त करुणापूर्ण अछि –

अथ मोहपरायणा सती विवशा कामवधूर्विबोधिता।
विधिना प्रतिपादयिष्यता नव वैधव्यमसह्यवेदनम्।।
अवधानपरे चकार सा प्रलयान्तोन्मिषिते विलोचने।
न विवेद तयोरतृप्तयोः प्रियमत्यन्तविलुप्तदर्शनम्।।
अयि जीवितनाथ जीवसीत्यभिधायोत्थितया तया पुरः।
ददृशे पुरुषकृति क्षितौ हरकोपानलभस्मकेवलम्।।
अथ सा पुनरेव विह्वला वसुधालिंगनधूसरस्तनी।
विललाप विकीर्णमूर्धजा समदुःखामिव कुर्वती स्थलीम्।।
उपमानमभूद्विलासिनां करणं यत्तव कान्तिमत्तया।
तदिदं गतमीदृशीं दशां न विदीर्ये कठिनाः खलु स्त्रियः।।
क्व नु मां त्वदधीनजीवितां विनिकीर्य क्षणभिन्नसौहृदः।
नलिनीं क्षतसेतुबन्धनो जलसंघात इवासि विद्रुतः।।

कृतवानसि विप्रियं न मे प्रतिकूलं न च ते मयाकृतम्।
किमकारणमेव दर्शनं विलपन्त्यै रतये न दीयते।।
स्मरसि स्मरमेखलागुणैरुत गोत्रस्खलितेषु बन्धनम्।
च्युतकेसरदूषिते क्षणान्यवतंसोत्पलताड़नानि वा।।
हृदये वसतीति मत्प्रियं यदवोचस्तदवैमि कैतवम्।
उपचारपदं न चेदिदं त्वमनंगः कथमक्षता रतिः।।
अहमेत्य पतंगवर्त्मना पुनरंकाश्रयणी भवामि ते।
चतुरैः सुरकामिनीजनैः प्रिय यावन्न विलोभ्यसे दिवि।।
मदनेन विना कृता रतिः क्षणमात्रं किल जीवितेति मे।
वचनीयमिदं व्यवस्थितं रमण त्वामनुयामि यद्यपि।।[२]

अर्थात् एहि प्रकारेँ महादेवक अन्तर्धान भ' गेलापर एवं पार्वतीक चल गेलापर काठ जकाँ मूर्च्छित भेलि कामदेवक पतिव्रता पत्नी रतिकेँ ब्रह्मा तत्काल वैधव्यक दुःख सहबाक हेतु जगा देलथिन्ह। मूर्च्छा छुटितहिँ रति चारूकात आँखि पसारि देखए लगलीह किन्तु हुनका ई नहि ज्ञात भेलन्हि जे जनिका सदिखन आँखिसँ देखैत रहितहुँ आँखि नहि तृप्त होइत रहए वैह प्रियतम सभ दिनक हेतु हमरासँ कात भए गेल छथि।

[विरहक एहन वर्णन विरल देखबामे अबैत अछि। दशटा अवस्थामे जड़ता नवम अवस्था मानल जाइत अछि। रतिक जड़ताक व्यंग्य, कारण जे ओ कत' छथि, की छथि, किछु नहि ठेकान पर अबैत छनि।]

हे प्राणनाथ की अहाँ जीबैत छी? ई कहैत ओ जखनहि तकलनि तँ महादेवक क्रोधाग्निसँ भस्म भेल पुरुषक आकारक छाउर देखलनि। ओ छाउरक ढेरी देखितहिँ विकल भए गेलीह एवं माटिमे लेटाइत, केश छिड़ियबैत विलाप करए लगलीह। से एहेन सन लगैत छल जेना सम्पूर्ण वनप्रदेश हुनके संग विलखि रहल हो। ओ कानि-कानि कहए लगलीह- हे प्रिय, आइ धरि अहाँक जाहि सुन्दर शरीरसँ विलासीक शरीरक तुलना कएल जाइत छल ओकरे एहि दसामे देखि हमर छाती किएक ने फाटि रहल अछि। वास्तवमे, स्त्रीक हृदय बड़ कठोर होइत छैक। जेना जलक वेग बान्ह तोड़िकए जलमे रहनिहार

कमलिनीकेँ छोड़ि आगू बढ़ि जाइत छैक, ओहिना अहाँक हाथमे अपन प्राण देनिहारि हमरा सन अभागनिकेँ छोड़िकए अहाँ एतेक शीघ्र रूसिकए कतए चल गेलहुँ? हे प्रिय, हमरा अहाँमे परस्पर कखनहुँ विपरीत वार्तालाप नहि भेल, तखन अकारण हमरा कनैत छोड़ि देने छी आ' दर्शन नहि दैत छी। हे प्रिय, एक बेर जखन अहाँ भ्रमसँ कोनो दोसर सुन्दरीक नाम ल' लेने रही आ' तागसँ हम बान्हि देने रही, की ताही बातक स्मरण कए हमरा अहाँ दण्ड द' रहल छी? अथवा हम अपन कानमे पहिरने कमलसँ अहाँकेँ मारने रही आ ओकर पराग अहाँक आँखिमे पड़ि गेल रहए, की ताही पीड़ाकेँ स्मरण कए हमरासँ अहाँ विमुख भए गेल छी? जे अहाँ हमरा नित्य मधुर वचनसँ ई कहैत रही जे अहाँ हमरा हृदयमे बसल छी, की से बात फूसि रहैक? कारण जे ओ बात यदि केवल हमर मोन रखबाक हेतु नहि रहितैक तँ अहाँक रति जीवित कोना बाँचलि एहितए? हे प्रिय, स्वर्गक अप्सरा अहाँकें अपन रूपसँ लोभाए वशमे नहि कए लेथि तेँ हम पहिनहिँ आगिसँ जरिकए ओतए [स्वर्गमे] आबि अहाँक कोरमे बैसि जाएब। हे प्रिय, हम अहाँक पाछू-पाछू तँ अबिते छी, किन्तु हमरा एकर कलंक तँ लागिए गेल जे रति कामदेवक वियोगमे क्षण भरि जीवित रहि गेलीह।

रति विलापक उपर्युक्त सन्दर्भ जहिना हृदयक संवेदनाक कोमलता अभिव्यंजित करैत अछि तहिना हुनक विलापमे उद्दीपन विभावक वर्णन कवि बड़ कौशलसँ कएलनि अछि –

रजनीतिमिरावगुण्ठिते पुरमार्गे घनशब्दविक्लवाः।
वसतिं प्रिय! कामिनां प्रियास्त्वदृते प्रापयितुं क ईश्वरः।।
अवगम्य श्लथीकृतं वपुः प्रियबन्धोस्तव निष्फलोदयः।
बहुलेऽपि गते निशाकरस्तनुतां दुःखमनंग! मोक्ष्यति।।
हरितारुणचारुबन्धनः कलपुंस्कोकिलशब्दसूचितः।
वद संप्रति कस्य वाणतां नवचूतप्रसवो गमिष्यति।।
अलिपंक्तिरनेकशस्त्वया गुणकृत्ये धनुषो नियोजिता।
विरुतैः करुणस्वनैरियं गुरुशोकामनुरोदितीव माम्।।

प्रतिपद्य मनोहरं वपुः पुनरप्यादिश तावदुत्थितः।
रतिदूतिपदेषु कोकिलां मधुरालापनिसर्गपण्डिताम्।।
रचितं रतिपण्डित त्वया स्वयमंगेषु ममेदमार्तवम्।
ध्रियते कुसुमप्रसाधनं तव तच्चारुवपुर्न दृश्यते।।[३]

अर्थात् हे प्रिय, ई कहू जे वर्षाक समयमे रातिक गहन अन्धकारमे भयावह नगरक मार्गपर बिजलोकाक छिटकि गेलासँ डेराए गेनिहारि कामिनी सभकेँ अहाँकेँ छोड़ि आन के ओकरा सभकेँ प्रियतमक घर पहुँचौतैक?

हे अनगं, अहाँ तँ चन्द्रमाक परम प्रिय मित्र छलियनि। जखन हुनका ई ज्ञात हेतनि जे आब अहाँक शरीर एकटा कथामात्र रहि गेल अछि, तखन ओ व्यर्थ उदित चन्द्रमा शुक्ल पक्षमे सेहो अत्यन्त कठिनतासँ अपन क्षीणता छोड़ि सकताह। बहुत सुन्दर हरियर एवं लाल रंगमे बान्हल एवं कोइलीक मधुर स्वरसँ गुंजित आमक मजरब आब ककर वाण बनतैक?

जाहि भमराक पाँतीकें अहाँ अपन धनुषक डोरी बनबैत छलहुँ ओकर करुण गुंजन आब एहेन सन बुझि पड़तैक जेना ओ सभ दुःखसँ विलाप करैत हमर संग दए रहल हो।

हे कामदेव, अहाँ पुनः पहिने जकाँ सुन्दर शरीर धारण कए स्वभावतः मधुर वाणी बजबामे निपुण एहि कोइलीके आज्ञा दिऔक जे ई रतिक दूती बनि अपन मधुर स्वरसँ प्रेमी सभकेँ मिलनक स्थान सूचित करए।

एहि प्रकारेँ शिवगौरीक विषयक जतेक आख्यान अछि ताहिमे रति-विलापक वर्णन अपन भिन्ने महत्त्व रखैत अछि।

कामदहन ओ रति विलापक वर्णनसँ ई नीक जकाँ प्रतिपादित कएल गेल अछि जे महादेव अर्द्धनारीश्वर रहितहुँ परतन्त्र कदापि नहि छथि, पुरुष-नारी-संगमक प्रतीक रहितहुँ कामादि प्रत्येक एषणा पर पूर्ण नियन्त्रण रखने छथि, वा ई कहल जाए सकैत अछि जे 'पद्मपत्रमिवाम्भसा' परमयोगीश्वर थिकाह। उद्भव, विनाश ओ पुनर्भाव हिनक नेत्रक संकेत मात्र थिक, आओर मिथिला सहित सम्पूर्ण भारतवर्षक परम्परागत समस्त जीवनदर्शन एही आस्थासँ निरन्तर अनुप्राणित होइत रहल अछि। संसारक सर्वव्यापक रस

श्रृंगारक अधिदेवता कामदेवकेँ अपन दृष्टिसंकेत मात्रसँ भस्मीभूत कए देब एवं विधुरा रतिक विलाप सुनि करुणार्द्र भए हुनाक कामदेवक पुनर्जन्मक वरदान द्वारा आश्वस्त करब गौरीपति शिवक अप्रमेय महिमाक सूचक थिक, हुनक सर्वनियन्तृत्त्वक प्रमाण थिक।

* * * *

१. गौरी स्वयंवर : कविलाल।

२. कुमार संभव : चतुर्थ सर्ग– श्लोक १–९ तथा २०–२१.

३. कुमार संभव : चतुर्थ सर्ग– शलोक– ११, १३, १४, १५, १६, १८.

❑❑

परिशिष्ट– ४

अर्धनारीश्वरक विभिन्न सन्दर्भ

अर्द्धनारीश्वर सृष्टिक रचयिताक रूपमे ब्रह्मा द्वारा प्रादुर्भूत भेल छथि। सृष्टिक आदिमे ब्रह्मा तँ प्रजाक [लोकक] रचना कएलनि किन्तु ओकर विस्तार नहि भ' सकलै। एहिसँ ओ [ब्रह्मा] अत्यन्त दुःखी भ' गेलाह, कारण जे हुनका संसारकें लोकसँ भरल देखबाक कामना छलनि। ओही समयमे आकाशवाणी भेलैक– ब्रह्मन्, अहाँ मैथुनी सृष्टिक रचना करू। ओहि व्योमवाणीकेँ सुनि ब्रह्मा मैथुनी सृष्टि उत्पन्न करबाक विचार कएलनि। किन्तु एहिसँ पहिने नारीक कुल ईशानीसँ प्रकट नहि भेल छल, तेँ पद्मयोनि ब्रह्मा मैथुनी सृष्टिकेँ रचबामे असमर्थ भए गेलाह। तखन ओ ई विचारि जे शंभुक कृपाक बिनु प्रजाक उत्पत्ति नहि भए सकैत अछि, तप करबाक हेतु उद्यत भए गेलाह। ओहि समयमे ब्रह्मा पराशक्ति शिवा सहित परमेश्वर शिवक प्रेमपूर्वक हृदयमे ध्यान कए घोर तप करए लगलाह। तदन्तर तपोनुष्ठानामे लागल ब्रह्माक ओहि घोर तपक कारणेँ किछुए समयमे शिवजी प्रसन्न भए गेलथिन्ह। तखन ओ कष्टहारी शंकर पूर्ण सच्चिदानन्दक आठटा मूर्त्तिमे प्रविष्ट भए अर्द्धनारी–नरक रूपमे ब्रह्माक निकट प्रकट भए गेलाह। ओहि देवाधिदेव शंकरकेँ पराशक्ति शिवाक संग आएल देखि ब्रह्मा भूमिपर पड़िकए हुनका दण्डवत प्रणाम केलथिन्ह एवं हाथ जोड़ि स्तुति करए लगलथिन्ह। तखन विश्वकर्त्ता देवाधिदेव महादेव प्रसन्न भए ब्रह्मासँ मेघ जकाँ गम्भीर वाणीमे बजलाह–महाभाग वत्स, हमर प्रिय पुत्र, पितामह, हमरा अहाँक सभटा मनोरथ पूर्णतया ज्ञात भए गेल अछि। अहाँ जे एहि समयमे प्रजाक वृद्धिक हेतु घोर तप कएलहुँ अछि, ताहिसँ हम प्रसन्न भए गेल छी एवं अहाँकेँ अभीष्ट प्रदान करब। एहि प्रकारेँ स्वभावसँ मधुर एवं परम उदार वचन कहि

शिवजी अपन अर्द्ध भागसँ शिवा देवीकेँ पृथक् कए देलथिन्ह। तँ शिवसँ पृथक् भेलि ओहि परमदेवीकेँ देखि ब्रह्मा विनम्र भावसँ प्रार्थना करए लगलाह। ब्रह्मा बजलाह जे प्रारम्भमे अहाँक पति देवाधिदेव परमात्मा शंभु हमर सृष्टि कएने छलाह एवं [हमरा द्वारा] सम्पूर्ण प्रजाक रचना कएने छलाह। शिव, तखन हम देवता आदि समस्त प्रजाक मानसिक सृष्टि कएने रही, परन्तु बेर-बेर रचना कयलो पर ओकर वृद्धि नहि भए रहल अछि, अतः हम स्त्री-पुरुषक समागमसँ उत्पन्न भेनिहार सृष्टिक निर्माण कए अपन सम्पूर्ण प्रजाक वृद्धि करए चाहैत छी। किन्तु एखन धरि अक्षय नारीकुलक प्राकट्य नहि भेल छैक, तेँ नारीकुलक सृष्टि करब हमर सामर्थ्यसँ बहिर्भूत अछि। अहाँ सभटा शक्तिक उद्गम स्थल छी, अतः अहाँ अखिलेश्वरी परमाशक्तिसँ हम प्रार्थना करैत छी। शिवे, हम अहाँकेँ नमस्कार करैत छी, अहाँ हमरा नारी कुलक सृष्टि करबाक हेतु शक्ति प्रदान करू, कारण जे हे शिवप्रिये, एकरा अहाँ चराचर जगतक उत्पत्तिक कारण बुझू। वरदेश्वरी, हम अहाँसँ एकटा आओर वरक याचना करैत छी। हे जगन्मातः, कृपा कए हमरा ओ वर दिअ. हम अहाँक चरणमे नमस्कार करैत छी। वर ई दिअ जे अहाँ चराचरजगतक वृद्धिक हेतु हमर सर्वसमर्थ दत्तक पुत्री भए जाउ। ब्रह्मा द्वारा एहि प्रकारेँ याचना कएला पर परमेश्वरी देवी शिवा 'तथास्तु' कहि ओ शक्ति ब्रह्माकेँ प्रदान कए देलथिन्ह। ओहि समयमे जगन्मयी शिवशक्ति शिवा देवी अपन भँउहक मध्य भागसँ अपनहिँ सन प्रभायुक्त एकटा शक्तिक रचना कएलनि। ओहि शक्तिकेँ देखिकए देवश्रेष्ठ भगवान् शंकर, जे लीलाकर, कष्टहर एवं कृपाक सागर थिकाह, हँसैत जगदम्बिकाकेँ कहलथिन्ह, देवि, परमेष्ठी ब्रह्मा तपस्या द्वारा अहाँक आराधना कयलनि, अतः आब अहाँ हुनका पर प्रसन्न भ' जाउ एवं हुनकर सभटा मनोरथकेँ पूर्ण करियौन्ह। तखन शिवादेवी परमेश्वर शिवक ओहि आज्ञाकेँ सिर झुकाए ग्रहण कएलनि एवं दत्तक पुत्री होएब स्वीकार कए लेलनि। मुने, एहि प्रकारेँ शिवादेवी ब्रह्माकेँ अनुपम शक्ति प्रदान कए शंभुक शरीरमे प्रविष्ट भए गेलीह। तत्पश्चात् भगवान शंकर सेहो लगले अन्तर्धान भ' गेलाह। तहिएसँ एहि लोकमे स्त्री-गणक कल्पना भेल एवं मैथुनी सृष्टिक आरम्भ भेल,एहिसँ ब्रह्माकेँ महान् आनन्द भेलनि। यैह शिवक अर्द्धनारीश्वर [अर्ध नर-नारी] रूपक वर्णन छियनि। जे जगतक हेतु मंगलकारी कहल गेल छैक। [कल्याणक संक्षिप्त शिवपुराणांकसँ अनुदित- पृ० ३००-०२ धरि]

पुराणेटामे नहि अर्द्धनारीश्वरक वर्णन अनेक स्तोत्रकाव्यमे बड़ मनोरम भेल अछि। एकटा उदाहरण देब उचित अछि–

चाम्पेय-गौरार्ध-शरीरकायै कर्पूरगौरार्धशरीरकाय।
धम्मिलकायै च जटाधराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।१।।
कस्तूरिका-कुंकुम-चर्चितायै चितारजःपुंजविचर्चिताय।
कृतस्मरायै विकृतस्मराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।२।।
चलत-क्वणत्-कंकण नूपुरायै पादाब्जराजन्मणिनूपुराय।
हेमांगदायै भुजगाङ्गदाय नमः शिवायै च नमःशिवाय।।३।।
विशालनीलोत्पललोचनायै विकासिपंकेरुहलोचनाय।
समेक्षणायै विषमेक्षणाय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।४।।
मन्दारमालाकुलितालकायै कपालमालाङ्कितकन्धराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।५।।
अम्भोधर-श्यामल-कुन्तलायै तड़ितत्प्रभाताम्रजटाधराय।
निरीश्वरायै निखिलेश्वराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।६।।
प्रपञ्चसृष्ट्युन्मुखलास्यकायै समस्तसंहारकताण्डवाय।
जगज्जनन्यै जगदेकपित्रे नमः शिवायै च नमः शिवाय।।७।।
प्रदीप्त रत्नोज्ज्वलकुण्डलायै स्फुरन्महापन्नगभूषणाय।
शिवान्वितायै च शिवान्विताय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।८।।
एतत्पठेदष्टकमिष्टदं यो भवत्या स मान्यो भुवि दीर्घजीवी।
प्राप्नोति सौभाग्यमनन्तकाल भूयात् सदा तस्य समस्तसिद्धिः।।

इति श्री शंकराचार्य विरचित अर्धनारीश्वर स्तोत्र।

कवि रत्नाकरकृत हर विजयकाव्य मे तँ अर्द्धनारीश्वरक आओर बृहत् रूपँ उल्लेख कएल गेल अछि।

लीलानताननतया प्रविम्बवर्ति
चूड़ाशशांकशकलं कुचमर्धभागे।

य: पश्यति स्म दधतं धुतदुग्धसिन्धु-
कल्लोललंघितसुधाकलशस्य लीलाम्।५९।।
येनाद्रिराजतनयाकुचमण्डलाग्र-
विन्यस्तहस्तजमलं विभरांबभूवे।
वक्षो हिमाचलशिलाविकटं सतुम्ब-
णानिवेशमिव धूलनविभ्रमेषु।।६०।।
संध्याजलांजलिमपोज्झति यश्चिरेण
सस्वेदशीकरकणात्पुलकांगयष्टि:।
देहार्धभागगत शैलसुताननेन्दु-
विम्बावलोकनसुखस्तिमितेक्षणश्री:।।६१।।
श्लिष्टोऽनयो: किमु भवेदुत नैव संधि-
देहार्धयो र्घटितयोरिति तत्परीक्षम्।
आरिप्सु यस्य रभसादिव चक्षुरर्ध-
नारीश्वरस्य निरियाय ललाटपट्टात्।।६२।।
क्रीड़ारसेन स कदाचिदयाधिसानु-
लीलावलम्बितहिमाद्रिसुताकराग्र:।
प्रत्यग्रकांचनलतांचितसंनिवेश-
माक्रीडमण्डपममण्डयदहेमधाम्न:।।२।११।।
अंकाश्रयां रुचिरकांचनमंगपिंग-
छायाभिरामवपुषं हिमशैलकन्याम्।
कुर्वन्तमंजनमलीमसकालकूट
कण्ठप्रभाभिरभित: पुनरेव कालीम्।।२।१४।।
क्रोडीकृताद्रितनया शशिखण्डमौलि-
मौलापदानरचितस्तुतिमातरस्तत्।
लीलाललामललिताभिनयप्रपंच-
संचारचारुरसभावदृशोऽभिनिन्यु:।।२।१६।।
इति समयमनैषीत् तत्र तास्ता: सचेष्टा
विदधदचलकन्याविप्रयोगानभिज्ञ:।

सुरपतिभिरभीक्ष्णं रत्नपट्टांध्रिपीठी-
लुठितमणिकिरीटाष्टापदैः सेव्यमानः ।।२।६४।।

अथ स मन्दगिरो सकलर्तुभिः
निजनिजप्रसवोज्ज्वलया श्रिया।
सममसेवि कदाचिदुपाश्रितो
गिरिजयारिजयानघदोर्द्रुमः १।१३१।।

लक्ष्मीं वहन्तमृतुभिर्नगमित्यु दंशु-
रत्नस्थलीविकसितामलके सरागम्।
द्रष्टुं प्रभुर्निरगमल्लुलिते सलील-
मीषत् स्पृहान् गिरिसुतामलके सरागम् ।।३।९४।।

चापात्मनः शशिकलाभरणार्धभाग-
लग्नाद्रिजाकरसरोजनिविष्टमुष्टेः।
यस्योरगाधिपगुणेन घनान्यधानि
तत्कम्बुपंक्तिरवनद्धतलायमाना ।।४।२९।।

भर्तुः स्थितार्धवपुषि स्फुटगाढबन्ध-
ताम्यत्फणीन्द्रफणफूत्कृतकातरापि।
मुष्टिग्रंह गिरिसुता श्लथयन्न यस्य
भावानुरक्तहृदयः कुरुते न किं वा ।।४।३०।।

प्रतिपद्य कृष्णरजनीमयं वपु-
र्गिरिकन्यकेव तव नोज्झति क्षणम्।
स्फुटकालकूटविषधूसरप्रभा-
पटलच्छलेन पृथुकण्ठमण्डलम्।।६।१७६।।

अस्य क्षयेष्वालकलोचनतीव्र वह्नि-
तापस्फुटत्कनककर्परदर्पणाग्रे।
विस्पष्टमद्रितनयावदनं विलोक्य
पद्मासनाण्डमखिलं सफलीचकार ।।८।२२।।

प्रत्यग्रधाराघटनेन्दुकलाकिरीट-
शैलाधिराजसुतयोरिव गाढ़संपत्।

संध्याहिताय दिवसक्षपयोः शरीर
मागहवयाविरलवृत्तिरजृम्भतश्रीः ।।९।६।।

स्थितो य सौधोन्नतचन्द्रशालिका-
तले विभुः क्लृप्तमहार्घसंस्तरे।
इति प्रियामंकगतामभाषत
क्षपाकरस्य श्रियमीक्ष्य हारिणीम् ।।२१।१।।

इति प्रियस्यार्धशरीरसंस्थितौ
क्षणं विकल्पाकुलमानसा सती।
बभूव तत्संश्रयकातरा पुन-
र्न गण्यते प्रेमणि दोषदूषणम् ।।२१।३७।।

विधुन्तुदोपप्लुतमार्गविस्फुरत्
नवार्कबिम्बोपममग्निपिंगलम्।
निलीनमागन्तरमिश्रमूर्ध्वगं
विभाति चक्षुर्दधदर्धतारकम् ।।२१।३९।।

निवेशितस्यान्तरसीम्नि चक्षुषो
निमीलितारालकरालपक्ष्मणः।
विधीयते भावनयेव केवलं
प्रियाननाम्भोरुहदर्शनोत्सवः ।।२१।४०।।

प्रसक्तताम्बूलकलंकधूसरां
श्रियं दधत्याधरमध्यलेखया।
स्फुटेव मूर्त्तिद्वितयस्य पेशला
विभागसीमा सरला विरच्यते ।।२१।४३।।

इति प्रियस्याचलराजकन्यया
शरीरभागे कृल्प्तसंनिवेशया।
जगत्सु सौभाग्यगुणैरनन्यगै-
र्व्यजीयताशेषनितम्बिनीजनः ।।२१।४७।।

परस्परप्रेमविजृम्भितोऽनयोः
चिराय योगोस्तु शरीरभागयोः।

दधौ तुलाकोटिकझिंजितच्छला-
दितीव गौरीचरणस्तदाभिषेकम् ।।२१।५२।।

संध्याहितोत्सवविकासमहीनकांची-
दामाभिराममनिशं विकटाक्षवक्त्रम्।
लक्ष्मीमनुत्तमहिमांशुकलांच्छितं स-
दाविश्चकार शिवयोर्वपुरित्यभिन्नम्।।२१।५५।।

इत्थं भूयो वियोगज्वरविसरदशोपप्लवच्छेदहेतोः
स्पष्टप्रेमानुबन्धं स्थितवति दयितादेहरत्नेन मिश्रे।
हर्षोत्कर्षन्निपेतुर्वपुषि पुररिपोरेकलक्ष्यास्तदानी-
माश्चर्योद्धत्ततारा: प्रविकसितपुरा दृष्ट्यः पार्षदानाम् ।।२१-५८।।

इत्यर्ध देहरचितस्थितिमुत्तमाङ्ग-
गंगाभ्यसूयनपरां गिरिशस्य गौरीम्।
नायोधिगम्य सरितामथ चन्द्रधाम
समूर्च्छितः क्रुध इव क्षुभितस्तदानीम् ।।२२।१।।

प्रत्यग्रोष्णीषचन्द्रामल किरण शिखाश्लेषनिह्नूयमान-
प्रेडच्चूडाकपालोदरकुहरदरीधूर्णनामैन्दवेगैः।
शंखक्षोदावदातैः स्खलनखलखलारावमोखर्यभाग्भिः
मन्दाकिन्या जलौधैर्लुलितगिरिसुता भागधम्मिल्लबन्धम् ।।३८।८४।।

कोदण्डमण्डलकडक्वणितं मदीय-
मायोधने श्रुतवतो हृदयात् स्मरारेः।
धैर्य गमिष्यति निरुद्धशरीर भीरू-
चित्तस्य भीतिपरिणामवशादिवोच्चैः ।।३५।३४।।

चक्रीकृततनुधनुर्गुणगुंजितेन
संग्राममूर्ध्नि मयिरुन्धति शैलकुञ्जान्।
जिह्रेतु तस्य हृदयं तनुलग्नभीरू-
चित्तार्ध भागविदितच्युतधैर्यबन्धम् ।।३५।४४।।

चिन्तागृहीतदयिताशिथिलोपगूढ-
कण्ठस्य मन्युभरदुः स्थितचित्तवृत्तेः।

शय्यान्तरे सरिदिवैष्यति भंगमाशु
सा वर्तिनी रसिकतानुगता स्मरारेः ।।३५।४६।।
आयोधने मुखरितामरशैलकुंज-
गुंजद्गुणातनु धनुर्दनुसूनुगर्भे।
धैर्यं बिभर्त्यसकलेन कियन्ति रुद्ध-
देही हिमाद्रिसुतया हृदयेन शंभुः ।।३७।३३।।
मुष्णान्तं जीवितधनं सव्यं सकुसुमालकम्।
जघान भर्ता देहार्धं सव्यं सकुसुमालकम्।। ४३।२२२।।
[सव्यं देहार्धं भर्ता स इत्यन्वयः]
संकेटभारो तत्राजिलालसः सवसौ तदा।
बलिभौ सोऽर्कसच्छायः स कैलासवदाबभौ ।।४३।२४०।।
[बलिभिस्त्रिवलीसनाथ ओम उमासंबंधी भगो यस्य]
वैपरीत्येन वर्णनम्
इति स्मरोद्दीपिनि चन्द्रशेखरं विभुर्विवृत्ते समये स्वसंनिभे।
हिमाद्रिकन्यामभिधाय सादरं स सांध्यवेलाविधितत्परोभवत् ।।२१।२२।।
उत्सृज्य संयुगरसादथ तस्य देहभागार्धसन्धिघटनां निरियाय गौरी।
तच्चित्तभागगतसत्त्वविधूतभीरुवैक्लव्ययोगमिव मानसमुद्वहन्ती।।४०।५।।

मैथिलीक उपन्यासमे

मैथिलीक प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री व्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्मक' उपन्यास 'अर्द्धनारीश्वर'मे शिव-गौरीक प्रतीकात्मक चित्रण अछि। किन्तु मानवीयताक धरातल पर ऐन्द्रियकता ओ चेतनाक द्वन्द्वात्मक [डायलेक्टिकल] संघर्ष आ' सहानुभूति द' क' अद्वैत स्थिति दिसि बढ़ैत ओ-शैली सेहो अर्द्धनारीश्वर रूप लए लेलकैक अछि। कथा प्रथम पुरुषमे छैक। एक बेर नारी अबैत छैक आ' तै अध्यायक उपरान्त पुरुष, एवं क्रम चलैत रहैत छैक। किन्तु ताहिसँ कथाक ताल-लयमे कोनो अभिघात नहि अबैत छैक आ कथा संगीतात्मक सहजताक संग गतिमय रहैत छैक।[1]

किन्तु एहि उपन्यासक शिवगौरीक जे सर्वाधिक आकर्षक चित्रण अछि, से थिक स्थल-स्थल पर अनेक सन्दर्भमे हुनक अनके रूपक चर्चा। जेना-

"सबेर सकाल कहुना बाबाक मन्दिरमे पहुँचि जाइ। मामी कहलथिन- एह, ओइ मन्दिरमे भगवती पार्वतीक दिव्य मूर्ति जे अछि। जनथिन वैह गिरिजा, मिथिलाक कुमारिक आशा वैह पुरबैत छथिन।[२]"

[गौरीक सौभाग्य-देवी स्वरूपक उल्लेख]

"पार्वतीक मूर्ति सरिपहुँ बड़ दव्य। बड़ आकुलतासँ माय शिव-पार्वतीक पूजन केलनि। कैक बेर हमरा माथ पर नीर छिटलनि। कम्बल पर एलहुँ तँ दिनक साढ़े दस बाजि रहल छल।"[३] [मिथिलाक वातावरणमे शिव-पार्वतीक व्याप्ति तकरे व्यंग्य एतय अछि]

मायक मुँह उत्फुल्ल भ' उठलनि। जय बाबा भोलेशंकर- ओ कहलथिन।

तरुणक स्थिति बड़ उकरू छलनि। एकदिस झाँखुर आ दोसर दिस धार।४

[बेर-बेर विपत्तिमे महादेवके स्मरण करबाक संस्कार मिथिलामे छैक तकरे व्यंग्य]२

``ई सत्य जे प्रकृति एक हाथसँ दैत छैक आ दोसर हाथसँ लए लैत छैक।

किन्तु भारतीय चिन्तकक अनुसार दिव्य उपलब्धि शाश्वत होइत छैक आ ओकरा कोनो शक्ति समाप्त नहि कए सकैत छैक। किन्तु दुष्प्रवृत्ति अजेय आ अनिवार्य हो से तँ चरम सत्य नहि।"

"धन्य दिव्ये, अहाँ तँ मंगल दृष्टिकोण आ आलोक देल अइ पोथीक अध्ययनक हेतु।"[५]

[दिव्य उपलब्धि, शाश्वत, सत्य, मंगलमय दृष्टिकोण, आलोक- आदि पद शिव एवं शिवत्वक सूचक, प्रतीकात्मक उल्लेख]।

"ओ कहैत गेलाह- ई स्थान हमरा बड्ड अपील करैत अछि। एकर परिवेश बड़ मोहक छैक।" ओ एना छैक-

"महादेवकें अहिठाम एकटा छविमय उज्जर पाथर भेटलनि। ओ ओहि

पाथरकेँ पुछलथिन– अहाँ के की करू?"

पाथर कहलकनि– `अहाँ अपन दिव्यतम कल्पनासँ अधिक कइए की सकैत छी? से अहाँ अपन अन्तरक चरम सौन्दर्यकेँ हमरामे अभिव्यक्ति दियौ"।

शिव बजलाह– ``हमरा अन्तरमे एकटा शाश्वत नारी बसैत छथि। तेँ हम अर्द्धनारीश्वर भेलहुँ। हम हुनकर मूर्त्त रूप देब।"

महादेव ओइ पाथरकेँ गढ़ि कए एकटा नारीमूर्त्ति प्रस्तुत केलनि। प्राणप्रतिष्ठा देलापर ओ प्रिय पाथर हुनक चिरसंगिनी गौरा भए गेलथिन।

वाह, वाह। सब बाजि उठल।६

[चित्रकारक कल्पनामे गौरीशंकरक कथा।]

हम एहिठाम अयलहुँ ता अहाँ सभ नहि आयल छलहुँ। मन्दिरमे बड़ भीर छलैक। हम एहि उपासना मण्डपमे अयलहुँ तँ बड़ इच्छा भेल जे किएक ने एहि तान्त्रिक यन्त्र पर बैसि जाइ। बैसबाक संग से ओंघही लागल जे की कहू.......। हम कहलियनि।

वसुभाइ हँसलाह– ``अमृतेश्वर नाथक मन्दिरक घड़ीघण्टा तोरा नहि जगा सकल तेँ तोरा देलथुन।"

"चलू ने, स्नान-दर्शन क' आबी। हम प्रस्ताव रखलहुँ।"

"अरे, ई तँ अद्‌भुत डाइग्राम बनल छैक एहि प्राचीन मण्डपक भग्नावशेषक बीचमे। ई की भेलैक? वसुभाइ पुछैत छथि।"

"यैह ने थिकैक तान्त्रिक यन्त्र जे हमरा बलात् बजा क' सुता देलक– हम उत्तर देलियनि। ई कोनो युगक महाविद्याक अवशेष थिकैक जे आइ लुप्त भ गेल छैक।"

"कोनो विद्या कहिओ लुप्त नहि होइत छैक, गुप्त भ जाइत छैक। जहिया ओकर जननिहार आबि जाइत छैक, ओ जाग्रत भ उठैत छैक।" वसन्ती कहैत छथि।

"ई कोनो प्राचीन राजाक डीहक भग्नावशेष थिकैक। साबित बचल छैक मात्र अमृतेश्वर नाथक मन्दिर। किछु आर छोट-छोट मन्दिर छैक, किछु दिव्य

मूर्त्ति सभकेँ जोगौने। महल, अटारी, कला आ सिंहद्वारा सभ सौरमडीह बनि चुकल छैक।– हम कहलियनि।"

"हम ई सोचबा लेल बाध्य भ जांइत छी कखनो क–वसु भाई बजलाह जे बेबीलोनक सभ्यता मेटा गेल, मिस्र देशक संस्कृति आ सभ्यताक अवशेष मात्र तीनटा पिरामिड रहि गेल अछि। लोकमे किछु नहि बचल अछि किन्तु वैदिक उपनिषद् कालक भाषा अथवा चिन्तनक संग, भारतमे, जेना–तेना एखनो धरि कोना विद्यमान अछि ओ कोना जीवित अछि।.............कहाँ छथि ओ ओसरिस कतोक सहस्र साल पहिलुका पूजा लेनिहार, किन्तु अमृतेश्वर नाथक शिवलिंगक मन्दिरक एखनो निनाद क' रहल अछि।"

[शिवपूजाक महत्त्व अस्तित्वक संकेत।]

१. *अर्द्धनारीश्वरक मुखश्री सँ।*

२. *अर्द्धनारीश्वर– पृ० २.*

३. *ऐ०– पृ० ४.*

४. *ऐ०– पृ० ६.*

५. *अर्द्धनारीश्वर– पृ० ८.*

६. *ऐ०– पृ० ९.*

७. *अर्द्धनारीश्वर– पृ० ७०.*

❑❑

परिशिष्ट- ५

शिवक आराध्य– स्वरूप

[अध्याय ५ एवं ६क क्रममे]

शिवक आराध्य स्वरूपक वर्णन संस्कृत ओ मैथिली, दुनू साहित्यमे बड़ विस्तारसँ कएल गेल अछि। एकर चर्चा अध्याय ५ एवं ६क क्रममे संक्षिप्त रूपेँ भए चुकल अछि किन्तु प्रमादवश, अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यक उल्लेख नहि भ' सकल, तेँ परिशिष्टक रूपमे ओ विवरण देल जाइत अछि।

साहित्यमे शिवक अष्टमूर्त्तिक उल्लेख कालिदास सर्वप्रथम कएलनि। ओहि परम्पराक निर्वाह संस्कृतक कवि भानुदत्त एवं मैथिलीक कवि प० श्री सुरेन्द्र झा सुमन कएने छथि। ओना हिनका लोकनिक वर्णनमे शिवक विभिन्न आठो रूपक विश्लेषण भिन्न–भिन्न श्लोकमे कएल गेल अछि जे आओर अधिक चमत्कारपूर्ण भ' गेल अछि।

भानुदत्त सोलहम शताब्दीक एकटा मैथिल- कवि छलाह। 'गीत–गौरीपति' गीत–गोविन्दक अनुकरणरूप पद लालित्यसँ पूर्ण, गौरीशंकरक लीलाक वर्णन थिक। एकर मंगलाचरणमे कवि शिवक अष्टमूर्तिक भिन्न–भिन्न रूपमे वर्णित कए प्रणाम करैत छथि, जे एहि प्रकारेँ अछि –

भ्रमसि जगति सकले प्रतिलवमविशेषम्।

शमयितुमिव जनखेदमशेषम्।।

पुरहर कृतमारुतवेष जय भुवनाधिपते।।

[वायुक रूपमे शिवक उल्लेख]

प्रवहसि मधुमथनं नवनीरददलितम्।

मरकतमणिमिव वक्षसि तुलितम्।।

पुरहर कृतजलधिशरीर जय भुवनाधिपते।।

[जल रूपमे शिवक उल्लेख]

क्षीरसिन्धुलहरी रुचिरं रुचिजालम्।

परमधाम किमु वहसि विशालम्।।

पुरहर कृतहिमकररूप जय भुवनाधिपते।।

[चन्द्ररूपमे शिवक उल्लेख]

घनतिमिरचयं चिरमपगतशंकम्।

हरसि लग्नमिव जगतीपंकम्।।

पुरहर कृतदिनकररूप जय भुवनाधिपते।।

[सूर्यरूपमे शिवक उल्लेख]

हलयसि देवकुलम् हविषा सानन्दम्।

घन इव पयसा चातकवृन्दम्।।

पुरहर कृतयजमानशरीर जय भुवनाधिपते।।

[यजमान रूपमे शिवक उल्लेख]

वहसि ग्रहनिवहं परिहततापम्।

करुणतरोरिव कुसुम कलापम्।।

परहर कृतगगनाकार जय भुवनाधिपते।।

[आकाशरूपमे शिवक उल्लेख]

कपटकोलदशने रचयसि सुविलासम्।

कुन्ददामगतमधुकरभासम्।।

पुरहर कृतधरणीकाय जय भुवनाधिपते।।

[पृथिवीक रूपमे शिवक उल्लेख]

वहसि शिखानिचयं हिमसंघातहरम्।

प्रेमतरोरिव शाखानिचयम्।।

पुरहर कृतहुतवहदेह जय भुवनाधिपते।।

[अग्निरूपमे शिवक उल्लेख]

भानुदत्तरचितं शशिशेखरगीतम्।

भवतु श्रवणयुगलपुटपीतम्।।

पुरहर कृतवसुमितशरीर जय भुवनाधिपते।।[१]

मैथिली साहित्यमे शिवक अष्टमूर्तिक वर्णन प० श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' एहि प्रकारेँ करैत छथि–

उपर अधर परिव्यापित रूप अनूप जनिक प्रत्यक्ष।

क्षिति जल अनल अनिल नभ शशि रवि यजन योजना दक्ष।।

गन्ध, स्वाद, पुनि रूप, परस, ध्वनि शीत, ताप अनुभूति।

कष्ट मेटि शिव अष्टमूर्त्ति जग जगबथु नित संभूति।।

कवि उपर्युक्त पदमे शिवक अष्टमूर्त्तिकेँ प्रणाम कए, हुनक अनेक रूपक वर्णन बड़ विलक्षण रूपेँ करैत छथि जे मैथिली काव्य-जगतमे अपन अद्वितीय प्रतिष्ठा रखैत अछि। एहिमे कविक भक्तिभावनाक प्रगाढ़ता सहजहिँ परिलक्षित होइत अछि एवं हुनक काव्य वैदग्ध्य सेहो हृदयग्राही मेल अछि–

१– शर्वाय क्षितिमूर्तये नम–

जड़ जंगम जत रूप गंध रस सम्भृत संचित,

फल पटल जत विषयमात्र होइछ रुचि चित्रित

गिरि–सागर मरु–मालव वन–पुर ऊसर–उर्वर,

पीतरक्तसित असित प्रजा पुनि मिश्र रक्तधर।।

पृथुल रूप पृथ्वी प्रकृति

जनिक विकृतिसँ परिणता।

शर्व सर्वहित करथु से

शस्य प्रशस्यक प्रचुरता।

२– भवाय जलमूर्तये नम–

रसा रसवती, हरित भरितवन, रसरसाल फल।
गगन शून्य घन सघन बरस, रस विद्युत द्युति भल।।
गिरि निर्झर झर, सिन्धु विन्दु बल सरित स्रवन्ती।
कन–कन अन्न प्रपन्न विदित रसना रसवन्ती।।
भव उद्भव जत विभव अछि
जलमय रूपहि संभृता।
भव से भवहित जलद बनि
बरसथु नित रस सम्पदा।।

३– रुद्राय अग्निमूर्तये नम–

शीत–गीत जगती कंपित पबइछ जत गर्मी।
द्रव परिणत भय द्रव्य बनय दृढ़ सुखि द्रुति मर्मी।।
रस परिपाक विपाक ओजमय, स्फूर्ति पूर्ति कय।
किछ उष्ण सतृष्ण जगत जड़ ज्वलन मूर्तिमय।।
रुद्र त्रिलोचन अग्निमय
मद मदनक उद्यत वित।
क्षुद्र विषय–तृण जाल जत
ज्ञान ज्वाल जरबथु सतत।।

४– उग्राय वायुमूर्तये नम–

जल जरि जे छल बनल भाफ पुनि जलद योजना।
श्वास श्वासमे विश्वासक सत्प्राण प्रेरणा।।
गति तिर्यक शोषणो रुक्षता अवगुण टेकल।
अनिल–सलिल पुनि गगन–अवनि बिच अन्तर मेटल।।
स्थिति नहि पहुँचत प्राप्ति धरि।
जानहि गति संचारणा।

उग्र मूर्ति ईशक वायुमय
बहथु करथु जग चालना।

५- भीमाय आकाशमूर्तये नम-

नहि विकास अथवा प्रकाश यदि अवकाश न हो।
ध्वनित न शब्दक शक्ति शून्यता आकाश न हो।।
अनिल ऊर्ध्व-गति कतय? अधोगति सलिल न संभव।
तिर्यक गमन पवनहुक क्षिति अवनिहु नहि अनुभव।।
पूजन संगति दान जत
यजन कर्म पटुता भरथु।
पशुपति यज्ञ स्वरूप शिव
यजमानक पशुता हरथु।।

७- महादेवाय सोममूर्तये नम-

रम्यकान्ति रस तृप्ति शीत शुचि रुचि गुन एकत।
सौम्य भावना भरित रमनि मन रति अति अभिमत।।
अनल मालकेर, गरक गरल कटुता ज्वाला जत।
हरथि, भरथि मुद कुमुद शिशु शशिहु शिवक सीसगत।।
सरस कला माला कलित
प्रतिमा प्रभा पसारि नित।
अनौषधिमय सौम्यमय
महादेव बाटथु अमृत।।

८- ईशनाय सूर्यमूर्तये नम-

स्वर्ण किरण कण विकिरण करइत तिमिर हरणहित।
जीवन ज्योति जगाय भगाय, जगत जड़तानित।।
काल-कला पुनि दिशा-भाग सभ कथुक नियन्ता।
सृष्टि-यन्त्र संचालन हित सुविदित अभियन्ता।।

ईशानक दृग सूर्य जय,

अगजग जगमग जनिक बल।

हरथु तिमिर मल कलुष-त्रय

भरथु प्रकाश विकास भल।।[२]

श्री सुमनजीक उपर्युक्त पद मैथिली साहित्यमे एहू कारणेँ महत्वपूर्ण कहल जा सकैत अछि जे विद्यापतिक परम्परामे जे शिवक स्तुति विषयक पद वा नचारी लिखल गेल, ताहि धारासँ उक्त पद किछु भिन्न रूपें रचल गेल अछि। शिवक परिकल्पना संस्कृतक साहित्यसँ प्रभावित अछि। किन्तु भाषा ओ भावक सौष्ठवक दृष्टिएँ अभिनव अछि।

शिवक अष्टमूर्तिक उल्लेख विभिन्न पुराणमे कएल गेल अछि, जकरा एहि प्रकारक पदक स्रोत कहल जा सकैत अछि। एहि विषयमे किछु संक्षिप्त चर्चा करब उचित होए। शिवपुराणमे लिखल छैक –

तस्यादिदेवदेवस्य मूर्त्यष्टकमयं जगत्।

तस्मिन् व्याप्य स्थितं विश्वं सूत्रे मणिगणा इव।।

शर्वो भवस्तथा रुद्र उग्रो भीमः पशुपतिः।

ईशानश्च महादेवः मूर्त्तयश्चाष्ट विश्रुताः।।

भूम्यम्भोऽग्निमरुद् व्योमक्षे त्रज्ञार्कनिशाकराः।

अधिष्ठिता महेशस्य सर्वाभिरष्टमूर्तिभिः।।

अष्टमूर्त्यात्मना विश्वमधिष्ठाय स्थितं शिवम्।

भजस्व सर्वभावेन रुद्रं परमकारणम्।।

अर्थात् एहि देवादिदेवक अष्टमूर्त्तिसँ ई अखिल जगत् एहि प्रकारेँ व्याप्त अछि जेना सूतक तागमे मणि समूह। भगवान् शंकरक एहि अष्टमूर्तिक नाम एहि प्रकार छनि – शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, महादेव एवं ईशान। इएह शर्व आदि अष्टमूर्त्ति क्रमशः पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, यजमान, सूर्य एवं चन्द्रमाकेँ अधिष्ठित कयने अछि। एहि अष्टमूर्त्तिक द्वारा विश्वमे अधिष्ठित ओहि परम कारण भगवानकेँ सर्वतोभावेन आराधना करू।

शिवक पशुपति नामक रहस्य

शिवक अष्टमूर्त्तिमे सूर्य एवं चन्द्र प्रत्यक्ष देवता थिकाह। पृथ्वी, जल आदि पंच महाभूत थिक जे शिवहिक स्वरूपमे विद्यमान अछि। एकर अतिरिक्त आठम रूपमे जे शिवक अस्तित्व अछि से हुनक यजमानक रूप थिक। जीव सएह यजमान रूपमे यज्ञ वा उपासना कएनिहार होइत अछि। तेँ ओकरा यजमान सेहो कहल जाइत छैक। पाश अथवा मायायुक्त जीव सएह पाशु अथवा पशु थिक एवं जीवक उद्धारकर्त्ता होयबाक कारणेँ महादेव पशुपति कहल जाइत छथि। ओ जीवक पाशमोचन करैत छथिन –

ब्रह्माद्याः स्थावरान्ताश्च देवदेवस्य शूलिनः।
पशवः परिकीर्त्यन्ते संसारवशवर्त्तिनः।।
तेषां पतित्वाद् देवेशः शिवः पशुपतिः स्मृतः।
मलमायादिभिः पाशैः स बध्नाति पशून् पतिः।।
स एव मोचकस्तेषां भक्तानां समुपासितः।
चतुर्विंशति तत्वानि मायाकर्मगुणास्तथा।।
विषया इव कथ्यन्ते पाशा जीवनिबन्धनाः।
सर्वात्मनामधिष्ठात्री सर्वक्षेत्रनिवासिनी।
मूर्त्तिः पशुपतिर्ज्ञेया पशुपाशनिकृन्तनी।।

अर्थात् ब्रह्मासँ लए स्थावर [वृक्ष–पाषाणादि] पर्यन्त जतेक संसारवर्ती जीव थिक सभटा देवाधिदेव महादेवक पशु कहल जाइत अछि एवं सभक पति होयबाक कारणेँ ओ पशुपति कहबैत छथि। वैह पशुपति ब्रह्मा आदि सभ पशुक मन, मायादि अविद्याकेँ पाशमे जकड़न रहैत छथि एवं भक्तसँ पूजित भेला पर [ओकरा] [भक्तकेँ] पाशसँ मुक्त करैत छथि। चौबीस तत्व एवं मायाकृत कर्मक गुण विषय कहबैत अछि। वैह विषय जीवकेँ बन्धनमे देनिहार थिक तेँ ओ पाश भेल। महादेव सभ जीवक अधिष्ठाता एवं सभ क्षेत्रमे वास कयनिहार [**क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत–गीता**] तथा पशुपाशकेँ कटनिहार होएबाक कारणेँ पशुपतिक नामसँ ख्यात छथि।]

शिवपुराणमे कहल गेल अछि जे परमात्मा शिवक एहि अष्टमूर्त्तिकेँ समस्त संसारमे पसारने छथि तेँ जहिना गाछक जड़िमे जलसँ पटौलापर गाछ भरल-पूरल होइत छैक तहिना विश्वात्मा शिवक पूजा कएलासँ हुनक जागरूप शरीर हृष्ट-पुष्ट होइत अछि। आब ई देखब संगत होयत जे शिवक आराधना की थिक। सभ प्रणीकेँ अभयदान, सभक प्रति अनुग्रह, सभक उपकार करब- यैह शिवक वास्तविक आराधना थिक। जेना पिता पुत्र पौत्रादिक आनन्दसँ आनन्दित होइत छथि तहिना अखिल विश्वक प्रीतिसँ शंकरक प्रीति होइत छैक। कोनो देहधारीकँ यदि केओ कष्ट दैत छैक तँ ओ अष्टमूर्त्ति रूपक महादेवेक कष्ट भए जाइत छनि। जे एहि प्रकारेँ अपन अष्टमूर्त्तिक द्वारा अखिल विश्वकेँ अधिष्ठित कयने छथि ओही परमकारण महादेवके सर्वतोभावन आराधना करबाक चाही।

आत्मनश्चाष्टमी मूर्त्तिः शिवस्य परमात्मनः।
व्यापकेतरमूर्त्तीनां विश्वं तस्माच्छिवात्मकम्।।
वृक्षमूलस्य सेकेन शाखाः पुष्यन्ति वै यथा।
शिवस्य पूजया तद्वत् पुष्येत्तस्य वपुर्जगत्।।
सर्वाभयप्रदानश्च सर्वानुग्रहणं तथा।
सर्वापकारकरणं शिवस्याराधनं विदुः।।
यथेह पुत्रपौत्रादेः प्रीत्या प्रीतो भवेत् पिता।
तथा सर्वस्य सम्प्रीत्या प्रीतो भवति शंकरः।।
देहिनो यस्य कस्यापि क्रियते यदि निग्रहः।
अनिष्ट मष्ट मूर्त्तेस्तत् कृतमेव न संशयः।।
अष्टमूर्त्यमना विश्वमधिष्ठाय स्थितं शिवम्।
भजस्व सर्वभावेन रुद्रं परमकारणाम।। .... [शिवपुराण]

सर्वभूतमे एवं आत्मामे ब्रह्म अथवा शिवक दर्शन अर्थात् सर्वं शिवमयं चैतत् एहि भावक अनुभूतिक विनु जन्म-मरणसँ मुक्ति नहि होइत छैक। एही भावक उत्पत्तिक हेतु एहि अष्टमूर्त्तिक पूजा कहल गेल छैक। वास्तवमे जीव-देह सएह देवालय थिक। मायासँ मुक्त भेलापर जीवे सदाशिव भए जाइत अछि। एहि प्रसंगे शिवक अष्टमूर्त्ति तीर्थक उल्लेख वांछनीय होयत।

अष्टमूर्त्तिक तीर्थ :

१. सूर्य प्रत्यक्ष देवता थिकाह।

आदित्यं च शिवं विद्याच्छिवमादित्यरूपिणम्।
उभयोरन्तरं नास्ति ह्यादित्यस्य शिवस्य च।।

अर्थात् शव एवं सूर्यमे कोनो भेद नहि अछि, तेँ प्रत्येक सूर्यमन्दिर शिवमन्दिर थिक।

२- चन्द्र : काठियावाड़क सोमनाथ मन्दिर एवं बंगालक चन्द्रनाथ क्षेत्र ई दुनू महादेवक सोममूर्त्तिक तीर्थ थिक।

३- यजमान : नेपालक पशुपतिनाथ महादेव यजमान रूपमे विद्यमान छथि।

४- शिवकाञ्चीक क्षिति लिंग : पंच महाक्षेत्रक नामसँ जेँ पाँचटा लिंग प्रसिद्ध अछि से सभटा दक्षिणमे मद्रास प्रान्तमे स्थित अछि। एहिमे एकाम्रेश्वरक क्षितिलिंग शिवकांचीमे अछि।

५. जम्बुकेश्वर : एतय शिवक जलस्वरूपक आराधना कएल जाइत अछि एवं अप–लिंग विद्यमान अछि।

६. तिरूवण्णमल्ले वा अरूणाचल : एतय महादेक तेजलिंग अछि। जेना नामसँ स्पष्ट अछि, हुनक अग्निरूपक आराधना होइत अछि।

७– कालहस्तीश्वर : तिरुपतिसँ किछु दूर उत्तर गेला पर आकर्कट जिलामे स्वर्णमुखी नदीक तटपर कालहस्तीश्वर– वायुलिंग अछि।

८– चिदम्बरम् : आकाशलिंग : शिवक ई मन्दिर समुद्र तटसँ किछु [२ किलो मीटर] दूर कावेरी नदीक तटपर बड़ सुरम्य स्थानपर बनल छैक।[३]

प्रस्तुत ग्रन्थमे गौरीशंकरक उल्लेख भेल अछि तेँ शिवक अष्टमूर्त्तिक मन्दिरक चर्चामे हुनक [शिवक] पार्वतीसँ सम्बद्ध कथाक वर्णन अपेक्षित अछि।

एहि अष्टमूर्त्तिक मन्दिरमे दूटा मन्दिरक शिवकांचीक क्षितिलिंग एवं जम्बुकेश्वरक अपलिंगक स्थापनामे गौरीक अनुरागक दन्तकथा बड़ रोचक अछि।

शिवकांचीक क्षितिलिंगक कथा –

कहल जाइत अछि जे एक बेर पार्वती कौतूहलवश चुपचाप पाछाँसँ जाए अपन हाथसँ भगवान शंकरक तीनू आँखि मूनि देलथिन्ह। श्री महेश्वरक तीनू आँखि आच्छादित भए गेलासँ संसारमे घोर अन्धकार पसरि गेलैक कारण जे सूर्य, चन्द्र एवं अग्नि जे संसारकेँ प्रकाशित करैत छथि, ओ शंकरक नेत्रसँ प्रकाश प्राप्त करैत छथि –

तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।

– कठोपनिषद।

अतः एहेन बुझि पड़लैक जे ब्रह्माण्ड लुप्त भेल जाए रहल अछि। एहि प्रकारेँ श्री शिवक अर्द्ध निमेषमे संसारक एक करोड़ वर्ष बीति गेलैक। असमयहिमे श्री पार्वतीक एहि अन्याय कार्यकेँ देखि श्री शिवजी रुष्ट भए गेलाह। गौरीकें एकर अनुताप भेलनि। अपन कुकृत्यक प्रायश्चित्त कोना करू, एहि सोचमे गौरी पड़ि गेलीह। महादेव कहलथिन्ह जे अहाँ कम्पानदीक तट पर जाउ। ओतए वल्कल वस्त्रादिसँ युक्त तपस्विनीक वेष बनाए कम्पाक बालुका राशिसँ शिवलिंग बनाउ एवं विधिपूर्वक ओकर पूजा करू। जखन श्री पार्वतीक कठिन तपस्याक किछु दिन बीतल तँ शंकर हुनक धैर्य एवं भक्ति परीक्षा लेबक हेतु नदीमे भयंकर बाढ़ि आनि देलनि। गौरीक चारूकात बाढ़िए-बाढ़ि भए गेलैक। जलक अतिरिक्त कतहु स्थल देखबामे नहि अबैत छल। भगवती उमा जखन आँखि पसारि देखलनि तँ बुझि पड़लनि जे नदीक वर्धमान जल-प्रवाहमे हुनका द्वारा नित्य पूजित शिवलिंग ने बहि जाय। एहिसँ हुनक तपस्यामे विघ्न उत्पन्न होइतनि एवं एहि आशंकासँ ओ विचलित भए गेलीह। तें भगवती भगवान् शिवकेँ मोनहि मोन गोहरबैत, ओहि पार्थिव लिंगके अपन छातीसँ लगाए ध्यानमग्न भए गेलीह। जलप्रवाहक भयंकर भँवरमे ओ पड़ि गेलीह किन्तु ओहि शिवलिंगकेँ तनमनसँ लगौनहि रहलीह। अपन समस्त अस्तित्त्वके बिसरि ओ एकमात्र अपन पूज्य देवताक हेतु समर्पित भए गेलीह। तखन भगवान् शंकर प्रकट भए बजलाह –

विमुञ्च बालिके ह्येतत् प्रवाहोऽयं गतो महान्।
त्वयार्चितमिदं लिंगं सैकतं स्थिरवैभवम्।।
भविष्यति महाभागे वरदं सुरपूजितम्।

तपश्चर्यां तवालोक्य चरितं धर्मपालनम्।
लिंगमेतन्नमस्कृत्य कृतार्थाः सन्तु मानवाः।।

अर्थात् हे बालिके, नदीमे जे बाढ़ि आयल छलैक ओ आब चल गेल छैक। आब अहाँ लिंग छोड़ि दिऔक। अहाँ एहि स्थिर वैभवयुक्त सैकत लिंगक पूजा कयलहुँ अछि, तेँ हे महाभागे, ई सुरपूजित पार्थिव लिंग वरदाता बनि गेल छथि।[४]

अर्थात् जे केओ एकर उपासना करत ओ मनोवांछित फल प्राप्त करत। ओकर मनोकामना अवश्य पूर्ण होएतैक। अहाँक तपश्चर्या, धर्मपालनक दर्शन एवं श्रवण करैत जे एहि लिंगक आराधना करत ओ कृतार्थ भए जाएत।

अनैषं तेजसं रूपमहं स्थावरलिंगताम्।

एतए हम अपन ज्योतिर्मय रूपकेँ त्यागि स्थावर लिंगमे परिणत भए गेल छी। अहाँ गौतमाश्रम [तिरूवण्णमल्ले] तीर्थमे जाए तपस्या करब। ओतय हम तेजो रूपमे अहाँ के भेटब।

शिवकांचीक एकामात्र क्षितिलिंग मात्र महादेवी द्वारा स्थापित स्थावर लिंग थिक। एहि क्रममे गौरी अपन सौभाग्य एवं तेजकेँ निर्दिष्ट करैत मुनि लोकनिकेँ कहैत छथिन –

तिष्ठाम्यहमत्र नित्यं मुनयश्च दृढ़व्रताः।
नियमांश्चाधितिष्ठन्तः कम्पारोधसि पावने।।

सर्वपापक्षयकरं सर्वसौभाग्यवर्धनम्।
पूज्यतां सैकतं लिंगं कुचकंकणलांछनम्।।

अहं च निष्फलं रूपमास्थायैतद् दिवानिशम्।
आराधयामि मन्त्रेण महेश्वरम् वरप्रदम्।।

मत्तपश्चरणाल्लोके मद्धर्मपरिपालनात्।
मद्दर्शनाच्च तथा सिद्धन्त्वष्टविभूतयः।
सर्वकामप्रदानेन कामाक्षीमितिकामतः।
मां प्रणम्यात्र मद्भक्त्या लभन्तां वांछितं वरम्।।

अर्थात् हे दृढ़व्रत देवता एवं मुनिलोकनि, नियमसँ अहाँ लोकनि पवित्र कम्पा तटपर निवास करू। एवं सर्वपापक्षयकर तथा सर्वसौभाग्यवर्धक

मदीयकुचकंकणलांछित एहि सैकत लिंगक पूजा करु। हमहूँ निष्कल रूपसँ [अव्यक्त भए] रातिदिन एहि स्थानपर भक्तवत्सल शिवक आराधना करब। हमर तपस्या-प्रभाव एवं धर्म-पालनक फलस्वरूप एहि लिंगक दर्शन एवं पूजन कए मनुष्य अभिलषित ऐश्वर्य एवं विभूतिक लाभ करत। हम सर्वकाम प्रदान कयनिहारि छी, अतः भक्तगण हमरा कामदायिनी कामाक्षी मानि पूजा कए अपन अभिलषित वर प्राप्त करताह।

ई कहैत गौरी शिवक निर्देशानुसार कांची चलि गेलीह।

तिरूवण्णमल्ले वा अरूणाचलक तेजोलिंग :

एतय महादेवक तेजोलिंग अछि। शिवकांचीसँ श्री पार्वतीजीक तिरूवण्णमल्लै व अरूणाचल पर्वत पर एकटा अग्नि शिखाक रूपमे तेजोलिंगक प्रादुर्भाव भेलैक एवं ओहिसँ जगतक ओ अन्धकार दूर भ' गेलेक जकर वर्णन शिवकांचीक क्षितिलिंगक इतिहासमे कयल गेल छैक। यैह तेजोलिंग थिक। एतय हर-गौरीक मिलन भए गेलैक। ई स्थान चिदम्बरमक उत्तर-पश्चिममे विल्लुपुरम्सँ आगू कटपड़ी गेनिहार लाइन पर स्थिति अछि।[५]

महाकवि रत्नपाणि कृत उषाहरण नाटिकाक विभिन्न प्रसंगमे शिवक लीलाक उल्लेख अछि, जकर किछु उद्धरण देल जाइत अछि –

कर डामरू डिमडिमिक बजाबथि, गाबथि घुमि-घुमि गौरीपति।
भाल बाल विधु सन्तत शोभित, तीनि नयन लस तीनि गती।
जय शम्भु यती जय शम्भु यती।
अपरूब नाट रचथि जगती। ध्रुपद।।
गंग जटा बह संग रंगकर चौदिस भूत परेत पती।
कटि लस नाग भूति तनु लेपित, वसन अजिन उर मुण्डतती।।
तहिखन सुन्दर पुरुष पुरन्दर, कहुखन उमता शुभद मती।
सुरमुनि आदि पार नहि पाबथि, के नहि जग भरि करए नती।।
रत्नपाणि मन आनि बसाओल, शम्भु सहित लस पारबती।

चारि पदारथ वितरण पारथ जँ हर हेरथि एक रती।।
विधिवश एक दिन शिव मन भेल। क्रीड़ा करिअ सगण वन गेल।।
प्रमथ आदि अनुचर सब संग। गिरिजा संग कएल हर रंग।।
कि कहब तखनुक रासक रीति। देव चरित थिक तेहि परतीति।।
सुरमुनि नरपशु सब एक जाति। दम्पति भए रति कर एक भांति।।
कि कहब तखनुक शिवक विलास। छुटि गेल वन भए गेल कैलास।।
ताहि समय ऊषा मन लाए। पहुँचलि संग सखी मिलि धाए।।
बाणसुता अनुपम रुचिदेह। त्रिभुवन सुन्दरि कनक रेह।।
देखि देखि सबहक अनुपम केलि। यौवनवश आकुल भए गेलि।
काम कलपतरु मन गहि सुरत। कोन दिन हमर मनोरथ पुरत।।
से बुझि गिरिजा शंभुक नारि। कहल उषासँ सदय बिचारि।।
माधव धवल दोआदशि पाए। सपन अपन पति मिलतहुँ जाए।।
से सुनि उषा हरषमय भेलि। सखी सहित शोणितपुर गेलि।।
गिरिजा गिरिश कएल कत रास। पहुँचल जाए तखन कैलास।।
रत्नपाणि भन एहि प्रबन्ध। आगु कहब गए कति विध बन्ध।।

[शिवगोरीक लीलाक उल्लेख एतए ध्यातव्य।]

शिव मोर करिअ तराने।
असह व्यथा हम सहए न पारिअ संकट परल पराने।।
नाचि काछि शिव तोहि रिझाओल आब होएत वरदाने।
तखन भेलहुँ मायावश अभिमत याचल आनक आने।।
तकर उचित फल आए तुलाएल जेहन कएल अभिमाने।
दशशत वाहु क्षणहिँ काटल गेल नहि काषी खगयाने।।
सभ तेजि धाए तुअ परिसर धए मन अछि आन विधाने।
देखिअ नाच हरषि हर हेरिअ हरिअ दोष सन्ताने।।
देखि नाच हर सभ दुख फेरल कएल गणक परधाने।

रत्नपाणि मन वरद एक शिव जगत-विदित-यश-गाने।।
त्राण कारण विकल वलिसुत गेल शंकर तीर।
छलहुकँहम भेलहुँ की अब कहए नहि रह धीर।।
तखन वलिसुत कएल गोचर जोड़ि कर-पुट माथ।
विकल भए तुअ पास अएलहुँ सदय हेरिअ नाथ।।
देखि गोचर तखन शंकर देल अभिमत दान।
छूटि सभ दुख एल अति सुख रूप देव समान।।
तेजि राज समाज सुत वित भेल शम्भुक दास।
देखि शुभ-मति प्रमथ-गण-वर शम्भु पूरल आस।।
रत्नपाणि विचारि मन मन असत जग अभिमान।
बाण भूपति तन्हिक दुर्गति एहन भेल नदान।।

उपर्युक्त हमेशवाणी उषाहरण नाटिकाक अंश थिक। सम्पादन नवटोल गाम वासी प० दीनानाथ झा कएने छलाह एवं मैथिली साहित्य पत्रक क्रममे १३४९ सालमे प्रकाशित भेल। रमानाथ झाक मतानुसार एकर रचना १२१० सालसँ १२६५ सालक बीच भेल होएत। कथानकक स्रोत हरिवंश थिक जे विष्णुपर्वक ११५म अध्ययासँ १२८ अध्याय तकमे उल्लिखित अछि।

गीत पंचाशिकामे एकटा नचारी बड़ मनोरम अछि –

घर नहि अम्बर, पहिरि बाघम्बर, त्रिभुवनपति तोहे देवा, मोरि सेवलो।
कोन पुन अपरूब रूप तपसी बड़ रसी।।
भसम आँग दए मशान वस कए, परक दिए सुखठामे अभिराम ले।।
शीरक धरिए गँग नारि आध आँग करिए ध्यान समाधी जो गनिधी ले।
नृपजगजोतिमति शिवक चरण गति अवसर बिसरह जनू, मोहि पूनू लो।।

उर्युक्त पद नृप जगज्योतिर्मल्ल रचित थिक। जकर सम्पादन डा० दुर्गानाथ झा श्रीश कएने छथि एवं १९६७ मे रमानाथ झा द्वारा नेपाल राजपुस्तकालयसँ ओकर पाण्डुलिपिक संग्रह भेल छल।

हरगौरीक वन्दनाक परम्परा अध्यावधि अविच्छिन्न रूपैं आबि रहल

अछि। भने ओकर अभिव्यक्त शैली भिन्न भए गेल हो, किन्तु भावक प्रवणता मर्मस्पर्शी अछि। एकर एकटा उदाहरण प० श्री दामोदर झाक रचना अछि, जे गान्धर्व विवाहक मंगलाचरण थिक –

जय-जय हे गिरिराज नन्दिनी, जय शिव-रति-हित कठिन व्रती।
जय जननी-वारित-साहसिके, जय हठि निज कर्त्तव्य-रती।
जय आराधित-इष्ट-देवते, सजल-नयन सखि-गन-जुषिते।
जय-तप-तापित दूबरि-पातरि, अन्न पानि तजि पर्णरते।
जय दयनीय दशा अनुशीलित जड़-चेतन-करुणा-भरिते।।
जय ऋषि-वर्गहुँसँ परिखिति गति- जय महनीय सहाय गते।
जय प्रसन्न पुरहर विलोकिते, वांछित-फललहि अतिलसिते।
परहुँ जन अभीष्ट नवदुलहिनि, दुलह दुरू शिव भवन-गते।।

मालती-माधव [भवभूतिकृत]क मंगलाचरण –

सानन्दं नन्दिहस्ताहतमुरजरवाहूतकौमारवर्हि ,
त्रासान्नासाग्ररन्ध्रे विशति फणिपतौ भोगसंकोचभाजि।।
गाण्डोड्डीनालिमाला मुखरित ककुभस्ताण्डवे शूलपाणे-
र्वेनायक्यश्चिरं नो वदनविधुतयः पान्तु चीत्कारवत्यः।।

नीतिशतकक [भतृहरिकृत] मंगलाचरण –

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये।
स्वानुभूत्यैकमानाय नमः शान्ताय तेजसे।।
चूडोत्तंसित चारुचन्द्रकलिका चंचच्छिखा भास्करो।
लीलादग्ध विलोल कामशलभः श्रेयो दसाग्रे स्फुरन्।
अन्तः स्फूर्जदपार मोह तिमिरप्राग्मीरमुच्छेदयं
श्चेतः सद्मनि योगिनां विजयते ज्ञान प्रदीपो हरः।।

एम्हर पाश्चात्य सभ्यताक प्रभावे नचारीक भासपर गीत गौनिहारि कनेक संकोच करए लगलीह, तँ पं० श्री काशीकान्तमिश्र 'मधुप' गोट पचासेक एहेन गीत रचलन्हि जे सिनेमाक विभिन्न गीतक भास पर गाओल जाए सकए, एवं

ओकर वस्तु गौरीशंकरक लीलावर्णन रहए।

जेना ससुरा जेती भावनी।

आनन्दितो ने छी कम, तैयो हकन्न कानी।

वर तँ भेलै बताहे, सब क्यो कहए घताहे।

निष्कर्ष रूपेँ कहल जाए सकैत अछि जे मैथिलीमे गौरीशंकरक चर्चा जे नचारी सँ आरम्भ भेल, से आजुक साहित्यमे विभिन्न रूपेँ पसरल अछि।

अन्तमे, शिवगौरीक प्रति श्रद्धावनत भए, एहि संदर्भक इति करब नीक होएत।

* * * *

१. *भानुदत्तकृत गीत गौरीपतिसँ : प्रथम सर्ग– श्लोक १–९.*

२. *अंकावली : अष्टमूर्त्ति : श्री सुरेन्द्र झा सुमन।*

३. *कल्याणक शिवपुराणांकसँ : ले० श्री पन्नालाल सिंह जी।*

४. *मिथिलामे शिवक पार्थिव लिंगक परम्परा प्रत्येक घरमे विद्यामान अछि। ओकर महत्त्वकेँ ई कथा निर्दिष्ट करैत अछि। ई परम्परा आइ धरि प्रचलित अछि। श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुरक कवितामे तथा साहित्यहुमे उल्लिखित अछि।*

□□

सन्दर्भ ग्रन्थ

	ग्रन्थ	भाषा	लेखक ओ सम्पादक
१.	अग्नि पुराण	संस्कृत	
२.	अंकावली	मैथिली	प्रो० सुरेन्द्र जा "सुमन'
३.	अर्द्धनारीश्वर	मैथिली	व्रजकिशोर वर्मा "मणि पद्म"
४.	अभिज्ञान शाकुन्तलम्	संस्कृत	कालिदास
५.	आर्या सप्तशती	संस्कृत	गोवर्द्धनाचार्य
			सं० रमाकान्त त्रिपाठी
६.	उषाहरण	मैथिली	सं०-प० दीनानाथ झा
७.	ऋग्वेद	संस्कृत	
८.	ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर	अंग्रेजी	डा० जयकान्त मिश्र
९.	कल्याण (शिवपुराणांक)	हिन्दी	
१०.	कादम्बरी	संस्कृत	बाणभट्ट
११.	कुमार संभव	संस्कृत	कालिदास
१२.	गङ्गालहरी	संस्कृत	पण्डितराज जगन्नाथ
१३.	गाथा सप्तशती	प्राकृत	हाल सातवाहन
		संस्कृत अनुवाद	डा० जगन्नाथ पाठक
१४.	गीत गौरीपति	संस्कृत	भानुदत्त
१५.	गौरी स्वयम्वर	मैथिली	कान्हाराम (सं०डा० जयाकन्त मिश्र)

१६.	गौरी स्वयम्बर	मैथिली	कविलाल (सं०डा० जयकान्त मिश्र)
१७.	गौरी परिणय	मैथिली	शिवदत्त (सं०डा० जयकान्त मिश्र)
१८.	चन्द्र पद्यावली	मैथिली	कवीश्वर चन्दा झा
१९.	चौंकि चुप्पे	मैथिली	पं० काशीकान्त मिश्र "मधुप"
२०.	तत्त्व चिन्तामणि व्याख्या	संस्कृत	रुचिदत्त
२१.	तत्त्व चिन्तामणि-आलोक दर्पण	संस्कृत	महेश ठाकुर
२२.	दुर्गासप्तशती	संस्कृत	
२३.	नीतिशतक	संस्कृत	भर्तृहरि
२४.	प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता	हिन्दी	श्री सत्यप्रकाश शर्मा
२५.	प्राचीन भारत का इतिहास	हिन्दी	डा० जयशंकर मिश्र
२६.	पारिजातहरण	मैथिली	उमापति
२७.	बुद्धचरित	संस्कृत	अश्वघोष
२८.	मत्स्यपुराण	संस्कृत	
२९.	महेशवाणी	मैथिली	
३०.	महेश्वर विनोद	मैथिली	लालदास
३१.	मालविकाग्निमित्रम्	संस्कृत	कालिदास
३२.	मालतीमाधव	संस्कृत	भवभूति
३३.	मिथिला-भजनावली	मैथिली	पं० मुकुन्द झा
३४.	मुण्डमाला तन्त्र	संस्कृत	पं० मुकुन्द झा
३५.	मेघदूतः एक अध्ययन	हिन्दी	डा० वासुदेव शरण अग्रवाल
३६.	मैथिली गीताञ्जलि	मैथिली	नन्दिनी देवी

३७.	मैथिली गीत रत्नावली	मैथिली	सं० कविशेखर बदरीनाथ झा
३८.	मैथिली शैव साहित्य	मैथिली	डा० रामदेव झा
३९.	मैथिली साहित्यक इतिहास	मैथिली	डा० दुर्गानाथ झा "श्रीश"
४०.	मंगल पञ्चाशिका	मैथिली	प्रो० श्री तन्त्रनाथ झा
४१.	रस गङ्गाधर	संस्कृत	पण्डितराज जगन्नाथ
४२.	लिङ्गपुराण	संस्कृत	
४३.	वाल्मीकीय रामायण	संस्कृत	आदिकवि वाल्मीकि
४४.	वायु पुराण	संस्कृत	
४५.	विक्रमोर्वशीयम्	संस्कृत	कालिदास
४६.	विद्यापति पदावली	मैथिली	सं० विमान बिहारी मजुमदार
४७.	श्रीकर भक्तितरङ्ग	मैथिली	प० क्षेमधारी सिंह श्रीकर
४८.	श्वेताश्वर उपनिषद	संस्कृत	
४९.	शिव पुराण	संस्कृत	
४०.	शिवलीलार्णव	संस्कृत	महाकवि नीलकण्ठ दीक्षित
५१.	शैवमत	हिन्दी	डा० यदुवंशी
५२.	स्तोत्ररत्नावली	संस्कृत	
५३.	सौन्दरनन्द	संस्कृत	अश्वघोष
५४.	सौर पुराण	संस्कृत	
५५.	हरगौरी विवाह	मैथिली	नृप जगज्ज्योतिर्मल्ल
५६.	हरविजय महाकाव्य	संस्कृत	नृप जगज्ज्योतिर्मल्ल

संक्षिप्त संकेत

अ०पु०–	अग्नि पुराण
अ० ना०–	अर्द्धनारीश्वर
अ० शा०–	अभिज्ञान शाकुन्तलम्
आ० स०–	आर्या सप्तशती
कु० सं०–	कुमार संभव
गा० स०–	गाथासप्तशती
म० पु०–	मत्स्य पुराण
वा० रा०–	वाल्मीकीय रामायण
वि० प०–	विद्यापति पदावली
मै० शै० सा०–	मैथिली शैव साहित्य
शि० पु०–	शिवपुराण
शि० ली०–	शिवलीलार्णव

□□

1. नाम- **डा. कामाख्या देवी**, लेखन में **नीरजारेणु**
2. जन्म- 11 अक्टूबर 1945 ई. नैहर नवटोल मे
3. पिता- स्व. पं. हरिश्चन्द्र मिश्र, सचिव राज दरभंगा
4. माता - स्व. गंगादेवी

   पति- डा. किशोर नाथ झा, राष्ट्रपति सम्मानित,
   ग्राम- बिट्ठो, पो. सरिसब-पाही जि.- मधुबनी
   शैक्षिक योग्यता- प्रतिष्ठाक संग बी.ए. तथा एम.ए. मैथिली मे प्रथम स्थान तथा पीएच.डी.।

प्रकाशित (मौलिक) कृति

1. धार पिआसल 16 कथाक संग्रह 1996 ई.
2. आगत क्षण ले 58 कविताक संग्रह 1997 ई.
3. ऋतम्भरा (18 कथाक संग्रह) 2009 ई. (साहित्य अकादमी, दिल्ली सँ 2003 ई. पुरस्कृत)
4. प्रतिच्छवि (हिन्दी-16 कथाक संग्रह) 2002 ई.
5. अनेक पत्र पत्रिका तथा अभिनन्दन ग्रन्थ सबमे कविता, कथा, शोध निबन्ध, संस्मरण, आलोचना तथा ललित निबन्ध प्रकाशित।

सम्पादित कृति-

1. मैथिली कथा धारा स्वातन्त्र्योत्तर कालिक 15 गोट (प्रतिनिधिकथाक संग्रह)। साहित्य अकादमी, दिल्लीसँ 1982 ई. मे प्रकाशित। श्रीमती गौरी सेन द्वारा एकर बङ्गला अनुवाद कएल गेल जे साहित्य अकादमी, दिल्लीसँ प्रकाशित भेल।
2. पाबनि तिहान् 2002 ई. मे प्रकाशित।
3. मैथिलीमे महिला लेखन-बीसम शताब्दी 2004 ई. मे साहित्य अकादमी दिल्लीसँ प्रकाशित।
4. सरिसबक फूल (कथा संग्रह) साहित्यिकी, सरिसब-पाहीसँ प्रकाशित - 2004 ई.

सम्मान

1. साहित्य अकादमी, नई दिल्लीक परामर्शदातृ समितिक सदस्या (मैथिली 1978 ई.सँ 83 ई. धरि)
2. मिथिला सांस्कृतिक संगम, प्रयाग द्वारा सम्मान प्राप्त, 1995 ई.
3. विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा सम्मान प्राप्त, 1999 ई.
4. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कार प्राप्ति 2003 ई.
5. साहित्यिकी, सरिसब पाही द्वारा सम्मान प्राप्त, 2004 ई.
6. सरिसब पाही पूर्वी पंचायत द्वारा सम्मानित 2004 ई.
7. प्रबोध साहित्य सम्मानक निर्णायिका समितिक सदस्या, स्वाती फाउन्डेशन द्वारा मनोनीत 2005-6 ई.।

Design & Printed by : Academy Press Alld. 2500970

1. नाम- **डा. कामाख्या देवी**, लेखन में **नीरजारेणु**
2. जन्म- 11 अक्टूबर 1945 ई. नैहर नवटोल मे
3. पिता- स्व. पं. हरिश्चन्द्र मिश्र, सचिव राज दरभंगा
4. माता - स्व. गंगादेवी

पति- डा. किशोर नाथ झा, राष्ट्रपति सम्मानित,
ग्राम- बिट्ठो, पो. सरिसब-पाही जि.- मधुबनी
शैक्षिक योग्यता- प्रतिष्ठाक संग बी.ए. तथा एम.ए. मैथिली मे प्रथम स्थान तथा पीएच.डी.।

प्रकाशित (मौलिक) कृति

1. धार पिआसल 16 कथाक संग्रह 1996 ई.
2. आगत क्षण ले 58 कविताक संग्रह 1997 ई.
3. ऋतम्भरा (18 कथाक संग्रह) 2009 ई. (साहित्य अकादमी, दिल्ली सँ 2003 ई. पुरस्कृत)
4. प्रतिच्छवि (हिन्दी-16 कथाक संग्रह) 2002 ई.
5. अनेक पत्र पत्रिका तथा अभिनन्दन ग्रन्थ सबमे कविता, कथा, शोध निबन्ध, संस्मरण, आलोचना तथा ललित निबन्ध प्रकाशित।

सम्पादित कृति-

1. मैथिली कथा धारा स्वातन्त्र्योत्तर कालिक 15 गोट (प्रतिनिधिकथाक संग्रह)। साहित्य अकादमी, दिल्लीसँ 1982 ई. मे प्रकाशित। श्रीमती गौरी सेन द्वारा एकर बङ्गला अनुवाद कएल गेल जे साहित्य अकादमी, दिल्लीसँ प्रकाशित भेल।
2. पाबनि तिहान् 2002 ई. मे प्रकाशित।
3. मैथिलीमे महिला लेखन-बीसम शताब्दी 2004 ई. मे साहित्य अकादमी दिल्लीसँ प्रकाशित।
4. सरिसबक फूल (कथा संग्रह) साहित्यिकी, सरिसब-पाहीसँ प्रकाशित - 2004 ई.

सम्मान

1. साहित्य अकादमी, नई दिल्लीक परामर्शदातृ समितिक सदस्या (मैथिली 1978 ई.सँ 83 ई. धरि)
2. मिथिला सांस्कृतिक संगम, प्रयाग द्वारा सम्मान प्राप्त, 1995 ई.
3. विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा सम्मान प्राप्त, 1999 ई.
4. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कार प्राप्ति 2003 ई.
5. साहित्यिकी, सरिसब पाही द्वारा सम्मान प्राप्त, 2004 ई.
6. सरिसब पाही पूर्वी पंचायत द्वारा सम्मानित 2004 ई.
7. प्रबोध साहित्य सम्मानक निर्णायिका समितिक सदस्या, स्वाती फाउन्डेशन द्वारा मनोनीत 2005-6 ई.।

Design & Printed by : Academy Press Alld. 2500970